# जार्ज वाशिंगटन

## [व्यक्ति और स्मारक]



लेखक

मारकस कनलिफ

अनुवादक

हरिश्चन्द्र एम. ए.

प्रकाशक

अवध पब्लिशिंग हाउस

लखनऊ

प्रथम संस्करण ५०००]     १९६३     [मूल्य १५० न.पै

# सूची

# काल-क्रम

## जार्ज वाशिंगटन १७३२-१७९९

| | | |
|---|---|---|
| १७३२ | २२ फरवरी (११ फरवरी पुरानी पद्धति के अनुसार) | ब्रिज्स क्रीक (वेक-फील्ड), वैस्टमोरलैण्ड काऊटी, वर्जीनिया, मे जन्म । |
| १७४३ | १२ अप्रैल | पिता-आगस्टीन वाशिंगटन की मृत्यु । |
| १७४९ | २० जुलाई | वर्जीनिया की कलपैपर काऊटी के भू-मापक के रूप मे नियुक्ति । |
| १७५१ | सितम्बर से मार्च, १७५२ तक | अपने सौतेले भाई, वाशिंगटन के साथ बारबैडौस जाना । |
| १७५२ | ६ नवम्बर | वर्जीनिया मिलिशिया मे मेजर बनना । |
| १७५३ | ३१ अक्तूबर से १६ जनवरी, १७५४ तक | गवनर डिनविड्डी द्वारा (फोर्ट ले बौफ) मे फ्रासीसी सेनापति की ओर अन्तिम चेतावनी-पत्र देने के लिए भेजा जाना । |
| १७५४ | माच से अक्तूबर तक | सीमान्त क्षेत्र के अभियान मे मिलिशिया का लैफ्टीनैन्ट कनल बनाया जाना । |
| १७५५ | अप्रैल से जुलाई तक | जैनरल ब्रैडाक का परिसहाय बनाया जाना । |
| | अगस्त १७५५ से दिसम्बर १७५८ तक | सीमान्त क्षेत्र की सुरक्षा का दायित्व निभाने के लिए वर्जीनिया रेजीमेन्ट मे कर्नल का पद प्राप्त करना । |
| १७५८ | जून-नवम्बर | फोर्ट ड्यूकवैने के विरुद्ध फौर्ब्ज अभियान मे भाग लिया । |
| | २४ जुलाई | फ्रैड्रिक काऊटी, वर्जीनिया के बर्गे चुने गए । |
| १७५९ | ६ जनवरी | कमीशन से त्याग-पत्र दिया । श्रीमती मर्था डैडरिज कस्टिस से विवाह किया । |
| १७६१ | १८ मई | पुन बर्गेस निर्वाचित हुए । |
| १७६२ | २५ अक्तूबर | ट्रूरौ पैरिश, फेयर फैक्स काऊटी, के वैस्ट्रीमैन नियुक्त हुए । |
| १७६३ | ३ अक्तूबर | ट्रूरौ पैरिश के पोहिक गिर्जाघर के वार्डन नियुक्त हुए । |
| १७६५ | १६ जुलाई | फेयर फैक्स काऊटी के बर्गेस चुने गए |

| | | |
|---|---|---|
| | | (पुन १७६८, १७६६, १७७१, १७७४ मे बर्गेस चुने गए) |
| १७७० | अक्तूबर | फेयर फक्स काऊटी के शाति-न्यायाधीश नियुक्त हुए। |
| १७७३ | मई जून | न्यूयाक नगर को ओर यात्रा। |
| १७७४ | जुलाई | फेयर-फैक्स काउन्टी मे सम्पन्न बैठक के सदस्य तथा सभा-पति इसके द्वारा कई प्रस्ताव पारित हुए। |
| | अगस्त | विलियम्जबर्ग मे सम्पन्न प्रथम वर्जीनिया प्रान्तीय सम्मेलन मे शामिल हुए। |
| | सितम्बर अक्तूबर | फिलेडैल्फिया मे सम्पन्न प्रथम सावदेशिक काग्रेस मे वर्जीनिया के प्रतिनिधि के रूप मे सम्मिलित हुए। |
| १७७५ | मई-जून | दूसरी सावदेशिक काग्रेस मे प्रतिनिधि के रूप मे। |
| | १६ जून | सयुक्त-राज्य अमेरिका की सेना के प्रधान-सेनापति चुने गए। |
| | ३ जुलाई | बैस्टन के क्षेत्र मे सावदेशिक सेना की बागडोर हाथ मे ली। |
| १७७६ | १७ मार्च | बोस्टन कब्जे मे आ गया। |
| | २७ अगस्त | लाग द्वीप का सग्राम। |
| | २८ अक्तूबर | ह्वाइट प्लेनज का युद्ध। |
| | २५-२६ दिसम्बर | ट्रेन्टन, न्यू जर्सी मे हैसियनो पर विजय। |
| १७७७ | ३ जनवरी | प्रिन्सटन पर विजय, मोरिस टाउन, न्यू जर्सी मे शरद् मुख्यालय। |
| | ११ सितम्बर | ब्रैन्डीवाइन की लडाई। |
| | ४ अक्तूबर | जर्मन टाऊन की लडाई। |
| | १७ अक्तूबर | साराटोगा पर बरगोयने का आत्म-समर्पण। |
| १७७७ ७८ | | वैलीफोर्ज मे शरद् गुजारना। |
| १७७८ | जून | ब्रिटिश-सेना द्वारा फिलेडैल्फिया को खाली किया जाना। मोनामाऊथ की लडाई। |
| १७७८-७६ | | मिडल-ब्रुक, न्यू जर्सी, में शरद् मुख्यालय। |

| | | |
|---|---|---|
| १७८० | जुलाई | (रोचम्ब्यू के अधीन) फ्रासीसी बेडे व सेना का न्यूपोर्ट, रोड द्वीप, में पहुचना। |
| १७८१ | अगस्त-अक्तूबर | याकटाऊन, वर्जीनिया पर अभियान, जिसके फल-स्वरूप कार्नवालिस का हथियार डाल देना (१९ अक्तूबर)। |
| १७८३ | १५ मार्च | असतुष्ट अफसरो का 'न्यूवर्ग भाषण' के प्रति उत्तर। |
| | ८ जून | राज्यो को परिपत्र। |
| | १९ जून | सिनसिनेटी सोसाइटी का प्रमुख-प्रधान निर्वाचित होना। |
| | ४ दिसम्बर | फ्रासीस टेवन, न्यू यार्क नगर, में अफसरो से विदाई। |
| | २३ दिसम्बर | एनापोलिस मे काग्रेस को कमीशन से त्यागपत्र की सूचना देना। |
| १७८४ | दिसम्बर | पौटोमैक नदी मे नौनाम्यता के विषय मे एनापोलिस मे सम्पन्न सम्मेलन मे भाग लेना। |
| १७८५ | १७ मई | पोटोमैक कम्पनी का प्रधान बनना। |
| १७८७ | २८ माच | फिलेडैलफिया मे सम्पन्न फैडल सम्मेलन मे वर्जीनिया के प्रतिनिधि के रूप मे शरीक होना। |
| | २५ मई | सम्मेलन का अध्यक्ष चुना जाना। |
| | १७ सितम्बर | सविधान के प्रारूप पर हस्ताक्षर होना सम्मेलन का स्थगन। |
| १७८८ | १८ जनवरी | विलियन एण्ड मेरी कालेज का चान्सलर निर्वाचित होना। |
| १७८९ | ४ फरवरी | सर्व-सम्मति से सयुक्त-राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति चुना जाना। |
| | ३० अप्रैल | न्यूयाक नगर के फैडल हाल मे राष्ट्र पति पद का आसन ग्रहण करना। |
| | २५ अगस्त | माता मेरी वाशिंगटन की फैड्रिक्सबग वर्जीनिया मे मृत्यु। |
| | अक्तूबर-नवम्बर | न्यू इगलैण्ड (रोड द्वीप को छोडकर) का दौरा। |

| | | |
|---|---|---|
| १७६० | अगस्त | रोड द्वीप का दौरा। |
| | सितम्बर | सयुक्त-राज्य अमेरिका की अस्थायी राजधानी फिलेडैल्फिया मे पहुँचना। |
| १७६१ | अप्रैल-जून | दक्षिणी-राज्यो मे घोडा-गाडी के द्वारा दौरा करना (१८८७ मील ६६ दिनो मे तय किए गए।) |
| १७६२ | ५ दिसम्बर | दुबारा सर्व-सम्मति से राष्ट्र-पति का चुना जाना। |
| १७६३ | ४ मार्च | फिलेडैल्फिया के 'इन्डीपैन्डैन्स' हाल मे दूसरी अवधि के लिए राष्ट्रपति पद सभालना। |
| | २२ अप्रैल | तटस्थता की घोषणा। |
| | १८ सितम्बर | सघानीय राजधानी का शिलान्यास (वाशिंगटन डी०सी०)। |
| | ३१ दिसम्बर | थामस जैफर्सन का राज्य-मन्त्री पद से त्याग-पत्र। |
| १७६४ | सितम्बर-अक्तूबर | पैनसिलवेनिया के 'मद्य-सम्बन्धी विद्रोह' के विषय मे निरीक्षणार्थ दौरा। |
| १७६५ | ३१ जनवरी | अलैक्जैण्डर हैमिल्टन का वित्त-मन्त्री पद से त्याग-पत्र। |
| १७६६ | १६ सितम्बर | फिलेडैल्फिया के 'डेली अमेरिकन एड-वर्टाईजर' मे (अक १७, सितम्बर) विदाई भाषण का छपना। |
| १७६७ | मार्च | कार्य-निवृत्ति तथा माऊट-वर्नन वापस लौटना, उसके पश्चात् जान एडम्ज का राष्ट्रपति के पद पर आसीन होना। |
| १७६८ | ४ जुलाई | सयुक्त-राज्य अमेरिका की सेनाओ का लैफटीनेन्ट जनरल और प्रधान-सेना-पति नियुक्त होना। |
| १७६६ | १४ दिसम्बर | माऊट वर्नन मे मृत्यु। परिवार के निवास वाले भाग की महराबदार छत के नीचे १८ दिसम्बर को दफनाया जाना। |
| १८०२ | २२ मई | मर्था वाशिंगटन की मृत्यु। |

अध्याय – १

# वाशिंगटन स्मारक

**'लोग सुदूर भविष्यत्काल तक वर्नन की पावन भूमि पर आदर और भय की मिश्रित भावनाओ के साथ अपने पाव रखेंगे । पोटोमैक नदी के कूल पवित्र भूमि समझी जायगी ।'**

चार्ल्स पिकने समनेर द्वारा—
सुप्रसिद्ध वाशिंगटन के प्रति श्रद्धाजलि—
फरवरी, १८००

लोगो का कहना है कि जार्ज वाशिंगटन का स्मारक ५५५ फुट ऊँचा है—अर्थात् यह न सिर्फ कोलोन के प्रमुख गिरजाघर तथा रोम के सेंट पीटर गिरजाघर से ही ऊँचा है, बल्कि यह मिश्र देश के पिरामिडो को भी ऊचाई मे मात करता है । जार्ज वाशिंगटन का दिसम्बर, १७९९ मे देहान्त हुआ । उस से पूर्व ही उनके सम्मान मे अमेरिका की राजधानी का नामकरण उनके नाम पर कर दिया गया था । बाद मे उस महापुरुष का इस से भी अधिक सम्मान करने के लिये अमेरिका के प्रतिनिधि-सदन ने यह निश्चय किया कि उनका सगमरमर का 'इस ढग का स्मारक तैयार किया जाय जो उनके सैनिक एव राजनैतिक जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओ की याद ताजा कराता रहे ।' उस समय यह भी निश्चय हुआ कि

वाशिगटन महोदय का मृत शरीर उसी पवित्र स्मारक की तह मे समाधिस्थ किया जाये। किन्तु कई एक कारणो से इस सगमरमर के स्मारक का निर्माण नही हो सका। यह उल्लिखित ऊँचा मीनार, जिसे हम वाशिगटन का स्मारक कहते है, वस्तुत बाद की योजना थी। यह उस समय पूर्ण हुई जबकि जार्ज वाशिगटन को विजय प्राप्त किए और देश को आजाद कराए सौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

इस स्मारक की नीव मे हजारो टन ककरीट है, किन्तु उस महापुरुष का कीर्ति-स्तम्भ होते हुए भी उनकी अस्थियाँ इस मे नही है। वे उस स्थान की बजाए कई मीलो के अन्तर पर उनके माऊट वर्नन घर के तहखाने मे दबी पडी है।

इस माऊट वर्नन वाले घर को असख्य यात्री देखने आते है। पर्यटक इस बात की साक्षी देगे कि यह एक रमणीक स्थान है। इसकी साज-सज्जा रुचिपूर्ण तरीके से की गई है और इसे स्वच्छ तथा व्यवस्थित रीति से रखा गया है। किन्तु यह मानना होगा कि इस सफाई-धुलाई मे उसकी असलियत गायब हो गई है। अब यह घर नही, एक अजायब घर और मन्दिर जैसा लगता है। हम से यह छिपा नही है कि इसी मकान मे जार्ज वाशिंगटन रहे। यही वे दिवगत हुए। किन्तु इस स्थान मे पहुच कर हम इस बात का अनुभव नही कर पाते कि वे सचमुच यहाँ रहे होगे — जिस प्रकार हम स्ट्रैटफोर्ड ऑन-एवन मे पहुच कर इस बात को महसूस करने मे असमर्थ रहते है कि कभी विलियम शेक्सपीयर वहा रहे थे।

हम वाशिंगटन और शेक्सपीयर — इन दोनो महानुभावो को आज तक सही रूप मे नही समझ पाए है। वे दोनो विलक्षण रूप से महान् थे, किन्तु हमारे लिये दोनो का व्यक्तित्व धुधला रहा है। एक अमरीकी लेखक ने इनके बारे मे कहा है कि इगलैड की सबसे बडी देन शेक्सपीयर का साहित्य है और अमेरिका की महानतम देन वाशिंगटन का चरित्र है। लोगो ने इनकी महानता को इस मापदण्ड से नापा है, किन्तु क्या यह पैमाना किसी भी मानव को नापने के लिए उपयुक्त है ?

इन दोनो महापुरुषो मे एक वास्तविक अन्तर है। जबकि हमे शेक्सपीयर के विषय मे प्राय कुछ जानकारी उपलब्ध नही होती, वाशिगटन के बारे मे ज्ञातव्य बातो का बहुत बडा भण्डार मिलता है। हमे शेक्सपीयर का एक भावशून्य चित्र मिलता है, किन्तु वाशिगटन के चित्र इतनी बडी सख्या मे प्राप्त हैं—और इन मे से कई तो उनकी आकृति से हूबहू मिलते है—कि यदि उनकी अनुसूची ही बनाई जाय तो उसके लिये तीन सम्पूर्ण ग्रन्थ चाहिये। शेक्सपीयर द्वारा हस्तलिखित कोई चीज उपलब्ध नही। किन्तु वाशिगटन की अपने हाथो से लिखी चिट्ठिया और डायरिया छपने पर चालीस ग्रन्थो मे आ सकी है। शेक्सपीयर का उल्लेख शायद ही किसी समकालीन लेखक ने किया हो, किन्तु जहाँ तक वाशिगटन का सम्बन्ध है उनके बीसो मित्रो, जान-पहचानवालो और यदा-कदा के मुलाकातियो ने उनके बारे मे अपने सस्मरण लेखनीबद्ध किये है। यह कहना गलत न होगा कि जहा शेक्सपीयर का व्यक्तित्व एक विचित्र प्रकार की अन्धकारमयी चादर मे लिपटा हुआ ही लगता है, वहाँ वाशिगटन सासारिक ख्याति के देदीप्यमान प्रकाश मे चमचमा रहे है। किन्तु जहाँ तक दृष्टि का सम्बन्ध है, परिणाम दोनो दिशाओ मे एक सा है—अर्थात् इस अन्धकार तथा चकाचौंध करनेवाले प्रकाश ने दोनो के व्यक्तित्व को गोपनीय रखने मे सहायता दी है।

इसमे सन्देह नही कि इन दोनो महापुरुषो के जीवनी-लेखक इस बात का प्रयत्न करते रहे कि दिनो दिन वृद्धि को प्राप्त करती हुई इन की अवैयक्तिक गाथाओ मे से वास्तविक व्यक्ति को खोज निकाला जाय। किन्तु न केवल वे इस प्रयास मे असफल ही रहे, बल्कि उन पर विविध रूप से इसकी प्रतिक्रिया भी हुई। जहाँ तक शेक्सपीयर का सम्बन्ध है, उनके विषय मे कइयो ने यहाँ तक कह दिया कि वे उन नाटको के लेखक ही न थे जो उनके नाम से प्रचलित हैं। उनके स्थान मे उन्होने मार्लो अथवा बैकन को उनका असली रचयिता बतलाया। वाशिगटन के बारे मे स्वाभाविक रूप

से प्रतिक्रिया इससे भिन्न रही है। कारण, कि साक्ष्य की इतनी भारी सामग्री होते हुए कोई यह कहने का साहस कैसे कर सकता था कि उनका अस्तित्व था ही नही, अथवा उनके स्थान पर कोई और श्रेय प्राप्त करने का अधिकारी था ? किन्तु उनकी जीवन-कहानी के काल्पनिक भाग ने मानो एक स्मारक के सदृश उन्हे अपने अन्दर समाधिस्थ कर लिया है। हमारा कहने का आशय यह है कि वाशिगटन के इस लाक्षणिक स्मारक ने वास्तविक वाशिगटन को अपने अन्दर इस प्रकार छुपा लिया है कि हमारी आखे उसे देख नही पाती। जैसे-जैसे साल गुजरते चले गये, नई-नई कहानिया गढी जाती रही। परिणामत यह स्मारक ऊचा उठता ही चला गया——ठीक उस समाधि की तरह जिस पर राह चलते लोग पत्थर रखते चले जाते है। इन पत्थरो के छोटे-छोटे टुकडो के समान ही पुस्तिकाए, भाषण, लेख और ग्रन्थ उस स्मारक के आकार को बढाते ही रहे। परन्तु यह कितनी विचित्र बात है कि इन भिन्न-भिन्न स्तर और मूल्यो की जीवन-झॉकियो, पाण्डित्यपूर्ण लेखो एव प्रशस्तियो ने उनके जीवन के रहस्य को जितना खोजने की चेष्टा की, इस रहस्य के तार उतने ही उलझते चले गये।

वास्तव मे वाशिगटन न केवल एक गाथा नायक ही बन गये है, बल्कि उनसे सम्बन्ध रखने वाली किम्वदतिया इतनी रस-हीन हो गई है कि दम घुटने का अनुभव होने लगता है। ऐसा लगता है कि वाशिगटन नागरिक श्लीपद के शिकार हो गये हैं। जब हम अपने सामने वाशिगटन के स्तुति ग्रन्थो की अल्मारिया भरी पाते है तो महसूस होता है कि इस मिठास को कम करने के लिये यदि थोडी सी खटाई रहती तो कितना अच्छा होता। और कैसे है ये स्तुति ग्रन्थ —— सब के सब ऐसे कि उनसे सरस गाभीर्य, पुनरोक्ति-पूर्ण तथा अध श्रद्धात्मक ध्वनि सुनाई पडती है। ये सब ऐसे श्लाघात्मक ग्रन्थ है जिनको पढने का प्रयत्न करते समय जँभाई आना अनिवार्य है। इसीलिये इमरसन से सहमत होने का लालच हो आता है। इमरसन ने कहा था प्रत्येक नायक अन्त मे ऊबा

देने वाला व्यक्ति बन जाता है ये लोग जब कठ फाड-फाड कर जार्ज वाशिंगटन के गुण बखान करते है, तो जेकोबिन लोग (फ्रास के राजतत्र विरोधी क्रान्तिकारी) केवल एक वाक्य द्वारा इस पुराणपथ का खण्डन कर दिया करते है और वह है 'वाशिगटन जाय जहन्नुम मे ।' जब हम इस प्रकार की आस्थाहीनता द्वारा आराम की सास लेते है, तब ही वाशिगटन का एक मानव के रूप मे मूल्याकन कर सकते है। यद्यपि स्मारक—गाथा नायकत्व— तब भी क्षितिज पर छाया रह सकता है और ध्यान मे आये बिना नही रह सकता, फिर भी हमको इसमे सन्देह है कि वाशिंगटन सम्बन्धी किम्वदतियो को उनके मानवीय गुण-दोषो से सर्वथा पृथक् किया जा सकता है । और वाशिगटन के स्वभाव और सार्वजनिक जीवन मे उनके उच्च स्थान को समझने के लिये इस तथ्य से मूल्यवान सूत्र मिल सकते है ।

वाशिगटन के स्मारक पक्ष को समझने के लिये सब से पहली बात यह याद रखनी चाहिये कि उनसे सम्बन्धित किम्वदतियो का निर्माण-कार्य उनके जीवन काल मे ही आरम्भ हो गया था । कहा जाता है कि वेस्पासियन नामक रोमन सम्राट ने मरते समय कहा था कि 'खेद है कि अब मैं देवत्व प्राप्त करने वाला हूँ।' इस प्रकार की हास्यजनक क्षुद्रता और विशालता के सम्मिश्रण की वाशिगटन के सम्बन्ध मे कल्पना नही की जा सकती। किन्तु फिर भी यदि जब वह माउट वर्नन मे सन् १७९९ मे मृत्यु शैय्या पर पडे थे अपने बारे मे ऐसा कहते तो अनुचित न मालूम होता । उनके नाम पर सन् १७७५ से ही बच्चो के नाम रखे जाने लगे थे और जब वह राष्ट्रपति-पद पर विराजमान थे, तभी उनके देशवासियो ने उनका मोम का पुतला तैयार कर लिया था। अपने प्रशसको की दृष्टि मे वह देव-सदृश्य वाशिंगटन थे जब कि उनके आलोचक एक दूसरे से शिकायत करते रहते थे कि वाशिंगटन को अर्ध-देवता के रूप मे पेश किया जा रहा है और उनकी आलोचना करना देशद्रोह समझा जाता है। एजरा इस्टाइल्स नामक पादरी ने सन्

१७८३ मे ईशोपदेश देते हुये कहा था "हे वाशिगटन ! मुझको तेरे नाम से कितना प्रेम है ! कितनी बार मैने तेरे भगवान को तुझ जैसे मानव, जाति के आभूषण को गढने के लिये साधुवाद कहा है। हमारे शत्रु भी जब तेरा नाम सुनते है तो अपने पागलपन की आग को बुझाने लगते है और अपने द्वारा की जाने वाली बदनामी की सयमहीनता को कम कर देते है, मानो उन्हे स्वय भगवान ने धिक्कारते हुये कहा हो, 'खबरदार यदि मेरे चन्दन-वदन पुत्र को हाथ लगाया या मेरे नायक की कोई हानि की।' तेरी ख्याति अरब देशो के मसालो से अधिक सुगधमय है। देवता इस सुगध को ग्रहण करके स्वर्ग मे पहुचा देगे और इस प्रकार ब्रह्माड को सुगन्धित कर देगे।"

निस्सन्देह इस प्रकार वाशिगटन गाथा की शुरूआत हुई। उनके समकालीन लोगो मे उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करने की होड सी लगी हुई थी। समस्त प्रयास का अभिप्राय यह जाहिर करना था कि वाशिगटन के सम्बन्ध मे कोई मानवेतर बात है। हमको यह बताने की जरूरत नही कि मृत्यु के पश्चात् 'देव-सदृश्य वाशिगटन' गाथा के नायक के रूप मे और भी उच्चतर स्तर पर पहुँच गये। उनका वशगत नाम एक अमरीकी राज्य, सात पर्वतो, आठ प्रपातो, दस झीलो, तेतीस जिलो, नौ कालिजो, और एक सौ इक्कीस अमरीकी नगरो और गॉवो के लिये प्रयुक्त किया जाने लगा। उनका जन्म-दिन तो चिरकाल से राष्ट्रीय छुट्टी का दिन रहा ही है। उनकी मुखाकृति सिक्को, नोटो और डाक टिकटो पर पायी जाती है। उनका चित्र जिसमे उनको गिल्वर्ट स्टुअर्ट के चित्र 'एथेनेयम' के अनुरूप बनाया गया है और जिसमे उनको मुह बन्द किये गम्भीर मुद्रा मे दिखाया गया है, न जाने कितने कारोडोरो और दफ्तरो मे लगा दिखाई देता है। दक्षिण डकोटा राज्य मे एक पर्वत के कक्ष को काट कर उनके सिर की मूर्ति तैयार की गई है जो ठोढी से चोटी तक ६० फुट की हैं। उनकी मूर्तिया अमेरिका मे यत्र-तत्र मिलती हैं – इतना

ही नही, दुनिया भर मे मिलती है। उनकी मूर्ति लन्दन मे है, पैरिस मे है ब्यूनस आयर्स मे है, रियोडी जेनीरी मे है, कराकास, बूडापैस्ट और टोकियो मे है। वाशिगटन के अलौकिक नायकत्व की सामारिक प्रतिष्ठा के ये सब बाहरी चिन्ह है। किन्तु हमको इस स्मारक को तनिक गौर से देखना चाहिये। यदि स्मारक लक्षणा को थोडा और आगे बढा दे, तो हम देखेंगे कि इसके चार पहलू है – ये है वे चार भूमिकाए जो उन्होने आने वाली पीढियो के लिये अपने जीवन-नाटक मे पूरी की। ये चारो स्पष्ट रूप से एक दूसरे से भिन्न है – ऐसा नही है – इस दिव्य लोक मे स्पष्ट तो कुछ भी नही है। किन्तु यदि हम उन घटनाओ के विवेचन से पहले जिनके कारण वाशिगटन गाथाओ का सूत्रपात हुआ इनमे से प्रत्येक पर दृष्टिपात करे तो अधिक लाभ होगा। निस्सन्देह इसका यह तात्पर्य नही कि वाशिगटन प्रशसा के पात्र थे ही नही। उनमे वास्तविक और बहुमुखी गुण थे। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनके वास्तविक गुणो को इतना बढा चढा कर और इतने विकृत रूप मे रखा गया है कि इनसे अवास्तविकता का आभास होने लगता है, और उनका यह अतिरजित चित्र ही है जो उनके नाम का उल्लेख होते ही हमारे सामने आ जाता है। वाशिगटन निम्न चार वेशो मे या उनमे से किसी एक मे हमारे सामने प्रस्तुत हो सकते है १ पाठ्य पुस्तको के नायक के रूप मे, २ अपनी जनता के पिता के रूप मे, ३ निस्वार्थ देश-भक्त के रूप मे और ४ क्रान्तिकारी नेता के रूप मे। ये चारो हमारे नायक के भिन्न-भिन्न वेश ही है। पर इनमे से प्रत्येक मे वह देव-वृ द के सदस्य के रूप मे हमारे सामने आते है और जब उनको देवत्व से परिवेष्टित किया जाता है तब दूसरो को उनके प्रतिकूल पतित नायको के रूप मे दिखाया जाता है।

### पुस्तको के नायक के रूप में

वाशिगटन का सम्पूर्ण जीवन प्राय १८ वी शताब्दी मे बीता, किन्तु वे प्रमुखतया १९ वी शताब्दी के आगल-भाषा-भाषी ससार की

सृष्टि थे – उस ससार की जिसकी विशेषता थी व्यस्तता, उपदेश एव धार्मिकता पर जोर । इस युग मे छोटी-छोटी पुस्तके, प्रारम्भिक पाठमालाये, चेम्बर महोदय के अनेक विषयक लेखो के सग्रह, मैकगफे की पाठ्य पुस्तके, सैम्युल स्माइल्ज तथा होरेशो एल्जर की कृतिया, यान्त्रिकी सस्थाये, अरस्तु के धर्मोपदेश, स्व-हस्तलिखित एल्बम, भेट-स्वरूप दिये जाने वाले वार्षिक ग्रन्थ सर्वप्रिय थे । उस समय मडियो तथा पुलो के उद्घाटन होते थे, शिलान्यास की रस्मे अदा की जाती थी, पारितोषिक एव प्रमाण-पत्र वितरित होते थे, मद्यसेवियो का तर्जन और उद्धार किया जाता था तथा दासो को स्वतन्त्र किया जाता था । डेविड रीस्मैन की सरल शब्दावलि मे इसे 'अन्तर्निर्दिष्ट व्यक्तित्व' का युग कहना चाहिये । इसमे उन गुणो का समावेश आवश्यक समझा जाता है जो स्माईल्स महोदय द्वारा लिखित विविध पुस्तको के नामो – स्वावलम्बन, मितव्ययता, कर्तव्यपरायणता, सच्चरित्र आदि नामक पुस्तको से प्रकट होते है, अथवा जो एमर्सन की छोटी कविता 'सच्चरित्र' मे उपादेय समझे गए है । इस कविता मे एमर्सन कहते हैं –

तारे डूबे, किन्तु उसकी आशा नही डूबी ।
तारे निकले, उसकी निष्ठा उससे पूर्व आविर्भूत हुई ।

तारामण्डल से भरे विस्तीर्ण आकाश पर उसने गहरी और चिरकाल तक दृष्टि गाडी ।

उसका तप और त्याग उसकी निष्ठा के अनुरूप थे । उस समय की स्तब्धता ।

जार्ज वाशिगटन के विषय मे जो भी सामान्य धारणा है उसमे चरित्र का प्रमुख स्थान है, जैसा कि हमने ऊपर उनको शेक्सपीयर की तुलना मे देखा है । लार्ड ब्राह्म भी यही सम्मति रखते थे । वे कहते है – 'मनुष्य जाति की प्रगति की कसौटी इस बात मे होगी कि वह वाशिगटन के उच्च चरित्र की कहा तक कदर करती है ।'

पार्सन वीम्स एक साहसी लेखक था । विक्टोरिया युग से पहले

होते हुए भी उसकी विचारधारा विक्टोरिया कालीन थी। वह सर्वप्रथम व्यक्ति था जिसने वाशिंगटन को उन्नीसवी शताब्दी के आदर्शो के अनुरूप प्रस्तुत किया। सन् १८०० मे बीम्स ने अपने प्रकाशक को विस्तार से बताया कि वाशिगटन महोदय की जीवनी लिखने का उसका क्या प्रयोजन है। अपने पत्र मे उसने लिखा है कि उसका उद्देश्य उस महापुरुष के 'इन महान् गुणो को (ससार के सामने) लाना है – १ – उनकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, अथवा उनके धार्मिक सिद्धान्त, २ – उनकी देश भक्ति, ३ – उनकी उदारता, ४– उनका अध्यवसाय, ५– उन की मदिरादि से अरुचि तथा धीर-गम्भीर स्वभाव, ६– उनकी न्याय-प्रियता, इत्यादि।' सक्षेप मे यह पाठ्य-पुस्तको के नायक के गुणो की रूपरेखा है।

यद्यपि बीम्स स्वय इतने उदात्त विचारो का नही था जितना कि उसके इस कथन से प्रकट होता है, तथापि इसमे सन्देह नही कि वाशिंगटन के लिये उसके हृदय मे उतना ही आदर और भक्ति थी जितनी कि किसी भी अमरीकी को उनके लिये हो सकती है। बीम्स ने उस प्रकाशक से यह बात भी कही कि इस तजवीज से उन्हे 'रुपया और लोकप्रियता' दोनो प्राप्त हो सकते है। अत वह घटनाओ को गढने से नही चूका। न ही उसने अपने आप को माऊट वर्नन के अस्तित्वहीन गिरजाघर का 'पादरी' कहलाने से सकोच किया। उसकी इस छोटी सी पुस्तिका ने कपोल-कल्पित कहानियो के समावेश के कारण धीरे-धीरे एक ग्रन्थ का आकार धारण कर लिया। उदाहरणार्थ उसने एक कहानी वाशिगटन के चेरी के पेड काटने के बारे मे लिखी, जिसमे वाशिगटन के मुख से कहलाया गया – 'पिता जी, मै झूठ नही बोल सकता। मैंने ही इस पेड को अपनी कुल्हाडी से काटा था।' इस पर वाशिगटन के पिता आनन्द-विभोर हो कर बोले – 'मेरे बेटे! मेरी आँखो के तारे! मेरी गोदी मे आ जाओ।' एक और कहानी मे दिखाया गया है कि वाशिगटन अपने विद्यालय के छात्रो को परस्पर लडने के कारण झिडक रहे है।

यह लिपिवद्ध घटना बाद मे धीरे – धीरे उनके जीवन सम्बन्धी अभिलेखो से निकाल दी गई, क्योकि आनेवाली पीढियो ने इसमे दम्भ की बू पाई । इस कहानी मे वाशिगटन अपने विद्यालय के साथियो से कहते है – 'साथियो ! आपके इस बुरे आचरण को मै कभी पसन्द नही कर सकता । दासो और कुत्तो मे भी आपसी झगडा और लडाई बुरी मानी जाती है, फिर विद्यालय के बालको मे इस प्रकारका घृणित आचरण पाया जाय तो यह बहुत बदनामी की बात है । आप बालको को आपस मे भाई-भाई की तरह रहना चाहिये ।'

बालक वाशिगटन के बल का परिचय देने के लिये एक घटना मे बताया गया है कि उसने रैंपाहैनौक नदी के दूसरे तीर पर पत्थर का टुकडा फेका । उसकी प्रशसा करते हुए ग्रन्थ मे कहा गया – 'आधुनिक समय मे ऐसा आदमी मिलना कठिन है जो इतनी दूर पत्थर फेंक सके ।' ब्रैडाक की हार मे सौभाग्य से ही वाशिगटन की प्राणरक्षा हुई थी । इस बारे मे एक ऐसे प्रसिद्ध इण्डियन योद्धा की कहानी कही जाती है जिसको उस निर्मम, दु खान्त सग्राम मे प्रमुख भाग लेने वाला दिखाया गया । वह प्राय सौगन्ध उठा कर कहा करता था – 'वाशिगटन गोली से मरने के लिए पैदा ही नही हुए थे । मैने इस लडाई मे १७ गोलिया उन पर चलाईं, पर निशाना लगने पर भी मै उन्हे धराशायी नही कर सका ।' एक और घटना का यो वर्णन किया गया है – 'जहा तक मुझे याद है, पोटस नाम के एक क्वैकर ने, वाशिगटन महोदय को फोर्ज घाटी मे प्रार्थना करते पाया ।' जैसे ही वह उस स्थान मे पहुचा, वह यह देख कर अचम्भे मे आ गया कि अमेरिका की सेनाओ के प्रधान-सेनापति घुटनो के बल प्रार्थना मे तल्लीन है ।' इसी प्रकार की अनेक कहानिया उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठो मे मिलती है ।

होरेशो एलजर के समान ही बीम्स ने इस सारी पुस्तक मे निरन्तर रूप से यह हृदयाकित करने की चेष्टा की कि किस प्रकार

कर्त्तव्य-परायणता और लाभ – यह दोनो साथ-साथ चलते है। जार्ज वाशिगटन ने अपने बडे भाई के साथ सदैव सज्जनता का व्यवहार किया। इसके परिणामस्वरूप उनके बडे भाई की मृत्यु के बाद सारी जायदाद उन्हे उत्तराधिकार मे मिली, क्योकि सिवाए एक बीमार शिशु के उनके भाई की कोई और सन्तान नही थी। इसी प्रकार आदर्श शिष्ट व्यवहार के कारण ही बाद मे कस्टिस नामक विधवा ने, जिसकी अपनी सम्पत्ति एक लाख डालर के करीब थी, उनके साथ विवाह करना मजूर किया।

इस प्रकार के धर्मोपदेश अपना प्रभाव डाले बिना कैसे रह सकते थे ? १८२५ तक बीम्स द्वारा लिखित जीवनी के चालीस सस्करण निकले और बाद मे चालीस सस्करण और छपने वाले थे। चेरी पेड वाली कथा जो अन्त मे आकर मैक्गफे की अत्यन्त लोकप्रिय पाठमाला मे ले ली गई, पाठ्य-पुस्तक परम्परा मे विशेष रूप से सर्वप्रिय हुई। सन् १८६३ मे मौरीसन हैडी ने वाशिगटन की अल्पकाय जीवनी छपवाई जिसका नाम था – 'किसान का लडका किस प्रकार प्रधान-सेनापति बना'। इसमे अनेक नई बाते आविष्कृत करके जोड दी गईं। चेरी पेड वाली कहानी मे हैडी ने अनेक नई बातें जोड दी। उसने बतलाया कि पेड काटने का आरोप एक नीग्रो बालक पर लगाया गया था और वाशिगटन ने स्वय अपना अपराध स्वीकार करके उसकी निर्दयतापूर्वक बेतो से दी जाने वाली सजा से रक्षा की। वास्तव मे उस धर्म-निरपेक्ष सत-चरित्र काल मे वाशिगटन का सम्बन्ध चेरी पेड से उसी प्रकार जोडा गया जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र मे सेट लारेस और सेट कैथरीन का सम्बन्ध क्रमश छड लगे ढाचे तथा पहिये से जोडा जाता है – या यू कहिये कि जिस प्रकार न्यूटन और विलियम टैल्ल का सेबो के साथ, वाट का केतली के साथ, ब्रूस का मकडी के साथ, कोलम्बस का अण्डे के साथ, एलफ्रेड का रोटियो के साथ और फिलिप सिडनी का पानी की बोतल के साथ।

जहा तक वाशिगटन महोदय का सम्बन्ध है, उनके साथ केवल

एक घटना ही नही जोडी गई, किन्तु अनेक अलौकिक बाते उनके समस्त जीवन के साथ जोड दी गईं। क्रान्ति-सम्बन्धी लडाई के दौरान मे जो उन्होने हिसाब-किताब रखा, उसका ठीक-ठीक प्रतिरूप मुद्रित किया गया — यह प्रमाणित करने के लिये कि वे अपने राष्ट्र के लिये कितने मितव्ययी थे और उनमे कार्य-कुशलता कितनी उच्च-कोटि की थी। बीम्स तथा अन्य लेखको द्वारा उनके धार्मिक विचार उन्नीसवी शताब्दी की धाराओ के साचे मे ढाले गये। एक कहानी है कि वह एगलीकन चर्च छोड कर फ्रैसबाई-टेरियन समुदाय मे शामिल हो गये। एक और कथा के अनुसार वे गुप्त रूप से बैप्टिस्टो मे शामिल हो गये। हमे इस बात पर बल देने की आवश्यकता प्रतीत नही होती कि इस प्रकार की समस्त धारणाए, चाहे वे बीम्स के उपजाऊ मस्तिष्क से निकली हो या किसी अन्य स्रोत से, विवरण के विचार से असत्य थी तथा अधिक व्यापक दृष्टिकोण से इतिहास के प्रतिकूल थी। बीम्स और उसके अनुगामी लेखको ने वाशिगटन की जीवनी, अपना ज्ञान व पाण्डित्य प्रदर्शन करने के ख्याल से नही लिखी थी। उनका बिल्कुल जाना-बूझा अभिप्राय यह था कि वाशिगटन के जीवन से लोगो को शिक्षा मिले और इसीलिए कथा को खूब सजाया जाय। यही कारण है कि लोग बीम्स की प्रशसा मे, जिसे बीम्स की पुस्तक के मुखपृष्ठ पर उद्धृत किया गया है, हैनरी ली के साथ अक्षरश सहमत है। प्रशसा करते हुए ली ने कहा है — 'उस (अर्थात् बीम्स) से अधिक कौन प्रशसा के योग्य होगा ? उसका पुस्तक लिखने का मुख्य उद्देश्य तरुणो के अन्दर उन श्रेष्ठ गुणो के लिये गहरा अनुराग पैदा करना है, जिन्हे साकार रूप से उसने ऐसी विभूति मे दिखाए है, जिसे सब राज्य सर्वाधिक प्यार करते है।' वाशिगटन की चित्रमयी जीवनी, जो १८४५ मे छपी, के लेखक होरेशो हैस्टिंग्स वैल्ड ने कहा है — "शिशु जब पहले पहल बोलना सीखे, तो पहला शब्द 'माता' होना चाहिये, दूसरा, 'पिता' और तीसरा, 'वाशिगटन।'

हम यह महसूस करते है कि बीम्स तथा अन्य लेखक जिन्होने आचार-धर्म के सम्बन्ध मे शिक्षाएँ देने की बात सोची, इस बात मे किसी हद तक दोषी है कि उन्होने वाशिगटन की सारी धारणा को धुधला कर दिया है। हा, उनके बचाव मे हम यह जरूर कह सकते है कि वे वार्शिगटन को मिट्टी के यन्त्र मे परिवर्तित नही करना चाहते थे। वे भली भाति जानते थे कि लोग इस ओर प्रवृत्त हो सकते है। बीम्स ने लिखा — 'वाशिगटन की प्रशसा मे की गई बहुत सी सुन्दर वक्तृताओ मे उस महापुरुष के बारे मे आप बादलो के नीचे पृथ्वी तल पर कुछ भी नही देखते। — केवल एक वीर पुरुष और अर्ध-ईश्वर के रूप मे वे दृष्टिगोचर होते है। — वाशिगटन जो सभा मे सूर्य की न्यायी चमकते थे और समर-भूमि मे तूफान की तरह दिखाई देते थे।' बीम्स उन्हे मानवीय स्वरूप देना चाहता था। वह यह भी चाहता था कि उन्हे 'कापीबुक' (पाठ्य-पुस्तकीय) चरित्र के रूप मे भी पेश किया जाय। निश्चय ही बीम्स की प्रवाहमयी कहानी मे रसहीन कोई चीज नही दीखती। इस सरसता के कारण ही एक शताब्दी तक वह सारे राष्ट्र पर एक नकली वाशिगटन लाद सका।

इसमे शक नही कि बीम्स इस बात का दावा कर सकता है कि यदि लोग इसे असत्य समझते, तो वह ऐसा करने मे असमर्थ रहता। वाशिगटन के कुल का आदर्श-वाक्य था —'परिणाम से कार्य के अच्छे-बुरे का अनुमान होता है।' उसे अपने लिये ठीक-ठीक जचने के लिए तथा उसकी कल्पित कहानियो के प्रमाणीकरण के लिए बीम्स ने उसे इस प्रकार गलत तरीके से अनूदित किया— 'साध्य स्वत साधन के औचित्य को सिद्ध करता है।' उसने वार्शिगटन का चित्रण ऐसा मानव मान कर किया, जिसके अन्दर न सिर्फ कोई दोष ही नही पाया जाता, बल्कि जिसमे उन्नीसवी शताब्दी की धारणा के अनुसार — जैसे साहस से लेकर समय पर उपस्थित होने तक, विनयशीलता से लेकर मितव्ययता तक समस्त मानवोचित गुण मिलते है, जिनके कारण सफलता मनुष्य के चरण चूमती है।

## अपने राष्ट्र के पिता के रूप में

यह ठीक है कि अनेक लोगो की नजरो मे वाशिंगटन भूमितल से ऊपर बादलो मे ही वास करते थे। हैनरी ली के उन शब्दो को अनेक बार दोहराया जाता है कि 'वाशिगटन लडाई के समय सब से आगे दिखाई देते थे, शान्तिकाल मे वे अग्रणी हुआ करते थे और अपने देशवासियो के हृदय मे भी उनका स्थान सर्वप्रथम ही हुआ करता था।' वे केवल कालक्रम के अनुसार ही नही, बल्कि भावनाओ के विचार से भी सर्वप्रथम थे। वे अमेरिका के सर्वप्रथम प्रधान सेनापति रहे और इस देश के पहले ही राष्ट्रपति थे। वे अपने देश के प्रमुख वीर पुरुष थे, जो हर नये देश की आवश्यक सृष्टि हुआ करती है। अत जब 'जार्ज गुइत्फ' (अर्थात् जैफसेन) के बदले जार्ज वाशिंगटन को स्थान मिला, तो ऐसा होना स्वाभाविक ही था। न्यूयार्क मे भी इसी ढग का प्रतिस्थापन हुआ था जबकि जार्ज ३ की विनष्ट पत्थर की मूर्ति के निचले भाग पर वाशिगटन की मूर्ति खडी की गई। इस कारण योरूप-निवासी यात्री पाल स्विनिन ने जार्ज से इतना पहले सन् १८१५ मे टिप्पणी करते हुए लिखा था—'हर अमेरिका-निवासी यह अपना पुनीत कर्तव्य समझता है कि अपने घर मे वाशिंगटन का चित्र अथवा मूर्ति रखे, जिस प्रकार कि हम भगवद्भक्त सन्तो की प्रतिमूर्तियाँ बडे उत्साह से अपने यहाँ रखते है। अमरीकियो की राय मे वाशिगटन जहाँ उनके राष्ट्र निर्माता थे, वहा उनकी मान-मर्यादा के भी रक्षक थे। वे देश-भक्त महात्मा तो थे ही, साथ ही साथ वे धार्मिक आदर्शो और विश्वासो के प्रतिरक्षक भी थे। इस प्रकार वे विचित्र रूप से मानो चार्लमैगने, सैंट जोन और नेपोलियन बोनापार्ट—तीनो के सम्मिश्रित प्रतिरूप थे।

वाशिगटन के बाद केवल अब्राहम लिकन ही ऐसे महापुरुष हुए जिन्होने राष्ट्र मे उनके सदृश यश-कीर्ति प्राप्त की। कई पहलुओ से आज लिंकन को वाशिगटन से बढ कर सुयोग्य वीर-पुरुष माना जाता है। राष्ट्र के अभिलेखो मे लिकन का दूसरा उद्घाटन-

सम्बन्धी भाषण वाशिंगटन के विदाई-भाषण की तुलना मे, पुरानी 'बाईबल' के मुकाबिले मे नयी 'बाईबल' लगता है तथापि लिंकन आज भी ऐसे मानव के रूप मे माने जाते है जो कालचक्र के परि-णामो से मुक्त न थे और उन पर समय के छीटे भी पडे। कोई भी लिकन को ब्रूमिडी के 'वाशिगटन गुण-कीर्तन' सरीखे रगीन-चित्र मे पाने की कल्पना नही कर सकता। ब्रूमिडी का यह चित्र ससद् भवन की गुबद पर है जिसके एक ओर स्वतन्त्रता देवी विराजमान है और दूसरी ओर विजय। न ही कोई इस बात की कल्पना कर सकता है कि यदि कोई लिकन के विषय मे गल्पात्मक विवरण पेश करे, तो कोई अमरीकी समालोचक उस पर किसी किस्म की आपत्ति उठा सकता है। इस विषय मे अपवाद-स्वरूप केवल रौबर्ट ई० ली को कहना चाहिये।

थैकरे ने जब अपनी पुस्तक 'दी वर्जीनियनस' मे वाशिगटन के सम्बन्ध मे कुछ बाते कही थी, उस पर अमेरिका मे काफी नुक्ताचीनी हुई। एक आलोचक ने क्रोधावेश मे लिखा —'यह सफेद झूठ है। वाशिगटन अन्य मनुष्यो के समान नही थे। उनके उदार चरित्र को साधारण जीवन के अशिष्ट मनोविकारो के स्तर पर ले आना मानव-जाति के इतिहास के एक गौरवमय अध्याय को झुठलाना है।' एक दूसरे आलोचक ने थैकरे को धमकाते हुए लिखा —'वाशिगटन का चरित्र हमे निष्कलक रूप से परम्परा से मिला है। यदि तुम इस प्रकार की छोटी-छोटी मूर्खता की बाते, जो अन्य बडे आदमियो मे पाई जाती रही है, उनके जीवन के साथ भी जोडोगे, तो वाशिगटन की वही शानदार अलौकिक छाया जिसको तुम ने याद किया है और जो वैसी ही पवित्र और निर्मल है, जैसी कि वह हौडन की बनी हुई मूर्ति मे तुम्हे दीखती है, वह तुम्हारे पास पहुँचेगी और अपनी शान्त, तर्जनापूर्ण दृष्टि से तुम्हे ऐसा चुप कराएगी कि तुम्हारी सब बकबक बन्द हो जायगी।'

इसमे शक नही कि यह गजब की धमकी है और इससे ज्ञात होता है कि एक शताब्दी पूर्व अमेरिका मे वाशिगटन के सम्बन्ध मे

कितनी गहरी श्रद्धा की भावना मौजूद थी। जैयर्ड स्मार्कस ने इसी प्रकार की ही प्रतिरक्षात्मक गहरी प्रतिष्ठा उस समय अभिव्यक्त की, जबकि उसने सन् १८३० मे वाशिगटन की चिट्ठियो का सग्रह सम्पादित किया। बाद मे उस पर यह आरोप लगा कि उस सग्रह मे इसलिए हेरफेर किया गया कि वाशिगटन को अधिक गौरवपूर्ण प्रकाश मे पेश किया जाय। उसके सम्पादन करने के तरीके भी आधुनिक मापदण्डो के अनुसार दोष-पूर्ण नजर आते है। इन मे इतनी लापरवाही दृष्टिगोचर होती है कि किसी के लिए भी उपयुक्त प्रणाली की कोई स्पष्ट रेखा देख पाना बहुत कठिन है। इसमे जरा भी असत्य नही कि स्पार्कस ने कुछ ऐसे अश छोड दिए अथवा बदल दिए जिन्हे अशिष्ट माना जा सकता था। हम यहाँ ऐसे ही दो कुख्यात उदाहरणो का उल्लेख करते है। वाशिगटन ने जिसको 'ओल्डपुट' कहा था उसको 'जनरल पुटनम' बताया गया। और जहा 'किन्तु इस समय भी थोडी बहुत असुविधा' कहा गया था वहा उसको 'हमारी इस समय की आवश्यकताओ के लिए सर्वथा अपर्याप्त है' कर दिया गया। जाने-अनजाने मे स्पार्कस, जो वैसे कई तरह से सुयोग्य इतिहासकार था, इस अमरीकी विश्वास को प्रतिबिम्बित करता था कि 'वाशिगटन अन्य मनुष्यो की भाति नही थे'। अत उनमे किसी प्रकार की खामी को स्वीकार करना अमेरिका के मान्यताओ के ढाचे पर वार करना था। इस विषय मे जे०पी० मार्गन ने भी एक धार्मिक प्रतिरक्षक के रूप मे ही कार्य किया जब कि १९२० के आस-पास उसने वाशिगटन द्वारा लिखित कुछ पत्र जो उसके हाथ लगे थे इसलिये जला डाले कि वे 'छपने के योग्य नही थे'। यही कारण था कि बेनीडिक्ट आर्नल्ड जैसे लोगों को जिन्होने वाशिगटन से तथा अपने देश से विश्वासघात किया था अमेरिका मे सर्वत्र घृणा की दृष्टि से देखा गया। वे लोग न केवल विद्रोही ही माने गये, अपितु इसलिये दोषी भी ठहराये गये कि उन्होने पवित्रता को नष्ट किया।

यह सब होते हुए भी अमेरिका मे कुछ ऐसे लोग भी थे जो

वाशिगटन के इस अन्धाधुन्ध पूजन से खीझ गये थे। इन लोगो मे जान एडम्ज का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे अनुभव करते थे कि खुशामद अपनी सीमा को बहुत कुछ उलाघ गई है। उदाहरण के लिए उन्होने इस कथन की ओर सकेत किया जिसमे कहा गया था कि परमात्मा ने वाशिगटन को इसलिये सन्तान-रहित रखा कि वे समस्त राष्ट्र के पिता बन सके। किन्तु एडम्स भी उन लोगो मे से थे जो विदेशियो के किसी भी दोषारोपण से वाशिंगटन की रक्षा करने को सर्वदा उद्यत रहते थे। कारण यह कि वे अमेरिका मे जन्मे थे। उन लोगो का यह कहना था कि वाशिगटन मे विद्यमान गुण अमेरिका की मिट्टी के गुण है, न कि इसके उलट। उनके मन मे वाशिंगटन इसलिये महान् थे, क्योकि इस देश की मिट्टी इस प्रकार के गुणो का विकास करती है और उन्हे अन्तिम रूप देती है।

इस प्रकार वाशिंगटन के बारे मे दो प्रकार की धारणाए दृष्टिगोचर होती हैं। एक यह कि वे अमेरिका की जनता के पिता थे और इसलिये अतिश्रेष्ट अमेरिकन थे। दूसरी धारणा यह कि वे अमेरिका के प्रतिनिधि स्वरूप थे। किन्तु दोनो दशाओ मे, जैसा कि रुफुस ग्रिसवोल्ड ने कहा था, उन्होने अपने आपको अतुल्य अश तक "अपने देश से एकात्मक कर लिया था"। 'वे अपने देश का दिल और दिमाग थे। यह देश उनकी प्रतिमूर्ति तथा निर्देशन-मात्र था।' नाम के विचार से यह नितान्त सत्य है। हमने जैसा कि पहले देखा है, वाशिंगटन का नाम सम्पूर्ण अमेरिका के कोने कोने मे फैला और इसे मनुष्यो तथा स्थानो के लिये अपनाया गया। एक अमेरिकी सज्जन वाशिगटन इर्विग हुए। वाल्ट ह्विटमैन के एक भाई जार्ज वाशिगटन ह्विटमैन कहलाए। भूतपूर्व दास-बालक, बुकर टेलियाफेरो ने 'वाशिंगटन' शब्द को उपनाम के रूप मे अपनाया—मानो यह एक प्रकार से अमेरिका की नागरिकता को धारण करना था।

## नि स्वार्थ देश-भक्त के रूप में

यह सत्य है कि राष्ट्र-पिता के रूप मे वाशिंगटन का अनुपम स्थान है, यद्यपि किंचित न्यून अश मे बैंजामिन फ्रैंकलिन उनके साझीदार बनते हैं। जान एडम्स ने एक बार खीझते हुए लिखा—'ऐसा लगता है कि हमारा क्रान्ति का इतिहास एक सिरे से दूसरे सिरे तक निरन्तर झूठ पर आधारित रहेगा। लोगो के कहने का सार यह हुआ कि डाक्टर फ्रैंकलिन ने विद्युत् दण्ड जमीन पर मारा और जनरल वाशिंगटन पृथ्वी के भीतर से बाहर निकल आये और फिर फ्रैंकलिन महोदय ने अपने डण्डे से उन्हे विद्युतित किया और तदनन्तर दोनो मिलकर नीति-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार, सविधान-सम्बन्धी कार्यवाहिया तथा लडाई आदि का सचालन करते रहे।'

निस्स्वार्थ देश-भक्त के रूप मे वाशिंगटन कुछ एक चुनी हुई विभूतियो मे से थे। अमेरिका मे दो सर्वाधिक शक्तिशाली पदो पर सुशोभित हुये रहने के पश्चात्, लगभग सभी ऐतिहासिक परम्परा के विरुद्ध उन्होंने उन पदो का त्याग करके दो बार वैयक्तिक जीवन मे प्रवेश किया। उनकी इस प्रकार की विनम्रता से आश्चर्यचकित हो कर लोगो ने उनकी तुलना कोरिन्थ के टिमोलियन से की कि जिसने सिसली मे शान्ति स्थापित करके वही एकान्त का जीवन बिताया था। लोग उनकी तुलना सिनासिनेटस से भी करते है, जिसके विषय में कहा गया है—

'इस प्रकार प्राचीन काल मे रोम के आदेश पर एक विख्यात किसान, सिनसिनेटस, अपने हथियार ले कर लडाई के मैदान मे उतरा। उसने शीघ्र ही अहकारी वालनाई सैनिको को मैदान में हरा कर अपने अधीन किया, अपने देश को बचाया और जब उसने महिमापूर्ण विजय पा ली, तो वह अपने खेतो को पहले की तरह जोतने लगा।'

ये पक्तिया, जिन्हे मेरीलैण्ड के कवि चार्लेस हेनरी वार्टन ने लिपिबद्ध किया था, 'कविता के रूप मे लिखी गई साहित्यिक रचना'

से ली गई है, जो सन् १७७९ मे वाशिगटन को सम्बोधित करते हुए की गई थी ।

वाशिगटन की तुलना एडीसन के नाटक के पात्र छोटे केटो से की जा सकती है । इस नाटक की इन दो पक्तियो को—वाशिगटन बडे चाव से उद्धृत किया करते थे —

'सफलता मनुष्य के वश की चीज नही ।' तथा

'अपना वैयक्तिक दर्जा ही प्रतिष्ठा का पद है ।'

लोग वाशिगटन की विरोधी तुलना उन असख्य लोगो से कर सकते है, जिन्हे उनके मुकाबले मे स्वार्थी देश-भक्त कहा जा सकता है । इनके अन्तर्गत सुला, सीजर, वेलन्स्टीन, क्रामवेल और इन सबसे अधिक बद्धहित देशभक्त उनका समकालीन नैपोलियन आ जाता है । वाशिगटन और नैपोलियन का पारस्परिक व्यतिरेचन आश्चर्यजनक रूप से बिलकुल स्पष्ट है । बायरन, जिसने इस सम्बन्ध मे वाशिगटन को 'पश्चिम का सिनसिनेटस' कहकर पुकारा था, उन अनेक लोगो मे से था जिन्होने इस विषय मे अपनी कलम उठाई थी । इसके अतिरिक्त जो इने-गिने निष्काम देशभक्त माने जाते है, सूक्ष्म जाच करने पर उनके कई एक कार्य अवाछनीय से प्रतीत होते है । प्लूटार्क के शब्दो मे —

'किन्तु अन्य महान् नेताओ के यशस्वी कामो मे भी हम हिसा, पीडा और श्रम का सम्मिश्रण पाते है, यही कारण है कि उनमे कई एक तो भर्त्सना से और अन्य पश्चाताप से प्रभावित हुए है ।'

यह प्लूटार्क के शब्द टिमोलियन की प्रशसा मे लिखे गए । किन्तु प्लूटार्क को यह स्वीकार करने मे सकोच नही कि एक बार टिमोलियन ने भी दुष्टतापूर्वक व्यवहार किया था । इससे जाहिर है कि विशुद्ध देश-भक्तो के समुदाय मे सिवाए अर्धकाल्पनिक लूसियस किकटीयस सिनसिनेटस के कोई और जार्ज वाशिगटन से टक्कर नही ले सकता । इस उच्चकोटि के समुदाय मे हम कई और नाम भी जोड सकते है — जैसे, एपाभीनौडस, एजीसीलास, ब्रूटस और कई एक अन्य । वाशिगटन ने इस समुदाय मे जो स्थान प्राप्त

किया है उसके कारण हमारी उनके बारे मे जो अवास्तविक कल्पना है वह पहले से भी अधिक स्वप्नवत् और कालचक्र से असम्बन्धित हो जाती है । इस बारे मे जो उन्होने कार्य किया, वह अमेरिका के उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भिक शास्त्रीय पुनरुन्नयन से बहुत मेल खाता है, यद्यपि यह सत्य है कि यह बीम्स के अधिक सुखद और गृह्यक विचार-धारा से कुछ-कुछ विपरीत चला जाता है । हमे यह भूलना नही चाहिए कि सन् १८४० के आस-पास वाशिंगटन के वृहदाकार सगमरमर के बुत का उपहास किया गया था । यह बुत होरेशो ग्रीनोफ ने बनाया था, और इसमे वाशिगटन को चोगा पहने हुए दिखाया गया था । एक पर्यटक ने, जो ग्रीनोफ की कृति देखने के लिए गया था, देखा कि 'किसी श्रद्धाहीन नास्तिक ने मेहनत से ऊपर चढ कर एक बडा वनस्पति-सिगार अमरीकी जनता के पिता के होठो के बीच खिसका दिया है । — "मै यह सोचने पर मजबूर हो गया कि यदि वाशिगटन की मूर्ति को ओल्यम्पिक जोव के तुल्य निर्मित करने की बजाए उनके अपने अनुरूप बनाया गया होता, तो वह आवारा व्यक्ति, जिसने सिगार-सम्बन्धी अनुचित कार्य किया, स्वप्न मे भी ऐसा अपवित्र काम करने का साहस न करता ।"

### क्रान्तिकारी नेता के रूप मे

वाशिगटन के बारे मे यह धारणा मुख्य रूप से अमरीका से बाहर मौजूद थी कि वह क्रान्ति की नीव डालने वाले है । इस ख्याल मे विशेष रूप से उनके जीवन की अन्तिम दशाब्दी मे जोर पकडा, यद्यपि इसकी गूज अगले सौ वर्षों मे रही । इस धारणा मे विशेष विचारधारा की पुट मिलती है, जिसके अनुसार वाशिगटन प्रमुख अधिनायक, अपने राष्ट्र के बधन-मोचक, राष्ट्रीयता के प्रति-रक्षक तथा आधुनिक समय की क्रान्ति मे सबसे महान विजेता के रूप मे माने गए । इस क्रान्तिकारी नेता की हैसियत मे वह उस समिति के अध्यक्ष जान पडते है जिनके सदस्य उग्रवादी, साहसी और वीरतापूर्वक लडने वाले थे और जिनमे हम लिफायट, मैडियस,

कॉंसी अस्को, टाऊसैण्ट लाऊवर्चर, बालीवर तथा गेरीबाल्डी को प्राय गिना करते है। उस समिति मे कुछ स्थान ऐसे भी है जो इमलिए खाली पडे है क्योकि इन स्थानो को घेरने वालो ने अपने अशोभनीय व्यवहार के कारण अपने आप को कलकित कर लिया था। इस श्रेणी मे हम आइटरबाइड तथा उसके अन्य साथियो को शामिल कर सकते है।

फासीसियो के लिए वाशिगटन का विशेष महत्व था। इसका कारण यह था कि वह स्वय अमरीका के आदर्श पर फास मे क्रान्ति लाने का प्रयास कर रहे थे। फास के लोग उनके नाम का उच्चा-रण विविध प्रकार से करते थे—यथा, 'वासिंगटन', 'वाशिंगटन', अथवा 'वास्सिगटन'। फासीसियो के लिए वाशिगटन एक प्रकार से क्रान्ति के प्रतीक बने, जिनका उन्होने अपने नाटको मे भी उल्लेख किया। इस प्रसग मे बिलाईन डी सौविगने के नाटक 'वासिंगटन ऑला लिब्रर्टट डू वौविओ भोण्डे' का नाम उल्लेखनीय है। यह चार अको का दुखान्त नाटक है और इसे सन् १७४१ मे पेरिस मे पहली बार खेला गया।

जब दक्षिण अमेरिका के देशो ने स्पेन के शासन के विरुद्ध विद्रोह किया, तब भी वाशिंगटन उनके लिए एक क्रान्ति के प्रतीक बने। बाद मे उन सब देशो के लिए भी वाशिंगटन प्रेरणा के स्रोत बने जिन्होने अपने यहाँ क्रान्तिकारी सग्राम का सूत्रपात किया। इन लोगो की नजरो मे वाशिंगटन एक ऐसे नागरिक सैनिक थे, जिन्होने क्रान्ति लाने के लिए नागरिक सेना की कमाड अपने हाथो मे सम्भाली। इस नागरिक सेना (अथवा अग्रेजो की दृष्टि मे 'लुटेरे गिरोह') के सरदार की हैसियत मे वाशिगटन को भीषण परिस्थि-तियो का सामना करना पडा। उनका हथियारबन्द सेना द्वारा पीछा किया गया। उन्हे जगह-जगह निराशाओ का मुँह देखना पडा। उन्हे अकेले ही सारा काय-भार सम्भालना पडा। तथा अपने से बहुत अधिक सख्या मे शत्रु सेना से लोहा लेना पडा। इस पर तुर्रा यह कि घोर शीत की रातो में जाग-जाग कर चौकसी

करनी पडी । एक तरफ तो वाशिगटन के सैनिक थे जो भूखे पेट थे और जिनके पहनने के लिए जूते तक नही थे । दूसरी ओर जिस शत्रु-सेना से उन्हे जूझना पडा उसका व्यवसाय ही लडना-मरना था । और उसे पहनने को बढिया वर्दी और खाने पीने को विपुल और उत्तम भोजन मिलता था । वाशिगटन के सैनिक यद्यपि फटा-पुरानी वर्दी मे थे, तथापि वे लोकहित के लिए अपने प्राणो तक को भी न्योछावर करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे । एक कहानी है कि इन्ही सैनिको के नामो पर ही फ्रासीसी क्रान्तिकारियो के नामकरण हुए ।

निस्सन्देह वाशिगटन महोदय का कार्य दुष्कर था, किन्तु लक्ष्य की महानता तथा टामपेन की ओजस्वी लेखनी ने उनके उत्साह को बचाए रखा । उन्होने बर्फ की पट्टियो पर मार्ग बनाते हुए, डेलावेयर नदी को पार किया और अन्त मे विजय-श्री प्राप्त की । उन्होने सहायता के लिए भगवान से प्रार्थना की और हाथ जोडे किन्तु अपने मस्तक को ऊँचा रखा ।

इस काल मे कई एक मदमस्त करने वाली विचार-धाराएँ थी—गणतन्त्रवाद, शत्रुओ के विरुद्ध षडयन्त्र, फ्रीमेसन सस्था की सदस्यता, इत्यादि । (लिफायट, मौजर्ट, तथा उस काल के कई अन्य उदार-हृदय यूरोप-निवासियो की तरह वाशिगटन भी फ्री मेसन थे) । यह एक नए युग का आरम्भ था—पहनावे में नए फैशनो का प्रचलन हो रहा था, नए राष्ट्र गान तैयार हो रहे थे और नई प्रकार के ध्वजो का निर्माण हो रहा था । (एक कल्पित कथा के अनुसार वाशिगटन ने बैटसी रौस से मिलकर अमेरिका के नये ध्वज की रूपरेखा तैयार की थी) । उन्ही दिनो लिफायट ने बैस्टिले की मुख्य चाबी यह कहकर वाशिगटन को भेजी कि यह तानाशाही के गढ की मुख्य कुजी है । उस समय लिफायट ने लिखा—'यह एक उपहार है जो मुझे अपने अभिस्वीकृत पिता का पुत्र होने के नाते, अपने सेनापति के 'ऐड-डे-काग' के नाते तथा अध्यक्ष के आदेश पर चलने वाले स्वतन्त्रता के एक प्रचारक

के नाते, भेट-स्वरूप पेश करना ही चाहिए।' (यह उल्लेखनीय है कि जुलाई, १७८९ मे पैरिस के अनियन्त्रित जन समूह ने बैस्टिले को उडा कर भस्मसात् कर दिया था। अत इसको कुजी माउन्ट-वर्नन मे होते हुए भी किसी के लिए असुविधा का कारण नही बन रही है)।

बाद मे, सन् १७८२ मे स्वतन्त्रता के एक और पुजारी और प्रचारक ने अपने अध्यक्ष (वाशिगटन) को नमस्कार किया। यह थे कवि कौलरिज। वह उन दिनो कैम्ब्रिज मे अभी पूर्व-स्नातक कक्षाओ मे अध्ययन कर रहे थे। उस समय उनके रहने के कमरे यथार्थ रूप मे वाम-पक्ष की कोठरिया कहे जाते थे। कौलरिज, यह प्रगट करने के लिए कि वह पूर्व स्थापित व्यवस्था के घोर विरोधी है तथा प्रतिक्रियावाद को समाप्त करके उससे सर्वथा मुक्त होना चाहते है, अपने पानी के कमरे मे जाकर खुल्लमखुल्ला वाशिगटन के स्वास्थ्य की कामना से जल पिया करते थे। इन उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि वाशिगटन उन दिनो इतने व्यापक रूप से एक विशेष विचार-धारा के प्रतीक बन चुके थे।

विलियम ब्लैक की 'अमेरिका' शीर्षक कविता मे वाशिगटन को मूल रूप मे मनुष्य न मान कर अलौकिक पैगम्बर के रूप मे माना गया है। इस कवि ने लिखा है —

'तब वाशिगटन बोले—अमेरिका के बन्धुओ! अन्ध महासागर पर दृष्टिपात करो। एक झुकी-मुडी हुई कमान आकाश मे ऊपर उठाई गई है और एक बोझिल लोहे की जजीर, एक-एक कडी करके, एलबियन की चोटी से समुद्र-तल पर उतर रही है। इस जजीर से अमेरिका के रहने वाले भाइयो और पुत्रो को जकडकर बॉध दिया जायगा। हमारे पीले और कुम्हलाये हुए चेहरो, नतशीर्ष, निर्बल ध्वनियो, झुकी हुई ऑखो, घोर परिश्रम से घायल हाथो, तपती रेत पर पडे लहुलुहान पजो पर पीढियो तक चाबुक पडते रहेगे—उस समय तक जब तक हम अपने उन बन्धनो को भूल न जाये।'

कुछ ही वर्ष बाद क्रान्ति के नायक, वाशिगटन, दक्षिण अमेरिका

मे भी स्वतन्त्रता की भावनाओ को जागृत करने के मूल कारण बने । वहाँ का नेता, बालीवर, उनका आलेख्यात्मक पदक उठाये स्थान-स्थान पर घूमा । उसका यह कहना था कि जहाँ वाशिंगटन और अमेरिका के सयुक्त-राज्य अपने आपको योरुपीय बन्धनो से मुक्त होने मे अग्रणी बने है, वहाँ अन्य अमरीकी देशो के लिए उनका अनुसरण करना कैसे कठिन हो सकता है ? इस प्रकार वाशिंगटन के सिद्धान्त तथा उतना ही महत्वपूर्ण उनका उदाहरण दक्षिणी अमेरिका के लिए पथ प्रदर्शक बने रहे । उनका विदाई भाषण सम्पूर्ण दक्षिण अमेरिका मे उस समय तक सुनाया और उद्धृत किया जाता रहा जब तक कि उसके अन्तर्गत आदेश सयुक्त-राज्य अमेरिका के समान ही प्रभावोत्पादक नही बने । वहाँ के राजनीतिज्ञ वाशिगटन के शब्दो को स्थान स्थान पर दुहराया करते । लोगो ने भवनो के नाम वाशिंगटन के नाम पर रखे । इस प्रकार हम वाशिगटन के जीवन के एक और कार्य की धुधली वाह्य रेखाओ को देखते है जिसे हम उनके जीवन का पाँचवा कार्य कह सकते है और जिसे मौका पडने पर वे सम्भवत अपने हाथो मे ले लेते—और वह कार्य था सर्व-अमरीकीय राज्यो के महान प्रतिभाशाली नेता के रूप मे ।

कहना न होगा कि वाशिंगटन उन अनेक महापुरुषो मे से है जिनकी जीवनी को उत्तरवर्ती पीढियो के प्रयोग के लिए आदर्श रूप मे पेश किया जाता है । प्रत्येक युग अतीत मे अपने लिए प्रेरणा अथवा सुख ढूँढता है । मृत उस समय तक भूत ही रहते है जब तक हम उनसे प्रेरणा पाने के लिए उन्हे याद नही करते । वे हम मे तथा हमारे माध्यम से जिन्दगी पाते है । हमारी उनमे रुचि आत्माभिमान की तुष्टि के लिए होती है । हम उनसे वही सीखने की इच्छा रखते है जो हमारी तबियत और विचारधारा के अनुरूप होता है ।

वाशिगटन महोदय को आधुनिक समय के जाँच स्तर से समझने की चेष्टा करना असगत बात नही है । इतिहासकार भी न्यूनाधिक रूप से यही किया करते हैं, चाहे उनका कोई भी विशेष विषय

क्यो न हो। यह सत्य है कि इन इतिहासकारो मे भी कुछ एक ऐसे भी है जो साक्ष्य सामग्री का प्रयोग करते समय अत्यन्त सावधानी बरतते है। जहाँ तक ऐतिहासिक परिशुद्धता का सम्बन्ध है, हमारे युग मे बीम्ज अथवा जेअर्ड स्पार्क्स के युग से कही अधिक ऊँचा स्तर है। किन्तु क्या कभी ऐसा समय आयगा जब एडॉल्फ हिटलर अथवा फ्रैंक्लिन रूजवैल्ट या चर्चल की भी 'पक्षपात रहित' जीवनी लिपिबद्ध की जा सकेगी ?

वाशिंगटन ही केवल इस प्रकार के महापुरुष नही है जिन्हे दैत्याकार मे बढा-चढा कर पेश किया गया। रोई सो लेल सरीखी अत्यन्त कपोल-कल्पित कहानी के विस्तार के रूप मे लूई १४ ने अपना निजी स्मारक बनाने के लिये अपनी समस्त शक्ति लगाई। मार्लबरो को मूल्यवान सेवाओ के कारण ड्यूक बनाया गया। उसे रहने के लिये इतना बडा महल मिला कि माऊट वर्नन उसकी तुलना मे एक माली की झोपडी दीखती है। अमरीकी-उत्तराधिकारिणी, कन्सुएलो वैण्डर बिल्ट, जिसने मार्ल बरो के एक वशज से विवाह किया था, हमे बतलाती है कि ब्लैनहिम महल के रसोईघर खाने के कमरे से पाच सौ गज की दूरी पर है। (इतने दूर रसोई-घर होने से भोजन के स्वाद मे जो अरुचि उत्पन्न होती होगी, उसे कल्पना मे लाया जा सकता है।)

नैल्सन के कृतज्ञ देशवासियो ने उन्हे वाईकाऊट बनाया और ट्रैफाल्गर की विजय के बाद एक चौरस स्थान का नाम उनके नाम पर रखा। उसी जगह नैल्सन के नाम पर एक बृहदाकार स्तम्भ बडी शान से आज भी खडा है। वैलिंगडन महोदय को भी मूल्यवान सेवाओ की वजह से ड्यूक की उपाधि मिली। साथ ही उन्हे इतनी अधिक सख्या मे प्रतिष्ठा-स्वरूप वस्तुएँ प्राप्त हुईं कि उन्हे देखकर दिमाग चकराने लगता है। (विजयोपहारो की सख्या इतनी ज्यादा है कि उन से एक अच्छा-खासा विचित्रालय भर सकता है।) नैल्सन और वैलिंगडन के नामो पर सैन्य-दलो, स्कूलो, सार्वजनिक भवनो, जगी जहाजो के नाम पडे। कुछ प्रतिष्ठित विदेशियो के नाम भी इन

दोनो महानुभावो के नामो पर रखे गये — जैसे नैल्सन रौकफैलर, वैलिगडन कू इत्यादि ।

नैपोलियन बोनापार्ट आज भी भावी पीढियो के लिये अप्रतिम व्यक्ति है । इस महापुरुष के विषय मे सहस्रो ग्रन्थ लिखे गये । (उनकी सख्या वाशिगटन के सम्बन्ध मे लिखे गये ग्रन्थो से अनुपातत तीन-चार गुणा होगी ।) इन के अतिरिक्त अनेक राजमार्गा का नाम उनके नाम पर होने से तथा सिक्के और नई कानून-पद्धति के प्रचलन के कारण उनका नाम अमर हो चुका है । सक्षेप मे कहना चाहिये कि यदि हम अन्य योरूपीय देशो को छोड भी दे, तो उनका नाम इतना व्यापक है कि वह उनके अपने राष्ट्र की रग-रग मे समाया हुआ है ।

यह सब होते हुए भी सम्भवत इतिहास मे वाशिगटन स्मारक की तुलना मे कोई और वस्तु देखने मे नही आती । उनके बारे मे विविध धारणाये रही और वे एक पीढी से दूसरी पीढी मे जा कर कुछ-कुछ बदलती भी रही । किन्तु उनके विषय मे प्रमुख धारणाये, जिन्हे हमने इस स्मारक के भिन्न-भिन्न पार्श्व कहा है, एक दूसरे से न तो अधिक भिन्न ही है और न ही आज तक किसी ने उनको अविश्वास की दृष्टि से देखा है । क्या कोई भी व्यक्ति जिसने अपने शब्दो को विचारपूर्वक नाप-तोल कर व्यक्त किया हो, वाशिगटन के सिवाय उनके समय के किसी अन्य महापुरुष के बारे मे वह बात कह सकता है जो ग्लैडस्टन ने वाशिगटन के बारे मे कही ? ग्लैडस्टन ने कहा था —

'इतिहास मे वर्णित उन सब महापुरुषो मे से जो अपनी असाधारण सौजन्यता एव आत्मशुद्धि के कारण महान् है, यदि कोई भी मुझे सर्वाधिक महान् दीखता है, तो वह वाशिगटन महोदय है । यदि मुझे गत ४५ वर्ष के दौरान मे कभी एक क्षण पहले यह कहा जाता कि इनमे से किसी योग्यतम विभूति का नाम लो, तो मै नि सकोच अपनी इच्छा से वाशिगटन का चुनाव करता । आज भी वे मेरे वरिष्ठ पात्र है ।'

निश्चय ही किसी दूसरे महानुभाव ने इतने व्यापक रूप से सम्मान प्राप्त नही किया, जितना वाशिगटन महोदय ने । न ही कोई इतनी पूर्णता से असख्य काल्पनिक कथाओ का नायक ही रहा होगा। नेपोलियन का नाम लेते ही हमारी आखो के सामने एक प्रतिभावान् सेनापति, एक निष्ठुर शासक, एक अशान्त निर्वासित व्यक्ति अथवा विश्वासघाती पति का चित्र झूल जाता है। यह चित्र चाहे कितना ही भव्य अथवा अतिरजित क्यो न हो, विश्वसनीय अवश्य है, क्योकि उसे देखते ही हम चित्राकित व्यक्ति को भली भाति पहचान सकते है। नेल्सन के नाम के बारे मे भी यही बात बिल्कुल सही सत्य सिद्ध होती है, क्योकि जैसे ही हम उन्हे याद करते है, हमारे सम्मुख एक ऐसा व्यक्ति आ जाता है, जिसका सार्वजनिक जीवन अत्यन्त साहसपूर्ण था और जो अपने व्यक्तिगत जीवन मे चमक-दमक से रहता था। यही बात 'लौह-ड्यूक वैलिंगटन' का नाम स्मरण होते ही पूरी उतरती है, यद्यपि कई बातो मे वह जार्ज वाशिगटन के निकट-समान थे। वैलिगटन शब्द से एक ऐसे वीर पुरुष का चित्र उपस्थित हो जाता है, जो वास्तव मे श्रेष्ठ, कठोरस्वभाव और अनुपम है, किन्तु फिर भी है तो एक मनुष्य ही।

'वाशिगटन' शब्द क्या प्रगट करता है ? सम्भव है कि यह उस महापुरुष के नाम पर रखा गया किसी स्थान का नाम हो। किन्तु यदि आप का अभिप्राय 'जार्ज वाशिगटन' से है, तो लोग इसे किसी सस्था का नाम भी समझ सकते है (क्योकि उनके नाम पर अनेक सस्थाओ का नामकरण हो चुका है)। किन्तु, यदि आप आग्रह करे कि हमारा मतलब किसी सस्था से नही, बल्कि उस व्यक्ति से है जिसे इस नाम से पुकारा जाता था और जिसने बिना अपनी मर्जी के अपना नाम राष्ट्र को बपौती के रूप मे दे दिया थ., तो फिर आपके पास क्या चीज शेष रह जाती है ? क्या ऐसी कहानिया नही बच जायेगी, जो लगभग निराधार हे और जो उनके जीवन के विषय मे सही रूप से कोई जानकारी नही देती ? इसी प्रकार शेष बच जाते है श्लाघनीय व्यवहार के उदाहरण, राजनीतिज्ञो के

सदृश भाषण और उक्तिया — दूसरे शब्दो मे 'वाशिगटन स्मारक'।

क्या इसकी व्याख्या यह है कि वाशिगटन वास्तव मे अनुपम थे ? क्या यह कि उनका चरित्र निष्कलक था, जैसा कि अनेक लेखक हमे विश्वास दिलाते है ? क्या यह कि वे मध्यम दर्जे के थे, किन्तु अन्त करणानुयायी थे और क्योकि उनके द्वारा विजय-श्री मिली थी, इसलिए उनके हाथो शक्ति सौप दी गई और वे स्वत आदरणीय बने ? क्या अमरीकी इसलिए उनकी पूजा करते थे, क्योकि परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि वे उन सब बातो का प्रतिनिधित्व करने लगे जिनसे उनके देश-वासियो को स्नेह था ? क्या अमेरिका के लोगो ने इसलिए उनका स्मारक बनाया, क्योकि वे गणतन्त्र के आरम्भिक वर्षो मे अकेले ही व्यक्ति थे जो उनकी नजरो मे राष्ट्रीय प्रतीक अथवा सत्ता थे ? यदि यह ठीक है, तो कहा तक स्वय वाशिंगटन इस सारी प्रक्रिया से परिचित थे और उन्होने किस हद तक इस रूप मे अपना प्रयोग होने दिया ।

ये कुछ एक पहेलिया सी है, जिनका सहज मे उत्तर न पाने के कारण हम खीझ उठते है । शायद यह हमारे लिए सम्भव हो कि इस पुस्तक के अन्तिम अध्याय मे हम इनमे से कुछ प्रश्नो के सम्बन्ध मे सकेत रूप से उत्तर दे सके, किन्तु आगामी तीन अध्यायो मे हम अवश्य कोशिश करे कि वाशिगटन-स्मारक के बारे मे हमे सब कुछ भूल जाय । आदर्श-रूप से, हम यह बहाना क्यो न करे कि हमारे कानो मे कभी वाशिंगटन का नाम तक नही पडा अथवा यह सोचे कि अमरीकी उपनिवेशो ने ब्रिटेन के विरुद्ध विद्रोह किया और सबने आपस मे मिलकर एक स्वतन्त्र राष्ट्र का निर्माण किया। यदि किसी कारण हम ऐसी कल्पना न भी कर सके, तो हम अपने आप को स्मरण कराते रहे कि इनमें से कोई बात वाशिगटन को मालूम नही थी ।

वाशिंगटन के जीवन की घटनाओ पर दृष्टिपात करते हुए उनके कई स्तुति-कर्ताओ ने उनमे भगवान् का सक्रिय हाथ देखा । उनका कहना है कि यत्र-तत्र ऐसे प्रमाण मिलते है जो यह सिद्ध करते हैं

कि जो कुछ घटा वह सब पूर्व-निर्धारित था। वैसे भी इतने सुन्दर और गौरवपूर्ण परिणाम अवश्य पूर्व-निर्धारित घटनाओ के ही हो सकते है। जहाँ तक वाशिगटन का सम्बन्ध है, वे भी अनेक बार नियति की बात कहते थे और उन्होने अपनी जीवन-नैया को उस पर छोड भी दिया था, किन्तु जब-जब वे इस प्रकार कहते थे, तो नैपोलियन के भावो को लेकर नही कहते थे। उन्होने कभी यह महसूस नही किया कि वे प्रारब्ध-कर्ता है, बल्कि यह कि जो होन-हार है, वह होकर रहेगा। जब कभी वे भविष्यवाणी करने का साहस भी करते थे, तो वे प्राय चेतावनी के रूप मे ही ऐसा किया करते थे—जैसे, यदि अमरीकियो ने सतर्कता नही बरती, तो उनके अमुक दु खदायी परिणाम हो सकते है। जब कभी वे विश्वास के साथ आगे बढते हुए प्रतीत हुए तो वे मार्ग को ध्यानपूर्वक न देख सकने के कारण अन्धेरे मे ही आगे बढते चले गये—वस्तुत एक मरण-शील मनुष्य की तरह जो किसी प्रतिष्ठावर्द्धक, किन्तु घबराहट की घडी मे हो, जिसके लिए आने वाला कल भी कोई-न-कोई जटिल समस्या ला कर खडी करे और जिसके लिए आगामी वर्ष भी एक पहेली-सी बन जाती हो। उनके बारे मे इस तथ्य को किसी कीमत पर भी भूलना नही चाहिए। उनकी अपनी दृष्टि मे ऐतिहासिक महत्व की घटनाएँ उनके साथ घटी, न कि उन्होने इन्हे जन्म दिया। इस बारे मे जो कुछ भी उनसे हो सका, उन्होने किया।

---

## अध्याय – २

# श्रीमान् जार्ज वाशिंगटन

'उनका उज्ज्वल हल का फार कहाँ है, जिसे वे प्यार करते थे ? अथवा गेहू वाले वे खेत कहा है, जिनकी पीतवर्ण पक्तिया अठखेलिया करते हुए हवा के झोको से हिला करती थी ? अथवा उनकी वे पहाडिया कहा है, जो भेड-बकरियो के समूह के कारण सफेद रग की हो जाती थी ? अथवा उनकी गहरे रग की घास वाली चरागाहे कहा है, जिन पर पशुओ के झुण्ड के झुण्ड चरा करते थे । अथवा स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए उनके नौकर कहा है, जो गाते-गाते और खुशी से बोझिल, कटी फसल को अपने आगे लुढकाये लिये जाते थे ? इस प्रकार के शान्तिपूर्ण, समृद्धियुक्त और आह्लादकारी दृश्य थे, जिन्हे देखकर वाशिगटन प्रसन्नता से खिल उठते थे ।'

वाशिंगटन की जीवन-कथा ( जिसमे ऐसी अलौकिक घटनाये है, जो उनके लिए प्रतिष्ठापूर्ण और उनके तरुण देशवासियो के लिए अनुकरणीय सुन्दर उदाहरण है । )

—रचयिता मेसन बीम्स

### उनके पूर्वजो का वर्जीनिया में आकर बसना

अब कल्पना कीजिए कि फिल्म उलटी तरफ को चल रही है । आप इस स्मारक को लुप्त होते देखते है । अब इसके न्यासाधार और बुत आखो से ओझल हो जाते है । माऊट वर्नन के प्रासाद के दाए-बाए भाग तेजी से सामने से हट रहे है, और फिर द्वार-मण्डप, मेडुकी-रूप वायु-दिशा प्रदर्शक यन्त्र, साज-सज्जा और सामान और

सबसे अन्त मे भवन का आन्तरिक भाग तथा उसके आधार तिरोहित होते जा रहे है—यहाँ तक कि वहाँ शेष कुछ नही बचा। सडके, खेत, पान्थगृह, गिरजाघर और न्यायालय भी साफ हो गये। पुराने पेडो के ठूठ फिर शाखाओ, प्रशाखाओ, तनो और पत्तो मे प्ररोहित हो रहे है। अब वे छोटे-छोटे पेडो का रूप धारण करके बीज मे विलीन हुए। फिर वही अमेरिका के मूल निवासी, रेड-इडियन तथा भैसे, जिनका कि वे आखेट किया करते थे, दुबारा समुद्र-तट पर दृष्टिगोचर होने लगे। उस तट पर जहाज उसी प्रकार खिचे हुए आ रहे है, जैसे चुम्बक से लोहे का चूरा खिचा-खिचा आता है। ये जहाज पश्चिम से अटलाटिक महासागर को पार करके आए है। लदे सामान पर से रस्सिया खोल दी गई है। बसने के लिए आये हुए यात्री, नोकर-चाकर, दण्डित व्यक्ति और दास—इन सबको उतारा जा रहा है। सूर्य अधेरे से निकल कर पश्चिम की दिशा मे बढता है। भरी-पूरी दोपहरी हाने पर ऊपर उठता है और पूर्वीय ऊषा मे खो जाता है।

हम सन् १६५० के आसपास पहुच कर इस उल्टी प्रक्रिया को रोक सकते है। यह वह समय था जब कि वाशिगटन-परिवार के लोग सर्वप्रथम वर्जीनिया मे आकर बसे थे। इससे पचास वर्ष पूर्व इसी जगह जेम्ज टाऊन मे ब्रिटेन के लोग पहले-पहल आकर आबाद हुए थे। बीमारी, दुर्भिक्ष, आदिवासियो के साथ सघर्षो तथा हुकूमत की तबदीली के बावजूद ये बस्तिया धीरे-धीरे समुद्री-तट के उन्नत भागो मे तथा पोटोमैक, रैपाहन्नोक पार्क एव जेम्ज नदियो के उद्गम भागो मे फैल गई। उनकी जन्म-भूमि ब्रिटेन मे स्टूअर्ट बादशाह चार्ल्स प्रथम की गृह-युद्ध मे पराजय हो चुकी थी और उन्हे फासी दे दी गई थी। शाही उपनिवेश होने के कारण वर्जीनिया ने पहले तो स्टूअर्ट वश का पक्ष लिया, किन्तु बाद मे विवश होकर उसे पार्लियामेट के शासन के आगे सिर झुकाना पडा। प्रकटत वर्जीनिया को इस परिवर्तन से कोई फर्क नही पडा। उस नये जगल भरे देश मे (जैसा कि एक शताब्दी बाद जार्ज वाशिगटन ने

इस देश का वर्णन करते हुए कहा था) भोजन, मकान, सुरक्षा तथा भूमि उस समय कही अधिक महत्वपूर्ण समस्याए थी।

किन्तु जो कोई भी घटना ब्रिटेन मे होती, उसका महत्व देर-सवेर, वर्जीनिया के लिए भी हुआ ही करता था। उन दिनो एक घटना हुई, जिसके प्रचुर परिणाम निकले। चार्ल्स द्वितीय ने सन् १६४९ मे अपने पिता की मृत्यु के कुछ ही मास पीछे, अपने एक वफादार अनुयायी को पोटोमैक और रैपाहैन्नोक नदियो के बीच के उत्तरीय भाग का बहुत बडा इलाका दे दिया। यह एक कारुणिक चेष्टा थी, क्योकि उन दिनो चार्ल्स निर्वासित था और इस बात मे सन्देह था कि वह अपने आदेशो को कार्यान्वित करा भी सकेगा या नही। प्रकार उसने वह जागीर प्रदान की, जो उसकी नही थी और जिसे न तो उसने स्वय और न ही नये 'स्वामी' ने अपनी आँखो से देखा था या उसे देखने की आशा ही की थी।

इगलैंड के इस गृह-युद्ध मे एक और छोटी सी घटना हुई, जिस मे इगलिस्तान के एक गिरजे के एक पादरी को 'प्योरीटन' लोगो ने १६४३ मे अपनी आजीविका वाले स्थान से खदेड दिया। इसी प्रकार का व्यवहार इस गृह-युद्ध के दिनो मे सहस्रो अन्य अभागे लोगो के साथ किया गया था। उस पादरी का नाम था लारेंस वाशिंगटन। इससे पूर्व वह साधारण सुख-सुविधा मे अपना जीवन काट रहा था। उसके कुटुम्ब के लोगो के पास नारथैम्पटनशायर मे सल्ग्रेव की जागीर थी और वह स्वय आक्सफोर्ड के ब्रेसनोज कालेज का अधिसदस्य था। जागीर छिन जाने से जीवन-भार वहन करना कठिन हो गया। जब वह १६५३ मे मरा, तो उसके दो पुत्रो ने निश्चय किया कि वे वर्जीनिया मे जाकर बसेंगे और नये सिरे से जीवन शुरू करेंगे। उनमे से एक पुत्र, जिसका नाम जान था, जहाज का अफसर बनकर वर्जीनिया पहुचा। उसने वर्जीनिया के एक जमीदार की लडकी से विवाह कर लिया और प्राय दैवयोग से वही बस गया। साधारणतया उसने सुख-समृद्धि पाई। उसे भूमि मिली। वह शान्ति-न्यायाधीश बना और बाद मे उसे वर्जीनिया की

साधारण विधान-सभा का सदस्य चुन लिया गया। उसका भाई भी काफी सफल रहा। इस प्रकार वर्जीनिया मे वाशिंगटन वश के पाँव जमे, यद्यपि इस समय तक इसे वश का नाम नही दिया जा सकता था। दोनो भाइयो मे से कोई भी धनी नही बना। कारण यह कि वहाँ जीवन सदैव खतरो से घिरा और अशान्त रहता था। मौत हर समय सिर पर खडी रहती थी। उदाहरण के रूप मे जान को ही ले ले। उसने तीन शादियाँ की। जिस स्त्री से इसने तीसरी शादी की उसके तीन पति पहले मर चुके थे और जब जान १६७७ मे मरा, तो उसकी आयु चालीस वर्ष के आसपास ही थी।

इस प्रकार बर्ड, कार्टर, कार्बिन, फिटस्हुग, हैरीसन, ली, पेज, रैंडाल्फ नामो के साथ वाशिंगटन नाम भी वर्जीनिया से धीरे से जुड गया। जान के सबसे बडे लडके लारेन्स ने अपने वश को चलाया। बडा लडका होने की हैसियत से उसे वहा के उत्तराधिकार नियमो से लाभ पहुचा। लारेन्स भी वर्जीनिया की साधारण सविधान सभा का सदस्य बना, किन्तु वह अपनी इर्द-गिर्द की परिस्थितियो पर काबू पाने के पूर्व ही सन् १६९८ मे उन्तालीस वर्ष की आयु मे ही परलोक को सिधार गया। तत्पश्चात् पैतृक उत्तराधिकारो, भूमि सम्बन्धी दावो, अन्तर्विवाह और मुकदमे-बाजी की भूलभुलैयो से होती हुई, जो उन दिनो वर्जीनिया उपनिवेश की जटिलताए थी, इस वश की कहानी आगे बढी। लारेन्स की पत्नी अपने बच्चो को लेकर इगलैण्ड चली गई, जहा उस समय की प्रथा के अनुसार उसका शीघ्र ही पुनर्विवाह हो गया। इस परिवार के दो लडके, वैस्ट मोरलैड के एपलबी स्कूल मे पढने के लिए डाल दिये गये। सम्भव है कि उनका सौतेला बाप उन्हे इगलैण्ड मे ही रखता और इसके फलस्वरूप उनका वर्जीनिया की जागीर पर अधिकार समाप्त हो जाता। किन्तु उनकी माता का शीघ्र ही देहान्त हो गया और इसलिए वे पुन वर्जीनिया लौट आये। उनकी भूमि से सम्बन्धित कानूनी उलझने धीरे-धीरे सुलझ गई। उनमे से एक लडके आगस्टीन ने, जो उस समय लगभग २१ वर्ष का था

(जिस आयु मे वर्जीनिया मे पुरुष सामान्यत विवाह कर लिया करते थे), जेन बटलर से लगभग सन् १७१५ मे शादी कर ली। इस पाणिग्रहण के फलस्वरूप जो बच्चे पैदा हुए उनमे जीवित बच रहने वाले पहले लडके का नाम अपने दादा और परदादा के नाम पर लारेन्स रखा गया।

आगस्टीन ने जहा कडा परिश्रम किया, वहा उसने साहसिक मनोवृत्ति का भी परिचय दिया। अपने पिता और दादा की तरह वह भी जिले का न्यायाधीश बना। अपनी और अपनी धर्मपत्नी की जागीरो को मिलाने से उसका अधिकार 'उत्तरी नैक' के भिन्न-भिन्न भागो मे १७५० एकड भूमि पर हो गया। इसके अतिरिक्त सन् १७२६ मे उसने पौटोमैक नदी पर 'लिटल हटिग क्रीक' नाम के भूमि-भाग पर, जो क्षेत्र मे २५०० एकड थी, अपने स्वत्व अधिकार प्राप्त कर लिये। इस भूमि को उसके दादा, जान ने अपने नाम कर लिया था। इन जागीरो के अलावा यह लोहे के कारखाने मे भी हिस्सेदार बना।

सन् १७२९ मे आगस्टीन की पत्नी की मृत्यु हो गई। दो वर्ष बाद, जो समय कि उन दिनो अपेक्षाकृत लम्बी अवधि माना जाता था, उसने पुन विवाह किया। उसकी दूसरी पत्नी का नाम मेरी बाल था। उसकी आयु २३ वर्ष की थी। माता-पिता जीवित नही थे, परन्तु साधारण रिश्तेदार थे। उसके पास साधारण सी सम्पत्ति थी। वह विलियम बाल की वशज थी, जो लन्दन के वकील का लडका था और जो सन् १६५० मे वर्जीनिया मे आकर बसा था। मेरीबाल अपने अभिभावक, जार्ज इस्क्रिज, से जो एक अच्छे स्वभाव का वकील था, बहुत स्नेह रखती थी। इसी वजह से मेरी ने उसके नाम पर ही अपनी सबसे पहली सन्तान का नाम जार्ज वार्शिगटन रखा। अन्यथा उसका नामकरण शायद पारिवारिक नाम 'जान' शब्द से किया जाता, क्योकि उसके सौतेले भाइयो का नाम पूर्व ही लारेन्स और आगस्टीन रख दिया गया आ। अस्तु, कोई भी कारण हो, उसे जार्ज नाम दिया गया।

शिशु जार्ज ने वेस्टमोर लैण्ड प्रदेश की एक रोप-स्थली मे जन्म लिया। बाद मे इसका नाम वेकफील्ड पडा। इस स्थान को पोटस क्रीक अथवा ब्रिज क्रीक भी कहा जाता था, क्योकि यह उन दो नालो के बीच मे पडता था जो हंटिग क्रीक की जागीर से पोटोमैक नदी के निचले भाग मे गिरते थे। जार्ज का जन्म १७३२ मे ११ फरवरी को हुआ था। (जब १७५२ मे नया कैलेण्डर बनाया गया, तो इसमे ग्यारह दिन और मिलाये गये थे। इस प्रकार यह तिथि नई पद्धति के अनुसार २२ फरवरी हो गई।) इसके बाद, जल्दी-जल्दी पाच बच्चे और पैदा हुए---एलजाबैथ, सैम्मुअल, जान, आगस्टीन, चार्ल्स और मिल्डरैड, जिसका सन् १७४० मे शैशवावस्था मे देहान्त हो गया।

उस समय बाल जार्ज अपने तीसरे घर में रहा करता था। उसके पिता १७३५ मे प्रिंस विलियम प्रदेश मे जा कर बसे थे। तीन वर्ष बाद उन्होने वह स्थान छोड दिया और रैपहैन्नाक नदी पर स्थित फ्रैडरिकस्बर्ग की छोटी बस्ती के पास फैरीफार्म पर जाकर रहने लगे। पिता को चिन्ताये और निराशाये घेरे रखती थी, विशेष रूप से लोहे की ढलाई का कारखाना उन्हे तग कर रहा था, किन्तु यह सब होते हुए भी वे चोटी के न सही, पर ऊपर के दर्जे के वर्जीनिया निवासी के रूप मे मजे से जीवन वहन कर रहे थे। उनके पास पचास दास थे। जितनी भूमि वे घेर सके, उन्होने इस पर स्वत्वाधिकार प्राप्त कर लिया। उनके वसीयत नामे के अनुसार यह भूमि दस हजार एकड से ऊपर थी। उन्होने अपनी पहली शादी से उत्पन्न दोनो लडको को उत्तरी इग्लैण्ड के एपलबी स्कूल मे पढने के लिए भेजा, जहाँ उन्होने स्वय शिक्षा पाई थी। उनका उद्देश्य यह था कि इस शिक्षा से जहा वे दोनो वर्जीनिया वासी भद्र पुरुषो के योग्य बौद्धिक-विस्तार और शिष्टता प्राप्त करे, वहा वे सौभाग्य बुद्धिपूर्वक नियोजन और सतर्कतापूर्ण विवाह से अपने प्रमार्जित आचारो के साथ ही साथ धनोपार्जन भी कर सके।

किन्तु इसके बाद चित्र बदला। जब जार्ज केवल ग्यारह वर्ष का ही था, तो उसके पिता, आगस्टीन, इस ससार से चल बसे।

उनकी बहुत सी जायदाद उसके सौतेले भाइयो—लारेन्स और आगस्टीन—के हिस्से मे आई। जार्ज के हिस्से मे फैरीफाम आया, किन्तु वह उसे बालिग होने पर ही मिल सकता था। इस बीच मे वह इसी स्थान मे अपनी माता के पास रहा। वह इस समय बाल्यावस्था को पार करके अल्पकालीन तरुणावस्था को प्राप्त कर चुका था। उन उपनिवेशीय समयो मे यह अवस्था शीघ्र प्रौढता मे सविलीन हो जाया करती थी।

वाशिगटन के साथ बचपन मे क्या-क्या बीता, इसका हम केवल अनुमान ही लगा सकते है। अलबत्ता यह हो सकता है कि हम उसके विषय मे उन रम्य और मनोहर कहानियो पर विश्वास करे जिन्हे बीम्ज तथा अन्य लेखको ने लिपि-बद्ध किया है। एक आम प्रचलित कहानी यह है कि 'दण्डित सेवक ने, जिन्हे उसके पिता स्कूल-अध्यापक बनाकर लाये थे' उसे लिखना और पढना सिखाया। यह बात सम्भव हो सकती है। दण्डित एव अनुबद्ध-सेवक बहुत बडी सख्या मे वर्जीनिया मे लाए जाते थे। और उनमे से कुछ दण्डित निस्सन्देह अच्छी शिक्षा पाये हुये लोग थे और उनके अपराध विशेष रूप से गर्हित नही थे। किन्तु इस कहानी को सत्य सिद्ध करने के लिए हमारे पास कोई प्रमाण नही है। न ही यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि जार्ज ने रैवरैड जेम्ज मारये के फ्रैडरिक्स बर्ग वाले स्कूल मे विद्याध्ययन किया। हा, यह बात अधिक सम्भाव्य अवश्य है। हमे ज्यादा से ज्यादा इतना अवश्य मान लेना चाहिये कि जार्ज ने सात और ग्यारह वर्ष की आयु के बीच की अवधि मे स्कूल मे बैठ कर कुछ न कुछ शिक्षा पाई। इस विषय मे कोई उल्लेख नही मिलता कि कभी उसे एपलबी भेजने की बात सोची गई हो, शायद इसलिए कि वहा भेजने से पढाई पर बहुत खर्च उठता। हो सकता है कि इस का कारण यह भी था कि उसकी माता नही चाहती थी कि वह परदेश मे इतने बरस बिताये। जो भी कारण हो, उसकी शिक्षा-दीक्षा प्रान्तीय ढग की ही थी।

अपने पिता के देहावसान के पश्चात् जार्ज प्रकटत किसी न किसी प्रकार की शिक्षा पाता ही रहा। उसकी किशोरावस्था की नोट-बुको से यह प्रकट होता है कि तरुण वाशिंगटन ने लातीनी भाषा और गणित का कुछ प्राथमिक ज्ञान प्राप्त किया, सदाचरण की आधारभूत बातो को सीखा और अग्रेजी साहित्य का कुछ-कुछ अनुशीलन किया। योरुप के स्तर के अनुसार इतनी शिक्षा एक भद्रपुरुष के लिए अधूरी थी, किन्तु जैसी कि उसकी परिस्थिति थी, उसे इतनी ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सका। उसे यह सौभाग्य नही मिल सका कि वह अपने समकालीन तरुणो के समान वर्जीनिया की राजधानी विलियम्ज-बर्ग के विलियम और मेरी कालेज मे शिक्षा पा सके। हम नही कह सकते कि ऐसा क्यो हुआ। सम्भव है कि इस मे भी उसकी माता की मितव्ययता और उसे अपने बिल्कुल निकट रखने की लालसा--- यह दो कारण इसके मूल मे हो। सक्षेप मे--यह स्पष्ट ह कि जार्ज वाशिगटन उच्च शिक्षा प्राप्त करने मे असमर्थ रहे और इसलिये वे बुद्धिजीवी नही बन सके। इस पहलू मे जान एडम्ज सरीखे अमरीकियो से उसका अत्यधिक व्यतिरेक पाया जाता है। बाद मे जान एडम्ज को कटुतापूर्ण शब्दो मे कहना ही पडा--- 'यह तो निश्चित बात है ही कि वाशिंगटन विद्वान नही थे, पर यह बात भी इतनी ही निर्विवाद है कि उनकी उच्च स्थिति एव सुकीर्ति को देखते हुए वे प्राय निरक्षर, अशिक्षित और अनपढ थे।'

यह भी सत्य है कि बौद्धिक तय्यारी तथा क्षमता की दृष्टि से वाशिगटन का मुकाबला थामस जैफर्सन और जेम्ज मैडीसन जैसे उनके वर्जीनिया के समकालीन विद्वानो से नही किया जा सकता। शायद कई वर्ष बाद तक वाशिंगटन स्वय इस कमी को महसूस करते रहे। जब कभी कोई व्यवस्थित वाद-विवाद होता अथवा अमूर्त विषयो पर चर्चा होती, तो वे अकुला जाते। हाँ, उन्होने दीर्घकालीन अभ्यास के कारण कागज पर लिख कर अपने मनोभावो को किसी अश तक स्पष्ट और ओजस्वी ढग से व्यक्त करना सीख लिया था

और उनके हिज्जो का भी अभ्यास के कारण सुधार हुआ था——किन्तु वे कभी प्रतिभावान् लेखक नही बन सके। अपनी परिपक्वावस्था मे पहुचने पर वाशिगटन मे जो सशोधनात्मक-प्रवृत्ति नजर आती है, इसका कुछ-कुछ कारण यह भी हो सकता है कि वे अपनी बौद्धिक सीमाओ से परिचित थे। ——युवावस्था मे ही उन्हे फ्रासीसी भाषा न जानने के कारण हानि उठानी पडी। बाद मे भी उन्हे फ्रास जाने का निमन्त्रण इसलिए अस्वीकर करना पडा कि उन्हे द्विभाषिये के माध्यम से बात-चीत करने के लिए विवश होना पडता, जिससे कि उन्हे कुढन होती। अत वे जैफर्सन और एडम्ज की तरह कभी योरुप नही जा सके।

किन्तु हमे इस बात पर आवश्यकता से ज्यादा बल नही देना चाहिए। वर्जीनिया मे कोई भी व्यक्ति जैफर्सन अथवा मैडीसन के समान बौद्धिक स्तर पा लेता तो यह अपवाद समझा जाता। धनाढ्य से धनाढ्य बागान-मालिक भी पुस्तकीय-ज्ञान के विषय मे उदासीन थे। सास्कृतिक परिष्कार की प्राप्ति मे भी उन्हे कोई विशेष दिलचस्पी नही थी। वर्जीनिया की मध्यम-श्रेणी जनता मे वैस्टीवर के विलियम बर्ड को, जिसके पुस्तकालय मे सम्भवत तीन हजार पुस्तके थी, एक अनुपम व्यक्ति माना जाता था। यहा के लोग, इगलैण्ड के सामन्त-वर्ग के समान ही सुख का जीवन बसर किया करते थे। उन्हे खाने-पीने, सुन्दर आयातित वस्त्र पहनने तथा बाहर से मगाये गये उत्तम फर्नीचर को प्रयोग मे लाने का शौक था, किन्तु उनके जीवन मे उस हद तक परिष्करण नही था, जितना कि इतिहासकार बताते है। उनके मकान आश्चर्यजनक रूप से छोटे थे। उनकी लम्बी-चौडी भूमि योरुप के लोगो को बिखरी-बिखरी और अव्यवस्थित लगती थी——समय और स्थान दोनो के लिहाज से करीब-करीब जगल सी। जहा तक भावनाओ और व्यापार का सम्बन्ध है, वे अपने मातृ-देश (इगलैण्ड) के अधिक निकट थे। उनकी बोली मैसाचुसटेस की अपेक्षा इगलैण्ड की भाषा के ज्यादा नजदीक थी। (कहा जाता था कि मैसाचूसेट्स

के लोग अपने बच्चो को नीग्रो-दासो की अस्पष्ट बोली सीखने की खुली छुट्टी दे देते थे)। किन्तु अन्य बातो मे अठारहवी शताब्दी के मध्य का वर्जीनिया अपने आप मे एक अलग ससार था जो योरुप अथवा शहरी सस्कृति के किसी भी नमूने से बहुत भिन्न था। एक बार मजाक मे युवा वाशिगटन ने विलियम्जबर्ग को बडी राजधानी कह दिया था। उन्होने लन्दन के विषय मे भी यही, शब्द प्रयुक्त किये थे, किन्तु उस बडे नगर की तो अलग बात रही विलियम्जबर्ग उन दिनो बोस्टन अथवा फिलेडैल्फिया के मुकाबले मे भी एक छोटा सा कस्बा ही था। उस समय वर्जीनिया मे केवल विलियम्जबर्ग, यार्कटाऊन, हेम्पटन और नारफौक ही बडी आबादी के कस्बे थे। अन्य कस्बो मे भी आबादी धीरे-धीरे बढती जा रही थी। इस प्रकार वर्जीनिया एक देहाती उपनिवेश था, जिसमे रहने वाले लोगो की रुचिया ग्रामीणो की सी थी। यद्यपि यह वृहदाकार और वैभवयुक्त उपनिवेश था, इसके जीवन की इकाइया—बागान, पादरी-क्षेत्र, 'काउण्टी'—उसके अपने ढग पर ही थी। सविधान-सभा के सदस्य जो विलियम्जबर्ग मे सभा की बैठको मे शरीक होने के लिये आया करते थे, प्राय इस कस्बे के सीमित और उत्तेजना-पूर्ण जीवन का आनन्द उठाया करते थे। यहा उन्हे नृत्य देखने को मिलते थे, वे शाम के खाने की दावते उडाते, ताश खेलते और रग-मच के मजे लूटते। यहा के बहुत साधारण किसान जो आबादी का मुख्य अश थे, उनकी बात तो दूर रही, वर्जीनिया के बागान के मालिक भी ग्रामीण ही थे। वे अपने अपने कार्यो मे व्यस्त रहने वाले जमीदार और स्थानीय सरदार थे।

प्रत्येक वर्जीनिया-वासी भूमि मे अत्यन्त रुचि रखता था। औसत दर्जे का खेतिहर कई भू-भागो का स्वामी हुआ करता था। किसी भू-खण्ड को वह यदि स्वय जोतता और उसमे फसल बोता जो मुख्यतया तम्बाकू हुआ करती तो अन्य खण्डो को वह खेती के लिये लगान पर दे दिया करता था। जो उसके अन्य खण्ड पश्चिमी क्षेत्रो मे होते, वह उन्हे लगान पर देने की बजाए, जगली दशा मे

ही छोडे रखता। हा, जब कोई उन्हे अनधिकृत रूप से घेर लेता, तो और बात थी। भूमि पर ही उसकी समृद्धि निर्भर थी। उसका एव उसके परिवार का भविष्य इस बात पर था कि वह अधिकाधिक भूमि का अधिग्रहण करता चला जाय। वर्जीनिया के बडे आदमी–नोमिनी के राबर्ट कार्टर सरीखे—अपनी सम्पति दस हजार एकड के हिसाब (पैमाने) से आका करते थे।

उस समय से सौ वर्ष बाद लोग सोना पाने की आशा से कैलिफोर्निया की तरफ खिचे चले गये। यह सनक बुखार की मानिद थी जो अचानक उन के सिर पर सवार हुई, ओर होते-होते इसने उग्र रूप धारण कर लिया। वर्जीनिया-वासियो पर अधिकाधिक भूमि हथियाने का ज्वर यद्यपि इतना शीघ्र नही चढा था, किन्तु इसके प्रभाव उतने ही जोरदार थे। और इसमे कोई आश्चर्य की बात भी नही, क्योकि उस समय पश्चिम की ओर बहुत मात्रा मे भूमि उपलब्ध थी और वर्जीनिया के (अथवा मेरीलैण्ड और पैनसिलवेनिया के) अपने प्रतिद्वन्द्वियो को छोड कर, इसके केवल दो ही दावेदार थे—फ्रासीसी और आदिवासी इण्डियन लोग।

वर्जीनिया के भूमि-प्रेम मे कभी-कभी अतिव्ययता और असावधानी भी देखी जाती थी। वहा के कृषक भूमि जोतते थे और इस बात का भी ज्ञान रखते थे कि इसे जोतने के क्या तरीके हैं, किन्तु उनमे योरोपीय किसानो जैसी छोटी-छोटी बातो मे मितव्ययता न थी। यदि तम्बाकू से भूमि की उपजाऊ-शक्ति क्षीण होती थी, जैसी कि निश्चय से हुआ ही करती थी, तो उन्हे खेद तो होता ही था, किन्तु वे अन्यत्र नयी जमीन लेकर अपनी और जागीर बना लेते। इस प्रकार हर वर्जीनिया-वासी का यह स्वप्न हुआ करता था—ऐसा स्वप्न जिसकी खातिर उसे मुकदमे लडने पडते थे, प्रतिद्वन्द्विता बर्दाश्त करनी पडती थी और अशान्त, उद्विग्न जीवन व्यतीत करना पडता था। इसके साथ उसे चेतावनियो, विपदाओ तथा व्यवहार मे असभ्यता का मुकाबला

करना पडता था। यह सब होते हुए भी भूमि-प्राप्ति उसका एक प्रकार का आदर्श था। अग्रेजी शब्द 'स्पैकूलेशन' का मूलरूप से यह अर्थ होता था--'किसी अमूर्त समस्या पर गहरे ढग से विचार करना।' बाद मे (आक्सफोर्ड कोष के अनुसार सन् १७७४ मे) इसका प्रयोग एक दूसरे अर्थ को प्रकट करने के लिए होने लगा। तब से इस शब्द का यह अर्थ हुआ--किसी व्यावसायिक कार्य अथवा साहसिक या खतरेवाले सौदे मे अपनी शक्ति लगाना, जिस मे बहुत बडे लाभ की आशा हो।' इस अर्थ से वर्जीनिया के सावधान खेतिहर के सही दृष्टिकोण का उपयुक्त विवरण मिलता है। किन्तु इस प्रकार के दृष्टिकोण से यह अन्दाजा नही लगना चाहिये कि वे लोग रुपये-पैसे से अपेक्षतया अधिक बुनियादी समस्याओ की, समय आने और आवश्यकता पडने पर, कभी सोचा ही नही करते थे। हर वह व्यक्ति जो बडे लाभ की लालसा रखता था, तर्क-वितर्क करना और (कोई अन्याय होने पर) विरोध प्रगट करना जानता था।

बागान के मालिको के आमोद-प्रमोद स्वाभाविक रूप से उनके दनिक जीवन से मेल खाते थे। उन्हे कई घण्टो तक लगातार घुड-सवारी करनी पडती थी, इसलिये उन्होने इसे अपने मनोरजन का रूप दिया। कर्नल विलियम बर्ड के शब्दो मे--'मेरे प्रिय देश-वासी घुड-सवारी के इतने अधिक शौकीन है कि वे अक्सर सवारी की खातिर दो-दो मील चल कर घोडा पकडने जाते है।' बागान के स्वामी घुड-दौड के मुकाबले देखते और उन पर बाजी लगाया करते। उन्हे लोमडियो और जगली जानवरो का शिकार करने मे रुचि थी। कभी कभी वे निर्दयतापूर्वक मुर्गो की लडाई करवाते और उन पर दाव लगाया करते थे। इस प्रकार यहा का जीवन शक्तिदायी भी था और किसी हद तक क्रूरतापूर्ण भी। इस से जहा उन मे निर्दयता की भावनाए उत्तेजित होती थी, वहा पर्याप्त मात्रा मे साहस भी पनपता था। अन्य उपनिवेशो के समान ही यहा इण्डियनो की खोपडियो के लिये पारितोषिक मिलते थे।

यहा की दण्ड-सहिता, यद्यपि अधिकाश मे इगलैण्ड के दण्ड-विधान से अधिक क्रूरतापूर्ण नही थी, तो भी इसके मातहत मुकदमो के निर्णय बिना विलम्ब के हो सकते थे---विशेषरूप से नीग्रो-जातियो के लिये, जिन्हे गम्भीर अपराधो के लिये फासी पर चढा दिया जाता था अथवा यहा तक कि जिन्दा भी जला दिया जाता था।

**वर्जीनिया के प्रभाव**

यह तरुण वाशिगटन का वर्जीनिया था। उसकी शिक्षा इस उपनिवेश की आवश्यकताओ के अनुरूप हुई थी। यह अचूक निशानाबाज और उत्तम घुडसवार था। इन दोनो बातो मे उसे अपनी उमर के युवको मे, एकदम से, सर्वश्रेष्ठ गिना गया। उसका कद लम्बा था और शरीर दृढ और गठा हुआ। अपनी आदतो मे वह चुस्त और फुर्तीला था। उसने कभी अपना सन्तुलन नही खोया। यह सत्य है कि हमारे पास कोई ऐसा प्रमाण नही जो यह जाहिर कर सके कि उस पर अपनी माता का कोई परिस्कारात्मक सस्कार पडा। यद्यपि उसकी माता के तारीफ के पुल बाधे जाते है, वह एक सकीर्ण-हृदय, कुढने-झकने वाली, कल्पना-शक्ति-रहित स्त्री मालूम होती है। बाद के सालो मे जार्ज महोदय उसका सन्मान तो अवश्य करते रहे, किन्तु इस समादर के साथ वह प्रेम की अधिक उष्णता न जोड सके। हमे उस महिला का एक ही विधेयात्मक कार्य मालूम पडता है और वह था उस सुझाव पर अमल न होने देना कि जिस मे किशोर जार्ज का समुद्र पर 'मिडशिपमेन' के रूप मे भेजने की बात सोची गई थी। सम्भवत इसी मे ही बुद्धिमता थी।

सौभाग्य से उस परिवार मे अन्य लोग भी थे, जिनका वाशिगटन पर प्रभाव पडा। इनमे हम विशेष रूप से उनके सौतेले भाई, लारैन्स, का उल्लेख कर सकते है। लारैन्स जार्ज से चौदह वर्ष बडा था और उसका सच्चा हितैषी बन्धु था। उसने इगलैण्ड मे शिक्षा ग्रहण की थी। उसका रग-रूप आकर्षक था और वह व्यवहार-कुशल था। वह जार्ज के लिए दिवगत पिता का अभिमत स्थानापन्न था। जब वाशिगटन

आठ वर्ष का था, तो लारैन्स अमरीकियो के नव-निर्मित दस्ते मे कप्तान होकर वैस्ट इण्डीज गया था। (जिन चार वर्जीनियो को कप्तान बनने का सम्मान मिला था, उनमे से लारैन्स भी था।) वैस्ट इण्डीज पहुँच कर उसे कार्टेजना के स्पेनियो के विरुद्ध एडमिरल वर्नन के साथ मोर्चा लेना था। दुर्भाग्य की बात कि वर्नन की इस चढाई मे बुरी तरह हार हुई और उसे भारी हानि उठानी पडी। यद्यपि इसमे उसका कोई दोष न था। अमरीकी दस्तो के बहुत से सैनिक पीले ज्वर से ग्रस्त होकर मौत की भेट हुए। बचे-खुचे लोगो मे लारैन्स भी था, परन्तु वह पहले ही घर लौट आया था। वापस आकर उसने आधे वेतन पर सरकारी सेवा से निवृत्ति हासिल की। बाद मे उसने वर्जीनिया के 'एडजूटैण्ट जनरल' के पद के लिये प्रार्थना-पत्न-भेजा, जो स्वीकृत हुआ। फलत उसे इस पद पर नियुक्त किया गया। इस प्रकार यदि हम यह जानना चाहे कि तरुण वाशिंगटन पर निर्माणकारी प्रभाव क्या-क्या पडे, तो स्पष्ट है कि इस समय उस पर जो सस्कार पडे, वे सैनिक-जीवन से सम्बन्धित थे। भले ही उसका सौतेला भाई यश-कीर्ति प्राप्त न कर सका हो, इस मे सन्देह नही कि उसने उस शानदार और साहसिक चढाई मे अपना दायित्व बडी खूबी के साथ निभाया था। लारैन्स एडमिरल का अत्यधिक प्रशसक था—यहाँ तक कि उसने अपनी हटिंग क्रीक की जागीर का नाम ही माऊट वर्नन रख लिया और वहाँ जो भवन उसने बनवाया, उसमे वर्नन का चित्न टाँगा।

लारैन्स के कारण वाशिगटन पर जो दूसरा प्रभाव पडा, वह सामाजिक था। सन् १७४३ मे अर्थात् उसी वर्ष जिसमे कि उसके पिता का देहान्त हुआ था, लारैन्स ने अपनी आकाक्षा के अनुकूल कन्या से विवाह कर लिया। दुल्हन का नाम एनी फेयरफैक्स था। यह माऊट वर्नन के करीब ही बैलवायर जागीर के समृद्ध मालिक कर्नल वर्नन विलियम फेयरफैक्स, की लडकी थी। कर्नल फेयरफैक्स वर्जीनिया के रईस थे। इस विवाह से प्रतिष्ठित होने के कारण लारैन्स वर्जीनिया की विधान-सभा के उच्च-सदन अर्थात् कौसिल का

सदस्य बना। इस कौसिल मे वर्जीनिया के बारह प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, जो इस उपनिवेश के अग्रणी माने जाते थे। जार्ज के विकास मे लारैन्स के जरिये फेयरफेक्स परिवार का बहुत महत्वपूर्ण हाथ रहा। जब वह सोलह वर्ष का हुआ तो वह अधिकतर माऊट वर्नन ही रहने लगा। इन लोगो की सगति से उसने विलियर्डस, हिस्ट और लू जैसे खेलो को खेलना सीखा। उसे नृत्य की भी शिक्षा मिली।

इस समय पहली बार उसने कुछ तो दिल्लगी मे और कुछ उत्सुकता पूर्वक लडकियो की ओर ध्यान देना आरम्भ किया। उसकी चिट्ठियाँ तथा वृद्ध-पत्रो में निम्नतल भूमि की सुन्दरी' तथा अन्य ध्यान आकर्षित करने वाली युवतियो का उत्सुकतापूर्वक एव व्यग्य से उल्लेख मिलता है। उसकी जीवनी पर कलम उठाने वालो ने इन उल्लेखो पर पर्याप्त टीका-टिप्पणी की है। उन्होने उन परिस्थितियो का भी वर्णन किया है, जिनके कारण वह अपनी आयु के बीसवे वर्ष मे बैट्सी फाटलेरोय का, जिस पर वह जी-जान से आसक्त था, प्रेम पाने मे असफल रहा। इस प्रकार के उल्लेखो मे एक विचित्र आकर्षण है—अशत इसलिए कि इन से तरुण वाशिगटन एक भेद्य मानव प्रतीत होता है और अशत इसलिये कि जिन व्यक्तियो का उनमे जिक्र है, वे छाया-मात्र ही है। यह होते हुए भी हमारे पास यह सिद्ध करने के लिये कोई पर्याप्त साक्ष्य नही कि जार्ज प्रेम-विषयक मामलो मे असाधारण रूप से अनाडी था। हो सकता है कि उसे असफलताओ का मुँह इसलिये देखना पडा कि उसका स्वभाव गम्भीर था। वह हसी-मजाक से कोसो दूर रहा करता था और अभी अपरिपक्व अवस्था मे था। तो क्या वह अपने स्थानीय प्रतिद्वन्द्वियो से किन्ही बातो मे भिन्न था ? नही कहा जा सकता कि सचाई क्या थी। इस विषय मे हम केवल कयासी घोडे ही दौडा सकते है।

एक प्रासागिक, किन्तु (समझ मे न आने के कारण) कष्टकर समस्या सैराह (सैली) केरी के कारण खडी होती है। यह कर्नल विल्सन केरी की लडकी थी, जिसकी हैम्पटन के समीप ही, जेम्ज

नदी के किनारे, अपनी जागीर थी। दिसम्बर १७४८ मे अठारह बरस की आयु मे उसने जार्ज विलियम के साथ, जो कर्नल फेयर-फैक्स का सबसे बडा लडका था, शादी की। वैल्वायर को उसने अपना निवास-स्थान बनाया। उसका पति एक उत्तम स्वभाव का युवक था। जार्ज वाशिगटन उसे अपने मि ो मे शुमार करता था, यद्यपि कुछ मास पूर्व उसने अपनी डायरी मे विनीत-भाव से 'श्री फेयरफैक्स' लिख कर उसका उल्लेख किया था। इस विवाह के उपरान्त जार्ज को अनेक वर्षों तक सैली को बहुत नजदीक से जानने के अवसर प्राप्त हुए। कभी-कभी वह उसे चिट्ठिया भी लिखा करता। यह भी सम्भव है कि वह उससे प्रेम करने लगा हो। उसने जो सैली के नाम प ा लिखे, उनसे सिद्ध होता है कि वह निस्सन्देह उसे बहुत चाहता था और उससे मैत्री बनाए रखने को वह काफी महत्त्व देता था। उन पत्रो से यह भी जाहिर होता है कि इन बातो के बावजूद वह उससे बिल्कुल घुल-मिल नही सका था। सैली ने वाशिगटन को जो थोडे से पत्र लिखे, उनसे पता चलता है कि सैली अपनी प्रशसा से फूले नही समाती थी और हल्की क्रीडामय बातचीत तथा चोचलेपन मे कोई बडा भेद नही मानती थी। क्या हम इससे यह अनुमान लगाए कि वह उससे वास्तव मे प्रेम करता था ? हमारे पास इस सम्बन्ध मे जो साक्ष्य है वह इतना अधूरा है कि हमे इस विषय मे कुछ कहने का साहस नही होता। पर यदि यह सत्य है तो हम लगभग निश्चय से कह सकते है कि उनके पारस्परिक सम्बन्ध भावना तक सीमित रहे और व्यक्तिगत रूप से उन्हे आहत करते रहे।

कुछ भी हो, निस्सन्देह उस महिला ने, युवक फेयरफेक्स लारैन्स और एनी फेयरफेक्स ने जार्ज को सुखद और विशेषाधि-कारात्मक जीवन की झाकी दी। यदि उसके व्यवहार मे कुछ भद्दापन था, तो भी वह सह्य था, क्योकि आखिर वह छोटा पुत्र ही तो था। और वह भी सौतेला पुत्र। उसके सम्बन्ध उपयोगी थे और उसे रुपये-पैसे की कोई कमी नही थी। लारैन्स और आगस्टीन

के साथ रहते हुए उसकी दशा सिडरैला जैसी नही थी, जिसे अपनी कुरूपा बहनो के साथ समय काटना पडा था। किन्तु यह उसने अवश्य अनुभव किया होगा कि उसे आखिर अपने पैरो पर खडे होना है, अथवा कम से कम उन सब अवसरो का लाभ उठाना है, जो उसके जीवन मे आए। अन्ततोगत्वा एव दैवयोग से उसकी स्थिति इस प्रकार बनी कि उसका कदम आगे बढता ही गया। उसके साथ तुलना करने पर फेयरफेक्स सन्तान कुछ कुछ बिगडी हुई लगती है—जिस प्रकार कि जार्ज के अपने सौतेले बेटे और उसकी सन्तान आगे चल कर हुई। यद्यपि उसे अभाव के कारण होने वाले कष्टो का वास्तविक अनुभव नही हो सका, तथापि वह इन से भलीभाति परिचित था। अत उसकी महत्वाकाक्षा दबने की अपेक्षा अधिक उभरती गई। यही कारण है कि उसने सन् १७५५ मे निम्न परामर्श अपने छोटे भाइयो मे से एक को दिया —

"मुझे यह जान कर खुशी होगी कि तुम बैल्वायर मे परिवार के अन्य सदस्यो के साथ घुल-मिल कर तथा मित्रतापूर्वक रह रहे हो, क्योकि वे चाहे तो हमारे लिये, जो अभी तरुण और जीवन की आरम्भिक अवस्था मे है, अनेक मौको पर अत्यन्त उपयोगी हो सकते है। मै तुम्हे यह सलाह दूगा कि तुम इससे भी एक कदम आगे बढो और उन्हे अक्सर मिलते रहा करो।"

तरुण जार्ज पर लारेन्स और फेयरफक्स परिवार के तीसरे प्रकार के प्रभाव भी पडे। इन्हे हम प्रदेशीय प्रभाव कह सकते है। सन् १७५० मे वर्जीनिया के एक नेता ने प्रदेश के व्यापार-बोर्ड को स्मरण कराया था कि इस उपनिवेश के पश्चिम की ओर के भूमि-अधिकार 'कैलीफोर्निया' को मिला कर 'दक्षिणी समुद्र' (अर्थात प्रशान्त महासागर) तक चले गये है। यह एक बहुत बडा दावा था—साथ ही साथ अनिश्चित भी। खासतौर पर यह इसलिये कि कुछ ही वर्ष पूर्व बालक जार्ज ने अपनी स्कूल की कापी मे आईस-लैण्ड, ग्रीनलैण्ड, बार्बेडोज और अवशिष्ट कैरिबी द्वीपो इत्यादि के साथ 'कैलीफोर्निया' को उत्तरी अमेरिका का

एक 'प्रमुख द्वीप' करके लिखा था। प्रत्येक महत्त्वाकाक्षी वर्जीनिया वासी इस बात को किंचित् स्पष्ट रूप से जानता था कि पश्चिम की ओर ब्लूरिज पर्वत है। उनके आगे शैननडोह् की उपजाऊ धरती थी और समानान्तर रेखा पर एलेघनीज की आड सी थी। शैननडोह् के निम्नतर भाग के पश्चिमोत्तर मे ओहियो घाटी की विवादास्पद भूमि थी जो मिसिसिपी नदी के विस्तृत क्षेत्र तक चली जाती थी। यह समस्त भूमि हर वर्जीनिया-वासी के लिये—उसके बच्चो और बच्चो के बच्चो के लिये—भरपूर पुरस्कार के रूप मे थी और इसलिए कोई भी उपनिवेश-वासी उसे छोडना नही चाहता था। वह हर उपाय और हर साधन से अपने दावे को बलपूर्वक प्रस्तुत किया करता था।

सन् १७४४ मे वर्जीनिया, मेरीलैण्ड तथा आइरोक्विस प्रसधान के इण्डियनो के बीच एक समझौता हुआ। इस के अनुसार गोरे लोगो के बसने के लिये एलघनीस के क्षेत्र को पश्चिमी सीमा के रूप मे स्वीकार किया गया। उससे पूर्व इण्डियन ब्लूरिज को ही गोरो की सीमा मानते थे। इस प्रकार गोरी बस्तियो के लिये शैननडोह् घाटी भी खुल गई। कुछ ही मास अनन्तर लन्दन मे प्रीवी कौसिल ने एक मामले पर ऐसा निर्णय दिया, जो चार्ल्स द्वितीय के पचनवे वर्ष पहले के कमजोर वायदे को सम्पुष्ट करता था। जब चार्ल्स राजगद्दी पर बैठा था, उस समय उसका एक भाग्यशाली अनुयायी 'नार्दरन नैक' का मालिक बना था। सन् १७४४ मे यह भू-भाग थामस लार्ड फेयरफेक्स के बिरसे मे आया। प्रीवी कौसिल ने भूमि-अधिकारो और सीमाओ के पुराने झगडो को उसके हक मे तय किया। परिणामत उसकी जागीर पुन निर्धारित हुई। उसका नतीजा यह हुआ कि पोटोमैक नदी के ऊपर वाले भाग और रैपाहैन्नोक नदी के मध्य का बहुत बडा क्षत्र उसे मिलकीयत मे मिला।

कर्नल फेयरफेक्स जो लार्ड फेयरफेक्स के चचेरे भाई थे, लार्ड फेयरफेक्स के कारिंदे के रूप मे कार्य कर रहे थे और इस प्रकार

पर्याप्त सत्ता इनके हाथो मे आ गई थी। मालिक क्षुद्रबुद्धि एव सदेहशील व्यक्ति था। उसने जार्ज की इतनी सहायता नही की जितनी कि प्राय समझी जाती है। परन्तु उसके बारे मे अनेको काल्पनिक बाते प्रचलित थी। इसलिये जब सन् १७४८ मे वह वर्जीनिया मे अपनी सम्पत्ति की देख-रेख के लिए आया तो लोगो मे जो उत्तेजना और उत्साह पैदा हुआ होगा, उसका हम अनुमान कर सकते है।

लार्ड फेयरफेक्स आरम्भ मे बैल्वायर आ कर रहा। उस समय तक लारैन्स तथा अन्य सट्टा करनेवाले व्यक्तियो ने 'ओहियो कम्पनी' की नीव डाल ली थी। इस कम्पनी का उद्देश्य यह था कि पोटोमेक नदी के ऊपरी भाग वाले क्षेत्र मे बहुत बडे इलाके को विकसित किया जाय। यह इलाका उन्हे अनुदान मे मिला था। इस प्रकार वर्जीनिया की सीमा (धीरे-धीरे) आगे बढती जा रही थी। इसके अलावा उन्ही दिनो एक और साहसिक समुदाय ने 'लायल कम्पनी' बना कर इससे भी कही अधिक महत्वाकाक्षी विकास-योजना का सूत्र-पात किया।

इन विशाल प्रदेशीय परियोजनाओ तथा तरुण वाशिगटन के आरम्भिक जीवन-व्यवसाय का आपसी सम्बन्ध स्पष्ट है। चूँकि भूमि का इतना बडा महत्त्व था, इस कारण वाशिगटन का पहला व्यवसाय एक भूमापक के रूप मे शुरू हुआ। शायद लारेन्स की भी इसमे किसी हद तक जिम्मेदारी थी। वह यद्यपि जार्ज पर अपनी कृपा-दृष्टि रखता था, किन्तु उसने उसे ठाठ-बाट का जीवन बिताने की शिक्षा नही दी थी। सम्भव है कि लारैन्स ने जार्ज को समुद्री-व्यवसाय अपनाने की सलाह दी हो, किन्तु उसके चाचा इस सलाह के विरुद्ध थे, क्योकि उनके विचार मे यह कोई शोभनीय पेशा नही था। न ही, उनकी नजरो मे, इसमे 'उन्नति' के अधिक अवसर थे। अत उसके इस चुनाव के लिए हमे किन्ही लम्बी-चौडी व्याख्याओ की आवश्यकता प्रतीत नही होती। सम्भवत वर्जीनिया उपनिवेश मे प्रत्येक बागान-स्वामी भूमिति के बारे मे जानकारी उपलब्ध करता

था और जार्ज की तरह उसे भी छोटी उम्र मे ही भूमि की बिक्री के बिल, न्यायवादी-नियुक्ति-पत्र एव वचन-पत्र का प्रारूप लिखना सिखाया जाता था।

जब जार्ज सोलह वर्ष का हुआ, तो उसे भूमिति का इतना ज्ञान हो गया कि वह रेखाकण कार्य मे सहायता कर सके। चुनाचे सन् १७४८ मे उसने फेयरफैक्स दल के साथ शैननडोह प्रदेश मे जाकर भूमिति कार्य मे सहायता की। वह 'ब्यूरिज' के पार की उसकी पहली यात्रा थी। अगले वर्ष उसे उप-भूमापक के पद पर नियुक्त कर दिया गया। उसका काम यह था कि माऊट वर्नन के उत्तर मे कुछ ही मील दूर पोटोमैक नदी पर बैलहैवन (जिसे बाद मे अलैक्जैण्डरिया का नाम दिया गया) नगर के नक्शे तैयार करे। लारैन्स अलैक्जैण्डरिया के न्यासियो मे से था। इस प्रकार जार्ज को पहले पहल पारिवारिक सरक्षण मे ही कार्य करना पडा। तुरन्त बाद वह 'कलपैपर' काउटी का भूमापक नियुक्त हो गया। जैसे-जैसे वह उत्तरीय वर्जीनिया के इलाको मे भूमिति-कार्य करता चला गया, वैसे ही उसका व्यवसाय छोटे पैमाने पर जोरो से बढता गया। सन् १७५० के अन्त तक इस अठारह वर्षीय भूमापक ने शैननडोह नदी के निचले भाग के क्षेत्र मे तीन खण्डो पर अपने अध्यवसाय से मालिक के अधिकार प्राप्त कर लिये। यह तीनो खण्ड मिला कर १४५० एकड भूमि बनती थी। चूँकि फेरी-फार्म उसे कुछ ही दिनो मे उत्तराधिकार मे मिलने वाला था, अत वह अपने भावी जीवन के विषय मे किचित् सतोष की सास ले सकता था। चाहे वह बौद्धिक दृष्टि से प्रतिभावान नही भी था और चाहे कोई बडी सम्पत्ति उसे बिरसे मे मिली नही थी, यह स्पष्ट है कि वह उद्योगी, विश्वसनीय और किफ़यातशार था।

सन् १७५१ के अन्त मे उसके स्थायी रूप से चलने वाले दैनिक कार्यक्रम मे बाधा उपस्थित हुई। लारैन्स वाशिंगटन के प्रथम तीन बच्चे मौत की गोदी मे सो चुके थे और वह स्वय खासी से बहुत तग था। खासी का जोर दिनो दिन बढता जा रहा था। निराश

होकर उसने बारबडीस जाने का निश्चय किया। उसे यह आशा थी कि अतीव्र जलवायु से उसे शीघ्र स्वास्थ्य-प्राप्ति होगी। लारैन्स की पत्नी को विवश हो कर अपने चौथे बच्चे के साथ घर पर ही रुकना पडा। अत जार्ज लारैन्स के साथ गया। यह उसकी महाद्वीप अमेरिका से बाहर की पहली यात्रा थी। लारैन्स का यह परीक्षण असफल रहा। उसके स्वास्थ्य मे तिल भर भी सुधार न हुआ, बल्कि दुर्भाग्य से जार्ज चेचक रोग से ग्रस्त हो गया। जब उसका बीमारी से पीछा छूटा, तो वह अकेला वर्जीनिया लौट आया। उसने आ कर शोकप्रद सूचना दी कि लारैन्स की तबियत पहले से अधिक बिगड गई है और इलाज की तलाश मे शायद वह आगे बरमूडा जाय। इस बीच मे उसने फिर अपने भूमिति-कार्य को शुरू कर दिया। कुछ समय बाद उसने शैननडोह क्षेत्र मे एक और टुकडा मोल लिया, जिससे कि कुल मिला कर उसके पास दो हजार एकड भूमि हो गई।

किन्तु कुछ एक अन्य कारणो से सन् १७५२ का वर्ष, वाशिगटन परिवार के लिये क्लेशपूर्ण रहा। जार्ज को प्लूरिसी हो गयी। कुमारी फाटलेराम से उसका विवाह तय नही हो सका। ग्रीष्म ऋतु मे लारैन्स बरमूडा से वापस लौटा और कुछ ही समय बाद तपेदिक से उसकी मृत्यु हो गई। ऐसा लगता था कि मानो मृत्यु मानुषी दावो पर हस रही है।

इन दैवी विपदाओ के बीच एक दो बाते ऐसी भी थी जिनसे परिवार के लोगो को अप्रत्याशित रूप से सान्त्वना मिली। एक तो लारैन्स के वसीयत नामे से और दूसरे उसके द्वारा निर्दिष्ट मार्गों पर चलने के अवसर। भाई के वसीयत-नामे की शर्तो के मुताबिक श्रीमती लारैन्स को जीवन-पर्यन्त प्रयोग के लिये, माऊट वर्नन की जायदाद मिली। यह इसलिये कि वह लारैन्स के अवशिष्ट बालक की मा होने से उसकी न्यासधारिणी थी। दूसरी शर्त यह थी कि यदि बालक नि सन्तान ससार से चल बसे, तो माऊट वर्नन जार्ज की सम्पत्ति समझा जाय। विधवा के मरने पर जार्ज को

लारैन्स की फेयरफैक्स काउटी वाली जायदाद भी हस्तान्तरित हो जाय। इस वसीयत-नामे की शर्तें, जहाँ तक जार्ज का सम्बन्ध था, निस्सन्देह काफी उदार थी।

एनी फेयरफेक्स का अवशिष्ट बालक ज्यादा देर जिन्दा नही रह सका। वह भी अपने अन्य भाइयो की तरह शीघ्र मृत्यु का ग्रास बना और दफनाया गया।

लारैन्स की मृत्यु से वर्जीनिया के मिलिशिया एड्जूटैट का स्थान रिक्त हो गया। जार्ज ने इस स्थान के लिये प्रार्थना-पत्र भेजा, जो मन्जूर हो गया। सन् १७५३ मे वाशिगटन बालिग हो गया। उस समय उसकी आर्थिक दशा अच्छी और मजबूत थी। उसने फ्रैडरिक्सबर्ग के नये 'फ्रीमैसन' भवन मे अपना नाम सदस्यो मे दर्ज कराया। काऊटी का भूमापक होने की हैसियत मे उसे वर्ष-भर मे पच्चास पौण्ड की वृत्ति मिलती थी। उसे अपने व्यवसाय से अच्छी-खासी आमदनी हो रही थी। शैननडोह की दो हजार एकड की जायदाद के अतिरिक्त उसे उत्तराधिकार में जो भूमि मिली वह सब मिलाकर चार हजार एकड थी। एडजूटैट होने के नाते उसे सौ पौड वेतन के रूप मे और प्राप्त हो जाते थे। इसके साथ ही उसे 'मिलिशिया' मे मेजर के पद से प्रतिष्ठित किया गया। थोडे ही समय बाद उसने अपनी बडी भौजाई से माऊट वर्नन किराये पर ले लिया और फेरीफैक्स की बजाए उसे अपना निवास-स्थान बनाया। तब से लेकर मृत्युपर्यन्त वह इसी घर मे रहा। कुछ काल के अनन्तर उसने इसे खरीद लिया। लगभग चालीस वर्ष तक यही स्थान उसका केन्द्र-बिन्दु बना रहा। उसकी गृह-सम्बन्धी सुरक्षा की सम्पूर्णता के लिए अब उसकी एक ही आवश्यकता थी—केवल एक धर्म-पत्नी।

## तरुण-सैनिक

किन्तु कुछ समय के लिए उसे पत्नी की तलाश को स्थगित करना पडा। यह बागान का युवा स्वामी एक और स्वप्न मे खो गया। वह स्वप्न था एक सैनिक योद्धा के रूप मे नाम पैदा करना।

वाशिगटन के जीवन की यह धारा इस ओर पाच वर्षों तक बहती रही। यह उचित लगता है कि इसे कुछ विस्तार से कहा जाय।

सर्वप्रथम हम वाशिगटन के शुरू के सैनिक जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाए सक्षेप से रखेगे। यह एक प्रकार से उसकी आशातीत सफलता की कहानी है। उसके बाद हम किंचित् गहराई मे जायेगे और यह देखना चाहेगे कि उन बातो का उसके चरित्र और आकाक्षाओ पर प्रकाश डालने मे क्या महत्व है।

सन् १७५३ मे ब्रिटेन का उत्तर-अमरीकी-उपनिवेशीय साम्राज्य समुद्र के पूर्वी तट से लेकर एलघनीज की पर्वतमालाओ तक फैला हुआ था। इन पर्वतमालाओ के दूसरी ओर फ्रास था, जिसके साथ ब्रिटेन अर्ध-शताब्दी से लगातार लडता आ रहा था। फ्रास का अमरीकी साम्राज्य ब्रिटिश साम्राज्य के उत्तर और पश्चिम मे घेरती हुई विशाल चाप के आकार मे था। यह चाप सेंट लारैन्स नदी के ऊपरी भाग से होती हुई 'ग्रेट लेक्स' मे से गुजरती थी और मिसिसिपी नदी के निचले भाग को छूती हुई 'न्यू ओरलियन्ज' तक चली जाती थी। यह एक हल्की-पतली चाप थी, पर स्थिति यह थी कि यदि फ्रास अपने कब्जे मे आये क्षेत्र को सुदृढ बना लेता है, तो वर्जीनिया तथा अन्य उपनिवेश सिमट कर समुद्र-तट तक ही रह जाते है। दूसरी तरफ, यदि ब्रिटेन ओहियो घाटी पर कब्जा कर लेता है, तो चाप टुकडे-टुकडे हो जाती है। उस अवस्था मे मिसिसिपी भी फ्रासीसियो के कब्जे से छीनी जा सकती थी। इस प्रकार कि वर्जीनिया और विशेषकर ओहियो कम्पनी दोनो ही इस सघर्ष मे उलझे हुए थे। कहने के लिए तो फ्रास और ब्रिटेन मे सन् १७४८ से सन्धि थी, लेकिन वास्तव मे उनमे लडाई की आग कभी भी भडक सकती थी, क्योकि यह शान्ति नही थी, बल्कि युद्ध-विश्रान्ति थी। हालात को देखते हुए ओहियो कम्पनी ने यह दृढ निश्चय किया कि ओहियो के सगम पर, जहा मोननगहेला और एलघैनी नदिया मिलती है, एक दुर्ग बनाया जाय। उसके जासूसो ने खबर दी कि फ्रासीसी झील एरी के दक्षिण से ओहियो नदी तक मुकाबले मे किलो की एक

शृखला सी बना रहे है और ये किले प्रैस्क आईल, लेबाफ और सम्भवत बैननगो और लौग्सटाऊन पर होगे । (इस खबर से चौक कर) वर्जीनिया के लैफ्टीनैण्ट गवर्नर, रौबर्ट डिनविड्डी ने फ्रासीसियो को चेतावनी के रूप मे एक अन्तिम प्रस्ताव भेजा और उसको लेकर गये मेजर वाशिगटन ।

डिनविड्डी के इस शिष्टतापूर्ण किन्तु दृढ शब्दो मे लिखे हुए पत्र को लेकर, फ्रासीसी सेनापति को देने के लिए, वाशिगटन ने १७५३ मे अक्तूबर मास मे प्रस्थान किया । उन्होने अपने साथ क्रिस्टोफर नाम के एक सुयोग्य, सीमान्त प्रदेश के निवासी को लिया । इसके अलावा उन्होने हालैण्ड के द्विभाषिये बानब्राम और अन्य चार आदमियो को भी लिया । वाशिगटन को आने-जाने मे ढाई महीने लगे । विलियम्जबर्ग लौटने पर जो वह लेवाफ किले से उत्तर मे पत्र लाये, वह मूल-पत्र के समान ही शिष्टतापूर्ण, किन्तु दृढ भाषा मे लिखा हुआ था ।

रास्ते का सफर जोखम का था । मौसम भी खराब था । जाती बार वे नाव मे और घोडे पर सवार होकर गये । शुरू मे वे लोग ओहियो कम्पनी की इस पगडण्डी से गये जिसे जिस्ट साफ कर रहा था । इससे होते हुए वे बीहड जगल मे घुसे । पोटोमैक नदी को पार करके वे घाटी मे आये । वहा से वे उस स्थान पर पहुचे जहा यौघियोघैनी नदी मौननगहेला नदी मे विलीन हो जाती है । तत्पश्चात् वे ओहियो सगम के बिल्कुल ही पास इण्डियनो की बस्ती, शन्नोपिन, मे पहुचे । उसके बाद वे लौग्सटाऊन और वैननगो गए और वहा से लेवाफ पहुच गये जो झील एरी के किनारे पर स्थित था । वाशिगटन के लिए हर वस्तु नई-नई थी—वनाच्छादित तथा टूटा-फूटा भू-भाग, इण्डियनो के भिन्न-भिन्न रहन-सहन के ढग और आदतें, विनीत, किन्तु जिद्दी फ्रासीसी, उन्होने 'उन्हे बताया कि उनकी यह निश्चित योजना है कि ओहियो पर पूरी तरह कब्जा जमाया जाय और भगवान ने चाहा तो वे इसे लेकर छोडेंगे ।'

जिस्ट को साथ लेकर वाशिगटन शीघ्रता से लौटे । उन्हे इस

लिये बहुत जल्दी थी, क्योकि वह आकुलता-पूर्ण सूचना शीघ्राति-शीघ्र देना चाहते थे। आती बार मार्ग मे उन्हे अत्यधिक कठिनाइयो और भीषण स्थितियो का सामना करना पडा। एक इण्डियन ने उन पर बिल्कुल सामने से गोली चलाई। सौभाग्य की बात कि वह निशाना चूक गया। इसलिये कि उसे उनके मार्ग का पता न चले, वे रात-भर सफर करते रहे। दिखावा यह किया कि वे वहा खेमे गाड रहे है। दूसरे दिन भी वे पैदल सफर करते रहे। एलघैनी नदी आधी जमी हुई थी। उसे पार करने के लिये उन्हे विशेष प्रकार का बेडा बनाना पडा। वे लोग नदी पार कर ही रहे थे कि वाशिगटन उसके तख्ते पर से नदी मे जा गिरे। वह डूबने वाले ही थे कि उन्हे पानी से निकाल लिया गया। नदी मे गिरने के कारण उनके कपडे पानी मे तर-बतर हो गये। इन्ही गीले कपडो मे ही उन्हे कडाके की सर्दी मे रात गुजारनी पडी। विचित्र बात यह हुई कि जार्ज वाशिगटन की बजाय जिस्ट तुषार-ग्रस्त हुआ।

अन्त मे जब वाशिगटन विलियम्जबर्ग वापस लौटे, तो डिन-विड्डी के कहने पर उन्होने शीघ्रता-पूर्वक उस यात्रा का विवरण लिखा। डिनविड्डी ने उस विवरण को छपवा लिया। इससे उसका निस्सन्देह अभिप्राय यह था कि सविधान सभा के सदस्यो पर स्थिति की गम्भीरता हृदयाकित की जाय। लन्दन मे इसे तीन विभिन्न प्रकाशनो द्वारा पुन मुद्रित किया गया, जिनमे वाशिगटन को (उनके साहसपूर्ण कार्य के लिए) यथोचित श्रेय दिया गया। सविधान-सभा पर इसका काफी प्रभाव पडा और उसने वाशिगटन को देने के लिये पचास पौड की रकम स्वीकार की। डिनविड्डी उनका नया पृष्ट-पोषक बना। कहानी है कि वाशिगटन की प्रशसा करते हुए उसने उन्हे 'बहादुर बेटा' कहा था। मेजर वाशिगटन का सितारा बुलन्दी पर था।

जो घटनाए बाद मे हुई, उनमे यह सिद्ध होता है कि नियति ने उनके लिए उच्च स्थान निश्चित कर रखा था। डिनविड्डी ने ओहियो देश को कब्जे मे रखने के लिए आक्रमण की योजना बनाई।

वाशिंगटन को वर्जीनिया की मिलिशिया मे लेफ्टीनैण्ट कर्नल के रूप मे कमीशन देकर उप-सेनापति के लिए चुन लिया गया। जिन दिनो वाशिंगटन अपनी सेना की भर्ती मे मसरूफ थे, जिस्ट और ओहियो कम्पनी के दूसरे कारिंदे, विलियम ट्रैण्ट, सीमा पर मोननगेहला नदी के किनारे कम्पनी का गोदाम और सगम पर कम्पनी का एक किला बना रहे थे। ट्रैण्ट को कैप्टन का कमीशन मिला और उसे आदेश मिला कि वह सीमा-प्रान्त निवासियो का एक दस्ता भर्ती करे। लफ्टीनैण्ट कर्नल वाशिंगटन से कहा गया कि वह दो और दस्ते भर्ती करके ट्रैण्ट की सेना को कुमक पहुँचाए।

वाशिंगटन, अप्रैल, १७५४ मे, अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अलैक्जैण्डरिया से रवाना हो गये। उनके साथ उनके आठ अधीन अफसर थे। (जिनमे वामब्राम भी था, जिसे वाशिंगटन ने कैप्टन की कमीशन दिला दी थी।) (इनके अलावा उन्होने एक सर्जन, एक स्वीडन देश का 'भद्र स्वय-सेवक' तथा एक सौ पचास आदमी और लिए। तीन सप्ताह के अभिनिर्माण के बाद वे लोग पौटोमैक नदी के ऊपरी भाग मे विल्सक्रीक पर पहुँच गए। (इसी स्थान पर बाद मे कम्बरलैण्ड का दुग बना।) यहाँ आकर यह भयप्रद किंवदन्ती सम्पुष्ट हुई कि ट्रैण्ट को ओहियो सगम पर अधिक शक्तिशाली फ्रासीसी सेना ने खदेड दिया है और अब वह पीछे हटता हुआ विल्ज-क्रीक की तरफ ही लौट रहा है। किन्तु जब पडौसी इण्डियनो ने दुबारा अपनी वफादारी की घोषणा की, तो इससे प्रोत्साहन पाकर और अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए वाशिंगटन ने अपने अफसरो की बात मान ली कि उन्हे मौननगहेला के गोदाम तक आगे बढना ही चाहिए। यदि वे ऐसा करते तो वे ऐसे स्थान पर पहुँच जाते जो ओहियो सगम से कुल चालीस मील दूर है। यह जगह इसलिए सैनिक महत्व की थी, क्योकि फ्रासीसी वहाँ अपना एक किला बना रहे थे, जिसका नाम उन्होने बाद मे ड्यूक्वैने रखा।

अपने निश्चय के अनुसार वे मोननगहेला की ओर धीरे-धीरे बढे। रास्ते मे इस कदर बीहड जगल थे और भूमि-तल इतना

टूटा-फूटा था कि सैनिक-सामग्री को आगे खीचना दुष्कर हो गया। पन्द्रह दिन की अवधि मे वह केवल बीस मील आगे बढ सके। किन्तु उन्होने हिम्मत न हारी और वह ग्रेट मीडोज मे से होते हुए लारल माऊटेन तक आगे बढते गये। यहाँ उन्हे जिस्ट मिला जो अपने अभीक्षण से यह सूचना लेकर आया कि फ्रासीसियो का एक सैन्यदल निकट ही लुका-छिपा हुआ है। दूसरे दिन प्रात ही वाशिगटन की उनसे भिडन्त हुई। किस पक्ष ने सबसे पहले गोली चलाई—यह नही कहा जा सकता। असल बात तो यह है कि दोनो देशो मे से किसी को भी गोली चलानी नही चाहिये थी, क्योकि औपचारिक रूप से उन मे अब तक युद्ध की स्थिति नही थी। किन्तु वे युद्ध के इतने निकट थे कि इस प्रश्न पर बहस करना अप्रासगिक सा जान पडता है। तथ्य यह है कि वाशिंगटन के आदमियो ने फ्रासीसियो पर अकस्मात् धावा बोल दिया और इस अल्पकालीन लडाई मे उन्होने फ्रासीसियो के छक्के छुडा दिये। परिणामत फ्रासीसियो के दस सैनिक मारे गये और बीस आदमी बन्दी बना लिये गये। इन मरने वालो मे फ्रासीसी नेता एम० डी० जुमनविल भी था। वाशिगटन के इण्डियन सैनिको ने इन मृतक-सैनिको मे से कइयो की खोपडियाँ काट डाली। वाशिंगटन की निजी क्षति अधिक नही थी — केवल एक ही आदमी मरा था और दो या तीन आहत हुए थे।

यह घटना मई के अन्त की है। वाशिंगटन ने इन बन्दियो को वर्जीनिया भेज दिया। उन्होने जो कार्य किए थे, उनके लिए उन्हे 'वाह'—'वाह' मिली। चूकि सेना-पति की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए उन्हे अब सम्पूर्ण कर्नल का पद देकर वर्जीनिया के सारे दस्ते का सेना-पति बना दिया गया। जो दस्ते अन्य उपनिवेशो से आकर शामिल होने थे, वे उनके अधीन नही थे। किन्तु एक ही दस्ता अन्य उपनिवेशो से पहुँचा, जिससे कोई ज्यादा फर्क नही पडा। सन् १७५४ के जून मास के अन्त तक वाशिंगटन को और बडा दायित्व सौप दिया गया। अब वर्जीनिया की मिलिशिया के अतिरिक्त नार्थ कैरोलिना की नियमित स्थायी सेना तथा इण्डियनो के कबीले भी उनके अधीन थे।

वाशिंगटन को सूचना मिली कि फ्रासीसियो ने ड्यूक्वैने के दुर्ग पर भारी सख्या मे सेना एकत्र कर ली है और वे शीघ्र ही आक्रमण करने वाले है। रसद की कमी के कारण, इण्डियन सैनिको के धीरे-धीरे साथ छोड जाने के कारण तथा अन्य समस्याओ से खीझ कर उन्होने शीघ्रतापूर्वक अपनी सेना 'ग्रेट मीडोज' के भण्डारागार पर पीछे हटा ली। यह आगार जल्दी-जल्दी बनाया गया था, अत इसे 'नैसेसिटी' (आवश्यकता) दुर्ग का नाम दिया गया। ३ जुलाई को फ्रासीसियो ने उस किले को घेर लिया। उस समय तक सब इण्डियन सैनिक वाशिंगटन को छोड कर जा चुके थे। जुमनविल के साथ जो युद्ध हुआ था, उसके विपरीत यह लडाई लगभग सारा दिन चलती रही और जब तक सघर्ष रहा, जोरो की वर्षा होती रही। फ्रासीसी निरन्तर गोली चलाते रहे और वाशिंगटन की सेना के अधिकाधिक पास आते गये। 'नैसेसिटी' का किला सेना की रक्षा नही कर सका। वाशिंगटन के आदमियो की गम्भीर क्षति हुई। उनके मवेशी और घोडे शत्रु की गोलियो के शिकार हुए। उपनिवेशो की सेना की स्थिति सचमुच सकटमय थी। उसके पास खुराक और बारूद दोनो नही बचे थे और इस पर तुर्रा यह कि शत्रु भारी सख्या मे चारो तरफ से उन्हे घेरे हुए था। परिणामत वाशिंगटन को विवश होकर आत्म-समर्पण करना पडा। फ्रासीसियो ने उन्हे सैनिक प्रबन्ध मे बाहर जाने की आज्ञा इस शर्त पर दे दी कि वह अपनी सेना को वर्जीनिया वापस ले जाए। उनके दो अफसर बन्धक के रूप मे वही रख लिए गए। इनमे से एक वानब्राम था जो अब भी द्विभाषिये के तौर पर काम कर रहा था। इसी ने ही समर्पण-पत्र का अनुवाद किया था, जिस पर हस्ताक्षर करने के लिये वाशिंगटन को विवश होना पडा था।

इस तरुण अफसर के लिये यह हार एक कडवा घूट थी। कइयो का विचार था कि उन्होने इस युद्ध मे दोष-पूर्ण निर्णय-शक्ति का परिचय दिया है। वह जो कुछ भी कर सकते थे, उन्होने किया। लदन और विलियम्बर्ग, दोनो स्थानो मे प्रतिक्रिया अच्छी हुई और

उनके कामो की साधारणत सराहना की गई। उम्र मे अपेक्षतया छोटा होते हुए भी उनकी ख्याति चारो तरफ फैल गई। उनका एक निजी पत्र जिसमे उन्होने जुमनबिल के साथ की गई लडाई का वर्णन किया था 'लन्दन मैगजीन' मे छपा। इस पत्र मे, जो वाशिंगटन द्वारा अपने भाई को लिखा गया था, उन्होने लिखा था–'हमने उस युद्ध मे शानदार विजय प्राप्त की।' साथ ही उन्होने युवकोचित उत्साह से यह शब्द भी उसमे जोड दिये थे—'मैने गोलियो को साँए-साँए करते सुना। मेरा विश्वास कीजिए कि उस ध्वनि मे कोई मनोहारी बात अवश्य है।' होरेस वालपोल कहता है कि उसने इस बारे मे उस समय के ब्रिटिश सम्राट् जार्ज द्वितीय से भी जिक्र किया। उसके कथनानुसार बादशाह जार्ज ने इस पर यह टिप्पणी की—'यदि वाशिंगटन इतनी गोलियो की आवाज सुन लेता, तो यह न कह पाता।' इस टिप्पणी की जानकारी उस समय वाशिंगटन अथवा उसके वर्जीनिया के समकालीन लोगो को न थी। परन्तु उन्हे यह अवश्य मालूम था कि जो कोई भी घटना वर्जीनिया मे होती है, उसे पेरिस ओर लन्दन मे गौर से देखा-जाँचा जाता है। वाशिंगटन जैसे प्रदेश के एक सैनिक को यह विचार सचमुच मादकता लाने वाला था कि एक स्थानीय घटना, जिसके होने मे उनका अपना हाथ था, विश्वव्यापी महत्व ग्रहण कर चुकी है।

वाशिंगटन थोडे समय के लिए अवश्य बदनाम हुए, जब कि फ्रासीसियो ने उनकी निजी डायरी का, जो दैवयोग से नैसेसिटी दुर्ग मे छूट गई थी, मुद्रण करवाया। उन्होने अपने पक्ष मे प्रचार करने के लिए इसका उपयोग किया—यह सिद्ध करने के लिए कि इन सीमा प्रान्त को लडाइयो मे अग्रेजो ने पहले-पहल आक्रमण किया था। उनका यह कहना था कि कुछ मास पूर्व वाशिंगटन की तरह ही जुमनविल भी शान्तिमय उद्देश्य के लिए उन क्षेत्रो मे गया था, किन्तु फिर भी उसकी निर्दयतापूर्वक 'हत्या कर दी गई'। चूंकि वानब्राम समर्पण-पत्र मे उस बेहूदा शब्द को नही देख पाया था—जो अनेक बार उसमे प्रयुक्त हुआ था—फ्रासीसियो ने दलील दी कि

वाशिंगटन ने उस हस्ताक्षरित पत्र मे अपना अपराध स्वीकार किया है। चूकि फ्रासीसी वाशिंगटन को बहुत बडा धूर्त कह कर पुकारते थे और उन्होने एक लम्बी कविता मे, जो इसी अवसर के लिए लिखी गई थी, उन्हे इसी प्रकार का घृणास्पद व्यक्ति चित्रित किया था, अग्रेज इस कारण उनका पक्ष अधिक उत्साह से लेने लगे। अग्रेजो का कहना था कि वाशिगटन ने जल्दी मे और दबाव मे आकर समर्पण-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। फिर, यदि वर्जीनिया के अधिकारियो ने, 'नैसेसिटी' दुर्ग के समझौते मे वाशिगटन द्वारा दिए गये इस वचन को कि जुमनबिल-सघर्ष के कैदियो को छोड दिया जायगा, पूरा नही किया, तो इसमे उनका क्या दोष ?

धीरे-धीरे यह हल्ला-गुल्ला समाप्त हुआ। कई महीने बीत जाने पर वाशिंगटन फिर उलझनो मे फँस गये। उन्होने सन् १७५४ मे अपने कमीशन से त्याग-पत्र दे दिया। कारण यह था कि वह उन योजनाओ मे होने वाली गडबडी से निराश हो उठे थे जो सीमा-प्रान्त की चढाइयो मे बनाई जाती रही। किन्तु १७५५ की वसन्त ऋतु मे उन्होने फिर ओहियो सगम की ओर जाने वाला परिचित मार्ग पकडा। इस बार वह बिना किसी सरकारी पदस्थिति के, एक स्वय-सेवक के रूप मे थे—ठीक उसी तरह जिस तरह कि एक वर्ष पूर्व स्वीडन देश का भद्र पुरुष उनकी सेना के साथ गया था। उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि सफलता उनके कदम चूमेगी। जनरल एडवड ब्रैडॉक भी अपने दो ब्रिटिश बटैलियनो के साथ वर्जीनिया पहुच गये। यह एक श्रेष्ठ, अनुभवी योद्धा थे, जो अपने विचारो मे निर्भ्रम और दृढ थे। इनका लक्ष्य ब्रिटेन-अधीन अमेरिका के ओहियो भाग से फ्रासीसियो को खदेडना था। वाशिगटन को ब्रेडाक के परिसहाय 'परिवार' का अवैतनिक सदस्य बनने का निमन्त्रण मिला।

पहले की तरह देर ही पर देर हो रही थी जो कष्टकारक थी। आखिर सन् १७५५ के मई मास के अन्त मे ब्रैडॉक की सेना (जिसमे दो हजार से अधिक नियमित सैनिक, स्वय-सेवक और मिलिशिया के आदमी थे) डयूक्विने दुर्ग तक एक सौ पचास मील की यात्रा

तय करने के लिए कैम्बरलैण्ड के दुर्ग से चल पडी। बोझल सामान और तोपो के कारण सेना इतनी धीमी गति से जा रही थी कि—जैसा कि वाशिंगटन ने स्वय लिखा है कि उनके सुझाव पर—कम गति वाली वस्तुए सेना के पिछले भाग मे अलग ही चल रही थी। वह इनके साथ थे। मार्ग मे उन्हे पेचिश हो गई। छ सप्ताह अनन्तर जो गोलियो की ध्वनि उनके कानो मे पडी, वह पहले की तरह आकर्षक नही थी।

अभी ब्रैडॉक की सेना का अगला भाग डयूक्विने से कुछ ही मील की दूरी पर था और वन मे सावधानी से आगे बढ रहा था जब कि फ्रासीसियो और इण्डियनो की एक टुकडी ने अचानक उन पर हमला बोल दिया। वे इण्डियनो के वस्त्र धारण किये हुए थे और उनका नेतृत्व एक निर्भीक फ्रासीसी अफसर कर रहा था। वे पेडो के झुरमुट मे से अकस्मात् निकले और उसके आदेश पर इधर-उधर बिखर कर गोलियो की वर्षा करने लगे। कुछ क्षण स्थिति ब्रिटिश सेना के काबू मे रही और फ्रासीसियो के कदम उखडने लगे, किन्तु तुरन्त बाद पासा पलटा और ब्रैडॉक के प्रतिकूल पडा। इसके अनेक कारण थे। ब्रिटिश सैनिक लाल वर्दी मे थे और एक जगह इकट्ठे होने और विशेष वस्त्र धारण करने के कारण स्पष्टरूप से पहचाने जाते थे। इसके अलावा शत्रु-सैनिक बिना निशाना चूके गोलिया दाग रहे थे—जिससे ब्रिटिश सैनिक घबरा उठे। इनके अतिरिक्त उनका प्रशिक्षण जिस ढग से हुआ था, वे उस प्रकार से यहा पक्तिबद्ध होकर लड भी न सकते थे। परिणामत वे असहाय और उन्मत्त लोगो की तरह बीसो की सख्या मे धराशायी होते चले गये। अफसरो का यह हाल था कि वे सैनिको को इकट्ठा करके लडाने की जो कोशिश कर रहे थे उसके कारण उनमे से तीन चौथाई हताहत हुए। मृतको मे से ब्रैडॉक भी था। वह क्रोधावेश मे, घोडे पर सवार, इधर से उधर, साहस के साथ भागता रहा था, किन्तु इस कदर जख्मी हुआ कि जिंदा बच न सका। वाशिंगटन भी लडाई मे शरीक होने के लिए तेज रफ्तार से आगे बढे। उनके

कथनानुसार वर्जीनिया की फौज अधिक जम कर और धैर्य-पूर्वक लडी। किन्तु उनकी अपनी और दूसरो की सब कोशिशें बेकार गई। वास्तव मे उनका भाग्य ही अच्छा था कि वह स्वय जिन्दा बच निकले। उनके दोनो घोडे मारे गए और उनके वस्त्र गोलियो से चीथडे-चीथडे हो गए। उनके पक्ष के अनेक सैनिक थे जो इतने खुशकिस्मत नही थे। यह जगल का भाग मानो एक कत्लेआम की जगह बन गया। बैडॉक के करीब नौ सौ आदमी या तो मारे गये और या आहत हुए। इतनी अधिक मौतो के कारण, खुशी से नारे लगाते हुए इण्डियनो को, बहुत बडी सख्या मे खोपडियाँ उतारने का अवसर मिला। (बाद मे एक ब्रिटिश अफसर ने, जबकि निराश बचे-खुचे सैनिक पीछे हट रहे थे, यह कहा—'खोपडिया उतारते हुए इन इण्डियनो की भयकर चिल्लाहट मुझे मृत्युकाल के समय तक व्याकुल करती रहेगी।')

यदि ब्रैडॉक का उप-सेनापति बचे-खुचे सैनिको को इकट्ठा करके डयूक्विने पर धावा बोल देता, तो सम्भव है कि इस विध्वस का परिशोधन हो जाता। वास्तव मे तब युद्ध का सहज मे पासा पलट सकता था। किन्तु ब्रैडॉक इतना मूर्ख नही था जितना कि उसे समझा जाता है। उसके सैनिको पर भी अचानक हमला नही हुआ था, इसके अलावा उसकी सेना फ्रासीसी सेना से कही अधिक थी। और यदि डयूक्विने का हमला इतना साहसपूर्ण न होता, तो फ्रासीसियो को हार का मुह देखना पडता। लेकिन इस प्रकार सोचने से हार की लज्जाजनक वास्तविकता मे कोई अन्तर नही पडता। डयूक्विने पर फ्रासीसियो का कब्जा था और इसलिए वर्जीनिया का सम्पूर्ण सीमान्त क्षेत्र लूट-पाट मे अभ्यासी और विजय से उल्लसित इण्डियनो के लिए सर्वथा खुला मैदान बन गया।

वाशिंगटन के लिए किंचित् सतोष की बात अवश्य थी। उस करारी हार की वजह से कितनी ही घनी उदासी क्यो न आई हो और कितने ही आरोप-प्रत्यारोप एक दूसरे पर क्यो न लगाये गये हो, उनके निर्मल यश पर आच नही आई। उनके विषय मे मशहूर

था कि बीमार होने के बावजूद वह बहादुरी के साथ लडे। नार्थ कैरोलीना के गवर्नर ने उन्हे लिखा——'श्रीमन्! मुझे आज्ञा दे कि कि मै आपको गत युद्ध मे आपके प्राणो की रक्षा के कारण बधाई दू। आपने ओहियो नदी के तट पर अमर कीर्ति प्राप्त की है।' इसके अतिरिक्त ऐसे ही प्रशसा के और भी पत्र उन्हे मिले। वह दुबारा वर्जीनिया सरकार मे कर्नल के पद पर नियुक्त किये गये, किन्तु अब उन्हे वर्जीनिया की सेना का प्रधान सेनापति बनाया गया। यह सन् १७५५ के अगस्त मास की बात है, जबकि वह अभी केवल तेईस वर्ष के थे।

पदवी तो बडी थी, किन्तु कार्य इतना दुष्कर था कि कोई भी उससे ऊब सकता था। उनके पास कुछ ही सौ सैनिक थे, किन्तु उनसे अपेक्षा यह की जाती थी कि वह साढे तीन सौ मील की सीमा-पक्ति की रक्षा करेगे। वर्जीनिया मे बसने वाले तथा सट्टा करने वाले दोनो श्रेणियो के लोगो को जो बडी बडी आशाए थी, वे मिट्टी मे मिलती नजर आईं। ब्रिटेन और फ्रास के बीच मे मई, १७५६ तक सरकारी तौर पर युद्ध घोषित नही हुआ था और जो जो मुख्य अभियान थे, वे उत्तर अमेरिका मे अन्य स्थानो मे हुए थे। वाशिगटन और उनके साथी जो पश्चिम की चौकियो पर तैनात थे, यह महसूस करने लगे थे कि उनकी स्थिति विस्मृत सीमा पर विस्मृत मनुष्यो सरीखी है। सन् १७५७ के अन्तिम भाग मे वाशिगटन पुन पेचिश के रोग से ग्रस्त हो गये। अन्त मे उन्हे अपनी नौकरी छोडनी पडी, क्योकि उनकी तबीयत बहुत बिगड चुकी थी। अत विवश ही कर उन्हे माऊट वर्नन लौटना पडा। उनके बिगडे स्वास्थ्य को देख कर यह शका उत्पन्न होती थी कि कही वह भी अपने पिता तथा सौतेले भाई का अनुसरण करते हुए मृत्यु का ग्रास न बन जाए। अभी तक उन्होने विवाह नही किया था। इसलिए उनकी पीढी को चलाने के लिए उनका कोई उत्तराधिकारी पैदा नही हुआ था। उनकी लम्बी अनुपस्थिति के कारण माऊट वर्नन की ओर ध्यान नही दिया गया था। इसी प्रकार उनके

अन्य मामले ज्यो के त्यो पडे थे। उन्होने दो बार नगरपालिका के चुनाव लडे थे और दोनो ही बार उन्हे चुनावो मे मुह की खानी पडी थी।

परन्तु सन् १७५८ की वसन्त ऋतु मे यह फिर स्वस्थ हो गये और इस योग्य हो गये कि किसी दूसरे अभियान मे शामिल हो सके। ब्रिगेडियर जनरल फोर्ब्स के अधीन बिटिश सेना ने, जो उत्तर अमेरिका की अग्रेजी सेनाओ मे से थी, पुन ड्यूक्वैने पर चढाई की योजना बनाई। तदनुसार वाशिंगटन के लिए उस ओर प्रस्थान करने का चौथा अवसर बन गया। किन्तु उन्हे यह जान कर अचम्भा हुआ और इस बात पर गुस्सा भी आया कि फोर्ब्स बजाए पुराने, सुपरिचित मार्ग के एक नई सडक का निर्माण करने लगे हैं जो पैनासिलवेनिया के रेसटाऊन से आरम्भ होकर पश्चिम की ओर जायगी। वाशिगटन ने उस पुराने मार्ग के गुण और लाभ जताते हुए फोर्ब्स के इरादे को बदलने का यत्न किया, किन्तु सब बेकार गया। फोर्ब्स अन्त तक अपने निर्णय पर अडा रहा। इसके परिणाम-स्वरूप जैसा कि वाशिंगटन अफसोस से देख रहे थे—सप्ताह धीरे-धीरे महीने बने और गर्मी का मौसम भी समाप्ति पर आ गया। अभी तक फोर्ब्स की सेना ओहियो सगम की ओर मार्ग-निर्माण मे जुटी हुई थी। इस विलम्ब के कारण ब्रिटिश सेना लगभग इस निश्चय पर पहुँची ही थी कि उस वर्ष शरद ऋतु मे आगे बढने के प्रयास छोड दिये जाय, जब कि सन् १७५८ के नवम्बर मास के अन्त मे फ्रासीसियो ने ओहियो घाटी मे लडाई जारी रखने का विचार ही अन्तिम रूप से त्याग दिया। उन्होने अग्रेजी फौज द्वारा घेरा डालने की प्रतीक्षा नही की, बल्कि उससे पूर्व ही ड्यूक्वैने दुर्ग को आग लगा दी। इस सफलता मे, जिसके पाने मे एक बूद भी रक्त नही बहा था, रुचिहीनता का तत्व अवश्य था, इसे प्राप्त करने के लिये किसी प्रकार के सघर्ष की जरूरत नही पडी थी। तो भी, यथेष्ट उद्देश्य की पूर्ति तो हो ही चुकी थी। बाद मे उसी ड्यूक्वैने की राख पर ब्रिटेन का सुदृढ किला बना। इसे 'पिट' दुर्ग का नाम दिया गया। इस विजय

का फल यह हुआ कि वर्जीनिया उपनिवेश की पश्चिमी सीमा पर काफी हद तक शान्ति की व्यवस्था हो गई।

वाशिंगटन सैनिक-जीवन से विदाई लेने को तैयार थे, यद्यपि अन्य स्थानो पर फ्रासीसियो से लडाई चल रही थी। इस अभियान के अन्त मे उनकी पद-स्थिति अवैतनिक ब्रीगेडियर की थी। सन् १७५८ मे वह आखिरकार फ्रेड्रिक काऊटी के निर्वाचन-क्षेत्र से नगरपालिका के लिए चुन लिये गये और उनकी सगाई भी हो गई। वर्जीनिया के सैनिक-अफसरो ने जब यह सुना कि वाशिंगटन अपने पद से त्याग-पत्र दे रहे है, तो उन्होने अपने 'विनयपूर्वक आवेदन' मे उन्हे एक वर्ष और अपने पद पर रहने के लिए आग्रह करते हुए कहा—

'श्रीमन्! इस बात को सोचिये कि इतने उत्कृष्ट सेनापति, सच्चे मित्र और मधुर और मिलनसार साथी का वियोग हमारे लिए कितना दु खकर होगा।'

'जब हम इस बात को और अधिक सोचते है, तो हमे यह सोच कर और भी दु ख होता है कि आपकी विदाई से, हमारी ही तरह इस अभागे देश को जो क्षति होगी उसकी पूर्ति करना नामुमकिन होगा। हमारे देश को आपके समान सेना-सम्बन्धी मामलो मे अनुभवी कहाँ मिलेगा? इसे ऐसा व्यक्ति भला कहा प्राप्त होगा जो अपने देश-प्रेम, साहस और आचार-व्यवहार के कारण इतना कीर्तिमान हो? आप मे हमारा अक्षुण्ण विश्वास है। हम आपको भलीभाति जानते-पहचानते है और आपसे हमारा सच्चा प्यार है। उस समय जबकि आप हमारा नेतृत्व कर रहे होते है, तो आपकी मौजूदगी हमारे सभी के अन्दर दृढता और शक्ति का सचार करती है, हमे भयकर से भयकर खतरो का सामना करने की हिम्मत बधाती है, और हमे इस योग्य बनाती है कि हम भारी परिश्रम और कठिनाइयो की परवाह तक न करे।'

इस प्रकार के प्रशसा-युक्त शब्दो की सचाई मे कोई सन्देह नही कर सकता। न ही हम उनके उस पत्र मे सन्निहित सारभूत सचाई

की उपेक्षा ही कर सकते है जो उन्होने सन् १७५७ के सितम्बर मास मे डिनविड्डी को लिख कर भेजा था—

"मेरे अन्दर कमजोरिया है और सम्भवत बहुत सी है—मैं इससे इनकार नही कर सकता। यदि मैं पूर्णता का मिथ्या अभिमान करू, तो यह मेरे लिए अपने मुह मिया मिट्ठू बनने वाली बात होगी और यह मेरा खोखलापन होगा। ससार भी मुझे इन्ही नजरो से देखेगा। किन्तु मैं यह जानता हू—और मुझे इससे अत्यधिक सान्त्वना मिलती है कि आज तक किसी सार्वजनिक कर्तव्य पर नियुक्त व्यक्ति ने मेरे से ज्यादा दयानतदारी से और देश-हित के लिए मेरे से अधिक उत्साह के साथ अपने कर्तव्य को नही निभाया होगा।"

किन्तु यह घोषणा हमे कुछ विचित्र सी लगती है। सेवा-निवृत्त कर्नल वाशिगटन की कहानी को आगे चलाने से पहले हमे जरूरत महसूस होती है कि हम इसकी और भी जाच करें। वाशिगटन ने इन पाच सालो मे जा चिट्ठियाँ लिखी उनसे पता चलता है कि उन्हे इन वर्षो मे मुख्यरूप से निराशाओ और दीनता का मुह देखना पडा। इस कारण हम उन्हे बार-बार खीझ उठने की वजह से दोषी नही ठहरा सकते। उनके अफसरो ने जैसा कि विश्वासपूर्वक कहा था, उन्होने सीमान्त-प्रदेश-सम्बन्धी लडाइयो के स्वरूप एव सम्भावनाओ की जानकारी इतनी ही पूर्ण रीति से उपलब्ध कर ली थी, जितनी कि किसी भी वर्जीनिया-वासी के लिए सम्भव थी और यह जानकारी निश्चय से उन ससद-सदस्यो से काफी अधिक थी जो सुदूर विलियम्जबर्ग मे थे। यह उनकी तीव्र इच्छा थी कि फ्रासीसियो को अधिक शक्तिशाली होने से पूर्व ही खदेड दिया जाय तथा वहाँ के इण्डियनो को अपने पक्ष मे कर लिया जाय। उनके मार्ग मे जो रुकावटें आईं वे किसी को भी पागल बना सकती थी। उन्हे ऐसा महसूस हुआ कि विधान-सभा भी देश के हितो की 'अवहेलना' कर रही है। एक सदस्य ने तो यहा तक कह दिया कि ओहियो प्रदेश पर फ्रासीसियो का हक है। डिनविड्डी (तथा ओहियो कम्पनी, जिसके साथ कि गवर्नर का सम्बन्ध था) की नीयत पर सन्देह हो

जाने के कारण विधान-सभा सेना के लिए रुपया स्वीकार करने के लिए तैयार नही थी । यद्यपि डिनविड्डी इन मामलो मे उदासीन नही था, तो भी कम से कम जार्ज को ऐसा लगा कि उसकी कृपणता की ओर प्रवृत्ति है । अपनी योजनाओ मे लगे रहने के कारण वह अन्य बातो मे सहायता नही दे सका । अत युवा वाशिंगटन के साथ उसके मित्रता के सम्बन्ध बिगडते चले गए ।

सैनिक शासक के रूप मे वाशिंगटन का कार्य इस ढग का था कि उनको श्रेय मिलने की कोई आशा नही थी । रसद तथा सब प्रकार की साधन-वस्तुओ की कमी थी । सेना को भरती का कार्य चीटी की रफ्तार से आगे बढ रहा था । जिन लोगो को खुशामद करके भर्ती किया जाता था, उनमे से बहुत से लोग ऐसे थे जिनका चरित्र-बल निम्नकोटि का था । वे साथ छोड कर भाग जाने की कला मे दक्ष थे । परिणामत उनके हृदय मे अल्पकालीन मिलिशिया के लिए हमेशा के लिए घृणा उत्पन्न हो गई । वास्तव मे वाशिंगटन जैसे वर्जीनिया के भद्र-पुरुषो की नजरो मे इस प्रकार से भर्ती हुए व्यक्ति सामाजिक दृष्टिकोण से निम्न श्रेणी के थे । वह उनकी देख-रेख हर तरह से करते थे, किन्तु जब वे नियमो को भग करते, तो उन्हे कडी सजा भी दिया करते थे । उन्होने सन् १७५७ के अगस्त मास मे डिनविड्डी को लिखा था—

'श्रीमान की सेवा मे मैं एक सामान्य सेना-न्यायालय की कार्यवाही की प्रतिलिपि भेज रहा हू । दण्डित व्यक्तियो मे से दो को अर्थात् इगनेशस एडवर्डस और बम स्मिथ को गत वृहस्पतिवार को फासी पर चढा दिया गया ।'

' मुझे आशा है कि श्रीमान् मुझे इस बात के लिए क्षमा करेंगे कि मैंने उन्हे गोली से उडाने की बजाए फासी पर चढाया । इससे अन्य लोगो मे अधिक आतक उत्पन्न हुआ और असल मे उदाहरण पेश करने के लिए ही हमने इस उपाय का आश्रय लिया । वे इस प्रकार के दण्ड के योग्य ही थे । एडवर्डस दो बार भाग चुका था और स्मिथ इस महाद्वीप मे सबसे बडा धूर्त माना जाता

था। जिन्हे बेतो की सजा मिलनी थी, उनको बेत लगाये गये। शेष लोगो के साथ आप किस प्रकार का व्यवहार पसन्द करेंगे, इस विषय मे श्रीमान् के विचार जान कर मुझे खुशी होगी।'

'शेष लोगो को क्षमा कर दिया गया। जब तक क्षमा का आदेश नही मिला, वाशिंगटन ने उन लोगो को अन्धेरी कोठडी मे, मजबूत बेडियो मे जकड कर रखा।'

कभी कभी ऐसा भी होता था कि जो आदेश उन्हे दिये जाते, वे स्पष्ट नही होते थे। उन्होने दिसम्बर १७५६ मे यह शिकायत की कि उन्हे जो आदेश भेजे जाते हैं, वे अस्पष्ट, सन्देहजनक और अनिश्चित होते हैं। आज जिस बात की स्वीकृति मिलती है कल उसी के लिये इन्कार होता है। उनकी सारी स्थिति ही अस्पष्ट और विचित्र थी। जाहिर मे तो उनके हाथ मे सत्ता सौप दी गई थी, पर वास्तव मे उनके पास थोडे ही अधिकार थे। सन् १७५४ मे उन्हे और उनकी सेना को दूसरे उपनिवेशो की सेनाओ की तुलना मे कम वेतन मिलता था। यद्यपि वह कर्नल थे, तो भी मिलिशिया की बजाए राजकीय अथवा नियमित, स्थायी कमीशन वाला कैप्टन उनसे अधिक प्रतिष्ठा रखता था। मैके ने, जो एक कैप्टन था, कर्नल वाशिगटन को अपना सरदार मानने से इन्कार कर दिया। कुछ महीने बाद, कैप्टन डैगवर्दी ने भी वैसे ही व्यवहार किया। इस व्यक्ति ने बहुत काल पहले राजकीय कमीशन लिया था और सेवा से निवृत्त हो कर उसने अपनी पेन्शन के अधिकार भी बेच डाले थे। हमे लगता है कि वाशिंगटन को यह अवश्य मालूम होगा कि नियमित रूप से नियुक्त किए गए ब्रिटिश अधिकारी, समष्टिगत रूप से, अमेरिका-उपनिवेशो के सेना-अधिकारियो को घृणा की दृष्टि से देखा करते थे। उन मे से एक ने वर्जीनिया के मिलिशिया अफसरो को 'घुडदौड के सवार' कह कर उनका उल्लेख किया था। एक और ने वैयक्तिक रूप से कहा, 'किसी खेतिहर को हल से हटा कर एक दिन मे अफसर बना देना कहा तक उचित है?'

वाशिंगटन का इन सब बातो से खीझ उठना स्वाभाविक ही था। इसे समझने मे दिक्कत नही होती। परन्तु उल्लेखनीय बात तो यह है कि वाशिंगटन पर इनका प्रभाव औरो से अधिक गहरा पडा। इनके मन मे इतनी कडवाहट पैदा हो गई कि वह गुस्से मे आपे से बाहर हो गये। हम यह मानते है कि वह ईमानदार और सुयोग्य थे, किन्तु हम यह भी महसूस करते है कि उन्होने डिनविड्डी तथा अन्य लोगो को जो पत्र लिखे, उनमे उन्होने अपने गुणो पर जितना जोर दिया, उसकी जरूरत नही थी।

इस सम्बन्ध मे एक सकेत सन् १७५३ की घटना से मिलता है, जब कि उन्होने डिनविड्डी के अन्तिम पत्र को फ्रासीसियो तक पहुचाने के लिए अपनी सेवाए अर्पित की थी। निस्सदेह इस कार्य को कोई वर्जीनिया का साहसी देशभक्त ही कर सकता था। इस विषय मे यह भी कहा जा सकता है कि यह एक ऐसे अत्यन्त महत्वाकाक्षी युवक का कार्य था जो अपनी महत्वाकाक्षा को क्रियान्वित करना चाहता था। उनके बाद के काम एव पत्र-व्यवहार यह जाहिर करते है कि वह केवल एक प्रमत्त, निरा उमगो के वशीभूत होकर कार्य करने वाला व्यक्ति नही था। उस युवक के लिए कीर्ति जिसे वह तोप के मुह मे भी पहुच कर प्राप्त करने की कामना रखता था, कोई बुद-बुदे की तरह की वस्तु नही थी, बल्कि ऐसी ठोस चीज कि जिसके ज़रिये उसे प्रतिष्ठा और पारितोषिक दोनो को प्राप्त करने की कामना थी। हम कह सकते है कि उसने अधिक लाभ की आशा मे 'सैनिक कला' को अपनाया। बागान का स्वामी होना किसी हद तक महत्व की चीज अवश्य थी, किन्तु उसने अधिक शानदार और चकाचौध करने वाली सम्भावना पर अपनी आखे गाडी हुई थी—'प्रतिष्ठा' तथा अधिमान-पद' जो सम्राट् द्वारा प्रदान किए जाते थे।

जहा तक वाशिंगटन के अपने जीवन की उन्नति का सम्बन्ध है, 'अधिमान पद' शब्द का प्रयोग इस काल के उनके अपने पत्रो मे अनेक बार आता है। वर्जीनिया मे भी सही आदमियो को जानना

महत्व की बात मानी जाती थी। इससे इतर बडी दुनिया मे गुण सम्पन्नता के साथ-साथ हर चीज की महत्ता सम्राट् के प्रश्रय पर निर्भर होती थी। जब सन् १७०४ मे वर्जीनिया के सुसम्बन्धित डेनियल पार्क ने, जिसने मालबौरो के ड्यूक के साथ स्वय-सेवक के रूप मे काम किया था, ब्लैनहैम की विजय का सुसवाद रानी ऐन को सुनाया था, तो उसने उसे इनाम के तौर पर एक हजार गिन्नी और हीरो मे जडी अपनी छोटी सी तस्वीर प्रदान की थी। उस समय यह अत्यन्त सौभाग्य की बात समझी गई, खासतौर पर उस समय जब बाद मे पार्क को लीवर्ड द्वीपो का शासक नियुक्त किया गया। वह भी कभी इतने ऊँचे पद पर नियुक्त किये जा सकेंगे—इसकी वाशिंगटन को आशा नही थी। किन्तु यह वह जानते थे कि एक क्षेत्रीय मिलिशिया अधिकारी के रूप मे वह अधिमान-पद' से काफी नीचे थे। शायद अभी तक उस सीढी पर उनका पाव भी नही पडा था।

अत वाशिंगटन की प्रबल इच्छा थी कि उन्हे नियमित रूप से कमीशन मिले, ताकि कोई उन्हे जाने और माने और कोई चीज उनका अवलम्बन तो बने! (आखिर उनके बडे भाई लारेन्स को भी तो नियमानुसार कमीशन मिला ही था।) सन् १७५४ मे वह ससार की आँखो मे चढे थे, पर थोडे ही समय के लिए। उस समय वह ब्रिटेन और फ्रास के बीच साम्राज्य-लिप्सा सम्बन्धी बहुत बडे नाटक मे प्रतीक मात्र थे। सन् १७५५ मे उन्होने ब्रैडाक के आन्तरिक वर्ग के विशेषाधिकार प्राप्त युवक के रूप मे आगे का स्थान ग्रहण किया था। तत्पश्चात् उन्होने विशिष्टतापूर्वक सेवाए की। जब हम उनके समूचे गत जीवन पर दृष्टिपात करते है, तो देखते है कि वर्जीनिया का यह युवक कीर्ति-पथ पर, बिना किसी बाधा के अग्रसर होता चला गया। हम भी, उनकी जीवनी के बहुत से लेखको की तरह, पादरी के उन शब्दो को बल-पूर्वक कह सकते है, जो उन्होने मौननगहेला की दुर्घटना का उल्लेख करते हुए अपने १७५५ के व्याख्यान मे कहे थे कि अमेरिका के वीरपुरुष कर्नल

वाशिंगटन को भगवान् ने महान् कार्यों के लिए चुना है। किन्तु उनकी अपनी, कम से कम निराशा की घडियो मे, यह राय थी कि उनके ये साल हर दृष्टि से बेकार गए है—अर्थात् इन सालो का उन्हे कोई लाभ नही पहुचा। उनकी सेवाओ की कोई कदर नही हुई। उनका भाग्य उखडा-उखडा रहा। ब्रैडाक मारा गया था। उसका उत्तराधिकारी वाशिंगटन की योग्यता और गुणो से अप्रभावित प्रतीत हुआ। तब वह किस प्रकार अपना अभीष्ट सिद्ध करे ? यदि उन्हे सफलता न भी मिले, तो भी कोई बात नही, किन्तु परिश्रम न करने के कारण तो ऐसा नही होना चाहिए। अत जब लौडून उत्तर अमेरिका के प्रधान सेनापति नियुक्त हुए, तो वाशिंगटन ने उन्हे जनवरी, १७५७ मे लिखा—

'यद्यपि मुझे ऐसा गौरव प्राप्त नही हुआ कि श्रीमान् मुझे जान सके, तो भी मै श्रीमान् के नाम से परिचित रहा हू। क्योकि आपने ससार के अन्य भागो मे सम्राट् की महत्वपूर्ण सेवाए की है। श्रीमान्, आप यह ख्याल न करे कि मैं आपकी खुशामद कर रहा हू। आपके चरित्र के लिए उच्चभावनाए रखते हुए भी और आपकी पद-स्थिति का सम्मान करते हुए भी मेरा इरादा किसी तरह की चापलूसी करने का नही। मै स्वभाव से स्पष्ट, ईमानदार और छल-कपट रहित हू।'

अपने सम्बन्ध मे इतना कहे बगैर नही रह सकता कि यदि जनरल ब्रैडाक अपनी हार के दौरान मे जिन्दा बच जाते, तो मुझे अभीष्ट अधिमान-पद प्राप्त होता। इसके लिए उन्होने मुझे वचन भी दिया था। मेरा यह विश्वास है कि वह इतने शुद्ध-हृदय और उदार-स्वभाव थे कि वे कभी निरर्थक प्रस्ताव नही रखते थे।'

सन् १७५८ की बसन्त ऋतु मे उन्होने ये शब्द कहे, 'मैने सैनिक-जीवन मे किसी अधिमान-पद की आशा छोड दी है।' इसके बावजूद उन्होने परिचित ब्रिटिश अफसरो को दो पत्र भेजे, जिनमे कुछ-कुछ चिकनी-चुपडी बाते भी थी और जिनमे उनसे अनुरोध किया गया था कि वे जनरल फोर्ब्स से यह कह कर सिफारिश करे

कि वह ऐसा व्यक्ति है जो उपनिवेश के सामान्य अधिकारियो से विशिष्टता रखता है। और १७५८ के जून मास मे उन्होने डिनविड्डी के उत्तराधिकारी, लैफ्टीनैण्ट गवर्नर फाकियर का इसी प्रकार स्वागत करते हुए जरूरत से ज्यादा खुशामद और विनयशीलता प्रदर्शित की।

दूसरे शब्दो मे उन्होने अधिमान-पद प्राप्त करने के लिए हर साध्य कदम उठाया अर्थात् हर वह कदम जिसमे अप्रतिष्ठा की बू न थी। उन्होने सन् १७५६ मे बोस्टन तक का सारा मार्ग घोडे पर चढकर इसलिए तय किया कि वह अपने प्रधान सेनापति के सामने यह सिद्ध कर सके कि सेना मे कैप्टन डैगवर्दी से उनका दर्जा ऊँचा है।

सन् १७५८ तक के वाशिंगटन मे कई बाते ऐसी पायी जाती है, जिन्हे शायद पसन्द न किया जा सके। उनमे कुछ-कुछ कच्चापन लगता है। बात-चीत मे वह कर्कश जान पडते है। उचित सीमा को लाघ कर भी अपनी शान रखना चाहते है। शिकायत के लिए हर समय और हर तरह से उद्यत रहते है और पदोन्नति के लिए अत्यन्त खुले रूप से चिंतित। यह ठीक है कि उनकी शिकायतें फर्जी नही थी। वह अपने कामो मे कुशल और दृढसकल्प थे। किन्तु उनका दोष एक तो यह था कि वह अपने गुणो तथा शिकायतो को दूसरो से बार-बार कहा करते थे। दूसरे, अपने आशावान, बल्कि करीब-करीब सनसनीखज, जीवन के बाद, भावी उन्नति के बारे मे जैसे-जैसे उनकी उम्मीदे मुर्झाती चली गई, उनमे लगभग सपीडन-भावना का विकास होता चला गया। सन् १७५७ के अक्तूबर मास मे उन्होने डिनविड्डी को लिखा कि, 'मैं चिरकाल से यह विश्वास करने लगा हू कि मेरे कामो और उनके हेतुओ पर द्वेष भाव से छीटाकशी की जाती है।' अभी उन्हे यह सीखने की जरूरत थी कि धैर्य से काम लेना अक्लमन्दी की बात है। या यो कहे कि वह कष्टदायक परिस्थितियो मे यह पाठ सीख रहे थे।

वाशिंगटन की दुर्बलताए उनके गुणो की तुलना मे बहुत कम

थी। यह सच है कि उनका इस समय का दृष्टिकोण वर्जीनिया-वासियो सरीखा सकीर्ण था। उन्होने लडाई के बारे मे सम्पूर्ण रूप से नही सोचा था। जब १७५८ मे फोर्ब्स ने रेजटाऊन वाला मार्ग चुना तो वाशिगटन का विरोध लगभग अवज्ञा की सीमा तक पहुँच गया था। उन्हे यह विश्वास हो चुका था कि फोर्ब्स पैनसिलवेनिया की उस "कपटपूर्ण नीति" का शिकार हो गया है, जिसके अनुसार ओहियो के पिछडे देश तक पहुँचने का मार्ग बन जाने से वहाँ का सारा व्यापार इस प्रतिद्वन्द्वी उपनिवेश के हाथो चला जायगा। किन्तु उन्हे यह न सूझा कि दूसरे लोग भी उनके अपने रवैये से यही अर्थ निकाल सकते है---अर्थात् वर्जीनिया से ओहियो तक सडक निकालना वर्जीनिया के लोगो की 'कूटनीति' हो सकती है। कुछ भी हो, वह वर्जीनिया के प्रति पूरी तरह वफादार थे। आदर्श रूप मे वह यह चाहते थे कि उन्हे वर्जीनिया की रक्षा करने के लिए कमीशन मिल जाय। यदि वह अन्य उपायो से कमीशन लेना चाहते, तो निश्चय ही वह तरुण ब्रायन फेयरफैक्स की तरह ही रुपया देकर इसे खरीद सकते थे।

अधिमान-पद की लालसा के साथ ही साथ 'प्रतिष्ठा' की प्यास भी उन्हे सताए हुए थी। वाशिगटन कभी-कभी इसकी परिभाषा इस प्रकार करते थे जैसे कि यह शब्द अधिमान-पद का पर्यायवाची हो। उनके विचार मे इस शब्द ('प्रतिष्ठा') का यह भी अभिप्राय था—'मेरे परिचितो की मेरे प्रति मित्र जैसी सम्मान-भावना का होना।' (सम्भवत इन परिचितो की सूची मे सैली फेयरफेक्स का उच्च स्थान था।) ऐसा लगता है कि अपनी प्रौढावस्था मे वाशिगटन को अधिक चिन्ता अपनी कीर्ति की रही। वह इस बात का ध्यान रखते थे कि जो कोई कार्य भी वह करे या कोई दूसरा उनके प्रति कुछ करे, तो उसका लिखित रिकार्ड रख लिया जाय। इससे अशत उनकी व्यवहार-कुशलता प्रकट होती थी। इससे आगे वाशिगटन अपनी तसल्ली के लिए केवल सार्वजनिक अनुमोदन चाहते थे। उन्होने दृढ सकल्प कर लिया था कि वे वही करेंगे जो उचित होगा

और उन्हे आशा थी कि उनकी व्यवहार-शुद्धता को स्वीकार किया जायगा, चाहे उनके कामो का परिणाम खराब क्यो न हो। अन्तत उनके लिए 'प्रतिष्ठा' (और अपने उपनिवेश मे प्रतिष्ठा पाने) का अधिमान-पद' से कही अधिक महत्व था। यह सच है कि कर्नल वाशिगटन के व्यक्तित्व का अभी विकास हो रहा था, किन्तु बुनियादी तौर पर वह एक शिष्ट मानव थे। यद्यपि उनकी सैनिक महत्वाकाक्षाए काफी थी, किन्तु वे मर्यादा का उल्लघन नही करती थी, इसलिये वह उन्हे अपने मन के एक कोने मे छुपाये लिए फिरते थे। वे आकाक्षाये कितनी गहरी दबी हुई थी—हमारे लिए यह बतलाना कठिन है। हम इतना जानते है कि सन् १७५९ मे जब वह माऊट वर्नन को सजा रहे थे, उन्होने लन्दन से छ अर्धप्रतिमाए मगवाए जाने का आदेश दिया। ये सिकन्दर महान्, जूलियस सीजर, स्वेडन के चार्ल्स १, प्रशिया के फ्रैडरिक द्वितीय, यूजीन राजकुमार और मार्लबोरो के ड्यूक की थी। ये सब सैनिक वीर-पुरुष हुए है। उनका एजेण्ट इन्हे खरीद कर भेज नही सका, किन्तु वाशिगटन ने उनके स्थान मे प्रस्तावित कवियो और दार्शनिको की अर्ध-प्रतिमाओ को लेने से इन्कार कर दिया।

एक बार जब वाशिंगटन का मन उदास हो गया, तो कर्नल फेयरफेक्स ने इन शब्दो मे उन्हे सान्त्वना दी—'सीजर सम्बन्धी टीका टिप्पणियो और सम्भवत क्विटस कर्टियस (जो अलैक्जैण्डर के जीवन-चरित्र का लेखक था) की कृति को पढने से आप को यह ज्ञात हुआ होगा कि आपकी तुलना मे इन महापुरुषो की जिन्दगियो मे अत्यधिक परेशानियाँ आईं,—इनके विरुद्ध लोगो मे असन्तोष की भावनाए रही और जनता ने विद्रोह किये तथा साथियो ने साथ छोडे। यदि आपके जीवन मे इस प्रकार की कोई परेशानी की बात आपकी शान्ति को भग करे, तो मुझे तनिक भी सन्देह नही कि आप इन महापुरुषो के ही समान महानुभावता से उन बातो को बर्दाश्त कर सकोगे।'

सेवा-निवृत्त होने के बाद भी यदि वाशिंगटन को सान्त्वना की

जरूरत थी, तो उन्हे यह सोचकर मिल जानी चाहिये थी कि सीजर को जान से मार दिया गया और अलैक्जैण्डर, जो उन्नीस वर्ष की आयु मे राजगद्दी पर बैठा, बत्तीस साल की आयु मे ही परलोक सिधारा। उनके समकालीन जनरल बुल्फ ने अपने जीवन मे शान-दार काम किये, किन्तु क्यूबैक के परिग्रहण के समय बत्तीस वर्ष की आयु मे ही मृत्यु का ग्रास बना। वार्शिगटन के जितने भी सगी-साथी थे, उनमे से कोई भी उनसे आगे नही बढा, बल्कि कुछ ने तो अपने आप को कलकित कर लिया। अन्य साथी मर चुके थे। उदाहरण के लिए उनका पुराना साथी, क्रिस्टोफर जिस्ट, चेचक के कारण ससार से चल बसा था। वार्शिगटन कम से कम इस विशेष भयकर रोग से इस समय परिमुक्त थे, क्योकि इससे पूर्व वह बारबेडीस मे इसका शिकार हो चुके थे।

## सेवा-निवृत्त बागान का स्वामी

अनेको ठोस कारण थे जिनकी वजह से उन्हे सन्तोष मिलना ही चाहिए था। फेयरफेक्स परिवार के लोग अब भी उनके हितैषी मित्र थे। इस समय वह मूल्यवान जागीरो के स्वामी थे। उन्हे यह भी आशा थी कि फ्रासीसियो के साथ जो झगडे चल रहे है, उनकी समाप्ति पर वह अपनी भूमि बढा सकेंगे। इन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह अपने अविवाहित जीवन से छुट्टी ले रहे थे। उन्होने एक विधवा से विवाह कर लिया, जिसका नाम मर्था डैंड-रिज कस्टिस था। वह मधुर स्वभाव की तथा समृद्ध युवती थी। उसका पहला पति डैनियल पार्क का वशज था, जिसने साम्राज्ञी ऐने को ब्लैनहम युद्ध-विषयक सरकारी पत्र ला कर दिये गये थे। मर्था जार्ज से उम्र मे कुछ मास बडी थी। उसके पहले विवाह से दो बच्चे हुए थे। वाशिगटन उससे कब सर्वप्रथम मिले और उनका किस प्रकार पारस्परिक प्रेम बढा, इसके बारे मे निश्चय से नही कहा जा सकता। एक प्रेम-पत्र, जो उनके द्वारा मर्था के नाम १७५८ की ग्रीष्म ऋतु मे लिखा हुआ माना जाता है, हमे नकली जान पडता है। कुछ साक्ष्य-सामग्री ऐसी है जिससे यह प्रकट होता है कि सगाई

के समय के आस-पास भी जार्ज के हृदय मे सैली फेयरफेक्स के लिए तडपन थी। उनके एक पत्र मे, जो उन्होने उस समय सैली को लिखा, इस प्रकार के उद्धरण थे कि जिनसे प्राय यह अर्थ लिया जा सकता है कि वह उससे प्रेम करते थे। यह सदिग्ध है कि जार्ज और मर्था मे परस्पर प्रेम होने के कारण विवाह-बधन हुआ। यह वैसा प्रेम नही था, जैसा कि प्राय रोमान्स के उपन्यासकार इस शब्द से अर्थ लेते है। किन्तु यह बन्धन दोनो की बुद्धि और विवेक का परिचायक है। अन्य लाभो मे मर्था को एक यह भी लाभ हुआ कि उसे अपनी भू-सम्पत्ति के लिए एक प्रबन्धक मिल गया। जार्ज को यह लाभ हुआ कि उन्होने एक धनाढ्य युवती से शादी की, किन्तु यह मानने की हमारे पास कोई दलील नही कि यह विवाह सुविधा की खातिर हुआ था अथवा जार्ज हताश हो जाने के कारण सैली का स्थानापन्न चाहते थे। जिन लेखको की सम्मतियाँ इस समय उपलब्ध है उनमे से किसी एक ने भी यह नही कहा कि जार्ज और मर्था का विवाह अननुरूप अथवा अनुपयुक्त था। यह सम्भव है कि यदि उनके दीर्घकालीन सम्बन्ध मे किसी भी अवसर पर किसी प्रकार का तनाव होता, तो उस पर काफी टीका-टिप्पणी होती।

जार्ज का विवाह १७५९ के जनवरी मास मे हुआ। सितम्बर मास मे उन्होने अपने एक सम्बन्धी को, जो लन्दन मे था, लिखा —

'मेरा विश्वास है कि अब मै अपने ही अनुरूप जीवन-सगी के साथ अपने निवास-स्थान से बँध गया हू। मुझे आशा है कि मैने जितना इस विस्तृत और शोरगुल की दुनिया मे कभी आनन्द उठाया है उससे कही अधिक आनन्द मुझे सेवा-निवृत्ति के बाद मिलेगा।'

उसी पत्र मे वह खेद प्रकट करते है कि 'इस बात के बावजूद किं उनकी चिरकाल से लन्दन जाने की अभिलाषा रही है, वह इस लिये नही जा सकेगे, क्योकि अब वह अपने ही स्थान से दृढता से बध गये है। इस कारण उन्हे अपनी उत्सुकता को टालना ही पडेगा।' किन्तु कोई ऐसी बात नही दीखती जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि मर्था के साथ उनका जीवन किसी प्रकार क्लेशमय था।

विलक्षण बात यह लगती है कि उन्होने फोर्ट कम्बरलैण्ड सरीखे स्थानो मे बिताये जीवन से सर्वथा भिन्न रहन-सहन के लिए भी अपने आपको इतना शीघ्र ढाल लिया।

इसकी एक व्याख्या यह हो सकती है कि, जैसा कि उन्होने दृढतापूर्वक कहा था, वह सैनिक-जीवन से ऊब उठे थे और उन्हे अब सैनिक अधिमान-पद की कोई आशा नही रही थी। उनके लिए वैशिष्ट्य-प्राप्ति का एक दूसरा मार्ग भी था, जो यद्यपि इतना रोमाचकारी तो नही था, किन्तु था अधिक स्थिर। यह वर्जीनिया के भू-स्वामी का जीवन बिताने का मार्ग था। दूसरी व्याख्या यह हो सकती है कि वह बहुत व्यस्त थे। उन्हे माऊट वर्नन के फार्मों पर बहुत कुछ काम करना बाकी था क्योकि उनकी अनुपस्थिति के कारण वे दुरवस्था मे थे। इसके अतिरिक्त मकान को भी पर्याप्त पैमाने पर सजाना था। लन्दन को सकुल बीजक भेजे गये, जिन मे अनेक प्रकार की चीजे थी—जैसे '७॥ फुट लम्बाई के टैस्टर पलगो' से 'बिल्कुल आधुनिक और प्रामाणिक वनस्पति-शास्त्र पर पुस्तके', 'नीग्रो-सेवको के गर्मी के फ्राको के लिए ४० गज मोटी जीन' या 'मोटे सूती कपडे से 'पढना आरम्भ करने वाले बच्चो के लिए छ छोटी पुस्तको' तक थी। बच्चे जो अभी पढना प्रारम्भ कर रहे थे, वे थे जार्ज के सौतेले बच्चे—ज्ञौनपार्क (जैकी) और मर्थापार्क (पैट्सी) कस्टिस। उन्होने खिलौने और वेशभूषा की छोटी-छोटी वस्तुए आभूषणादि भी उनके लिए मँगवाए। वम्स्तव मे उन्होने उन बच्चो का अत्यधिक ध्यान रखा और उन सब बच्चो का भी जो उनके अपने दायरे मे आए। दोषान्वेषी सम्भवत कहेगे कि जैकी और पैट्सी के कारण जो बोझ वाशिगटन पर पडा, वह उनके लिए प्रसन्नतापूर्वक वहन करने योग्य था, क्योकि उनकी तथा उनकी स्त्री की जागीर से उन्हे काफी सम्पत्ति प्राप्त हुई थी। किन्तु जहा तक हमे वाशिगटन के बारे मे मालूम है, हमे यह सम्मति सख्त प्रतीत होती है।

एक क्रियाशील सत्ताईस वर्षीय युवक के बारे मे 'कुलपति' शब्द

का प्रयोग हास्यास्पद जान पडता है। किन्तु यह कहना पडेगा कि वाशिगटन का रहन-सहन का ढग कुलपतियो जैसा था। वह राज्य के किसी शासक के समान ही माऊट वर्नन के अध्यक्ष थे। माऊट दरअसल एक छोटे से गॉव की न्याई था, जो धीरे-धीरे वाशिंगटन गोत्र का प्रमुख-बन गया। अपने सब भाइयो और बहनो मे जार्ज ही सबसे अधिक सफल हुए और इस कारण वे परामर्श और सहायता के लिए उनका मुह ताका करते थे। जब वह अपने पारिवारिक मामलो मे व्यस्त नही होते थे अथवा जब वह सकट-ग्रस्त परिचितो की प्रार्थनाओ पर विचार नही कर रहे होते थे, तब वह कस्टिस परिवार की जायदादो के प्रबन्ध को देखा करते। वर्गेस के रूप मे उन्हे विलियम्जबर्ग की बैठको मे उपस्थित होना पडता था और अपने मत-दाताओ को सतुष्ट रखना होता था।

विवाह के थोडे ही समय बाद उन्हे काऊटी-मजिस्ट्रेट बनाया गया। तत्पश्चात् वह अपने पिता के कदमो पर चलते हुए टूरो गिरजे के क्षेत्राधिकार की प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य और (बाद मे उसके प्रतिनिधि) बने। सन् १७६६ मे जब अलैक्जैण्डरिया के न्यासी का स्थान रिक्त हुआ तो उन्हे उस पद पर आसीन किया गया। इसके अतिरिक्त अब भी उनमे पूर्ववत् अधिक लाभ की उत्सुकता रही और वह जहा-तहा मौका पडने पर जमीन खरीदते रहे। सन् १७५४ मे स्वय-सेवको को उपहार रूप मे जमीने देने के वायदे हुए थे। उन्होने उस वचन के आधार पर पन्द्रह हजार एकड जमीन का दावा किया। इसमे उन्हे अन्ततोगत्वा सफलता मिली। भूमि सम्बन्धी साहसिक उपक्रमो मे भी वह शामिल हुए, जैसे (दक्षिण वर्जीनिया मे स्थापित) डिस्मल एवैम्प कम्पनी तथा मिसिसिपी कम्पनी—जो मिसीसिपी नदी के तट पर भूमि का विकास करने के लिए बनाई गई थी। आयु मे तरुण होते हुए भी वह अपनी जिम्मेदारियो के कारण अपेक्षतया बडे थे।

जब कर्नल वाशिंगटन ४० वर्ष के हुए, उस समय तक वर्जीनिया मे उनका एक महत्वपूर्ण स्थान बन चुका था, यद्यपि वह

अभी तक अत्यधिक शक्ति-सम्पन्न व्यक्तियो के छोटे दायरे मे प्रवेश नही पा सके थे। सम्भवत उस वक्त वह अपने सैनिक-जीवन के समय को किंचित् पश्चाताप और निराशा से याद करते होगे। शायद इस तथ्य मे कुछ महत्व हो कि १७७२ मे जब चार्ल्स विल्सन पील के सामने वह तस्वीर खिंचवाने के लिए बैठे, तो उन्होने वर्जीनिया मिलिशिया के कर्नल की विशेष वेशभूषा धारण की हुई थी। किन्तु अधिक सम्भाव्य यह प्रतीत होता है कि उन्होने सैनिक-वेशभूषा इसलिए चुनी, क्योकि उन्हे सुन्दर वस्त्र पहनने का शौक था और वह इस बात को जानते थे कि सैनिक-वर्दी मे वह विशेष रूप से प्रतिष्ठित जान पडते हैं। उस चित्र मे एक ऐसे युवा-पुरुष का चेहरा सामने आता है जो ससार मे सबके साथ शान्ति से रह रहा हो। वह चेहरा उस आदमी का लगता है जो सम्पूर्ण और क्रियाशील जीवन बिताने के कारण अपनी जिन्दगी से न तो ऊबता हो और न ही केवल अपने हाल मे मस्त रहता हो, जिसे न तो ईर्ष्या ने और न ही हिंसात्मक महत्वाकाक्षा ने कभी तडपाया हो, जो कर्ज के बोझ के कारण राते जाग कर नही काट रहा हो, जिसे धोखे की आशका न हो तथा जिसकी अन्तरात्मा उसके किन्ही कामो के लिए उसे धिक्कारती न हो। वह चेहरा उस आदमी का है जो समाज मे विशेष स्थान रखता हो, जो सब मे लगभग प्रमुख हो। अन्त मे वह एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा लगता है जो सुख से गार्हस्थ्य-जीवन बसर कर रहा हो।

चूकि चेहरे से प्रकट होने वाली ये सब बाते वास्तविक रूप मे वाशिंगटन मे पाई जाती थी, अत हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि यह चित्र बिल्कुल सही था।

वाशिंगटन के अपने बच्चे नही थे, किन्तु जहा तक मर्था के बच्चो का सम्बन्ध है, वाशिंगटन को कुटुम्ब-कबीलेदार माना ही जाना चाहिए। यद्यपि पैट्सी की मृत्यु १७७३ मे ही हो गई थी, जैकी का विवाह कुछ महीनो पीछे सम्पादित हुआ। थोडे ही अर्से मे जैकी के दो बच्चे हुए, जिन्होने अपने दादा, कर्नल वाशिंगटन, के

वात्सल्य का आनन्द उठाया। धर के अन्य सम्पूर्ण बालक-समूह के या तो वह चाचा थे या सरक्षक।

यह मधुर कामना होती है कि काश कोई और भी इससे पहले का चित्र प्राप्त होता, जिसे पील्ज के चित्र के पार्श्व मे रख दिया जाता। मान लो कि हम वाशिगटन को जैसा कि वह सन्१७५७ मे थे चित्र के द्वारा देख लेते, तो हमे उस व्यक्ति की झाकी मिलती, जो इतना परिपक्व नही था। सन् १७७२ मे आकर एक प्रौढ-बुद्धि महानुभाव के दर्शन होते है। यही कारण है कि उस समय उनके लिए 'बुद्धिमान' जैसे विशेषण प्रयुक्त हुआ करते थे। इस आयु मे वह सतुलित, सहृदय तथा अपने आपको एव वातावरण को अपने वश मे रखने वाले नजर आते है। मुकाबले मे वह सन् १७५७ मे सुयोग्य अवश्य लगते होगे, किन्तु कुछ अशान्त और उद्विग्न। हम उनके बारे मे लगभग कल्पना कर सकते है कि उन दिनो वह किस प्रकार किंचित् भौए चढाए हुए, लडने-मरने की दशा मे खडे होते होगे—ठीक उन गुमनाम, दयनीय और युवा नेताओ की तरह जो एक शताब्दी बाद अमेरिका के गृह-युद्ध मे शामिल हुए।

इन बीच के सालो मे जैसा कि हम उनकी चिट्ठियो से स्पष्टतया जान सकते है, उनका नैतिक उन्नयन हुआ। इसका यह अभिप्राय बिल्कुल नही कि उनमे कोई अकस्मात् परिवर्तन हुआ। माऊट वर्नन का मार्ग उनके लिए कोई दमश्क का मार्ग नही था। इगनेशस लायल उस समय योद्धा का जीवन व्यतीत करता रहा, जब तक कि पैम्पलोना मे पुन स्वास्थ्य लाभ करते हुए उसका मन खून-खराबे से ऊब नही गया। (अपने आरम्भिक जीवन मे) फ्रासेस्को बरनार्डर भी उसी प्रकार एक योद्धा था। एक सैनिक अभियान के दौरान मे ही वह वापिस लौट गया और उसने असीसी के फ्रासिस के रूप मे अपनी जिन्दगी नये सिरे से शुरू की। जार्ज वाशिगटन मे इस प्रकार कोई अकस्मात् परिवर्तन नही आया। उन्हे किसी क्षण कोई दैनिक सन्देश भी प्राप्त नही हुआ। यह सत्य है कि वह पक्के एपिस्कोपोलियन (अर्थात् पादरियो द्वारा शासित

धार्मिक-विधि-विधान के अनुयायी) थे, किन्तु अपने धर्म मे सच्ची निष्ठा रखते हुए भी वह इसे एक सामाजिक अनुष्ठान की हैसियत मे मानते थे, जिसमे फरिश्तो अथवा काल्पनिक चित्रो का, सिवाए उनके जिनका आविष्कार पार्सन बीम्ज ने किया, कोई स्थान नही था। वह ईसाई-धर्मावलम्बी थे—ठीक उन्ही अर्थो मे कि जिनमे वर्जीनिया के बागान के स्वामी इस 'ईसाई' शब्द को लेते थे। ऐसा प्रतीत नही होता कि उन्होने कभी ईसामसीह के स्मरणार्थ भोज मे भाग लिया हो। घुटनो के बल झुकने की बजाए वह सीधे खडे होकर प्रार्थना किया करते थे। वह रविवार को नित्य-प्रति गिरिजाघर जाते हो—सो बात भी नही थी। सम्भव है कि इसका कारण उनकी रुग्णता हो, जैसा कि लायला और सेट फ्रासिस के विषय मे बात थी। १७५७—५८ की सर्दियो मे वह भयकर रूप से रोग-ग्रस्त हो गये थे। १७६१ मे भी ऐसा ही हुआ, जबकि उन्होने लिखा—'एक बार मुझे लगा कि क्रूर यमदेव मेरी जीवित रहने की अत्यधिक चेष्टाओ पर काबू पा लेगा और सज्जनोचित सघर्ष के बावजूद मुझे उसका ग्रास बनना होगा।' मृत्यु की सम्भावना मनुष्य के मन को अवश्य एकाग्र कर लेती है।

किन्तु एक योद्धा-सत के रूप मे वाशिंगटन की कल्पना करने का प्रयास करना कोई अधिक लाभप्रद प्रतीत नही होगा। अधिक से अधिक हम यह कह सकते है (और यह बात भी बहुत बडी है) कि लायला अथवा सेट फ्रासिस के सदृश उन्होने दिखा दिया कि उनमे बढने, ऊचा उठने की समुचित क्षमता है। उनका चरित्र उभरा, यद्यपि वह देवत्व की सीमा तक नही पहुचा। इस प्रकार वाशिंगटन का कोई भी जीवनी-लेखक, जिसने कि उनके सन् १७५९ तक के जीवन-कार्यों की खोज की है, यह निर्विवाद रूप से कह सकता है कि उस समय वाशिंगटन, रुपये-पैसे को मुट्ठी मे कस कर रखने वाले, यहाँ तक कि कजूस थे। उदाहरण के रूप मे, जब विवश होकर उन्हे बानब्राम को 'नैसैसिटी' के किले पर शरीर-बन्धक के तौर पर, फ्रासीसियो के हवाले करना पडा, तब उन्होने बानब्राम को अपनी

एक सैनिक-वर्दी (देने की बजाय) बेची थी—जबकि उसे अपने साथ उठा कर ले आना उनके लिए कष्टदायक भी सिद्ध होता। यह ठीक है कि यह कोई लज्जाजनक सौदा नही था, बल्कि यह एक प्रकार से शीघ्रतापूर्वक सम्पादित हुई बिक्री थी। सेवा-निवृत्ति के बाद वाशिंगटन उदारतापूर्वक, यहाँ तक कि बेतहाशा, रुपया उधार पर दिया करते थे, बावजूद इसके कि उन्हे उसकी वापिसी की कोई उम्मीद नही होती थी। कभी-कभी वह चुपचाप और बिना प्रार्थना के रुपये-पैसे से मदद दिया करते थे। सासारिक सफलता बहुत लोगो को बिगाड देती है, किन्तु यह वाशिंगटन के हक मे साबित हुई।

इस प्रकार जैसा कि हम देखते है, १७७० के आरम्भिक सालो मे वाशिंगटन सन्तुष्ट, सच्चे और ईमानदार आदमी थे। जब वह अपने खेत-बगीचो के निरीक्षण मे अथवा किन्ही और कामो मे व्यस्त नही होते थे, उस समय वह नृत्यो, ताश के खेलो और शिकार आदि मे अपना मन लगाया करते थे। सन् १७७५ तक के सात वर्षो मे दो हजार के लगभग अतिथि माऊट वर्नन आ कर ठहरे। इनमे से बहुत से तो रात्रि के भोजन के समय भी रुके, जिनमे से बहुत से रात्रि को भी वहाँ रहे। विलियम्जबर्ग की सभाओ मे उपस्थित होने के अलावा वह अन्नापोलिस, फ्रैड्रिक्सबर्ग, डिस्मल स्वैम्प तथा अन्य स्थानो मे भी काम अथवा मनोरंजन के लिए आया-जाया करते थे। सन् १७७० मे उन्होने सीमान्त पर एक लम्बी यात्रा की, जिसमे वह फोर्ट पिट से आगे जा कर नौका मे ओहियो नदी के निचले भाग की ओर गये, ताकि सम्भव भूमि-सम्बन्धी दावो की जाच कर सके। उन्होने एक और पश्चिमीय यात्रा की योजना बनाई, जिसे उन्होने सन् १७७५ मे पूरा करने का इरादा किया।

किन्तु १७७५ की ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ मे, पश्चिमीय यात्रा की योजना बनाने की बजाय, वह उत्तर मे बोस्टन की ओर बढे। उस समय श्री जार्ज वाशिंगटन, जनरल वाशिंगटन बन चुके थे। वर्जीनिया का राज-भक्त भद्र पुरुष अब विद्रोही हो चुका था। इस समय वह

केवल वर्जीनिया के ही नही, बल्कि जार्जिया से मैसाचूसैट्स तक समूचे तेरह अमरीकी उपनिवेशो के सेना-नायक थे ।

### अहकार-रहित देश-भक्त

यहाँ हमारे पास इतना स्थान नही कि हम विस्तार से इस डावा डोल स्थिति का विश्लेषण कर सके । सक्षेप मे, उपनिवेशो के अपनी बात पर अडे रहने के तीन प्रधान कारण हमे नजर आते है । पहला कारण यह था कि १७५६-६३ की लडाई मे विजय-प्राप्ति के फलस्वरूप फ्रास के प्रभुत्व का खतरा सिर से टल चुका था । फ्रास ने सन् १७६३ की सधि के द्वारा अपने उत्तर अमेरिका के सम्पूर्ण अधिकारो को तिलाजलि दे दी थी । जैसे ही उसकी सत्ता का अन्त हुआ, ये उपनिवेश अपने 'मातृ-देश' (इगलैण्ड) पर अधिकाधिक निर्भर रहने लगे ।

इस हठधर्मी का दूसरा कारण युक्तिसगत रूप से प्रथम कारण का ही परिणाम-मात्र था । इस विजय के बाद ब्रिटेन ने अपने उपनिवेशीय साम्राज्य को नये सिरे से गठित करने का प्रयास किया। इस प्रकार का पुनर्गठन वैसे भी किसी न किसी अश मे आवश्यक था, क्योकि ब्रिटेन ने उन्ही दिनो कैनेडा के प्रान्तो को जीत कर अपने अधिकार मे ले लिया था । किन्तु जब ब्रिटेन ने एलीघनीज और मिसिसिपी के बीच के पिछडे प्रदेश को अमेरिका के मूल-निवासियो और रोवेदार खाल के व्यापारियो के लिये सुरक्षित कर दिया, तो उपनिवेश-वासियो को लगा कि ब्रिटेन ने फ्रास के साम्राज्य-सम्बन्धी विचारो को विरासत के तौर पर अपना लिया है। सन् १७६३ की सरकारी घोषणा से भी उन्हे इस प्रकार के उद्देश्य की बू आई । इस घोषणा के अनुसार एलीघनी जल-रेखा के उस पार गोरो का बसना वर्जित कर दिया गया, जबकि दूसरी ओर सन् १७७४ के क्यूबैक कानून के आधीन ओहियो नदी के उत्तरीय इलाके को कैनेडा के क्षेत्राधिकार मे शामिल कर लिया गया । इन बीच के वर्षों मे (१७६३ से १७७४ तक) ब्रिटेन ने अधिक योजना-बद्ध तरीके से अपने साम्राज्य के ढाचे को बनाने की कोशिश की । इसके अन्तर्गत

उसने पुराने तथा नये जीते गये अधिराज्यो को शामिल कर लिया। यह हो जाने पर राज-कर लगा कर समुद्र तट के उपनिवेशो को मजबूर किया कि वे साम्राज्य के खर्चे का अपना-अपना भाग दे। इन करो से उस वाणिज्य-सम्बन्धी रूप-रेखा का स्पष्ट पता चलता था, जिसके अनुसार ये उपनिवेश ब्रिटेन को कच्चा माल मुहय्या करते थे और स्वय वहाँ के उत्पादको के लिये एक मण्डी का काम देते थे। इस प्रकार के प्रस्तावित कर अपने आप मे किसी प्रकार बोझिल नही थे, क्योकि सामान्य रूप से ये उपनिवेश समृद्ध थे और ब्रिटेन के मुकाबले मे उन पर राजकर-सम्बन्धी बोझ अधिक हल्के थे।

अमेरिका के उपनिवेश-वासियो को यह बात चुभती थी कि ब्रिटेन उन्हे अपना अग न मान कर सम्पत्ति के रूप मे मानता है। यह उनकी हठधर्मी का तीसरा कारण था। वास्तव मे ये उपनिवेश जीवन के रहन सहन के तरीको मे तथा स्वशासन के सचालन मे प्रौढ अथवा लगभग प्रौढ थे। किन्तु ब्रिटेन उन्हे शिशुओ की भाति मान कर चलता था। शिशुओ के समान ही उनके साथ आज्ञा मानने पर दुलार-प्यार का सलूक किया करता और 'शरारत' करने पर थप्पडो से उनकी मरम्मत की जाती। वास्तव मे यह किसी प्रकार के निष्ठुर व्यवहार का प्रश्न नही था—चाहे तत्कालीन देश-भक्त वक्ता इस बारे मे जो भी कहते हो, बल्कि कई एक छोटी-मोटी शिकायते थी, जिन्होने बडी-बडी शिकायतो का रूप धारण कर लिया था। इसलिये कि 'पिता' हतबुद्धि, जिद्दी और आश्रय प्रदान करने का इच्छुक था, जबकि सन्तान आयु की उस अवस्था मे पहुँच चुकी थी, जहाँ हर व्यक्ति अपनी मर्जी से काम करना चाहता है। सन् १७७६ मे टाम पेन ने अपनी 'कामन-सैन्स' नामक पुस्तिका मे प्रश्न किया था—'क्या सारी आयु लडका बना रहना मानव के हित मे है ?' और दस वर्षों से अधिक समय से भिन्न-भिन्न उत्तरो के साथ यही प्रश्न अन्य लोग भी पूछते आये थे।

इन उपनिवेश-वासियो मे अथवा उनके अन्तर्गत एक ही प्रकार

के समुदायो मे कुछ एक मोटी-मोटी बाते समान रूप से पायी जाती थी। बोस्टन का व्यापारी फिलेडैलफिया के व्यापारी को भली भाति समझ सकता था। दक्षिण मे बागान का मालिक अपने आपको न्यूयार्क के किसी भी प्रतिष्ठित जायदाद वाले व्यक्ति के समकक्ष मानता था। सम्भव है कि सन् १७५६ मे न्यूयार्क से गुजरते हुए जार्ज वाशिगटन ने एक ऐसे ही किसी व्यक्ति की लडकी से विवाह-सम्बन्ध स्थापित करने की बात सोची हो। वकील लोग हर जगह समान भाषा बोलते थे। इसी प्रकार उपनिवेशो की विस्तृत सीमाओ पर बसे अन्य लोग भी एक ही भाषा का प्रयोग करते थे, यद्यपि वे उतने सुस्पष्ट ढग से नही बोल पाते थे। इन बातो के अलावा प्रत्येक उपनिवेश के भीतर अपने-अपने विशेष कारणो से असन्तोष था। टाईडवाटर वर्जीनिया अपनी भीषण डावाडोल अर्थ-नीति मे डूबा हुआ था। इस बात के बावजूद कि वाशिगटन ने आटे की चक्की लगाकर और पोटोमैक मे मनो मछलियाँ पकडवा कर और उनके निर्यात का प्रबन्ध करके अपने 'फार्म' की आमदनी मे वृद्धि कर ली थी, तो भी माऊट वर्नन वाले खेत बगीचे उन्हे हर प्रकार की सावधानी बर्तते हुए भी, बहुत कम लाभ दे रहे थे। तम्बाकू के दाम कम थे और इसकी खेती से भूमि ऊसर होती जा रही थी। मुद्रा की कमी थी। चूकि वर्जीनिया उपनिवेश बेचने की अपेक्षा अधिक वस्तुए खरीदता था, इसलिये यहा के बागान के स्वामी जिनमे वाशिगटन भी एक था, ब्रिटेन-व्यापारियो के ऋणी हो चुके थे। कहा जाता है कि ये व्यापारी अपने बेबस देनदारो को अकसर ठग लिया करते थे। स्वय वाशिगटन ने अपनी भूमि और साधनो के ह्रास की रोक-थाम के लिए माऊट वर्नन पर तम्बाकू की बजाय गेहू बोना आरम्भ कर दिया था। यद्यपि जागरूक सट्टेबाज अब भी पश्चिम से लाभ पाने की आशा कर सकते थे, परन्तु ब्रिटेन की सरकारी घोषणाये उसके मार्ग मे रोडा बनने की आशका पैदा कर रही थी, क्योकि वालपोल निधि नामक कोष से सहायता मिलने के कारण ब्रिटेन के सट्टेबाज इनसे प्रतियोगिता करने लग पडे थे।

ब्रिटेन ने ओहियो कम्पनी के दावे रद्द करके पैन्सिलवेनिया के सट्टेबाजो के दावे स्वीकार कर लिये थे ।

यह उचित प्रतीत नही होता कि इस तस्वीर को अधिक काली रगत दी जाये । पहली बात यह थी कि वर्जीनिया की इस डावा-डोल आर्थिक स्थिति के लिए 'ब्रिटेन' को सब प्रकार से दोषी नही ठहराया जा सकता था और सघर्ष से कुछ पूर्व समय तक उसे इस के लिए सर्वथा उत्तरदायी समझा भी नही गया था । दूसरी बात यह थी कि यद्यपि ब्रिटेन की भूमि-नीति से लोगो मे क्रोधाग्नि भडक उठी थी, तो भी इससे वर्जीनिया के व्यवसायो का गला नही घुटा था । अकेले वाशिगटन ने बस्तियो मे अपनी बारह हजार एकड भूमि को विशेष अधिकार-पत्र द्वारा प्राप्त कर लिया था। इन बातो के अलावा हमे इस मान्यता को कोई महत्व नही देना चाहिए कि ब्रैडाक की हार के परिणाम-स्वरूप ब्रिटेन की प्रतिष्ठा को कोई ठेस पहुची थी । वाशिगटन और उसके वर्जीनिया के साथी यद्यपि अपना सारा ध्यान अपने उपनिवेश के अन्दर बीती घटनाओ पर ही केन्द्रित करते थे, फिर भी वे लूईसबर्ग और क्यूबैक मे हुई लडाइयो मे ब्रिटेन के शस्त्रास्त्रो के अद्भुत कारनामो से अवश्य ही सुपरिचित थे । वे जानते थे कि सन् १७६३ की विजय के बाद सम्राट् जार्ज-३ की प्रजा का कोई भी आदमी ससार के सुदृढतम राष्ट्र का एक सदस्य है । जब वर्जीनिया का निवासी 'मेरा देश' शब्दो का प्रयोग करता था, तो उसका अभिप्राय शक्तिशाली ब्रिटेन से होता था और वह वर्जीनिया को उसका पाचवा भाग मानता था । यदि मदिरा, सुरुचिपूर्ण वस्त्रो, अथवा घर-गृहस्थी की वस्तुओ के कारण किसी वर्जीनिया निवासी के सिर पर किसी व्यापारी का ऋण आ पडा था, तो वही हालत कितने ही अग्रेजो की भी थी जो लन्दन के निकटतर रहते थे ।

लेकिन गर्व दुधारी तलवार थी । विलियम्जबर्ड ने कहा था कि हमारी सरकार इतने अच्छे ढग से बनी है कि गवर्नर हम पर तभी अत्याचार कर सकता है जब वह हमको धोखे मे डाल दे और

हमसे तभी पैसा ऐंठ सकता है जब पहले सिद्ध करदे कि वह उसका अधिकारी है । तीस वर्ष पश्चात् जब ब्रिटेन ने स्टाम्प कानून पास किया, तो अमेरिका-वासियो को यह यकीन नही हुआ कि प्रस्तावित कर न्यायोचित है । इसका विरोध करते समय वे अपने आपको ब्रिटेन के स्वाधीनता-प्रेमी नागरिक ही समझते थे । उनकी वक्तृत्व-शक्ति उनकी विरासत और परिस्थितियो की स्वाभाविक देन थी । उनमे कुछ लोग अन्य लोगो की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली ढग से लिख-बोल सकते थे । वर्जीनिया मे युवा विद्वान् टामस जैफ्सर्नन, ओजस्वी पेट्रिक हेनरी अथवा अधिक मजे हुए जार्ज मेसन के पास ऐसे शब्द थे, जिनका तुरन्त प्रभाव होता था, किन्तु यह वाद-विवाद जो विचित्र ढग से कभी उच्च स्तर का होता और कभी बिल्कुल व्यावहारिक, बढते-बढते सभी उपनिवेशो मे फैल गया । 'कल्पना-शीलता' एक ऐसा शब्द था जिसको कर्नल वाशिगटन जैसे व्यवहार कुशल बागान स्वामी भी उसके पुराने अर्थ मे ही समझते थे । १७६५ ई० मे उन्होने लिखा था कि स्टाम्प कानून 'उपनिवेश वासियो के कल्पनाशील भाग की बातचीत का विषय बना हुआ है ।' (शब्द को रेखाकित मैने दिया है)

उस वर्ष न तो वाशिगटन और न किसी अन्य उपनिवेश-वासी के मन मे ही पृथक्करण का विचार आया था । अमेरिका-वासियो के दावे को इगलैण्ड मे भी समर्थन मिला, स्टाम्प कानून रद्द कर दिया गया, और वाशिंगटन ने अपने व्यापारियो को उस समय जो पत्र लिखे, वे ऐसे थे मानो कोई अग्रेज दूसरे अग्रेज को लिख रहा हो । उन्होने लिखा कि 'स्टाम्प कानून को रद्द करवाने मे जो लोग सहायक रहे है, वे ब्रिटिश प्रजा के प्रत्येक सदस्य के धन्यवाद के पात्र है और हार्दिक रूप मे मेरे भी ।' फिर भी उसी पत्र मे उन्होने उन दुष्परिणामो की ओर भी सकेत किया जो कानून रद्द न किये जाने के कारण पैदा हो सकते थे । उनके विचारो की यह कठोर धार अगले तीन-चार वर्षो मे फिर दृष्टिगोचर हुई ।

स्टाम्प कानून के रद्द होने के बाद इगलैण्ड मे टाउनशैड-कानूनो

के रूप मे कुछ और कर-कानून बना दिये गये। वाशिगटन अब इतने रोष मे आ चुके थे कि १७६९-७० मे वह इन वर्जीनिया-वासियो मे अगुवा हो गये थे, जो ब्रिटेन से कर लगने वाला माल मँगाने के विरुद्ध थे। उन्होने अपने पडोसी मित्र, गुनस्टन हाल के जार्ज मेसन से कहा—'यह कहा जाता है कि सम्राट् को एव पार्लियामेन्ट को भेजी गई प्रार्थनाए सिद्ध करती है कि हमारे वे प्रयत्न विफल हुए है जो हमने ब्रिटेन वालो को अपने साधारण और विशेष अधिकारो के प्रति उद्बोधित करने के लिए अथवा उनके व्यापार और उद्योगो को क्षति पहुचाने के लिए किये थे। यह बात सही नही है। अभी तो इन दोनो उपायो का परीक्षण करना बाकी है।" उन्होने उग्र शब्दो मे मेसन को यह भी एक बार लिखा कि जरूरत पडने पर अमेरिका वालो को 'आखिरी उपाय के रूप मे ब्रिटेन के शासक-स्वामियो के आक्रमणो से' अपनी पैतृक स्वतन्त्रता को बचाने के लिए हथियार तक उठा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए।

बहुत कम लोग आशा रखते थे कि इस झगडे मे खुले आम हिंसात्मक कार्यवाहिया होगी। ब्रिटेन ने इस दबाव के आगे एक बार फिर घुटने टेक दिये। समस्त टाऊनशैड-करो को रद्द कर दिया गया, सिवाय उस कर के जो उपनिवेशो मे आने वाली चाय पर लगा था। इस कदम के फलस्वरूप यह आशा थी कि सारी गड-बड समाप्त हो जायगी। आखिर वाशिंगटन जैसे प्रख्यात व्यक्तियो को अपने निजी काम भी तो रहते थे। साथ ही साथ बार-बार दोहराये जाने के कारण उन युक्तियो मे अब कोई रोचकता नही रही थी।

किन्तु सन् १७७३ के अन्त मे उग्रवादियो के एक अच्छे प्रकार से अभ्यस्त दल ने बोस्टन मे प्रसिद्ध चाय-पार्टी का ड्रामा किया। विदेश से लाई गई चाय पर कर-शुल्क अदा करने की बजाय उसे बन्दरगाह मे ही फिकवा दिया गया। इस कार्य को करते समय उन बोस्टन-निवासियो ने 'इण्डियन' लोगो का, जो कि अमेरिका के

मूल-निवासी थे, भेस बनाया था। यह नही कहा जा सकता कि वे इस कार्य के लाक्षणिक अर्थ समझते भी थे या नही। परन्तु उनके इस कार्य का और जिस प्रकार मर्यादा-रहित ढग से उनके द्वारा विनाश हुआ, उसका समर्थन सभी उपनिवेशो मे नही हुआ। किन्तु जब ससद ने मेसाचूसैट्स के विरुद्ध यह मान कर कि यह उपनिवेशो का सरगना है, ऐसे कानून पास किये, जिनका प्रयोजन बदला लेना और वहा के लोगो को बलपूर्वक अपने अधीन बनाये रखना था, तो शेष उपनिवेश भी उसके पक्ष मे हो गये।

सकटोन्मुख वर्जीनिया मे वाशिगटन ने दुबारा एक प्रमुख कार्य-कर्त्ता के रूप मे भाग लिया। वह न तो उग्रवादी थे और न ही उन लोगो मे से थे जो किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोध करते है। सन् १७७४ मे उनके विषय मे यह राय थी कि वह एक अहकार-रहित व्यक्ति है और यद्यपि कम बोलते है, वह हर बात मे समझ से काम लेते है, अपने कार्यों मे 'उस पादरी की तरह शान्तचित रहते है जो अपनी प्रार्थना मे मग्न हो।' इस प्रकार की प्रकृति रखने के कारण वाशिगटन ने पेट्रिक हेनरी जैसे तीक्ष्ण उग्रवादी और सर-कार के प्रमुख कानूनी सलाहकार जान रैडाल्फ जैसे चिन्ताग्रस्त परिवर्तन-विरोधियो के बीच का मार्ग अपनाया। इस प्रकार यद्यपि उन्होने कर वाले माल के आयात के विरुद्ध किये जा रहे प्रयोग का समर्थन किया, उन्होने इस बात का विरोध किया कि अपने माल का निर्यात भी बद कर दिया जाय। कारण कि यदि वर्जीनिया के लोग अपने माल का निर्यात नही कर पायेंगे, तो वे ब्रिटेन के ऋणदाताओ का ऋण कैसे चुका सकेंगे?

वाशिगटन जब एक बार किसी निश्चय पर पहुँच जाते, तो वह अपने विचारो को दूसरो से छिपाते नही थे। यद्यपि वह स्वय सुस्पष्ट ढग से वाद-विवाद करने मे दक्ष नही थे, तो भी उनमे यह गुण था कि वह तार्किक लोगो की युक्तियो को सावधानी से आत्म-सात् कर लिया करते थे। उदाहरण के लिये हम जार्ज मेसन का उल्लेख कर सकते है। वाशिगटन ने उनकी सुस्पष्ट बातो को जुलाई १७७४

की फेयर-फेक्स क्षेत्रीय सभा मे 'प्रस्तावो' के रूप मे प्रस्तुत किया था। एक चिरानुभवी जिला-पालिका के सदस्य के नाते वह वर्जीनिया की विधान-सभा मे अपने साथियो के साथ खुले विद्रोह की स्थिति तक, कदम-ब-कदम आगे बढते ही चले गये।

कुछ साथी अवज्ञा के वातावरण से भयभीत हो कर पीछे हट गये। वर्जीनिया-वासी धनी रैंडाल्फ ही केवल ऐसा व्यक्ति न था, जिसका चित्त सदेहो से आकीर्ण हो। तो फिर, वाशिंगटन को यह क्यो नही सूझा कि वह भी आगे कदम बढाने से ठिठक जाये ? क्या एक धनी-मानी वर्जीनियावासी के नाते उन्हे रैंडाल्फ की तरह ही राजभक्त बन कर अपने उपनिवेश को छोड कर चले नही जाना चाहिये था ? आखिरकार, वाशिंगटन के पिता और दो सौतेले भाई—इन सब ने इगलैण्ड मे शिक्षा ग्रहण की थी। उनके निकटवर्ती पडोसी और पक्के मित्र, फेयरफेक्स परिवार के सदस्य, भावना मे पूरे अग्रेज थे। सैली के पति, कर्नल जार्ज विलियम फेयरफेक्स के भाई, ब्राइअन फेयरफेक्स ने वाशिगटन को लिखा था कि उन्हे ब्रिटेन के साथ सन्धि कराने के लिये जोर लगाना चाहिये। ब्राइअन की युक्तिया किस कारण उन्हे प्रभावित न कर सकी ?

इन प्रश्नो का उत्तर स्पष्ट प्रतीत होता है। वाशिंगटन के लिये इनका उत्तर सुस्पष्ट था। न केवल उनकी प्रकृति ही उन्हे प्रतिरोध के लिये आगे धकेले जा रही थी, बल्कि उनके कथनानुसार 'मनुष्य-मात्र की आवाज भी उनके साथ थी।' मनुष्य-मात्र से उनका अभिप्राय निस्सन्देह वर्जीनिया निवासियो से था। वह जन्म से, लालन-पालन से, सहज प्रकृति और प्रवृत्ति से—यहाँ तक कि जायदाद के कारण भी (जो किसी और वस्तु से कम महत्व की चीज नही है) वर्जीनिया के ही थे। इसी उपनिवेश मे ही उनकी भूमि अपनी थी और वह यही के ही थे। एक सच्चे और ईमानदार मनुष्य के नाते वह केवल इतना ही आश्वासन चाहते थे कि उनके देशवासी उनके तरह ही महसूस करते है।

इस कहानी मे मृगतृष्णा तुल्य अनेक सम्भावनाये है। उदाहर-

णार्थं यदि डिनविड्डी के साथ उनके सम्बन्ध मृदुतर होते—तो क्या हुआ होता ? या ड्यूक्वैने के निकट मरुस्थल की लडाई मे ब्रैडाक मारे न गये होते, उन्होने फ्रास को हरा दिया होता और विजयोपरान्त सम्राट् से अपने वर्जीनिया सहकारी को मान दिये जाने के लिये सिफारिश की होती, तो क्या होता ? सक्षेप मे यदि वाशिगटन को उनका वाछनीय कमीशन मिल गया होता, तो क्या होता ? फ्रासीसियो के विरुद्ध युद्ध अनेक वर्ष चलता रहा था। यह समय इतना लम्बा था कि उनको वर्जीनिया के बाहर अनेक युद्ध-क्षेत्रो मे लडने का मौका मिला। उन्हे इस प्रकार के अवसर भी प्राप्त हुए कि उनके अनेक नए सम्बन्ध-सम्पर्क बन सके और पुराने कमजोर हो सके। इस विषय मे जितना ही सोचे, उतनी ही कौतूहलता बढती है।

किन्तु छोटी-छोटी इतिहास की दुर्घटनाये मिल कर और ही कोई प्रसग तैयार कर रही थी। माऊट वर्नन के कर्नल वाशिगटन को सन् १७७४ के अगस्त मास मे विलियम्जबर्ग प्रान्तीय सम्मेलन मे सम्मिलित होने के पश्चात् भावी सघर्ष मे उलझना पडा। उनका मत ऐसे शब्दो का रूप धारण कर चुका था, जिसे दूसरो की शब्दावलि कहना चाहिये। ('नैसर्गिक अधिकार', 'नियम और सविधान' आदि वाक्याशो को वह बातचीत के दौरान मे अनेक बार सुन चुके थे), किन्तु इससे भी अधिक महत्व की बात यह थी कि ये वाक्याश उस समय स्थान-स्थान मे प्रचलित थे। उस हेमन्त ऋतु मे फिलेडेल्फिया मे हुई अमरीकी सार्वदेशिक काग्रेस के लिये वर्जीनिया से जो सात प्रतिनिधि चुने गये, उनमे वे भी थे।

टामस जैफर्सन इतने बीमार थे कि उनको मनोनीत न किया जा सका। जार्ज मैसन को इसलिये शामिल नही किया गया, क्योकि उस समय की परम्परा के अनुसार उनको इसका अधिकारी नही माना जा सकता था। फिर भी वाशिगटन का निर्वाचन—जो प्रकटत बहुमत से हुआ—इस बात का द्योतक था कि अपने समकक्षी महानुभावो की दृष्टि मे वह अब उन महत्वपूर्ण व्यक्तियो मे से थे जो उपनिवेशवासियो के साथ थे, सम्राट् के साथ नही। यदि वह शाही

गवर्नर के साथ भोजन भी करते, तो भी उन पर यह सन्देह न होता था कि उनकी देशभक्ति मे कोई कमी है। उनका उत्थान बिना शोर-गुल्ल के, लेकिन निश्चित रूप से हुआ। वर्जीनिया के सात प्रतिनिधियो मे से एक पट्रिक हैनरी भी थे। उनके बारे मे समझा जाता था कि वह किसी बात को शानदार ढग से कहना जानते है। वाशिगटन के विषय मे यह विश्वास था कि वह सही बात को शिष्टता और सहज बुद्धि के साथ कह सकते है।

वाशिगटन ने फिलेडेल्फिया मे पैट्रिक हेनरी को हृदयस्पर्शी शब्दो मे यह कहते हुए सुना—'मैं केवल वर्जीनिया का नागरिक नही, सारे अमेरिका का नागरिक हूँ।' उस समय यह एक विचित्र धारणा थी, जो वास्तविक होने की बजाये अधिकाश मे आलकारिक थी। इसी जगह सम्मेलन मे उन्हे यह सूचना मिली कि ब्रिटेन की सेना के दस्तो ने बोस्टन पर कब्जा कर लिया है और वे उसकी किलेबदी कर रहे है। उन सबने इस कार्य को बर्बरतापूर्ण माना। स्थिति के अन्य तत्वो पर विचार-विमर्श हुआ, किन्तु एक मत होने मे बडी कठिनाई पैदा हुई। सब लोगो मे गुस्से की आग सुलग रही थी, किन्तु यह क्रोध ठीक-ठीक रूप क्या धारण करे—यह समझ मे नही आ रहा था। जान एडम्स ने अपनी पत्नी को घर पर लिखा—'सम्मेलन के पचासो प्रतिनिधि आपस मे अजनबी से है, जो न तो एक दूसरे की भाषा ही जानते है और न ही वे एक दूसरे के विचारो, दृष्टिकोणो एव परिकल्पनाओ को समझते है। इसलिये वे एक दूसरे से ईर्ष्या रखते है। उनमे भय, सकोच और अस्थिरता है।' उस सम्मेलन मे वक्तृत्व-शक्ति के कौशल का खूब प्रदर्शन हुआ। शाब्दिक दाव-घात भी खूब हुये। प्रत्येक प्रतिनिधि अपनी भावनाओ और दूसरे प्रतिनिधियो के उत्साह और जोश से प्रभावित हो कर बोला। वाशिगटन दूसरो के मुकाबले मे मौन रहे, यद्यपि वह अमिलनसार नही थे। ऐसी परिस्थिति मे जबकि हर एक जरूरत से ज्यादा बोलने की इच्छा रखता था, उनका मौन रहना मूल्यवान सिद्ध आ।

अनेक बातो को दृष्टि मे रखते हुए यह नही कहा जा सकता

कि यह अवसर यो ही बेकार गया। कई एक शान्तिपूर्ण उपायो से की जाने वाली विरोधात्मक कार्यवाहियो के बारे मे एक मत बना और काग्रेस अधिवेशन सन् १७७५ के बसन्त तक स्थगित हो गया।

वाशिंगटन को इस सम्मेलन के लिए दूसरी बार वर्जीनिया का प्रतिनिधि निर्वाचित किया गया। जब वह मई १७७५ मे माऊट वर्नन से दूसरी सार्वदेशिक काग्रेस के अधिवेशन मे शरीक होने के लिए दुबारा फिलेडैल्फिया पहुचे, तो दैवयोग से वह सैनिक वर्दी पहने हुए थे। उस सम्मेलन मे अकेले उन्ही की सैनिक वर्दी थी। रास्ते मे उन्होने स्वयसेवको के अनेक दस्तो का निरीक्षण किया था और उनके फिलेडैल्फिया के साथियो ने भी उन जिलो मे जिनमे से होकर उन्होने सफर किया था, जन-आन्दोलन के इसी प्रकार के चिन्ह देखे थे। वास्तव मे हर स्थान मे लोगो मे जोश बढता जा रहा था। अप्रैल मास मे, लैक्सिगटन और कनकार्ड मे मैसाचूसैट्स की मिलिशिया और बोस्टन के नियमित सैनिको मे लम्बी भिडन्त हुई थी, जिसमे ब्रिटेन के सैनिको के साथ कडा व्यवहार हुआ था। वाशिंगटन के फिलेडैल्फिया पहुचने के तुरन्त बाद, मई मास मे, उपनिवेश-वासियो की एक टुकडी ने टिकोन्डेरोगा के किले पर कब्जा कर लिया। यह किला जार्ज झील के उत्तरी छोर पर था और कैनेडा को यही से मुख्य रास्ता जाता था। लगभग उन्ही दिनो मे उनके अपने उपनिवेश, वर्जीनिया मे, पैट्रिक हेनरी के हैनोवर काऊटी मे लोग खुले तौर पर गवर्नर के अधिकारो को चुनौती दे रहे थे।

इतनी घोर अशान्ति के क्या परिणाम होगे—इसके बारे मे कोई भविष्यवाणी नही कर सकता था। किन्तु उपनिवेशो ने परस्पर गठ-जोड कर लिया था। काग्रेस के अधिवेशन मे शामिल होने वाले अपेक्षतया निर्भीक प्रतिनिधि इस बात के लिए तैयार थे कि सैनिक बल का उत्तर सैनिक बल से ही दिया जाय। उन्हे एक सेना चाहिए थी और सेना के लिए सेनानी चाहिए था। अत सन् १७७६ मे, १५ जून के दिन, यह प्रस्ताव पास हुआ कि 'एक सेना-

पति नियुक्त किया जाय, जो अमेरिका की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये भर्ती की गई समस्त महाद्वीप की सेना को निर्देश दे सके।' इससे एक दिन पूर्व, काग्रेस के अधिवेशन मे, मैसाचूसैट्स के प्रभावशाली व्यक्ति, जान एडम्स, ने कर्नल वाशिंगटन का नाम इस पद के लिए पेश किया था, जिसका समर्थन उनके हमनाम सहकारी, सैमूअल ऐडम्ज, ने किया था। यह सैमूअल ऐडम्ज अपनी बात मनवाने की कला मे होशियार थे।

इस अचानक घटना ने सम्भवत वर्जीनिया के वाशिंगटन को हैरानी मे डाल दिया। अपनी अचानक प्रशसा से वह निश्चय से इतने घबरा गये कि बैठक के कमरे से बाहर निकल गये। वह पन्द्रहवी तारीख को भी अनुपस्थित रहे, जिस रोज कि उनका नाम मेरीलैण्ड के प्रतिनिधि ने औपचारिक रूप से पेश किया। इस प्रस्ताव के फल-स्वरूप जार्ज वाशिंगटन सर्वसम्मति से सेना-पति चुने गये।

---

## अध्याय—३

# जनरल वाशिंगटन

हमे अपने कामो मे न तो उतावलापन दिखलाना चाहिए और न ही आत्मसदेह।

ऐसी बहादुरी, जो सीमा को उल्लाघ जाए,
दोष मे परिणत हो जाती है,

और सार्वजनिक सभाओ मे भय प्रदर्शित करना विद्रोह के समान धोखा देता है। हम दोनो से बचे।

( एडीसन के नाटक केटो से—अक २, दृश्य १ )

**सेना की अध्यक्षता तथा सकट सन् १७७५ से १७७६ तक**

जार्ज वाशिंगटन के बाद की पीढ़िया इस बात को स्वीकार करती हैं कि केवल वही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हे प्रधान सेना-पति

के पद के लिए सोचा और चुना जा सकता था। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि फिलेडैल्फिया के प्रतिनिधियो ने उन्हो का चुनाव क्यो किया ? उत्तर हो सकता है कि अशत अनुभवो की वजह से। किन्तु उपनिवेशो मे अनेक दूसरे लोग भी थे, जो सेना मे उतने ही काल तक नौकरी करते रहे थे जितने काल तक वाशिगटन ने की, और जिनका सेवा-कार्य उतना ही सतोषजनक था। एक-दो तो, विशेष कर चार्ल्स ली और होरेशो गेट्स, ऐसे लोग थे, जिनका सैनिक अनुभव उन से भी अधिक था। ये दोनो योद्धा, जो इस समय अमेरिका के पक्ष का समर्थन कर रहे थे, इससे पूर्व नियमित अग्रेजी-सेना के अफसर रह चुके थे। इनके अलावा मैसाचूसैट्स का आर्टेमस वार्ड तो उन दिनो रण-क्षेत्र मे ही लड रहा था और बोस्टन के गिर्द न्यू इगलैण्ड की मिलिशिया का सचालन कर रहा था।

इन सब बातो के बावजूद, वाशिगटन को एकमत से प्रधान-सेनापति चुना गया। सम्भव है कि उनकी अपेक्षा की जाती, यदि वह स्वय प्रतिनिधि के नाते सम्मेलन मे उपस्थित न हुए होते, लोग उन्हे जान न गए होते और उनमे उनका विश्वास पैदा न हुआ होता। परिस्थिति जैसी भी थी, उन्होने चर्चा मे बहुत कम भाग लिया। किन्तु समिति की बैठको मे तथा खाने की मेजो पर अपनी सूझ-बूझ और सचाई की धाक जमा दी। सैमूअल कर्वेन, जो वाशिगटन को १७७५ के मई मास मे फिलेडैल्फिया मिला था, यद्यपि वह बडा कट्टर राजभक्त था और उस समय के तुरन्त बाद इगलैण्ड के लिए प्रस्थान भी कर गया था, उसने यह स्वीकार किया कि वर्जीनिया का यह कर्नल 'शिष्ट व्यक्ति है और अपनी बात-चीत और आदतो मे मृदु और मधुर है।' काग्रेस के सदस्यो ने कर्वेन की इस सम्मति की सम्पुष्टि की। उनमे से एक ने कहा—'यह मृदु स्वभाव और रूप मे योद्धा के समान है।' साथ ही उसने यह भी जोड दिया कि वाशिगटन 'शकल सूरत मे बहुत तरुण लगते हैं।' असल बात तो यह है कि उनकी तितालीस वर्ष की अवस्था

उम्र का वह हिस्सा थी जबकि शक्ति और 'ठोस जानकारी'—दोनो का मेल उन मे हुआ था ।

इसके अतिरिक्त वाशिंगटन सम्पन्न व्यक्ति थे, यद्यपि वह उतने धनाढ्य नही थे, जैसा कि उनके विषय मे कहा जाता है (अथवा वह स्वय मानते थे) । न्यूयार्क के प्रतिनिधियो को पूर्व ही निर्देश किया गया था कि 'उसी व्यक्ति को जनरल बनाया जाय, जिसके पास प्रचुर धन-सम्पत्ति हो, ताकि उसके कारण वह अपने उच्चपद की शोभा को चार चाद लगा सके । ऐसा न हो कि उसकी शोभा महज पद के कारण हो । इसके अलावा देश इस बात पर एतबार कर सके कि उसकी जायदाद, उसके रिश्तेदार तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले लोग इस उच्चपद के कर्तव्यो को वफादारी से निभाने मे कोई अडचन पैदा न करे । वह इस ढग का आदमी हो कि जनता के हित मे अपने हाथो मे आई सत्ता का परित्याग कर सके ।'

हमे आशा नही कि उस समय कोई और व्यक्ति इस विवरण के अनुरूप उपलब्ध हो सकता । वाशिगटन उच्च वर्ग के ऐसे व्यक्ति थे जिनका झुकाव उन्मूलनवाद (रैडिकल) विचार धारा की तरफ था । कुछ भी हो, वह फिलेडैल्फिया के सम्मेलन मे उपस्थित कुछ प्रमुख नागरिको के विपरीत उपनिवेशो की खातिर अपने आपको और अपनी जागीर को भी समर्पित करने को उद्यत थे । उनकी सैनिक वर्दी इस तथ्य को घोषित करती थी । उनका आचरण तथा उनकी प्रसिद्ध चमक-दमक के आरोप से उनकी रक्षा कर रही थी । उस समय उनके सम्बन्ध मे कतिपय कहानियो के गढे जाने की प्रक्रिया का सूत्रपात भी हुआ । सन् १७७५ मे एक किंवदन्ती फैली कि गत वर्ष कर्नल वाशिंगटन ने यह प्रस्ताव रखा था कि वह एक हजार वर्जीनिया–सैनिको की रेजमैण्ट बनायेगे और उन्हे बोस्टन की ओर ले जायँगे । इस पर जो खर्चा आएगा, वह अपनी जेब से देंगे । यह किंवदन्ती सर्वथा निराधार प्रतीत होती है, यद्यपि उनकी जीवनी लिखने वालो ने इस घटना को सच समझ कर अक्सर दुहराया है । यह प्रकट करता है कि फिलेडैल्फिया के लोग इस बात के लिए

कितने उत्सुक थे कि वाशिंगटन की महानता के साक्ष्य पेश करके उन्हे एक अलौकिक पुरुष जाहिर किया जाय। काग्रेस के पास सैम एडम्ज सरीखे आदमी तथा अन्य देशभक्त भी थे जो विद्रोही जनता को उत्तेजित कर सकते थे, किन्तु इस समय अनिवार्य रूप से ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी जो उस विद्रोही समुदाय को अनुशासन-बद्ध करके उसका नेतृत्व कर सके। ऐसे महानुभाव की आवश्यकता थी जो देखने और कार्य के सचालन मे सेनापति के सदृश लगे तथा जो हो तो अमेरिका-निवासी, परन्तु अपना कार्य का सम्पादन योरुपीय नमूने पर करने की योग्यता रखता हो।

इस सिलसिले मे एक और भी महत्वपूर्ण विचारणीय बात थी। अब तक न्यू इगलैण्ड मुठ-भेड का क्षेत्र था। अब यदि प्रस्तावित सार्वदेशिक सेना मे सब उपनिवेशो को पूर्णतया मिलाने की योजना बनती है, तो—जैसा कि जान और सैम्युअल-एडम्ज ने महसूस किया—इसकी कमान ऐसे योद्धा को सौंपी जानी चाहिए, जो न्यू इगलैण्ड का न हो। मैसाचूसैट्स और वर्जीनिया दोनो मिलकर उपनिवेशो की शक्ति के प्रधान आधार थे। इसलिए वर्जीनिया-वासी होने के कारण जार्ज वाशिंगटन विशेष रूप से चुने जाने योग्य थे। आधुनिकतम अमेरिका के इतिहास मे प्रयुक्त शब्दावली मे वह 'प्रयोजन सिद्ध करने वाले' उम्मीदवार थे। उनके अधीन नियुक्त किये गए मेजर व जनरल, राजनैतिक तथा अन्य प्रासागिक बातो को दृष्टि मे रख कर नियुक्त किए गए—जैसे, मैसाचूसैट्स को खुश करने के लिए आर्टेमस वार्ड को नियुक्त किया गया, चार्ल्स ली को उसके सैनिक तर्क-वितर्कों के कारण, फिलिप स्कूयलर को (जो एक और प्रतिनिधि था तथा धनाढ्य होने के अतिरिक्त एक मजा हुआ सैनिक अफसर भी था) न्यूयार्क की तुष्टि के लिए लगाया गया और इस्राईल पुटनम को इसलिए नियुक्त किया कि वह कनैक्टीकट का मन-चाहता 'पुत्र' और जन-अधिनायक था। होरेशो गेट्स को, जो ब्रिटेन मे पैदा हुआ था और जिसने वर्जीनिया को अपनी मातृ-भूमि बना लिया था, एडजूटैण्ट जनरल मुकर्रिर किया गया। उनके

अधीन, उसी प्रकार विविध उद्देश्यो को सामने रख कर कई एक ब्रिगेडियर जनरल चुने गये ।

सम्भवत वाशिंगटन के बारे मे शब्द 'उम्मीदवार' का प्रयोग गलत अर्थ देता है । उन्होने अपने आपको कभी आगे नही धकेला । जब उन्होने काग्रेस को यह विश्वास दिलाते हुए कहा कि 'मैं अपने आपको इस कमान के योग्य नही समझता,' तो उन्होने अपने दिल की बात कही । एक कहानी भी है कि वाशिंगटन ने आखो मे आसू लाते हुये पैट्रिक हैनरी को गुप्त रूप मे कहा कि 'जिस दिन से मुझे अमेरिका की सेनाओ की कमान सौंपी जायगी, उसी रोज से मेरा पतन होगा और मैं अपनी सुकीर्ति को नष्ट कर बैठूगा ।' चाहे यह कहानी सच्ची न भी हो, तो भी इसमे सन्देह नही कि उस समय भी वाशिंगटन को अपने अच्छे नाम का बहुत ही ध्यान था । यद्यपि उन्होने अपने कई पत्रो मे अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए यह कहा कि वह आलोचना की परवाह नही करते, और यद्यपि उन्हे नुक्ता-चीनी प्रचुर मात्रा मे सहनी पडी, तथापि उन्होने अपने जीवन के अन्त तक कभी इस बात को स्वीकार नही किया कि आलोचना का कष्ट अनिवार्य रूप से प्रत्येक सार्वजनिक पदाधिकारी को भुगतना ही पडता है । उन्होने सदा अपने क्रोध को उचित सीमा के अन्दर रखा । अपने समकालीन अधिकारियो के विपरीत उन्होने अपनी सैनिक मान-मर्यादा की नियमावलि मे से द्वन्द्व-युद्ध को निकाल दिया ।

जनरल वाशिंगटन हर चीज का बहुत अच्छी तरह ख्याल रखते थे । यह इस लिए नही कि उनमे घमण्ड की मात्रा थी, बल्कि इस लिए कि उनमे आत्माभिमान था । वह दूसरे लोगो मे अशिष्ट व्यवहार को घृणा से देखते थे और इस बात को सहन नही कर सकते थे कि दूसरे लोग उन्हे नीच प्रवृत्तियो वाला समझें । इससे पूर्व एक बार उन्होने ब्रैडाक के अधीन स्वय-सेवक भद्रपुरुष के रूप मे बिना वेतन और औपचारिक पद-स्थिति के कार्य किया था । यह सिद्ध करने के लिए काफी है कि उनमे कितनी अधिक निस्स्वार्थ भावना थी । अब प्रधान सेनापति का पद ग्रहण करने पर

उन्होने उस अपने विचार को अधिक शानदार पैमाने पर पुन कार्यान्वित करना चाहा। अत उन्होने काग्रेस पर अपनी यह इच्छा प्रगट की कि वह इस पद के लिए कोई वेतन नही चाहते, केवल अपना खर्च लेंगे। (काग्रेस ने पूर्व ही यह निश्चय कर लिया था कि प्रधान सेना-पति को वेतन तथा खर्चे के लिए पाच सौ डालर प्रतिमास दिए जायें।)

यद्यपि वह अपने दायित्वो के बोझ से दब गए थे, तथापि मनुष्य होने के नाते वह उस समादर पर, जो उन्हे इन जिम्मेदारियो के कारण मिला, अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होने अपने गत सैनिक-जीवन की निराशाओ को अपने मन से किसी प्रकार की कडवाहट पैदा नहीं करने दी, बल्कि इन निराशाओ के कारण जो कोई भी सताप कभी उनके हृदय मे पनपे थे, उन्होने उनको एक ही वार मे खत्म कर दिया। चिरकाल पहले तरुण वाशिंगटन ने सैली फेयरफेक्स को लिखा था कि मैं उत्सुकता-पूर्वक चाहूगा कि एडीसन के नाटक कैटो मे मर्सिया के सग जूबा का अभिनय करूँ। मर्सिया कैटो की लडकी थी और जूबा नूमीडिया का छोटा राजकुमार, जो कैटो के समर्थको मे से एक था। नाटक-सम्बन्धी वह स्वप्न विस्मृत भूतकाल का था। सैली फेयरफेक्स सन् १७७३ मे अपने पति के साथ सदा के लिए इगलैण्ड को प्रस्थान कर गई थी। उसी नाटक को मई, १७७८ मे वाशिंगटन के सदर-मुकाम, 'वैली फोर्ज' मे खेला गया। यद्यपि वाशिंगटन को इस प्रकार की कल्पनाए करने की आदत नही थी, हो सकता है कि उन्हे यह विचार आया हो कि उनके अपने आकार मे तरुण अर्द्ध विदेशी जूबा, पूर्णतया रोम के नागरिक और अभिस्वीकृति नेता, कैटो, के रूप मे पुन ढाला गया है।

जब वाशिंगटन ने बोस्टन के बाहर देश-भक्त सेना की कमान अपने हाथो मे ली, तो जुलाई, १७७५ का दिन उन्हे उस फासले की याद दिला रहा होगा जो उन्होने अपने जीवन मे इस वक्त तक तय कर लिया था। यह वह दिन था जिस दिन कि इक्कीस वर्ष पूर्व अपनी हार के परिणाम-स्वरूप उन्होने 'नेसैसिटी' दुर्ग फ्रासीसियो

को समर्पित किया था। उस समय तरुण कर्नल वाशिंगटन अपने से बडी सेना के घेरे मे फस गया था, इस समय प्रौढ वाशिंगटन स्वय बोस्टन का घेरा डाले हुए थे और उनके अधीन करीब-करीब पन्द्रह हजार मिलिसिया थी। बोस्टन के भीतर इससे आधी सख्या मे ब्रिटिश सेना थी, जो दो सप्ताह पूर्व लडाई मे एक सहस्र सैनिक खो चुकी थी। इन लोगो को ब्रीड्स हिल मे विजय तो मिली थी, पर उन्हे यह जीत महगी पडी। ब्रिटिश सेनापति, जनरल गेज, ने बीस वर्ष पूर्व ब्रैडाक की अभावी 'एडवान्स गार्ड' का नेतृत्व किया था। उस समय वाशिगटन सेनापति का छोटा अग-रक्षक था।

ये कुछ एक बाते थी जो वाशिंगटन को सान्त्वना दे रही थी, किन्तु उस ससय इतनी अधिक समस्याए थी कि उनके मुकाबले मे ये सान्त्वनाए शायद ही कोई हैसियत रखती हो। मर्था और वर्जी-निया की मनभाती जागीरो को छोडना उनके लिये हृदय-विदारक था। फिर कमान की समस्त चिंताए थी। न्यू इगलैण्ड के कई अफसर एव सैनिक वाशिगटन को सन्देह की दृष्टि से देखते थे और जैसा कि उनके अविवेकपूर्ण पत्र-व्यवहार से प्रकट होता है, वह भी उन्हे शक की नजरो से देखते थे। उन्होने शिकायत की कि 'व्यवस्था, नियमितता तथा अनुशासन' का अभाव है। उनका मत था कि अमेरिकियो की अव्यवस्था और असत्य व्यवहार के दुष्परिणाम तम्बुओ, कम्बलो, वर्दियो, दवाइयो, आहार-सामग्री, इत्यादि की रसद पर पड रहे है। स्टाफ, तोपखाने की सैनिक टुकडी आदि नही के बराबर थे। काग्रेस के प्रबन्ध किए बिना, वेतन का रुपया पैसा सुर-क्षित रखने के लिए उपयुक्त पेटी कहाँ से आ सकती थी ? काग्रेस ने निश्चय किया था कि सब राज्यो की सम्मिलित सेना बनाई जाए। क्या इस निश्चय के अनुसार सब राज्य अपने-अपने हिस्से की सेना देगे ? इस प्रश्न का उत्तर 'हा' की अपेक्षा 'न' मे अधिक था और जितने वर्ष लडाई चलती रही, स्थिति बराबर ऐसी ही बनी रही।

प्रश्न यह था कि जो भी सेना उपलब्ध थी, उससे सक्रिय रूप मे क्या काम लिया जाय ? न तो काग्रेस और न ही वाशिंगटन उस

परिस्थिति मे दूर तक चलने वाली योजनाए बना सकते थे। इस समय भी फोर्ट 'नैसेसिटी' के सदृश, शत्रु-सेनाए औपचारिक-रूप से युद्ध की स्थिति मे नही थी। अमेरिका के लोग जनरल गेज की अग्रेजी फौज को, जो बोस्टन मे थी 'मन्त्रालयिक सेना' कह कर पुकारते थे। उनकी युक्ति यह थी कि अमेरिका के भिन्न-भिन्न उपनिवेश ब्रिटिश सम्राट् के राज-भक्त होने के कारण एव उसकी स्वतन्त्र प्रजा के रूप मे अपने अधिकारो के लिये सघर्ष कर रहे है। सन् १७७५ के अन्तिम मासो मे यह अवस्था थी कि अमेरिका मे अतिमार्गी लोग, जो पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते थे, सख्या मे बहुत कम थे। बहुसख्यक अमरीकी आशा लगा कर बैठे थे कि ब्रिटेन के साथ किसी न किसी प्रकार का समझौता हो जायगा, यद्यपि इस समझौते के स्वरूप की कल्पना दु साध्य थी। इस बीच मे, साहसपूर्ण प्रतिरोध आवश्यक था। परन्तु इसके लिये क्या हो सकता था? काग्रेस ने कैनेडा के प्रान्तो को बात-चीत के लिए अस्थायी प्रस्ताव किये थे (किन्तु इनका कुछ परिणाम नही निकला था)। वाशिंगटन ने क्यूबैक लेने के लिए बैनीडिक्ट आरनल्ड के अधीन एक सैनिक अभियान भेजा, ताकि मामला वही ठण्डा हो जाए। उन्होने कई बार यह भी सुझाव दिया कि उसी साहस के साथ बोस्टन पर धावा बोल दिया जाये। परन्तु आरनल्ड का आक्रमण वीरता-पूर्ण होते हुए भी असफल रहा और इसके लिए वाशिंगटन के सदरे-मुकाम की युद्ध-समिति ने बोस्टन के हमले के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

यह कहा जाता है कि वाशिंगटन अपने अधीन अफसरो के मत को बहुत जल्दी स्वीकार कर लेते थे। यदि यह सत्य है, तो उनका अपने आप कोई कदम उठाने मे सकोच करना समझ मे आ सकता है, कारण कि सैनिक मामलो मे 'हम सबकी जानकारी सीमित और अल्प हुआ करती है।' चार्ल्स ली को भी इसके बावजूद कि वह प्रवाह-रूप मे बातचीत कर सकता था, युद्ध सम्बन्धी रचनाओ का क्रियात्मक अनुभव नही था। जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है, उन्होने आज तक सीमान्त क्षेत्रो की लडाइयो मे छोटे अधिकारी

के रूप मे भाग लिया था। मिली-जुली विशाल सेना का प्रबन्ध तो दूर की बात रही, उन्हे अश्वारोहियो की सेना के व्यूह-कौशल अथवा बहुत बडे पैमाने पर तोपखाने के प्रयोग से सीधा कोई परिचय नही था। अत उस समय तक जब तक उन्हे सैनिक मामलो मे कम वाकफियत थी, उनकी हिम्मत नही पडती थी कि वह केवल अपनी निर्णायक बुद्धि पर भरोसा करें। इसके अतिरिक्त वह युद्ध-समिति की बैठके बुलाने मे वास्तव मे उस कार्य-विधि की पालना कर रहे थे जो उस समय अन्य सब सेनाओ और सेनापतियो मे प्रचलित थी। दूसरी बात यह थी कि उन्हे अपने से अधिक अनुभव रखने वालो के साथ यथासम्भव चतुरता-पूर्वक व्यवहार करना लाजमी था। ये लोग थे जिन्हे इस बात पर रोष-सा था कि वाशिंगटन उनके ऊपर लादा गया है। आर्टीमस वार्ड के साथ विशेष रूप से यह बात थी। वह वाशिंगटन से न केवल पाच वर्ष बडा ही था, बल्कि उसने कर्नल की हैसियत मे फ्रासीसियो के विरुद्ध लडाइयों मे मिलिशिया मे सेवाए भी की थी। वह (वार्ड) यह महसूस करता था कि वह बोस्टन मे गेज का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकता है। इराइल पुटनम, जिसने बकर हिल की लड़ाई मे वह नाम पैदा किया था कि उसकी सफलता सम्बन्धी कहानिया हर एक की जबान पर थी, वाशिंगटन से चौदह साल आयु मे बडा था और उसने अपना जीवन विलक्षण रूप से विविधता-पूर्वक और साहसिक कामो मे बिताया था। इन कारणो से वाशिगटन महोदय के लिए वाछनीय था कि सावधानी से उन लोगो के साथ व्यवहार करे। चूकि उनके घर मे गुलाम नौकर चाकर थे, इसलिए न्यू इगलैण्ड वालो के लिए (जो दास-प्रथा के कट्टर विरोधी थे) वह दोहरी तरह से सन्देह के पात्र थे।

कई अन्य पहलुओ से भी यह उत्तम बात थी कि वाशिंगटन अपने अधीन सेनापतियो से मशविरा ले लिया करते थे। उन की इस बात के लिए आलोचना होती थी कि वह आवश्यकता से अधिक सतर्क रहते हैं, किन्तु वास्तव मे वह अपनी तरुणावस्था के दिनो की तरह ही अत्यधिक उग्र-गति से काम करने वाले थे। वह

अकर्मण्यता से नफरत करते थे। उन्हे अपनी इच्छा के विरुद्ध ही सन् १७७५-१७७६ की शरद् ऋतु मे युद्ध की प्रतीक्षा करनी पडी।

सन् १७७६ की बसन्त ऋतु मे, इतने गडबडझाले के बीच, कम से कम एक विषय धीरे-धीरे पहले से अधिक स्पष्ट होता चला गया—वह था अमेरिका की स्वतन्त्रता का विषय। स्वतन्त्रता की इच्छा द्रुतगति से तीव्र होती जा रही थी। लोगो को ऐसे प्रमाण भी मिले, जिनसे यह प्रकट होता था कि जार्ज तृतीय तथा उसका मन्त्रिमण्डल (लार्ड नार्थ, लार्ड जार्ज जर्मन, सैण्डविच के अर्ल तथा अन्य) विद्रोह को कुचलने पर तुले हुए है। इन प्रमाणो ने जलती पर तेल का काम किया। "हथियार ही अन्त मे सघर्ष का फैसला किया करते है। प्रार्थना को मानना न मानना, बादशाह के अख्तियार मे था और सयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने चुनौती को स्वीकार कर लिया है।" यह घोषणा थी जो टाम पेन ने अपनी 'कामन सैन्स' नाम की पुस्तिका मे की। इस कृति की भावनाओ को उपनिवेश-वासियो द्वारा, जिनमे जनरल वाशिंगटन भी शामिल थे, उत्साह-पूर्वक समर्थन मिला। पेन यदि कुछ वर्ष पूर्व इन विचारो को अमेरिका-जनता के सम्मुख रखते, तो उन्हे विद्रोह-पूर्ण और धर्म की निन्दा समझा जाता। सन् १७७६ के आरम्भिक मासो मे यह सुनकर लोगो के दिल को ठेस पहुची कि जार्ज तृतीय, श्रेष्ठतम बादशाह होना तो दूर की बात रही, ग्रेट ब्रिटन का केवल एक अत्याचारी 'शाही बनेला पशु' है। किन्तु यह सदमा बादशाह के प्रति वफादार लोगो को छोड, जो इस विवरण से घबरा उठे थे, अन्य अमरीकियो को मधुर लगा, क्योकि इससे वे सुखद परिणामो की आशा रखते थे। इन वफादार लोगो का उल्लेख निकोलस क्रैसवेल ने भी अपने पत्र मे किया था। यह अभागा अग्रेज युवक था जो उपनिवेशो मे सन् १७७४ मे आया था। उसके उल्लिखित शब्द—सग्निक एडनेर्फ—बादशाह के हितैषियो के लिए स्पष्ट सकेत थे। जिन लोगो का वर्णन क्रैसवेल ने क्रोधावेश मे 'स्लैबर' अर्थात् 'विद्रोही' कह कर किया था, उन्होने जान लिया कि जिन विश्वासो को वे ऊपरी ढंग

से मानते आए है, उन्हे पेन महोदय ने निश्चयपूर्वक उलटा दिया है।

पेन ने कहा—"सही अथवा तर्क-सगत बात पृथक्करण के पक्ष मे है। कत्ल किए गए लोगो का खून, प्रकृति की रोती हुई आवाज पुकार-पुकार कर कह रही है, 'यह अलग होने का समय है।' यहा तक कि जिस अन्तर पर भगवान् ने इगलैण्ड और अमेरिका को रखा है, वह इस बात का प्रबल और प्राकृतिक प्रमाण है कि वह दिव्य सत्ता कभी इन मे से किसी देश का दूसरे पर अधिकार नही चाहती थी।"

घटनाओ के चक्र के कारण पेन की प्रभावशाली वाणी पहले से भी अधिक हृदय-ग्राही बन गई। अमरीकी सेनाओ को जो क्यूबैक की चढाई मे असफलता मिली थी और जिसके कारण उन्हे कैनेडा से हटना पडा था, उसकी कसर ब्रिटिश धावे की असफलता से पूरी हो गई। समुद्र के रास्ते से चार्लसटन के विरुद्ध जनरल हैनरी क्लिटन द्वारा यह चढाई की गई थी। सबसे अधिक खुशी की बात यह हुई कि मार्च १७७६ मे बोस्टन को अग्रेजो के पजे से छुडा लिया गया। इससे पूर्व तोप-गोलो के अभाव मे वाशिगटन कुछ कर नही सके थे। इस कमी की पूर्ति एक सुयोग्य और सक्रिय युवक ने की, जिसका नाम जनरल हैनरी नैक्स था, जो व्यवसाय से बोस्टन का पुस्तक-बिक्रेता था। वह सरदी के मौसम मे थकावट से चकना-चूर करने वाली यात्रा करके तितालीस तोपो और सोलह शतघ्नि-काओ को ले आया। नौक्स उन्हे फोर्ट टिकनडेरोगा से, जहा यह कई मास पूर्व पकडी गई थी, खैंच कर लाया था। वाशिगटन के सैनिको ने, अन्धेरे की आड मे द्रुतगति से कार्य करते हुए, उन्हे डौरचैस्टर हाईट्स पर मिट्टी के पुश्ते के पीछे लगा दिया। इस स्थान से बोस्टन तथा बन्दरगाह के बहुत से भाग पर प्रभावशाली ढग से गोला बारी की जा सकती थी।

जनरल विलियम हो ने ( जो उस समय गेज के स्थान पर ब्रिटिश प्रधान सेना-पति नियुक्त हुआ था ) पहले-पहल डौरचैस्टर

हाईट्स पर धावा बोलने का विचार किया था। किन्तु बाद मे उस ने यह कदम उठाना उचित नही समझा। सम्भव है कि मूसलाधार वर्षा के कारण उसने यह निश्चय किया हो, क्योकि वर्षा मे बन्दूको के बेकार होने का डर था। यह भी सम्भव है कि उसे ब्रकर हिल की घटना स्मरण हो आई हो, जहा का सहार का दृश्य उसने बिल्कुल पास से देखा था। अमरीकी सेना के साहसिक कार्य का यह परिणाम हुआ कि बोस्टन अग्रेजो के लिए किसी प्रकार सुरक्षित अड्डा न रहा। इसलिए यथार्थत न हारते हुए भी, हो अमरीकी सेना के चातुर्य से परास्त हो गया। इस प्रकार हार खाकर उसने अपनी सेना वहा से निकाल कर जहाजो मे उतार दी। उसने अपने साथ एक हजार हताश राजभक्त भी लिए। जो भी सामान उससे विनष्ट हो सका, उसने उसका विध्वस किया और कुछ दिन और बन्दरगाह मे रुक कर, पूर्व दिशा की ओर नोवास्कोटिया स्थित हैलीफैक्स के लिए रवाना हो गया।

इस खबर के मिलते ही वाशिगटन को विस्मय हुआ। काग्रेस के अध्यक्ष, जान हैनकाक को उन्होने लिखा—'श्रीमन्! मुझे यह सूचना देते हुए बडी प्रसन्नता होती है कि गत रविवार दिनाक १७ को, प्रात ९ बजे ब्रिटेन की सरकारी सेना ने बोस्टन नगर खाली कर दिया था। इस समय सयुक्त राष्ट्र की सेनाए इसे अपने अधिकार मे किए हुए है। श्रीमन्! मै इस सुखद घटना पर आप को तथा काग्रेस को बधाई देता हू। विशेष रूप से इसलिए भी कि यह सारा कार्य इस ढग से सम्पादित हुआ कि बचे-खुचे बोस्टन-निवासियो की जाने भी बची और उनका माल-सामान खतरे मे नही पडा।' काग्रेस ने धन्यवाद का प्रस्ताव पास किया और उन्हे उपहार के रूप मे सोने का पदक मिला। समस्त सयुक्त राज्य मे वाशिगटन की प्रशसा के गीत गाए जाने लगे।

ग्रीष्म काल के बीच मे सिवाए सर गाई कार्लटन की सेना के कोई भी नियमित ब्रिटिश सेना अमेरिका के तेरह उपनिवेशो मे नहीं थी। उस समय कार्लटन कैनेडा से न्यूयार्क के उत्तरीय भाग

की ओर बढ रहा था। कांग्रेस खुश थी। उसे और खुशी होती, यदि उसे यह मालूम हो जाता कि फ्रासीसी प्रगट रूप से तटस्थ रहते हुए भी, उपनिवेशो को गोला-बारूद की सहायता देकर अपने पुराने शत्रु, ब्रिटेन, को क्षति पहुचाने की योजना बना रहे है। दूसरी तरफ बादशाह के प्रति वफादार लोग कुछ एक क्षेत्रो मे, विशेष रूप से दक्षिण मे, क्रियाशील थे। इससे प्रगट होता था कि अमरीकी काफी अनुपात मे अब भी अनुदार दल के हैं। यदि कट्टर रूप से अनुदार न भी हों, तो वाशिंगटन के शब्दो मे, 'वे लोग अभी तक समझौते के सुस्वादु आहार का उपभोग कर रहे थे।' इन परिस्थितियो मे यह अधिक उचित था कि सच्चे देश-भक्तो को प्रोत्साहित किया जाये और सशकित लोगो पर दबाव डाला जाये।

मई १७७६ मे वाशिंगटन ने निश्चय कर लिया कि उन्हे क्या करना है। कांग्रेस मे बहुसख्यक लोग उनसे सहमत थे। विनीत वाक्य-छल की आवश्यकता नही रही थी। 'सरकारी सेना' बादशाह की सेना थी। जार्ज तृतीय पर प्रमुख धूर्त होने का आरोप लगाया गया। भाडे की जर्मन सेना को, जिसका उल्लेख गलती से प्राय हेसियन समझ कर किया जाता रहा, वहा भेजने का दोष भी उसी पर लगा। करीब-करीब अन्य सब अपराधो के लिये, जिसकी कल्पना अमरीकी दिमाग ही कर सकते थे, बादशाह को दोषी ठहराया गया। थामस जैफर्सन जैसे उपजाऊ मस्तिष्क वाले लोग कई और अपराधो का नाम ले सकते थे, जैसा कि उसने स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र की शानदार भूमिका से आगे तथा अन्य धाराओ मे किया, जिसका प्रारूप उसने कुछ सहायता लेकर कांग्रेस के लिए बनाया था।

४ जुलाई, १७७६ को उस घोषणा-पत्र को अन्तिम रूप से स्वीकार किया गया। न्यूयार्क का प्रतिनिधि इस बैठक मे शामिल नही था। इस वक्त के बाद से अमेरिका के नेताओ के लिए किसी हालत मे भी कदम पीछे हटाना असम्भव था। उनका उद्देश्य पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। यदि उन्हे असफलता मिली, तो उनका

सर्वनाश समझिये। सम्भवत फासी के तख्ते पर लटका दिए जावें। पेन की प्रभावशाली लेखनी उनमे प्राण फूकती रही थी और अब जैफर्सन के लेख उनमे स्वतन्त्रता की भावना को भडका रहे थे। वाशिंगटन सरीखे नीरस सम्वाददाता भी वायुमण्डल से प्रेरणा पा रहे थे। उनके शब्दो मे, जब वे स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष का जिक्र करते, एक प्रकार की भव्यता हुआ करती थी। वाशिंगटन ने इसके बारे मे लिखते हुए अनेक बार इसे 'उदात्त हेतु' न्यायपूर्ण हेतु' कहा और यह भी कि 'मैं धार्मिक-रूप से इसे ऐसा मानता हू।' और 'इस कार्य मे भगवान् निश्चय से ही वीर और सतर्क पुरुषो की सहायता करेगा।'

किन्तु पाच मासो के अन्दर उनकी शब्दावलि मे अन्तर आ गया। उन्होने हिम्मत तो नही हारी, किन्तु अन्य अमरीकियो की तरह उनकी स्वतन्त्रता प्राप्ति की आशायें करीब-करीब जाती रही। उनकी सेना तितर-बितर होने लग रही थी। अपमान और विनाश मुह बाए खडे थे। १० दिसम्बर को अपने भाई लुड वाशिगटन को पत्र लिखते हुए उन्होने यह स्वीकार किया—'अब हमारा एक ही सहारा है और वह है शीघ्र नई सेना की भर्ती। यदि यह न हो सका, तो मेरा विचार है कि सब खेल खत्म हो जायेगा।'

'खेल खत्म हो जायेगा—' उनका इतना प्रिय वाक्याश था कि उसे बार-बार उन्होने अपनी अन्य चिट्ठियो मे प्रयुक्त किया। इसी प्रकार ही वह 'कठिनाइयो का चुनाव' वाक्याश का प्रयोग अनेक बार करते थे। उन्होने १८ दिसम्बर को अपने भाई जान आगस्टीन को पत्र मे लिखा—'तुम सोच नही सकते कि मेरी स्थिति कितने गोरख-धन्धे मे फसी है। मेरा विश्वास है कि किसी भी मनुष्य ने जिसके पास उलझनो से निकलने के लिए कम साधन हैं, कभी इतनी अधिक कठिनाइयो का चुनाव नही किया होगा।'

जुलाई और दिसम्बर के बीच मे जो घटनाये घटी, उन्हे सरलतापूर्वक वणन किया जा सकता है। हो बोस्टन मे तो वाशिंगटन की चातुर्यपूर्ण गतिविधियो का शिकार हुआ था, किन्तु वह हर

हालत मे बोस्टन छोडना चाहता था और लडाई के अधिक केन्द्रीय अड्डे पर अपना मुख्यालय ले जाना चाहता था। यदि उसमे आक्रमण करने की सामर्थ्य होती, तो वह जल-पोतो द्वारा बोस्टन से सीधा प्रस्थान करके न्यूयार्क अथवा फिलेडैल्फिया पर हमला कर लेता। परिस्थिति ऐसी न होने से वह कुमक की प्रतीक्षा करने के लिए हैलीफैक्स की तरफ जा पहुँचा। यह वायदा हुआ था कि कुमक शीघ्र पहुँच जायगी। यह कुमक सर्व प्रथम १२ जुलाई को न्यूयार्क पहुँची। कुमक मे एक समुद्री बेडा था, जिसका नेतृत्व उसके बडे भाई एडमिरल लार्ड हो के हाथ मे था। जनरल हो बिल्कुल उसी दिन—अर्थात् २ जुलाई को—स्ट्रेट द्वीप के तट पर पहुँचा, जिस रोज कि काग्रेस ने स्वतन्त्रता सम्बन्धी अन्तिम निश्चय किया।

इसके बाद मे आने वाले सप्ताहो मे ब्रिटिश, जर्मन और वफादार सैनिको की टुकडियो के (जिनमे चार्ल्सटन से लौटे हुए क्लिटन अभियान के सैनिक भी थे) जहाजो के जहाज स्टेटेन द्वीप पर उतरते रहे। यह क्रम तब तक जारी रहा, जब तक कि हो के पास मुठ-भेड के लिए अगस्त के मध्य तक तीस हजार सैनिक नही हो गए। ये सैनिक जहा अच्छी वर्दिया पहने थे, वहाँ शस्त्रास्त्रो से भी सुसज्जित थे।

वाशिंगटन अप्रैल के महीने से ही न्यूयार्क मे थे। वह शत्रु की आक्रमण-योजना के अमल मे आने से पूर्व ही वहाँ पहुँच गए थे। (उन्होने ३१ मई को अपने भाई जान आगस्टीन को पत्र द्वारा सूचित किया—'हम न्यूयार्क मे गर्मी की ऋतु मे रक्तपात की आशा रख रहे हैं।)' यह सब सोचते हुए भी उनमे इतनी सामर्थ्य नही थी कि वह जहाजो से उतर रही फौजो को रोक सके। इस (आक्रमण) की प्रक्रिया बिल्कुल निश्चित और पक्की थी। ब्रिटिश लोगो की सामुद्रीसत्ता सर्वोच्च थी और अब वे भूमि पर भी सत्ता कायम करना चाहते थे। उनकी तुलना मे अमरीकी जल-सेना तुच्छ थी—केवल न होने के बराबर—लूट-मार करने वाली सेना। इस के अलावा ब्रिटिश सेना वाशिंगटन की सेना से कई हजार ज्यादा थी। फिर,

वाशिंगटन की सेना का एक भाग मिलिशिया का था, जिसे अल्पकाल के लिए भर्ती किया गया था और जिस पर वह बहुत कम भरोसा रखते थे। शेष सेना को, जो सयुक्त-राज्य अमेरिका की नाभि-बिन्दु थी, दिसम्बर के अन्त तक ही भर्ती किया जा सका था।

ऐसी परिस्थितियो के होते हुए भी वाशिंगटन के आदेश यह प्रगट करते है कि उन्हे अपनी सफलता पर यथार्थ रूप से विश्वास था। सम्भव है कि वह जरूरत से ज्यादा अपने ऊपर विश्वास रख रहे हो। यह भी हो सकता है कि वह युद्ध करने के लिए अत्यन्त समुत्सुक हो। कारण यह कि उन्हे सेना का नेतृत्व करते हुए एक वर्ष बीत चुका था। इस सारे वर्ष मे केवल एक ही अवसर युद्ध-सम्बन्धी सम्मान प्राप्त करने का निकला था, जब कि डौर चैस्टर हाईट्स पर दिखावे की लडाई हुई थी। जो भी कारण हो, यह सच है कि उन्हे कोई प्रशसनीय कार्य दिखाने का मौका नही मिला था। उनका प्रथम प्रगतिरोध अगस्त के अन्तिम भाग मे हुआ, जबकि हो ने आखिरकार लौग द्वीप के सिरे पर अपनी बीस हजार सर्वश्रेष्ट सेना उतारी और खामोशी को तोडा। उसका स्पष्ट उद्देश्य यह था कि वह उत्तर की ओर बढ कर 'ईस्ट' नदी के साथ-साथ मनहट्टन को पार कर जाये। ब्रुकलिन हाईट्स पर अमरीकी दृढ-किलेबन्दी के कारण रास्ता बन्द था। किन्तु लौंग द्वीप मे ठहरे हुए अमरीकी सैनिक (जो जनरल पुटनम के अधीन थे) किलेबन्दियो के बाहर ऊचे भूमितल पर एकत्रित किए गए थे। गम्भीर भूल के कारण, जिसे हो ने मालूम कर लिया, अमरीकी सेना की बायी तरफ अरक्षित रह गई थी। इसलिए अमरीकी सेना के बाए और बीच वाले भाग में लडने के लिए दो फौजी दस्ते भेजने के बाद, हो ने बायी तरफ स्वय ब्रिटिश मुख्य दस्ते के द्वारा हमला कर दिया। उसके दो अन्य दस्तो को यद्यपि, कडा युद्ध करना पडा, पर उन्हे थोडी-बहुत सफलता जरूर मिली। हमला करते हुए हो अधिक दर्शनीय ढग से आगे बढ़ा, जिसके परिणाम-स्वरूप दो हजार अमरीकी सैनिक हताहत हुए (इनमे से आधे बन्दी बनाए गए, जिनमें न्यू हैम्पशायर के मेजर

जनरल जान सुलीवन भी थे) । शेष सेना ईस्ट नदी के तट पर घिर जाने से उसकी दया पर निर्भर थी । अमरीकी सेना की इस त्रुटि-पूर्ण स्थिति के लिए वाशिंगटन को भी कुछ हद तक दोषी ठहराया जा सकता है । उन्होने दूसरी बार फिर भूल की । इन बचे-खुचे सैनिको को पीछे हटाने की बजाए उन्होने आगे बढाया ताकि ब्रुक-लिन पर लडती हुई अमरीकी सेना को मजबूत किया जाय ।

उनका भाग्य अच्छा था कि जनरल हो ने और गहरी चोट नही की । फलत वाशिंगटन अपने आपको शीघ्रतापूर्वक सम्भालने के काबिल हो गये । उन्होने ब्रुकलिन पक्तियो को खाली करके अन्धेरे की आड मे और तूफान से लाभ उठाते हुए अपने आपको बदनामी से बचा लिया । उनकी सेना अब मैनहटन पर थी । वहाँ भी इसके घिर जाने का खतरा था । कुछ-कुछ सकोच के बाद वाशिंगटन ने न्यूयार्क नगर को खाली कर देने का निश्चय कर लिया ।

सितम्बर के मध्य मे उनकी फटे-हाल सैनिक टुकडिया हरलैम हाईट्स पर मैनहैटन के पार ऊपरी भाग की पक्ति की रक्षा कर रही थी । हो आराम से न्यूयार्क मे पडाव डाले हुए था । यह बिल्ली और चूहे का खेल था । यदि वाशिंगटन घबराए हुए चूहे की मानिन्द थे, तो हो नीद मे मस्त बिल्ली साबित हुआ । जब-जब बिल्ली हिलती-डुलती थी, चूहा धीरे-धीरे अपना स्थान छोड कर दूर चला जाता था—मैनहट्टन के उत्तर मे वाईट प्लेन्ज की तरफ और फिर नार्थ कैसल की ओर । बाद की उलझी हुई मुठ-भेडो मे वाशिंगटन ने अपनी सेना का एक भाग चार्ल्स ली की कमान मे छोड दिया । शेष सेना को साथ लेकर वह न्यूजर्सी की ओर बढे । यहाँ आकर उन्होने निराशा और बेबसी की हालत मे देखा कि अग्रेजो ने तीन हजार अमरीकी देश-भक्तो को बन्दी बना लिया है । ये वे सैनिक थे, जिन्हे वाशिंगटन ने फोर्ट वाशिंगटन की रक्षा के लिए मैनहट्टन के उत्तरी सिरे पर छोडा था । इस समय अन्धकार-पूर्ण नवम्बर के मध्य मे सिवाए अपमान-जनक निवर्तन के उनके लिए और कोई चारा न था । हो के सामरिक सेनापति, लार्ड कार्नवालिस ने न्यूजरसी मे से होकर वाशिंगटन का दक्षिण मे पीछा

किया । इस समय भी वह चार्ल्स ली से अलग थे । केवल एक ही उज्ज्वल पहलू यह था कि स्कूलर, होरेशो गेट्स और बैनी डिक्ट आर्नल्ड की सेनाए यथापूर्व कायम थीं और इनके कारण कार्लेटन को हौसला नही हुआ कि वह न्यूयार्क को जाने वाले चैम्पलेन-हड्सन मार्ग पर आक्रमण करने की चेष्टा करे ।

अन्य स्थानो मे निरुत्साहित करने वाले हालात थे । चार्ल्स ली किसी न किसी तरह अपनी फौजो को वापस न्यूजरसी मे बचा कर ले आया । इससे वाशिंगटन इस योग्य हो गये कि वह एलबैनी की उत्तरीय सेना मे से बारह सौ आदमी बुला सकें । अन्यथा हालात ऐसे थे कि दिसम्बर के आरम्भ मे ही खेल लगभग समाप्त था । वाशिंगटन डैलावेयर की दूसरी ओर वापिस पहुँचे । ब्रिटिश सेना को जो काफी सख्या मे फिलेडैल्फिया पर चढाई करने का इरादा कर रही थी, यदि किसी चीज ने आगे बढने से रोका तो वह था किश्तियो का अभाव । वाशिंगटन ने अपनी दूरदर्शिता से उन्हे नदी मे से निकलवा कर पहले से ही इकट्ठा कर लिया था। बीच के उपनिवेशो मे नैतिक स्तर स्पष्टतया नीचा था और उस समय भी उसमे किसी तरह सुधार सुधार नही हुआ था । यही कारण था कि जनरल इसराइल पुटनम और थामिस मिफलिन के परामर्श पर अमल करते हुए काग्रेस ने फिलेडैल्फिया से हट कर बाल्टीमोर को अपना अधिवेशन स्थान बनाया । चार्ल्स ली को जबकि वह लापरवाही से अभीक्षण कर रहा था, एक ब्रिटिश परिरक्षी दल ने बन्दी बना लिया । उस समय मिलिशिया के सैनिक खासी तादाद मे छोड कर भाग रहे थे और सयुक्त-राज्य की सेना मे भर्ती हुए सैनिको की अवधि समाप्त होने के निकट थी ।

किन्तु किसी न किसी तरह सकट टल ही गया । हो ने शरत् काल तक के लिए बडे पैमाने पर होने वाली मुठभेडे रोकी और रोडद्वीप स्थित न्यूपोर्ट पर कब्जा करने के लिए क्लिटन के आधीन छ हजार सैनिक भेजे । कुछ सेना-टुकडियो को उपहार का लालच देकर दुबारा भर्ती होने के लिए प्रेरित किया गया । दो

हजार मिलिशिया के सैनिको को फिलेडैल्फिया से आगे पहुचाया गया।

इन से भी अधिक एक और महत्व की बात हुई। क्रिसमस की रात को वाशिंगटन ने बडे चातुर्य से ट्रेंटन मे पडी शत्रु-सेना पर अचानक हमला कर दिया। यह कार्य परिस्थिति के अनुकूल था। उनकी योजना यह थी कि वह अपनी सेना की तीन टुकडिया लेकर, बर्फ से आधी जमी हुई डेलावेयर नदी को पार करे और इस तरह अगले किनारे पर पहुच कर ब्रिटिश चौकियो पर अचानक धावा बोल दें। १७५४ मे भी एक बार उन्होने इस प्रकार (फ्रासीसियो) के जुमनविले-कैम्प पर उषा-काल मे अचानक हमला किया था। यह उसी प्रकार का, किन्तु उससे अधिक व्यापक हमला था, जो पहले हमले की याद ताजा कर रहा था। योजना प्रशसनीय ढग से सोची गई थी और यद्यपि तीन टुकडियो मे से दो नदी को पार नही कर सकी, वाशिंगटन के नेतृत्व मे मुख्य-सेना-टुकडी नदी के दूसरे किनारे पहुच गई। थोडी देर के सघर्ष के बाद पन्द्रह सौ हेसियन सैनिको ने, जो ट्रैन्टन मे थे, हथियार डाल दिये। इनमे से पाच सौ किसी न किसी तरह चुपचाप निकल भागे। हेसियनो का युद्ध निस्सन्देह निम्नस्तर का था। कारण यह कि क्रिसमस समारोह की खुशी मे वे खूब शराब पीकर मद-मस्त हो चुके थे। तो भी, इस मौके पर वाशिंगटन ने अचानक आक्रमण करके उच्च कोटि की साहसिकता प्रदर्शित की। इससे एक सप्ताह बाद के हमले मे भी दिखाई गई उनकी हिम्मत प्रशसा के योग्य थी। दुबारा डैलावेयर को पार करने के बाद कार्नवालिस के जाल मे वह फसने को ही थे कि उन्होने अपने आप को त्वरित गति से छुडा लिया। हटते हुए उन्हे जो लडाई मार्ग मे लडनी पडी, उस मे सफलता ने उनके कदम चूमे।

इन साहसिक कामो से जो प्रभाव देश-भक्त अमरीकियो के नैतिक-स्तर पर अथवा वाशिंगटन की अपनी कीर्ति पर पडा, उसका महत्व बहुत बडा है। १७ जनवरी, १७७७ को निकोलस क्रैसवेल

वर्जीनिया मे लीजबर्ग मे था। एक परिचित व्यक्ति से बात करने के बाद क्रैसवेल ने अपने पाक्षिक पत्र मे लिखा —

'छ सप्ताह पूर्व यह आदमी अमरीकियो की दु खपूर्ण स्थिति पर आसू बहा रहा था और उनके अतिशय प्रेम के पात्र, जनरल (वाशिंगटन) की दुर्दशा पर यह मानते हुए दयार्द्र हो रहा था कि उसकी सैनिक मामलो मे निपुणता और अनुभव के अभाव के कारण ही अमेरिका-वासी विनाश के द्वार पर पहुचे है। सक्षेप मे (उसके मत मे) सब कुछ लुट गया था, सब कुछ नष्ट हो चुका था। किन्तु अब पासा पलट गया है और वाशिंगटन का नाम आकाश तक ऊचा उठ चुका है। यह मनहूस हेसियन सैनिको की वजह से है। उस धूर्त का बुरा हो जिस ने उन्हे यहा भेजने की बात पहले पहल सोची।'

प्रिस्टन की घटना के बाद वाशिंगटन शरद् मे अपने मौरिस टाऊन के मुख्यालय मे ही चुपचाप जमे रहे। हो ने डेलावेयर की चौकियो से अपनी सेनाओ को वापस बुला लिया और उन्हे न्यू ब्रुन्सविक मे केन्द्रित कर दिया। दोनो पक्षो के लिए यह समय अपनी-अपनी शक्ति को जाचने का था। क्यो न हम भी इन्हे जाचने की चेष्टा करे और सबसे प्रथम अमेरिकी स्थिति को देखे।

## समस्याए और सम्भावनाए

वाशिंगटन के बहुत से जीवनी-लेखको ने कुछ-कुछ प्रतिबन्ध के साथ अथवा बिना किसी प्रतिबन्ध के, उनकी प्रधान-सेनापति के नाते प्रशसा की है। वस्तुत उन्होने न्यूयार्क के आस-पास के अभियानो मे निर्णय सम्बन्धी भयकर भूलें की। युद्ध के बाद की स्थिति के दिनो मे ब्रिटिश टिप्पणी यह थी कि "जनरल हो के अलावा दुनिया का कोई और जनरल होता, तो वह वाशिंगटन को अवश्य परास्त कर लेता, और यदि जनरल वाशिंगटन के अलावा कोई और जनरल होता, तो वह हो को हरा देता।" यह ठीक है कि १७७६ मे जो सेना वाशिंगटन के अधीन थी, उससे ब्रिटिश सेना को शिकस्त देने की कोई सम्भावना नही थी, किन्तु उनसे

भयकर भूले हुई । ब्रुकलिन हाईट्स पर उन्होने यह गलती की कि और कुमक भेज कर हार को पक्का कर लिया । यदि कोई उग्रगति शत्रु होता, तो उन्हे कुछ और सोचने का मौका ही न देता (बल्कि एक दम हमला कर देता) । उनकी बाद की गतिविधिया, यद्यपि आतक प्रगट नही करती थी, किन्तु वे अनिश्चित और अकुशल थी। वाशिगटन-दुर्ग का हाथो से निकल जाना अथवा उसके अन्दर की बहुत सी सेना तथा मूल्यवान गोला-बारूद और रसद का शत्रु के कब्जे मे पहुच जाना, किसी अश तक उनके अपने दोष के कारण ही था ।

इसके अतिरिक्त वह अपनी भूलो को स्वीकार करने से हिच-किचाते थे । 'न्यायोचित' और 'मेरी राय मे न्यायोचित' दोनो को विभाजित करने वाली रेखा सदा बहुत पतली हुआ करती है । यद्यपि वाशिगटन ने वर्जीनिया के कर्नल होने के काल से अब तक काफी प्रौढता प्राप्त कर ली थी, उनमे इस समय भी इन दोनो को गलती से एक चीज समझने की प्रवृत्ति थी । जब कोई उन्हे आलो-चना का विषय बनाता या उनके ऐसा बनने की सम्भावना होती, तो उन्हे बहुत ही दुःख होता था । सन् १७७६ और १७७७ मे जो उन्होने पत्र लिखे, उनमे उन्होने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि उन्हे न्यायोचित आलोचना पर कभी आपत्ति नही हुई, किन्तु, चूकि केवल वही और उनके नजदीकी सहयोगी ही उनकी, 'कठिनाइयो के चुनाव' से पूर्णतया परिचित थे, अत कोई भी आलोचना कैसे न्यायोचित हो सकती थी ? अपनी प्रतीक 'प्रतिष्ठा' की तीव्र चिन्ता के कारण वह अब भी इस बात के लिए तैयार रहते थे कि आलोचना का भार दूसरो के सिर पर डाला जाय । इस प्रकार उन्होने फोर्ट वाशिगटन के समर्पण का विवरण देते हुए अपने वफादार, जनरल नेथानील ग्रीन, के साथ अन्याय किया । एक बात और । काग्रेस के कारण जो उन्हे कष्ट होते थे, उन पर अत्यधिक बल देने की प्रवृत्ति उनमे थी ।

सैनिक दृष्टि से वाशिगटन के लिए अभी बहुत कुछ सीखना

बाकी था। स्वभाव के कारण भी उनमे खामिया थी। किन्तु उनमे सीखने की योग्यता थी और सारा हिसाब-किताब करने पर (इस परिणाम पर हम पहुचते है कि) उनका स्वभाव उन्हे सौपे गये कार्य के अत्यन्त अनुरूप था। उनकी आरम्भिक भूलो मे ही हम उनकी अन्तिम जीतो के बीज देख सकते है। क्योकि वह योद्धा थे, इसलिए उनकी भूले कायरता के कारण नही थी। यदि यह बात न होती, तो अन्त मे जाकर परिणाम घातक निकलते। उन्होने वास्तव मे भूले इसलिये की कि उन्हे युद्ध से प्रेम था। अमेरिका की न्यूनताओ के कारण उस समय युद्ध-सम्बन्धी जो आवश्यकता थी, उसे मानकर चलना उनके लिए कडुवा घूट था। यह आवश्यकता थी बडे पैमाने पर मुठभेड न होने देना। किन्तु उन्होने धीरे-धीरे इस सच्चाई को अनुभव किया। उन्होने सितम्बर, १७७६ मे काग्रेस को लिखा कि 'हमारे पक्ष की ओर से युद्ध रक्षात्मक ही होना चाहिए।' इससे ज्ञात होता है कि उन्होने अपने आपको यथार्थ परिस्थितियो के अनुरूप बना लिया। इसके बाद से उनका कार्य असुविधा-जनक, यहा तक कि गौरव-हीन भी रहा, किन्तु जो भी हो, उन पर यह भी स्पष्ट होता जा रहा था कि उन्हे जीवित रहना ही चाहिए और इसके साथ सेना को भी उस समय तक बनाए रखना चाहिए जब तक कि शत्रु सघर्ष से तग नही आ जाता। जो व्यक्ति वर्जीनिया मे अपनी भूमि के दावो के सिलसिले मे पन्द्रह साल दृढता-पूर्वक अडा रहा, उससे भला यह आशा कब हो सकती थी कि वह कार्य को बीच मे छोड देगा, जब कि उससे बहुत बडा भू-भाग खतरे मे था। यही कारण था कि उन्होने ट्रैन्टन मे क्यो अचानक सब बाधाओ की अवज्ञा की। वस्तुत वह इससे भी अधिक कडी चोट की लालसा रखते थे। और प्रिंस्टन आक्रमण के कारण उन्होने विनाश ही तो निकट ला दिया था! किन्तु जिस तरकीब से वह प्रिंस्टन मे कार्नवालिस की सेना के पजे से छूट कर निकले थे, उस से प्रकट होता है कि वाशिगटन ने किस प्रकार गोरिल्ला जनरल की कार्य-प्रणाली को समझना आरम्भ कर दिया था। उन्होने

'कैम्प-फायर' जलाई और तब उसे जलता हुआ छोड कर अन्धेरे मे सेना के साथ चुपचाप खिसक गये ।

हम पहले कह आये हैं कि वह कभी-कभी काग्रेस के व्यवहार की शिकायत किया करते थे । किन्तु इसके भी कारण थे । काग्रेस की कार्यविधिया प्राय दीर्घ समय ले लेती थी, और न सिर्फ अपर्याप्त ही होती थी, बल्कि यहा तक कि मूर्खता-पूर्ण भी होती थी । कुछ एक प्रतिनिधि साधारण कोटि के लोग थे और जैसे-जैसे युद्ध आगे बढा, गुण-सम्बन्धी स्तर और नीचे चला गया । काग्रेस चाहती, तो बजाए भाति-भाति की अलग-अलग राज्यो की सेना तथा मिलिशिया के, जिन्हे मिला कर देश-भक्त सेना का निर्माण हुआ था, एक स्थायी सेना बना सकती थी और उसे बनानी भी चाहिए थी । किन्तु उसकी अपनी कठिनाइया ऐसी थी, जिन्हे दूर करना बहुत मुश्किल था और वाशिंगटन को उसका अहसास नही हो सकता था । युद्ध बडे खर्चे की चीज थी । सयुक्त राज्य-सिक्के का दर इतना नीचे गिर गया था कि न्यूयार्क के एक बादशाह के प्रति वफादार पत्र ने हँसी-मजाक से कुछ मात्रा मे कागज की मुद्रा के लिए विज्ञापन निकाला । यह विज्ञापन एक अग्रेज सज्जन की ओर से था, जो इसे दीवार ढकने के लिए प्रयोग मे लाना चाहता था । जिस प्रकार वाशिंगटन के लिए यह जिम्मेदारिया नई थी, उसी प्रकार काग्रेस के लिए भी तो थी ? इनके अलावा काग्रेस की निजी व्यस्तताए भी थी—उदाहरण के लिए विदेशो से पत्र-व्यवहार करना, इत्यादि । वाशिंगटन का इससे कोई सम्बन्ध नही था ।

असल बात यह है कि काग्रेस वाशिंगटन के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करती थी—कम से कम उस व्यवहार से कहीं बढकर जितना कि उसके कुछ जीवनी-लेखको ने मानने की अपेक्षा की है । वाशिंगटन के साथ काग्रेस के सम्बन्ध ईमानदारी और शिष्टता पर आधारित थे और इसके बहुत से सदस्य उनके व्यक्तिगत रूप से मित्र थे । हाँ, उन मामलो मे जहाँ उनके और काग्रेस के अधिकारो मे निश्चित रूप से भेद नही हो सकता था, वहाँ आपसी सघर्ष होना

अनिवार्य ही था। यदि वाशिंगटन कही अधिक अभिमानी प्रधान-सेनापति होते, तो सम्भवत भीषण मत-भेद हो जाते। किन्तु सामान्यतया वह काग्रेस का विश्वास और सम्मान करते थे और काग्रेस भी— हमे इस पर बल देने की आवश्यकता है—उनका एतबार और इज्जत करती थी। यदि ऐसी बात न होती, तो हम, उस क्षण की घबराहट की गुजाइश छोडते हुए भी, काग्रेस की दिसम्बर १७७६ की असाधारण चेष्टा का समाधान किस प्रकार कर सकते है ? काग्रेस ने उस समय अनिश्चित काल के लिये, जो बाद मे छ महीने तक रहा, जार्ज वाशिगटन को, जहाँ तक सेना की भर्ती और सधारण का प्रश्न है, एक-शास्तृक सत्ता प्रदान की।

वास्तव मे उस समय सर्वसाधारण रूप से उनका वर्णन 'एक-शास्ता' के रूप मे किया जाता था, जो विरोध-प्रदर्शक अर्थों मे नही था। कई लोग उन्हे औलीवर क्रौमवेल के उदाहरण को मन मे रखते हुए अथवा न रखते हुए भी 'श्रीपति-रक्षक' कहकर पुकारते थे।

अत काग्रेस और वाशिंगटन की अपनी-अपनी समस्याए थी। इसी प्रकार ब्रिटिन लोगो की भी निजी समस्याए थी। अपने देश मे उनकी वफादारिया बटी हुई थी। और इस कारण नीतियो मे मत-भेद था। ससद् मे तथा अन्य स्थानो मे जार्ज तृतीय तथा उसके 'टोरी' सलाहकारो के प्रति निश्चित विरोध-भावना थी। बादशाह की असदिग्ध धारणा थी कि उपनिवेश उसके साम्राज्य मे पुनः शामिल किये जाये। यदि युक्तियुक्त बातचीत से यह सम्भव न हो, तो बलात् ही उन्हे मिलाया जाए, अर्थात् मखमल के दस्ताने मे लोहे का हाथ हो। किन्तु जैसे-जैसे धीमी चाल से लडाई चलती रही, उन्हे ऐसा लगने लगा कि उसका बाहरी रूप बदलना चाहिये। अब ब्रिटिश लोगो ने जो चीज देनी चाही, वह था कवच से ढका हुआ मुक्का और उसके अन्दर कोमल हाथ। वे सैनिक शक्ति और समुद्री फौजो मे सर्वोच्च थे, किन्तु लगता था कि या तो वे इसे निश्चय-बुद्धि से प्रयोग मे लाने के अयोग्य है और या अनिच्छुक। जनरल गेज और उसके उत्तराधिकारियो को जहाँ कोमल-हृदय हितै-

धियो के रूप मे चित्रित करना गलत है, वहाँ यह भी सही नही कि वे लोग (अथवा बिचारा, विषादयुक्त, अन्त करणानुयायी जार्ज द्वितीय) अति उद्धत राक्षस थे, जैसा कि अमरीकी देशभक्तो के प्रचार मे उन्हे वर्णित किया जाता था। उनकी मूलभूत भूल यह थी कि वे अमेरिका उपनिवेश-वासियो की गुप्त रूप से प्रशसा करने की बजाय उन्हे घृणा से देखते थे। लार्ड सैण्डविच ने एक बार उन पर व्यग्य कसते हुए घोषणा की थी कि अमेरिका-निवासी "अपक्व, अननुशासित और कायर' है। इस घोषणा का खूब प्रचार किया गया। गेज का बकर हिल के स्थान पर आमने-सामने होकर आक्रमण करना यह प्रगट करता था कि वह भी सैण्डविच से सहमत है। हो सकता है कि बाद मे लडाई की समाप्ति पर उसने अपना पहला मत बदल लिया हो। यद्यपि सर विलियम हो (जिसे लौंग द्वीप की समाप्ति पर 'सर' की उपाधि मिली थी) पर इतना गहरा रग नही चढा था, किन्तु १७७६ मे विविध सकार्यो के सचालन के समय उसके मन मे अमरीकियो के प्रति किसी हद तक घृणा की भावना जरूर थी।

परन्तु सिद्धान्तो को सामने रखते हुए उसकी हिचकिचाहटो का अर्थ किसी हद तक समझ मे आ सकता है। सम्भव है कि हम इन तथ्यो की उपेक्षा न करे कि गेज की पत्नी अमेरिका की रहने वाली थी, क्लिटन का पिता न्यूयार्क का गवर्नर रह चुका था और हो का बडा भाई (जो फ्रासीसियो के साथ लडता हुआ १७५८ मे टिकिनडरोगा मे मारा गया था) उपनिवेशो मे वीर पुरुष माना जाता रहा था।

किन्तु हम अग्रेजो के प्रयासो मे घातक अनिश्चितता पाने के कारण उसकी उपेक्षा नही कर सकते। यह अनिश्चितता, सक्षेप मे, इन दो भाइयो की स्थिति मे स्पष्ट पाई जाती है। ये दोनो भाई जहाँ राजविद्रोहियो के साथ युद्ध करने के लिए सब प्रकार के विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रो के साथ न्यूयार्क मे आए थे, वहाँ उन्हे आते हुए सन्धि-आयुक्तो का दायित्व भी सौपा गया था। जार्ज तृतीय ने

उनको सरकारी तौर पर यह अधिकार दिया था कि वे 'झगडे के निपटारे' के बारे मे भी चर्चा करे। चुनाचे जब जनरल हो ने लौग द्वीप पर कब्जा कर लिया, तो उसने आगे के सकार्यो मे इसलिए विलम्ब कर दिया, ताकि शत्रु के साथ सन्धि की बातचीत की जाय। वह और एडमिरल हो दुबारा १७७८ मे सन्धि-आयुक्त के रूप मे नियुक्त किए जाने थे जबकि युद्ध के सचालन का भार भी उन्ही पर था। किन्तु उनकी जीते बहुत हल्की थी और सन्धि की शर्तें अत्यधिक सख्त।

इस खराबी का किसी अश तक यह भी कारण था कि सैनिक दृष्टि-कोण से उनमे से कोई प्रतिभावान नही था। उस समय ब्रिटेन के पास ब्लैक जैसा जल-सेनापति तो था, किन्तु नैलसन अभी पैदा होना था। मार्लबोरो तो था, किन्तु अभी इगलैण्ड ने विलिगटन को जन्म देना था। लार्ड हो, ग्रेव्ज, रौडने भी नैलसन नही हो सकते थे। न ही गैज, न 'बिल्ली' हो, न क्लिटन और न ही 'जटलमैन जौली' बरगोयने कभी विलिगटन हो सकते थे। इसका यह अर्थ नही कि वे सर्वथा अयोग्य थे। हम लार्ड जाज जर्मेन को भी, जो उपनिवेशो का राज्य-मन्त्री था और लन्दन से युद्ध का सचालन कर रहा था, धूर्त और मूर्ख नही कह सकते है—जैसा कि कुछ एक टीका-टिप्पणी करने वालो ने उसके बारे मे बलपूर्वक कहा है। ब्रिटेन के समस्त रण-क्षेत्र मे लडने वाले सेना-पति सीमित रूप से उत्तम योद्धा थे। वे साहसी ढग से काम करने वाले और योरूपीय युद्ध-कला मे कुशल थे। कार्नवालिस ने, जो उनमे सर्वश्रेष्ठ था बाद मे ससार के दूसरे भागो मे जाकर महान् सफलता प्राप्त की। इन योद्धाओ का दुर्भाग्य यह था कि वे महान योद्धा नही थे। उनमे ग्राह्यता का अभाव नही था, वस्तुत वे सबके सब अपनी समस्याओ को स्पष्ट रूप से समझते थे। किसी प्राचीन परियो की कहानी के सदृश ही उन्हे लडाई को एक ही बार मे समाप्त करने के लिए तीन अवसरो की प्रत्याभूति दी गई थी। पहला अवसर सुनहला था और अन्य दोनो उत्तरोत्तर अधिक मटमैले। यह पहला अवसर जून १७७५ मे चार्ल्स टाऊन प्रायद्वीप

मे गेज को मिला था। यदि वह ब्रीड्स हिल पर बुद्धिपूर्वक आक्रमण करता और दूसरा मार्ग पकडने की जगह अपने इस अवसर का लाभ उठाते हुए शत्रु की सेना का पीछा करता, तो वाशिंगटन के वहा पहुँचने से पूर्व ही वह अर्टेमस वार्ड की नई-नई भर्ती की गई सेना को नष्टभ्रष्ट कर देता। हो को लौग द्वीप का और उसके बाद भी दूसरा अवसर प्राप्त हुआ। यदि वह ब्रुकलिन हाइट्स पर वाशिगटन की प्रतिरक्षा-सेना के बीच मे झपाटे से और एक कदम आगे घुस जाता अथवा बाद के अनुसरणो मे अधिक तेजी से बढता, तो सम्भव था कि वह सयुक्त-राज्य की सेना का इस कदर विध्वस करता कि फिर उसका दुबारा गठन ही असम्भव हो जाता। उसे एक और अन्तिम अवसर १७७७ मे फिर मिला।

हर अवसर पर कठिनाइयाँ बढती ही गईं। जाहिरा तौर पर ऐसा लगता था कि अग्रेज सब प्रकार से लाभ की स्थिति मे हैं। किन्तु नजदीक से देखने पर उनके लाभ घटते हुए मालूम होते थे। (पहली बात यह कि) युद्ध बहुत महगा पड रहा था और अपने देश इगलैण्ड मे लोकप्रिय नही था। नौ-सेना मे अपर्याप्त सैनिक थे और इसे दुनिया भर के दायित्व दे दिए गए थे, जिनका बोझ उठाना नौ-सेना के लिये सम्भव नही था। इसी प्रकार भू-सेना मे भी सैनिको की कमी थी और वह सारे भू-तल पर बिखरी हुई थी। यही कारण था कि इगलैण्ड को योरुप के राजाओ से भाडे पर सेनाए लेने की आवश्यकता पडा करती थी। फिर सेना-सकार्य तीन हजार मील की दूरी पर इगलैण्ड से सचालन करने पडते थे। इसके फलस्वरूप यातायात मे अत्यधिक देर लगती थी। साथ ही इसमे अस्थिरता और अनिश्चितता भी थी। इनके अलावा जल और थल के सैनिको को एक दूसरे को सहयोग देने की शिक्षा नही मिली थी। जहा तक हो और उसके साथियो का सम्बन्ध है, उन्हे एक ऐसे विशाल भू-भाग पर गौरिल्ला-युद्ध जैसी लडाई लडनी पडी, जहा पसीना ही टपकता रहता था और जिसकी जल-वायु अमेरिका के आदिवासियो को भी दिक करती थी। इस भू-भाग मे

सडके बहुत कम थी और बस्तियो के चारो ओर घने जगल ही जगल थे। यदि हम स्मरण करे, तो हमे याद आ जायगा कि सन् १७५४ मे वाशिगटन ने एलघनी वन के बीस मील के टुकडे को पार करने मे पन्द्रह दिन लगाये थे। उनकी नजरो मे यह निर्दयी देश था, जैसा कि आज भी योरुप के यात्रियो को प्रतीत होती है।

वाशिगटन के लिए अपनी 'कठिनाइयो का चुनाव' था। किन्तु १७७६ की शरद् आने पर उनके दायित्व, यद्यपि वे अब भी काफी समय और शक्ति खपाने वाले थे, कुछ एक सरल, आवश्यक कर्तव्यो मे घट कर रह गये। अब उन्हे कष्टो को सहन कर, शत्रु से परे-परे रहना और सैनिको मे नया जीवन फूकना इत्यादि कार्य करने थे। वाशिगटन की तुलना मे हो के लिए अतिशय विकल्प थे। जल-सेना की सहायता से वह अमेरिका के तट के किसी भी भाग पर अपनी फौजें उतार सकता था। यद्यपि ऐसा नही लगता था कि उस समय सामरिक महत्व की योजनाओ मे रहस्यो को गुप्त रखा जाता हो, तो भी यह कोई परमावश्यक चीज नही थी, क्योकि अमेरिका के सब मुख्य मुख्य नगर उसकी दया पर निर्भर थे। इस समय न्यूपोर्ट हो के कब्जे मे था और वह वही से न्यू इगलैण्ड की सुरक्षा को खतरे मे डाल सकता था। न्यूयार्क को हथिया लेने से जहा वह इस मे रहने वाले बादशाह के प्रति वफादार लोगो की रक्षा कर सकता था, वहाँ इसके कारण वह कैनेडा और ग्रेटलेक्स के मार्गो पर भी नियन्त्रण रख सकता था। यदि वह फिलेडैल्फिया को, जो अमेरिका का सबसे बडा नगर और काग्रेस का अधिवेशन-स्थान था, अपने अधीन कर सकता, तो उसके लिए बीच के उपनिवेशो पर अपना प्रभुत्व जमाना मुश्किल नही था। यदि वह चार्लस्टन को कब्जे मे कर लेता, तो उसके लिए दक्षिण का द्वार खुल सकता था।

फिर क्या होता? प्रथम तो यह सम्भव नही था कि वह एक ही समय मे अमेरिका की बन्दरगाहो पर कब्जा जमा ले। पर यदि वह यह कर भी सकता, तो इससे क्या राजविद्रोह दब जाता?

फिर भी असहनीय विस्तार वाले घने जगल, लम्बे सेना-प्रयाण, निष्फल जाने वाले अनुसरण तथा घास मे बैठे और छिपकर हमला करने वाले शत्रुओ का खतरा इत्यादि चीजे भी शेष रह जाती। ये शत्रु भी ऐसे थे कि जो परम्परा से चले आए समर-नियमो का न तो पालन ही करते थे और न ही उन्हे मालूम था कि कोई ऐसे नियम भी हुआ करते हैं।

इन सब कठिनाइयो के अतिरिक्त असख्य ऐसी बस्तिया भी थी, जिनमे से बहुतो को नक्शो मे चित्रित भी नही किया गया था। वाशिगटन स्वय देहात के रहने वाले थे। वह पैदा तो एक बडे राज्य मे हुए, किन्तु वहा एक भी नगर नही था। शायद यही कारण था कि उनके लिए अपने असली कार्य-भाग की कल्पना करना सरल था। हो सार्वोपनिवेशिक सेना को सताने या विनष्ट करने की अपेक्षा सेना प्रयाण और नगरो की रक्षा को ज्यादा पसन्द करता था। उसके ऐसा करने के अपने कारण थे, जिनमें सुख-पूवक रहन-सहन अर्थात् आराम पहुचाने वाले मकान और आकर्षक पत्नियो का सग भी एक कारण था। इसके लिए कोई महत्वपूर्ण वजह नही थी। वह न तो भारी हानिया सहने के काबिल था और न ही क्षुद्र बातो के लिए सेना को जोखम मे डालना चाहता था। अमेरिका वालो को यह लाभ था कि चाहे उनकी सेनाए बिखरी हुई भी हो, तो भी वे दुबारा इकट्ठी हो सकती थीं और भर्ती के लिए यत्र-तत्र आदमी मिल सकते थे। किन्तु दूसरी ओर हो की सेना मूल्यवान वस्तुओ की तरह थी, जिन्हे व्यवस्थित और सुरक्षित रखना पडता था। ये युक्तिया थी, जिन्हे हो पेश किया करता था, किन्तु उसकी युक्तिया गलत थी। उसका आधरिक सर हैनरी क्लिटन (जिसने उसकी तरह सर' की उपाधि प्राप्त की थी), चाहे सिद्धान्त मे ही, उससे अधिक बुद्धिमान् साबित हुआ, क्योकि उसने हो को यह सलाह दी थी कि वाशिगटन पर धावा बोल दिया जाए। किन्तु व्यवहार मे क्लिटन आक्रमणकारी योद्धा नही था। इसके अतिरिक्त वह और हो सहज स्वभाव से परस्पर

विरोधी थे। परिणामत उनमे से प्रत्येक दूसरे की योजनाओ को असफल बनाना चाहता था। क्लिटन ने जुलाई १७७७ मे यह स्वीकार किया कि 'किसी मनहूस भाग्य-चक्र के कारण मालूम नही क्यो, हम आपस मे कभी मिलकर काम नही कर सकते।'

उनकी पारस्परिक जलन-कुढन ऐसा आभास देती थी कि मानो वे गृह-युद्ध मे कुछ-कुछ व्यस्त है—ऐसा गृह-युद्ध जिसके परिणाम स्वरूप दु खपूर्ण और अरोचक फूट पडा करती है। वे यह निश्चय नही कर सके कि उन्हे (नीति के रूप मे) नृशस होना चाहिये और फलत लोगो के दिलो मे अपने लिए घृणा पैदा करनी चाहिये अथवा उन्हे उदारता से सलूक करना चाहिये और लोगो को उनके परि-श्रमो पर फब्ती उडाने का मौका देना चाहिये। इस खास विषय मे उन लोगो ने धीरे-धीरे यह महसूस करना शुरू किया कि वे कभी भी पूर्ण रूप से सफलता नही प्राप्त कर सकते। सम्भवत वाशिंगटन को ठिकाने लगाने के सिवाए उनका कोई दूसरा लक्ष्य दृष्टिगोचर नही होता था। अत इसमे आश्चर्य नही कि अक्सर यह अफवाह फैलाई जाती थी कि वाशिगटन को बन्दी बना लिया गया है। यह अफवाह केवल मनोकामना की पूर्ति के लिए ही थी। सन् १७७६ मे वाशिंगटन की हत्या करने का षडयन्त्र भी रचा गया था। ब्रिटिश दृष्टिकोण से यह अत्युत्तम सूझ थी। (चार्लस ली को जो सन् १७७६ मे अमेरिका मे दूसरा अति सम्मानित सेनापति था, वस्तुत उसी वर्ष दिसम्बर के मास मे बन्दी बना लिया गया था, किन्तु इसका कोई स्पष्ट परिणाम नही निकला। दोनो पक्षो मे से सिवाए वाशिंगटन के कोई ऐसा सेनापति नही था जिसे बहुत से लोक अनि-वार्य समझते हो। जब बाद मे क्लिटन के अपहरण के सम्बन्ध मे छापा मारने का प्रस्ताव हुआ तो (अमरीकी क्षेत्रो मे) इस आधार पर इसकी नुक्ताचीनी हुई कि ऐसा करने पर कही उससे बढिया जनरल इगलैण्ड से न भेज दिया जाय)।

यदि वाशिंगटन को कभी खराब स्वप्न आया हो—इस बारे मे यद्यपि उन्होने कोई अभिलेख अपना नही छोडा—तो हम कल्पना

कर सकते है कि उन्हे यह स्वप्न आया होगा कि वह समुद्र मे एक छोटे से पोत मे है, जिसका बादबान कागज का बना हुआ है। (हमारा अभिप्राय उनकी सेना से है जो भिन्न-भिन्न उपनिवेशो के सैनिको का भयपूर्ण मेल सी थी और जिसे किसी शासन-पद्धति के अधीन भर्ती नही किया गया था, क्योकि सयुक्त-राज्य अमेरिका का निर्माण बाद मे सन् १७८१ मे हुआ था जब कि प्रसधान की धाराए अन्तिम रूप मे सम्पुष्ट हुईं) । तब वर्षा आई और बादबान गल कर नष्ट हो गया । यदि कभी हो को खराब स्वप्न आया हो—जिसकी कल्पना की जा सकती है कि आया होगा—वह भी सम्भवत पूर्ववत् होगा, सिवाए इसके कि इसमे जहाज बडे आकार का है और उसका बादबान दृढ कैनवास का बना हुआ है। तब एक तूफान आया, बादबान खुल गया और उड चला । हो के पास इतने आदमी नही थे, जो उसे दुबारा जहाज से बाध देते । सक्षेप मे, वाशिंगटन की शोचनीय अवस्था इसलिए थी कि उन्हे बिना ठोस और पर्याप्त साधनो के सारे महाद्वीप की रक्षा करनी पडी, हो के भाग्य मे यह बदा था कि उस पर उस समय आक्रमण करे जब कि एक बार विद्रोह भडक उठने से कोई भी प्राप्त साधन पर्याप्त नही हो सकते थे । ब्रिटिश सत्ता ने और बाद मे दूसरो ने यह ससार को दिखा दिया कि किसी भी बडे देश मे जनता के विद्रोह को कुचलना उस समय कितना कठिन होता है जब उस देश के नागरिको मे आत्माभिमान की भावना जाग उठती है । बाद मे नैपोलियन ने स्पेन के प्रायद्वीप मे और फिर भारी क्षति उठाकर रूस मे उस तथ्य को मालूम किया । बोर की लोक-तन्त्रीय सस्थाए ब्रिटेन के विरुद्ध तीन वर्षो तक जमकर लडती रही । जर्मन लोगो ने भी कब्जे मे आये हुए योरूप के सम्बन्ध मे यही पाठ सीखा ।

**सकटमय स्थिति और षडयन्त्र (१७७७ से १७७८ तक)**

परन्तु इस बीच मे सन् १७७७ का वर्ष हो के लिये अच्छा-खासा आशा-पूर्ण था । बसन्त के आरम्भ मे जब कि वाशिगटन अपने शरद् के पडाव से सेना को निकाल कर आगे बढा रहे थे, हो

विविध प्रकार की योजनाए बना रहा था । उसके मन मे सर्व प्रथम यह विचार पैदा हुआ कि वाशिगटन की साधारण चुनौती के जवाब मे उससे युद्ध छेडने की बजाए उसे एलबैनी पर उस ब्रिटिश सेना के साथ शामिल हो जाना चाहिए जो कैनेडा से दक्षिण की ओर सैनिक अभियान के लिये बुलाई जा रही है । हो ने इस योजना को, जिसमे रोड द्वीप की ओर से बोस्टन पर आक्रमण की तजवीज भी शामिल थी, ब्रिटेन के उपनिवेश मन्त्री 'जर्मेन' के पास भेज दिया। किन्तु बाद मे उसने अपना इरादा बदल लिया । उसने नई तजवीज यह पेश की कि फिलेडैल्फिया पर चढाई की जाय और इसके साथ ही साथ अल्पसख्यक फौज लेकर छोटे पैमाने पर न्यूयार्क के उत्तर की ओर आक्रमण किया जाए । जर्मेन ने मितव्ययता के आधार पर दूसरी योजना को अधिमान्यता दी, क्योकि कोई कुमक भी दुष्प्राप्य थी और हो ने कहा था कि उसे अपनी पूर्व योजना कार्यान्वित करने के लिये पन्द्रह हजार और सैनिको की आवश्यकता होगी । जर्मेन के ऊपर बर्गोयने की बात-चीत का भी असर हुआ । वह शरद काल के लिये छुट्टी लेकर इगलैण्ड को लौटा था । स्वतन्त्र कमान को लक्ष्य मे रखते हुए उसने जर्मेन को यकीन दिलाया कि उसका प्रस्ताव अति कौशल्यपूर्ण है । वह प्रस्ताव यह था कि तीन सेनाए उत्तर मे मौटरीयल से आकर एल्बैनी के केन्द्रीय बिन्दु पर मिले और बर्गोयने स्वय उसका नेतृत्व करे । जर्मेन ने इस योजना पर भी अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी ।

यहाँ आकर ब्रिटिश-कमान-पद्धति की न्यूनताए निश्चित रूप से सामने आईं । किसी प्रेमानुशीली नाटककार के समान ही बर्गोयने की योजना मे एक प्रकार की नाटकीय समिति तो थी, किन्तु इसके लेखक की साहित्यिक रचना के सदृश्य, कल्पना-भव्य होते हुए भी विस्तार मे कमजोर थी । इस योजना मे उन समस्याओ की ओर ध्यान नही दिया गया, जो तीन अलग-अलग आक्रमणो के समन्वय से अथवा अलबैनी और मौटरीयल के मध्य मे जगली और असम भूखण्ड मे सेना की गति-विधि और रसद से सम्बन्ध रखती थी ।

इसमे यह मान लिया गया कि एलबैनी पर पहुचना मात्र ही बहुत बडी विजय को प्राप्त करना है, अर्थात् उसके अनुसार न्यू इगलैण्ड अलग हो जायगा और उपनिवेश इस प्रकार खण्ड-खण्ड हो जायेगे—जैसे कोई रसदार टर्की का पक्षी कटता है। किन्तु क्या ऐसा अनिवार्य रूप से होना सम्भव था ? क्या ब्रिटिश सेनाए अपने यातायात के मार्ग खुले रख सकती थी ? क्या उन सेनाओ से यह आशा की जा सकती थी कि वे अमरीकी दलो को आगे बढने से यथासम्भव रोक सकेगी ?

हो की सशोधित योजना, यदि इसका उद्देश्य वाशिंगटन की सेना का मुकाबला करना था, तो उपर्युक्त योजना से कही अधिक उत्तम थी। यदि कही भी और कोई भी राजविद्रोह का केन्द्र था, तो वह वाशिगटन की सेना थी। बसन्त मे तथा गर्मी के आरम्भ में कार्नवालिस ने बेगार टालने की तरह, वाशिंगटन से गुत्थम-गुत्था होने की चेष्टा की। किन्तु वाशिंगटन को इतनी अधिक कठिनाइयाँ सहनी पडी थी कि उन्होने चुनौती को मन्जूर नही किया और लडाई से पीछा छुडाया।

इस बीच मे हो ने फिर अपना इरादा बदल लिया। उसका नया विचार यह था कि वह समुद्र मार्ग से फिलेडैल्फिया पर कब्जा जमा ले। इस बडे सकार्य के लिए उसने अपनी पन्द्रह हजार उत्तम सेना अलग रख ली। इसका यह अर्थ था कि न्यूयार्क नगर से उत्तर की ओर बढने के लिए नियमित सैनिक नही दिये जा सकते थे। केवल कुछ वफादार दस्ते थे, जिन्हे सक्रिय रखने के लिए अस्पष्ट आदेश दिये गये। इस प्रकार तीन सेनाओ मे से केवल दो ही सेनाए एलबैनी पर इकट्ठी हुई। बर्गोयने ने अमेरिका की उत्तरीय सेना को उसी जगह सीमित रखने की बजाए, स्वय उनके जाल मे फसने का खतरा मोल लिया। परन्तु हो फिलेडैल्फिया पर चढाई करने की धुन मे था और वह उस साहसपूर्ण कार्य की जटिलताओ मे इतना व्यस्त था कि उसने क्लिटन के विरोधो को भी अनसुना कर दिया। क्लिटन को न्यूयार्क छोड जाना था। हो ने अपने इरादो मे जो

परिवर्तन किए थे उनका ज्ञान उस समय न तो बर्गोयने को और न ही जर्मेन को हुआ। उन्हे इनका पता इतनी देर बाद चला कि तब उन्हे बदला नही जा सकता था। तब भी जर्मेन ने उसकी अत्यधिक चिन्ता नही की। उसने इसी बात मे सन्तोष माना कि हो को आदेश दे दिया जाय कि ज्यो ही वह फिलेडैल्फिया ले ले, त्यो ही सेना और सामान से बर्गोयने की सहायता करे।

इसमे आश्चर्य की बात नही कि ब्रिटिश लोगो की इन गतिविधियो से वाशिगटन घबरा गये। इन गतिविधियो का अभिप्राय क्या है, यह उनकी समझ मे नही आया। किन्तु शनै-शनै उन्हे यह स्पष्ट दिखने लगा कि शत्रु के दो मुख्य लक्ष्य है—कैनेडा की ओर से हमला करना और मध्य के अथवा दक्षिण के उपनिवेशो पर समुद्र के मार्ग से धावा बोलना। वाशिगटन आक्रमणकारी सेनाओ की सख्याओ का भी लगभग ठीक-ठीक अनुमान लगाने मे सफल हुए। उनकी राय मे बर्गोयने से, जिसके पास आठ हजार सैनिक थे, अमेरिका की उत्तरीय सेना लोहा ले सकती थी। क्लिटन की सेना सात हजार थी (जिसमे आधे ही नियमित सैनिक थे)। उनकी सम्मति मे वह इस थोडी सी सेना के साथ कर ही क्या सकता था, सिवाए इसके कि अपने न्यूयार्क के पडाव से कोई छोटी-मोटी भिडन्त आरम्भ कर दे। वह किसी अनभ्यस्त और अनूठी क्रियाशीलता का परिचय दे, तो वह दूसरी बात है। हो के आक्रमण को रोकने के लिए वह स्वतन्त्र थे। यह ठीक है कि हो की तुलना मे उनकी सेना अल्प-सख्यक थी। किन्तु इसमे उन्हे निराश होने की कोई बात नही दीखती थी, क्योकि गर्मी की ऋतु के मध्य मे उनके पास नौ हजार तो स्थानीय अमरीकी सेना थी और उसके अतिरिक्त अनन्त नागरिक सेना।

वाशिगटन ने सन् १७७७ के फरवरी मास मे बौनिडिक्ट आर्नल्ड को लिखा, 'यदि शत्रु ने हमे इतना समय दिया कि हम युद्ध के लिए सेना इकट्ठी कर सके, तो मुझे आशा है कि हम अपनी पिछली सब भूलो को सही कर सकेंगे।' किन्तु जिस कदर सेना

वह चाहते थे, उसका एक अश भी उन्हे न मिल सका। यद्यपि काग्रेस ने उन आदमियो को, जो सयुक्त-राज्य-सेना मे तीन साल की अवधि के लिए अथवा लडाई के अन्त तक नौकरी करना चाहे, धन और भूमि भेट के रूप मे देने के प्रस्ताव किये थे, किन्तु भेट-सम्बन्धी ये शर्तें इतनी आकर्षक नही थी, जितनी कि उस मिलिशिया के लिए थी, जिसे भिन्न-भिन्न राज्य व्यक्तिगत रूप से अपने क्षेत्रो मे अपेक्षतया थोडी अवधि के लिए भर्ती किया करते थे। परिणामत सयुक्त-राज्य-सेना सख्या मे निराशाजनक-रूप से कम रही, परन्तु इससे वाशिगटन को पुराने युद्ध-कुशल सैनिको की ठोस स्थिष्टि प्राप्त थी। इन सेनाओ मे तथा मिलिशिया के सैनिको मे चमक-दमक मालूम नही पडती थी, अत देखने वालो को बाहरी रग-रूप से धोखा होता था। फ्रास तथा स्पेन देशो से गुप्त सहायता मिलने, ब्रिटिश-माल की लूट-मार से प्राप्त सामान तथा सयुक्त-राज्य मे बने हुए देसी हथियारो के उपलब्ध होने के कारण अमरीकी सैनिक वर्दियो और शस्त्रास्त्रो से गुजारे लायक सजे-सजाये अच्छे खासे लगने लगे थे।

शत्रु ने भी वाशिगटन को तैयारी का पर्याप्त समय दिया। हो का समुद्री बेडा जुलाई के अन्तिम भाग से पहले न्यूयार्क से नहीं चला। इसके बाद भी स्थल पर उतरते-उतरते उसे एक महीना लग गया। हो चेसापीक अन्तरीप मे हैड-आफ एल्क के तट पर उतरा। यह स्थान फिलेडैल्फिया से उस जगह से भी दूर था, जहा कि उसे उतरना चाहिए था। फिर भी, एक बार उलट कर उसने आत्मविश्वास के साथ हमला किया और क्रमश जमकर लडता-लडता नगर की ओर बढा। हो की प्राथमिक गतिविधियो से वाशिगटन चकरा से गए। वह यह समझ नही सके कि उक्त जनरल जो कुछ काल पहले न्यू ब्रानस्विक मे फिलेडैल्फिया से कुल साठ मील के अन्तर पर था, अब क्यो उसने इस नगर से सत्तर मील पर पडाव डालने के लिए चार सौ मील का समुद्री सफर तय किया है? उन्हे विश्वास हो गया कि हो का उद्देश्य चार्लस्टन पर

कब्जा करना है। पर बाद मे उन्हे मालूम हुआ कि फिलेडैल्फिया ही उसका लक्ष्य था। हो की यात्रा ने इतना लम्बा समय ले लिया कि वाशिंगटन इस योग्य हो गए कि वह उसकी भावी गति-विधियो के बारे मे जान सके तथा फिलडैल्फिया और उसकी सेना के बीच अमरीकी सेना लाकर खडी कर दे।

अब तक भाग्य वाशिंगटन के साथ था। अगले कुछ सप्ताहो मे पासा उन के उलट हो गया और जैसा कि गत अभियानो में हुआ था, इसमे कुछ अश तक दोष उनका अपना था। उन्होने महसूस किया कि जब तक वह स्थिरता से डटे नही रहेगे और जम कर नही लडेगे, फिलेडैल्फिया जरूर उनके हाथो से निकल जायगा। यद्यपि इससे बिल्कुल हार तो नही होगी, परन्तु जैसा कि उन्होने लिखा, 'इसका यह असर होगा कि अमेरिका के (स्वतन्त्रता-प्राप्ति के) प्रयत्न ठण्डे पड जाएगे।' अत उनका यह कर्तव्य था कि वह हो का मुकाबला करे और इन अर्थों मे, हम कह सकते हैं, कि उन की योजना बेकार नही गई। वाशिंगटन की सेना कम थी—पन्द्रह हजार की तुलना मे ग्यारह हजार, किन्तु यह उनके ऊपर निर्भर था कि लडने के लिए कौन सा स्थान चुनें। उन्होने युद्ध के लिए विलमिंगटन से कुछ मील दूरी पर एक स्थान चुना। वहा ब्राडी-वाइन नदी उसके मोर्चे के आगे से बहती थी। यह १० सितम्बर की घटना है। वाशिंगटन ने अपना दाहिना पार्श्व सुलीवान को (जिसकी लौग द्वीप की मुठ-भेड मे पकडे जाने के बाद अदली-बदली हुई थी), बीच का भाग नेथानील ग्रीन को और बाया पार्श्व पेनसिलवेनिया की मिलिशिया को सौपा। ब्राडीवाइन नदी को भिन्न-भिन्न स्थानो मे पैदल पार किया जा सकता था, किन्तु अन्य कारणो से यह, विशेषतया अमेरिकी सेना की बाई ओर, एक उपयोगी प्राकृतिक रुकावट थी।

हो की चढाई की योजना ब्रुकलिन की योजना के समान ही थी, अर्थात् दिखाया तो यह गया कि हमला बीच वाले भाग पर होगा, किन्तु वास्तव मे मुख्य हमला पार्श्व की ओर किया गया।

इस बार दाया पार्श्व चुना गया। यह उसकी स्थायी कार्य-विधि थी। वाशिंगटन इस चाल को पहले भाप नही सके। न ही वह जासूसो की व्यवस्था कर सके, जो उन्हे समाचार गुप्त रूप से पहुचाते रहे। परिणाम यह हुआ कि जब लडाई ११ सितम्बर को छिड गई, तो उसमे बीच वाले भाग मे तो छुट-पुट सघर्ष चले, जिन का कोई नतीजा न निकला। कि तु दाए भाग को कार्नवालिस की दस हजार सेना ने लम्बे वक्राकार मे घेर लिया और सुलीवान पर अचानक धावा बोल दिया। सुलीवान इसके लिए बिल्कुल तैयार नही था। इसका परिणाम यह हुआ कि अमेरिकन सेना के दाये पार्श्व के पैर उखड गए। वाशिंगटन ने स्थिति सम्भालने के लिए पूरा जोर लगाया। उन्होने ग्रीन के अधीन अपनी बची-खुची सेना का बहुत सा हिस्सा उस पार्श्व की ओर भेजा, ताकि वे लोग सुलीवान की पीछे हटती हुई फौज के पिछले भाग मे दूसरी पक्ति कायम कर सके। बडी दृढतापूर्वक और अडकर लडती हुई ग्रीन की सेना सायकाल तक शत्रु को रोके रही।

इस बीच मे हो के दबाव के कारण, मध्य भाग विनष्ट हो गया, क्योकि यहा से बहुत सी फौज पार्श्व की सहायतार्थ चली गई थी और अब यह पार्श्व सेना-विरहित हो चुका था। युद्ध की शकल सूरत ही बिगड गई। सन्ध्या के समय, जैसे ही बन्दूको-तोपो की धाए-धाए बन्द हुई, थके-मादे अमरीकी सैनिक अस्त-व्यस्त हालत मे पीछे को हटे। वे अपने लगभग एक हजार साथी रण-क्षेत्र मे हताहत छोड गये।

यह करारी हार थी—जरूरत से भी ज्यादा महगी हार। किन्तु यह किसी तरह भी निर्णायक हार नही थी। कोई एक छिद्रान्वेषी अवलोकक सम्भवत इस पर यह टिप्पणी कर सकता है कि अमरीकी सैनिक इस लिए कैदी नही बनाए गए, क्योकि वे रणक्षेत्र से इतने तेज दौडे कि पकडे ही नही जा सकते थे। इसके उत्तर मे यह कहा जा सकता है कि वे वही तक भागे, जहाँ तक कि आवश्यक था, क्योकि दूसरे ही रोज प्रात के समय वे अपनी-अपनी पूर्व

टुकडियो मे दुबारा जाकर शामिल हो गये। और जो सैनिक ग्रीन के साथ दृढता-पूर्वक डटे रहे, उन्होने अपने कर्त्तव्य का अत्युत्तम ढग से पालन किया, क्योकि उनके हाथो ब्रिटिश-सेना के पाच सौ से अधिक सैनिक हताहत हुए। दूसरे शब्दो मे, यदि अमेरिकन सैनिक अभी तक इस योग्य नही हुए थे कि औपचारिक युद्ध मे ब्रिटिश सेना के छक्के छुडा सकें, उन्होने यह दिखा दिया कि वे नियमित सैनिको की स्थिरता के साथ गोरिल्लाओ के फुर्तीलेपन को (चाहे यह पीछे हटने के लिये ही क्यो न हो) मिला सकते हैं। यह मेल चाहे आदर्श रूप से न भी हुआ हो, किन्तु उनके इस मेल मे नाश को रोकने के लिए पर्याप्त साधन-सम्पन्नता पाई जाती थी।

बाद मे जो कुछ हुआ, वह पुराने नमूने के अनुसार था। इसमे अधिक बात यह थी कि वाशिंगटन ने सदा की भाति इस नाजुक मौके पर, जबकि वह महसूस करते थे कि अमेरिका का भविष्य और उसकी अपनी ख्याति खतरे मे है, युद्धकरण के अपने विशेष गुण को प्रगट किया। हो धीरे-धीरे फिलेडैल्फिया की ओर बढा। काग्रेस अपना स्थान छोड कर शीघ्रता से लेकेस्टर गई। फिर उसने वहा से पैनसिलवेनिया के नगर यार्क मे अपना अड्डा बनाया। वाशिंगटन ने एक और युद्ध लडने का प्रयत्न किया, किन्तु मूसला-धार वर्षा के कारण उन्हे अपना इरादा छोडना पडा। हो नगर मे घुसा। वाशिंगटन ने उसे फिलेडैल्फिया से दस मील के अन्तर पर ललकारा। इस बार फिर दोनो फौजो मे जोर की टक्कर हुई। गडबडी मची, जिस मे वाशिंगटन को अपने दुःसाहस का कुपरिणाम यह भुगतना पडा कि उनके एक हजार सैनिक काम आये। शत्रु की क्षति इससे आधी हुई। इसकी प्रतिक्रिया वाशिंगटन पर यह हुई कि फिर लडा जाय, किन्तु हो ने उससे लोहा लेना कबूल नही किया। दिसम्बर के आते ही कडाके की सरदी शुरू हुई। इस सरदी मे जहा ब्रिटिश सैनिको को कुछ-कुछ बेचैनी हुई, वहा देशभक्त सैनिको मे सक्रिय असन्तोष की लहर फैली। हो और उसके सैनिक फिलेडैल्फिया मे उष्णता का आनन्द उठा रहे थे, किन्तु वाशिंगटन

के आदमी वहा से बीस मील की दूरी पर स्कूइलकिल नदी के किनारे अपने फौर्ज घाटी के डेरो की चौकसी कर रहे थे।

यह सब कुछ होते हुए भी १७७७-१७७८ के शरद् मे देशभक्त सेना का आस्ति-दायित्व-लेखा देखने मे बुरा नही था। विकलन-पार्श्व मे मुख्यतया हो का फिलेडैल्फिया को कब्जे मे करना शामिल था। इसके साथ ही निश्चित रूप से ब्राडीवाईन और जर्मन टाऊन की हारे थी। आकलन-पार्श्व मे, वाशिगटन की सेना अभी तक सेना के रूप मे मौजूद थी, यद्यपि पहले से दुर्बल हो चुकी थी और शरद् ऋतु, कृपणतापूर्वक दी गई रसद और अवशिष्ट वेतन की कठिनाइयो के कारण असन्तुष्ट थी। वाशिंगटन की सेना जहाँ हर सरदी मे 'नही' के बराबर रह जाती थी, वहाँ इसके बदले मे ब्रिटिश सेना आराम से एक जगह पडी रहती थी। यार्क की सर्दी के कष्टो के कारण काग्रेस मे, उनकी सेना के समान, उपस्थित सदस्यो की सख्या बहुत कम रह जाती थी—यहाँ तक कि कभी-कभी तो बीस से भी कम लोग बैठको मे हाजिर होते थे। फिर भी यह कम से कम अब तक सास ले रही थी—मानो पेड मे फिर से रस प्रवाहित होने लगा था और इसलिये वह मरा नही। जहाँ तक हो का सम्बन्ध है, उसका अभियान इसलिए असफल रहा, क्योकि उसे विजय नही मिली थी। उसे आशा थी कि राजभक्त उसके झण्डे के नीचे इकट्ठे हो जायेंगे। किन्तु जहाँ पैनसिलवेनिया के लोग उसे खाद्य-वस्तुए बेचने को उद्यत थे, क्योकि इस प्रकार उन्हे सयुक्त-राज्य की कागज की मुद्रा की बजाय सोना मिलता था वहाँ वे सेना मे भर्ती होने को तैयार नही थे। परिणामत इने-गिने लोग ही उसकी फौज मे शामिल हुए। निराश होकर हो ने अपना त्यागपत्र दे दिया।

दक्षिणी सेनाओ की अपेक्षा 'उत्तरीय भाग' ने बर्गोयने पर अधिक विधेयात्मक ढग से विजय प्राप्त की, जिसकी गूज चारो ओर हुई। बर्गोयने के आक्रमण का आरम्भ अमेरिका वालो के लिए अशुभ लक्षणो वाला था, क्योकि उनका टिकनडेरोगा का किला जुलाई के शुरू मे ही शत्रु के कब्जे मे आ गया था। किन्तु उसके बाद बर्गोयने

की आगे बढने की रफ्तार मध्यम हो गई और उसे अधिक यातनाए सहनी पडी। इसके पश्चात् उसने जो गौण हमला किया, उसके आरम्भ मे तो उसे कामयाबी हुई, किन्तु अन्त मे जा कर वह बिल्कुल असफल रहा। अगस्त के मध्य मे एक और महत्वपूर्ण घटना हुई। बर्गोयिने की सेना का एक भाग जबकि वह रसद की तलाश मे था, दक्षिण वरमौट के बैनिंगटन स्थान पर देशभक्त मिलिशिया द्वारा विनष्ट कर दिया गया। अत दक्षिण मे अलबैनी की ओर बढने के सिवाय अब उसके लिए कोई चारा नही रहा था, यद्यपि उसे यह मालूम हो गया था कि कोई अन्य सेना उसकी मदद के लिए न्यूयार्क से नही आ रही है। सराटोगा के दक्षिण मे कुछ मीलो के अन्तर पर उत्तरीय सेना ने उसे आगे बढने से रोक दिया। (इस सेना के पूर्व सेना-पति स्कूयलर थे और अब वह होरेशो गेट्स के अधीन थी)। सितम्बर मे और फिर दुबारा अक्तूबर के आरम्भ मे उसने शत्रु से बच कर आगे बढने की चेष्टाए की, किन्तु असफल रहा। भावी आपत्ति से चिंतित होकर आखिरकार क्लिटन उसकी सहायता को चल पडा। वह जितने सैनिक ला सकता था, उन्हे लेकर हडसन नदी के ऊपरी भाग द्वारा आगे बढा। अक्तूबर के मध्य तक वह सारे प्रतिरोध को हटाता हुआ, ऐसोपस (किगस्टन) पहुँचा। बर्गोयिने इस स्थान से केवल अस्सी मील की दूरी पर पडाव डाले हुए था। किन्तु क्लिटन उतना ही सावधान था, जितना कि बर्गोयिने उतावला और अधीर। उसे जहाँ आने मे अत्यधिक देर लगी, वहाँ वह अपने साथ बहुत कम सैनिक ला सका, क्योकि हो फिलेडैल्फिया मे बहुत ज्यादा उलझा हुआ था। अत जब क्लिटन के आगे के दस्ते इसीपस पहुँचे, तो उससे एक दिन बाद बर्गोयिने ने अपनी बची-खुची सेना के साथ, जिसकी सख्या सत्तावन सौ थी, आत्म-समर्पण कर दिया। यह ब्रिटिश सेनाओ के लिए सनसनी पैदा करने वाली पराजय थी। परिणामत क्लिटन आगे बढने की बजाए न्यूयार्क वापस लौट गया और उसने सारी सरदी चुपचाप वहाँ गुजारी। हो जागरूक था। वह फिलेडैल्फिया मे तब तक इतजार करता रहा, जब तक कि उसका

त्याग-पत्र स्वीकृत नही हुआ। तत्पश्चात् मई, १७७८ मे, उसने अपना पद क्लिटन को सम्भाल दिया और स्वय इगलैण्ड लौट गया। गेज जा चुका था। अब बर्गोयिने और हो भी गए। वाशिगटन उनके पीछे अब तक जमा हुआ था।

इन घटनाओ से योरूप के लोगो ने शिक्षा ग्रहण न की हो—सो बात नही थी। लदन मे लार्ड नार्थ ने एक और सन्धि-आयोग की व्यवस्था शुरू की, यद्यपि ब्रिटेन अभी तक इस बात के लिए तैयार नही था कि उपनिवेशो की स्वतन्त्रता को माना जाए। पैरिस मे अत्यधिक क्रियाशीलता थी। अमेरिका के अभिकर्ताओ, सीलास डीन और बैजामिन फ्रैकलिन, के साथ मिल कर फ्रासीसी सरकार कुछ समय से उपनिवेशो को सहायता दे रही थी। उनकी सहायता का एक अश यह था कि विदेश (अमेरिका) मे ऐसे अफसर भेजे जाए, जो वाशिंटगन के साथ मिल कर कार्य करे। इनके अलावा, उनके कई-सेना-अधिकारी अपनी इच्छा से भी आये। उनमे बहुसख्यक ऐसे लोग थे, जिनके लाभ-प्रद होने मे सन्देह होता था। कारण यह कि उनकी वजह से वाशिगटन की परेशानियो मे बढोतरी हुई, क्योकि इन मे से हर एक ऊचा पद चाहता था। किन्तु उनमे से कुछ विशेष रूप से थेडियस कौसियस्को, उत्सुक तरुण माक्विवस डी लेफायेट, बैरन डी काल्ब और बैरन' बोनस्टडूबेन (जो बनावटी तौर पर कुलीन वर्ग का था, किन्तु था सच्चा सैनिक) अमेरिका की लक्ष्य-प्राप्ति मे महान् सहायक सिद्ध हुए। जब फ्रासीसियो ने साराटोगा का समाचार सुना, तो उन्होने निश्चय कर लिया कि उन्हे अधिक सहायता देनी चाहिए। उनका यह निश्चय केवल भावना पर आधारित नही था, यद्यपि वे उपनिवेशो के साहस और प्रधान सेना-पति वाशिंगटन की दृढता के प्रशसक थे। इस निश्चय के दो आधार थे। एक था ठोस अनुमान, जो उन्होने अमेरिका के जीतने के अवसरो के बारे मे लगाया था। उनका दूसरा आधार यह था कि उन्हे आशा थी कि इससे ब्रिटिश-शक्ति को निर्बल बनाया जा सकेगा। यह वजह थी कि फ्रास, जिसमे एक निरकुश राजतन्त्र था, एक सघर्ष

करती हुई प्रजातन्त्रीय-सत्ता को उत्सुकतापूर्वक सहायता दे रहा था। फ्रास के समित्र स्पेन ने इस पर दुःख प्रकट किया। एक पत्र मे, जो फ्रैंकलिन ने फरवरी, १७७८ मे भेजा, उसने सूचित किया कि 'सर्वाधिक' ईसाई धर्मावलम्बी (फ्रास के) बादशाह ने यह मान लिया है कि वह सयुक्त राज्य को अपनी लक्ष्य प्राप्ति मे पूरी-पूरी सहायता देगा—(और) वह अमेरिका को स्वाधीनता, प्रभुता और पूर्ण एव असीम स्वतन्त्रता की प्रत्याभूति देता है।' गर्मी के मध्य मे फ्रास सरकारी तौर पर इगलैण्ड के साथ युद्ध की स्थिति मे हो गया। एक साल बाद स्पेन ने भी इसका अनुकरण किया, यद्यपि उसने इतना आगे बढने से इन्कार कर दिया कि सयुक्त-राज्य को एक पृथक् राज्य माना जाये।

अप्रैल के मास मे वाशिगटन ने इस सन्धि के बारे मे सुना। उन्होने काग्रेस को लिखा—'मेरा विश्वास है कि कोई भी पहले की घटना इतनी हार्दिक उल्लास के साथ नही सुनी गई।' इस समाचार से वाशिगटन से अधिक किसी के मन का बोझ हल्का नहीं हुआ होगा। यह अजीब बात लगती है कि वे सप्ताह जिनमे यह समित्रता सम्पन्न हो रही थी, वाशिगटन के समस्त जीवन मे सर्वाधिक खराब थे। फौर्ज की घाटी मे शहतीर से बनी झोपडियो मे रहने के कारण उन्हे भौतिक रूप से तो कष्ट हो ही रहा था, इस के साथ बहुत सी मानसिक व्यथा भी जुड गई, क्योकि यह वह समय था जिसे 'कानवे कबल' काल कहा जाता है, जिसमे होरेशो गेट्स के पक्ष मे वाशिगटन को प्रधान-सेनापति के पद से उखाडने का षडयन्त्र रचा गया था।

शायद हम कभी भी यह नही जान सकेंगे कि इस मामले मे कहा तक सचाई थी। जैसा कि वाशिगटन ने भापा, सेना के कुछ असन्तुष्ट व्यक्तियो ने कुछ काग्रेस सदस्यो के साथ मिलकर उसे बदनाम करने का कार्य-क्रम बनाया। ऐसा मालूम होता है कि इस दल के सैनिक अभिनेता गेट्स, मिफलिन और थामस कौनवे (जो आयरलैण्ड का स्वय-सेवक था और इससे पूर्व फ्रास की सेवा-वृत्ति

मे कर्नल था ) थे। परिचित कहानी के अनुसार उनके षडयन्त्र का भाडा वाशिंगटन के वफादार समर्थको ने (जिनमे लिफायेट भी था, जो उनका उत्साही प्रशसक और मित्र बन गया था) फोड डाला। बाद मे वाशिगटन ने गेट्स के सामने षडयन्त्र के साक्ष्य रखे और षडयन्त्रकारियो को इतना लज्जित किया कि उन्होने अपनी काली परियोजना को त्याग दिया। किन्तु बर्नहार्ड नौलिनबर्ग और अन्य आधुनिक विद्वानो ने इस परम्परा-गत वर्णन के बारे मे सन्देह प्रगट किए है। उनका कहना है कि उस समय यह स्वाभाविक था कि गेट्स की प्रशसा होती, क्योकि उसने बर्गोयने को रण-क्षेत्र मे हराया था और यह भी स्वाभाविक था कि वाशिगटन के बारे मे तुलनात्मक-रूप से कम उत्साह हो, क्योकि वह हो से पिट चुके थे। शायद गेट्स इस कदर प्रशसा के योग्य नही था और न ही वाशिंग-टन को इतना दोषी ठहराया जाना उचित था। किन्तु लोक-सन्मान की यही रीति है, विशेष-रूप से जब युद्ध का समय हो। भाग्यशाली सेना-पति प्राय पदोन्नति पाते है और अभागो का बिस्तरा गोल कर दिया जाता है।

वाशिगटन को बुरा-भला कहना शायद कृतघ्नता समझा जाता हो, पर क्या कुछ एक साथियो द्वारा एक दूसरे को लिखे गए व्यक्तिगत पत्रो मे उनकी खामियो की चर्चा करना सचमुच राज-द्रोह था ? कौनवे स्वार्थपूर्ण व्यक्ति था और सम्भवत वह उस समय सद्भावी भी नही था, जब उसने गेट्स को यह लिख भेजा कि वह उसे वाशिंगटन पर तरजीह देता है। क्या इससे उसने किसी राक्षसी प्रवृत्ति का परिचय दिया था ? ऐसा प्रगट होता है कि वाशिगटन ऐसा ही समझते थे और उनके बहुत से जीवनी लेखक भी इससे सहमत हैं। इन लोगो ने उनकी जीवनी लिखते हुए न सिर्फ अपने आप को उनकी जगह रखा (जैसा कि हर जीवनी-लेखक को करना ही चाहिए), बल्कि वे उनकी जेब मे भी पड गये (अर्थात उसके प्रति उन लोगो ने अन्धश्रद्धा की अभिव्यक्ति की)। परि-णामत उन्होने इस प्रकार की धारणाओ को आधार-सामग्री के रूप

मे स्वीकार किया कि गेट्स तथा अन्य लोगो ने विद्रोह किया, गेट्स न केवल अयोग्य था, बल्कि बागी भी था और काग्रेस के लगभग सब सदस्य धूर्त और मूर्ख थे ।

वार्शिगटन के साथ न्याय करते हुये हमे यह मान लेना चाहिए कि उनके मित्रो ने इस ढग से चर्चा की जिससे कि यह बोध होता था कि वास्तव मे षडयन्त्र रचा गया है। कर्नल अलैक्जैण्डर हैमिल्टन ने लिखा—'मुझे इसकी वास्तविकता मे रत्ती भर भी सन्देह नहीं है।' यह सत्य है कि कुछ काग्रेस के सदस्य विद्वेष-युक्त और अनुत्तरदायी थे । जान जे ने शिकायत की कि 'इस ससद् मे उतने ही षडयन्त्र रचे जाते है, जितने कि पोप के महल मे ।' (यह सत्य है कि) वाशिगटन के ऊचे पद वाले अधिकारियो मे चुगली खाने की बहुत आदत थी। किन्तु यह बात उन स्थानो मे सदा पाई जाती है, जहा आदमी प्रतिष्ठा और उन्नति के लिए प्रतिद्वन्द्वी होते है । देखिये, क्लिटन, हो और बर्गोयने मे कितना मन-मुटाव था । यदि वार्शिगटन प्रधान सेना-पति के उच्चतम पद पर आरूढ होने की बजाए अनेक मेजर-जनरलो मे से एक होते, तो क्या उन्हे ईर्ष्या-विद्वेष की यन्त्रणाए न सताती ? यद्यपि उनका कबल के साथ प्रतिष्ठायुक्त व्यवहार था और निश्चयपूर्वक प्रभावशाली था, किन्तु यह भी सत्य है कि वह स्थित्यनुसार इस सूचना से अत्यन्त क्रोधावेश मे आ गये थे । अनेक महीनो तक उन्हे गेट्स पर गुस्सा रहा । काग्रेस ने समझदारी से काम लिया । उसने इस बात का निश्चित रूप से खयाल रखा कि वे दोनो एक दूसरे से काफी अलग-अलग रहे ।

### मन्माऊथ से यार्क टाउन तक सन् १७७८-१७८१

षडयन्त्र था या नही, उस समय जो भी परेशानी थी वह तात्कालिक आवश्यक विचारणीय बातो के कारण शीघ्र दब गई । यह देखकर वार्शिगटन को अचम्भा हुआ कि जून १७७८ मे क्लिटन ने अपने लाल-कोट वाले सैनिको को फिलेडैलफिया से निकाल दिया है—लडने के लिए नही, बल्कि न्यू जरसी के उत्तर-पूर्वीय दिशा मे

आगे बढने के लिए। क्लिटन पागल नही था। हो की योजना उसे फूटी आखो नही भाई थी। कुछ कुमक इगलैण्ड से उसे भेजे जाने का वायदा हुआ था। खबर थी कि फ्रासीसियो का एक समुद्री-बेडा रास्ते मे है। अत उसने इस बात को अधिक पसन्द किया कि उसकी सेना न्यूयार्क नगर मे ही जमी रहे। इस प्रकार दो साल पूर्व बोस्टन के समान, फिलेडैल्फिया भी अमेरिका वालो के हवाले कर दिया गया। उस नगर का महज खाली होना ही सयुक्त-राज्य की नैतिक विजय थी। वाशिगटन ने फौर्ज की घाटी से पडाव हटाने के बाद, क्लिटन का पीछा किया। उन्होने दृढ सकल्प किया कि वे क्लिटन को सबक सिखायेगे।

२८ जून को प्रात के समय उन्हे ऐसा मौका हाथ लगा। उस समय क्लिटन की पीछे की रक्षा-सेना मन्माऊथ कोर्ट-हाउस से प्रस्थान कर रही थी। रविवार का दिन था, जो भट्टी के समान तप रहा था। वाशिगटन ने अमेरिकी सेना के आगे चलने वाले रक्षा-दल को आज्ञा दी कि वह ब्रिटिश-सेना को लडाई के लिए ललकारे। यह कार्य उन्होने चार्ल्स ली को सौपा। यह वही जनरल था, जिसे दिसम्बर, १७७६ मे शत्रुओ ने पकड कर कैद कर लिया था और अभी-अभी बदले मे छुटा था। दोनो सेनाए लगभग बराबर सख्या मे थी। वाशिगटन को सैनिक दृष्टि से यह लाभ था कि उन्होने स्थान बदलती हुई शत्रु की सेना को मुकाबले के लिए तैयार किया था, किन्तु विचित्र-प्रकृति ली ने प्रगट रूप से इस योजना का विरोध किया।

ली आगे बढा, किन्तु बिना अधिक आत्म-विश्वास के और जब क्लिटन शीघ्रतापूर्वक कुमक लेकर आया, तो वह पीछे को हटा—फूहड ढग से। वाशिगटन यह देखकर भयभीत हुए। उन्हे खीझ भी आई। मौके पर पहुच कर उन्होने ली की सेना की भगदड रोक दी और उसके मोर्चे को जहा-तहा मजबूत किया। किन्तु पूरे जोर-शोर से लडाई नही हुई और उस रात जबकि प्रत्येक पक्ष के लगभग तीन सौ पचास सैनिक हताहत हुए, क्लिटन के लाल-कोट

फौजी विधिवत् न्यूयार्क की ओर बढते चले गए। वे सैंडीहुक पर पहुच कर जहाजो मे बैठे और इस प्रकार समुद्री-मार्ग से उन्होने अपनी यात्रा पूरी की। वाशिगटन के हाथ से एक उत्तम अवसर जाता रहा। बाद मे ली का (जिसे गम्भीर अवज्ञा का अपराधी पाया गया और अवशिष्ट युद्ध-काल के लिए सक्रिय कमान से हटा दिया गया) कोर्ट-मार्शल हुआ। परन्तु इससे शत्रुओ द्वारा पहुचाये गये आघात की मरहम-पट्टी कैसे हो सकती थी ? इस मन्माऊथ की मुठभेड के बारे मे जो भी कुछ और कहा जाए, इससे इस बात का एक और प्रमाण मिल गया कि वाशिगटन मे अभ्याक्रामी प्रवृत्ति थी। इस घटना से केवल इतना ही प्रकट नही होता कि वह ट्रेन्टन या जर्मनटाउन के समान ही गोलियो की बारिश मे भी साहस प्रदर्शित कर सकते है, बल्कि यह भी जाहिर होता है कि उन्होने युद्ध-समिनि की सलाह के विरुद्ध बहुत बडे पैमाने पर युद्ध को लाने की कोशिश भी की थी। सम्भव है कि उनका प्रयोजन व्यावहारिक हो, क्योकि उन्हे आशका थी कि न्यू जरसी की मिलिशिया अपनी-अपनी फसले काटने के लिए बीच मे छोडकर चली जायगी (जैसा कि बाद मे उन्होने अविलम्ब किया)। अथवा उन्होने शायद यह महसूस किया हो कि अमेरिका के नैतिक स्तर को 'किसी सहारे की जरूरत है, (ताकि) हमे भी उभारे रखे।' (उन्होने इस वाक्याश को कुछ समय बाद प्रयुक्त किया)। उनके इस प्रकार के व्यवहार के जो भी कारण रहे हो, इसमे दिलचस्प बात यह है कि वह इस औपचारिक युद्ध मे अपनी सेना को झोकने के लिए उत्सुक थे।

भूतगत घटनाओ पर विचार करते हुए हम देखते है कि फ्रासीसियो की समित्रता ने लडाई का पासा पलट दिया। एक बार जब ब्रिटिश सेनाए अपने पुराने शत्रु और स्पेन से जूझ गईं, तो उनके समुद्र के एकाधिकार को चुनौती मिली। इस प्रकार १७७८ मे वे अमेरिका के लिए आते हुए फ्रासीसियो के समुद्री बेडे को, जो कामटे डी एस्टेईग के सचालन मे था, रोक नही सके। ससार के शेष भागो

से उनकी सख्त माग थी—भू-मध्य सागर मे, जहाँ कि जबराल्टर घेरे मे घिरा हुआ था, वैस्ट इण्डीज मे और यहाँ तक कि हिन्द महासागर की तरफ भी। उन्हे फ्रास-स्पेन के इकट्ठे आक्रमण की सम्भावना का भी मुकाबला करना था (यद्यपि इसने व्यावहारिक रूप धारण नही किया)। दिसम्बर, १७८० मे हालैण्ड भी ब्रिटेन के शत्रुओ से जा मिला और उसी वर्ष ही, रूस के नेतृत्व मे, योरूप के कई देशो ने सायुध तटस्थता-सघ बना कर ब्रिटेन के प्रति अपनी शत्रुता प्रदर्शित की।

बीती हुई घटनाओ पर पुन विचार करते हुए हम देखते है कि फोर्ज की घाटी अमेरिका-वासियो के प्रयासो के लिए अधोबिन्दु सिद्ध हुई। उसके बाद से वाशिगटन ने एक सैनिक नेता के रूप मे, बिना किसी आपत्ति के, प्रथम स्थान पाया। हो से यह आशा थी कि वह वाशिगटन को जर्मन टाउन और ब्राडीवाइन के स्थानो पर तीसरी और अन्तिम बार हरायेगा, अथवा फोर्ज घाटी पर सरदी के मध्य मे अकस्मात् चढाई करके सम्भवत उसे परास्त करेगा। किन्तु जब उसने छुट-पुट सफलताओ को ही अपना साध्य बना लिया, तो उसके लिए कभी ऐसा समय नही आ सकता था कि वह वाशिगटन को एक बार मे खत्म कर दे अथवा उनकी हेतु-पूर्ति मे किसी प्रकार की बाधा डाले। अब यदि फ्रासीसी अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहते है, तो सयुक्त-राज्य को विजय तथा स्वतन्त्रता की प्राप्ति मे सफलता मिलना कोई दूर की बात नही थी।

यदि फोर्ज घाटी की घटना के बाद सब बाते ठीक प्रकार से घटी होती, तो एक सुन्दरतर कहानी बनी होती। किन्तु हम जो इतनी आशावादिता से बोल रहे है, उसका कारण यह है कि हम घटनाओ को पीछे से देख रहे है। जब वाशिगटन की सेना मन्माऊथ से प्रयाण किए जा रही थी और न्यूयार्क को गोलाकार मे घेरती हुई वाईट प्लेन्ज मे युद्ध की स्थिति मे खडी हो रही थी, तो भौगोलिक दृष्टि से वह वही थी, जहाँ कि दो साल पूर्व। सप्ताह, मास और साल बीतते जा रहे थे। क्षितिज की बाते अधिक सन्तोष नहीं

दे सकती थी, जबकि आगे का रास्ता ही खत्म होने का नाम नही लेता था। उसकी पत्नी, मर्था, प्रत्येक शरद् मे कुछ काल उनके पास आकर रहती थी। किन्तु, माऊटवर्नन, जहाँ अब उसका चचेरा भाई, लुड वाशिंगटन, कार्यभार सम्भाले हुए था, अवश्य ही उन्हे अत्यधिक दूरी पर लगा होगा। माऊटवर्नन प्राय उनके मन मे बसता था—यहाँ तक कि असम्भव क्षणो मे भी हम उन्हे थोडी देर के लिए अपने सरकारी मामलो को एक तरफ रख कर कृषि-सम्ब धी परीक्षणो के विषय मे अथवा गृह-भवन के विस्तार के लिए निर्देश देते हुए पाते है। (जैसे, 'इस बसन्त मे तुम्हारे यहाँ कितने मेमने हुए ?' 'क्या तुम्हे आशा है कि रग-रोगन और तेल मिल जायेगा ?' 'क्या तुम प्याजा के पत्थर के फर्श की मरम्मत कराने लगे हो ?' 'क्या तुमने चरागाहो के लिए और भूमि को लेने के प्रयास किए है ?' इत्यादि।) वह बार-बार अपनी चिट्ठियो मे 'अपने ही अगूरो की लताओ और अजीरो के पेडो' की छाया के नीचे आराम करने के स्वप्नो का उत्साहपूर्वक उल्लेख करते है, मानो बाइबल के ये वाक्याश सक्षेप मे उनके जीवन मे सन्तोष की भावना लाने के लिए सब कुछ हो।

मुकाबले मे, उनके बिल्कुल इर्द-गिर्द शान्ति का नामो-निशान न था। फ्रासीसियो की समित्रता के समाचार प्रोत्साहन देने वाले थे, किन्तु अमेरिका मे इनका पहला असर निराशा जनक था। डी एस्टैग का समुद्री-बेडा जुलाई, १७७८ मे ठीक समय पर पहुँच गया। चूकि न्यूयार्क नगर को लेना दुष्कर कार्य था, अत वाशिंगटन ने यह इतजाम किया कि फ्रासीसी उस अमरीकी फौज के साथ मिल जाए, जिसका नेतृत्व सुलीवान कर रहा था। फिर यह मिश्रित सेना रोड-द्वीप स्थित ब्रिटिश सेना पर आक्रमण करे। डी-एस्टैग को ब्रिटिश बेडे के साथ उलझना पडा। परिणामत फ्रासीसी बेडा वैस्ट इण्डीज की तरफ लौट गया। इधर सुलीवान समुद्री-सेना का सहारा न मिलने के कारण ब्रिटिश सेना पर विजय पाने मे असफल रहा। इस प्रकार समित्रता का आरम्भ अच्छे शकुनो के साथ नही हुआ। स्पष्टत सयुक्त-सग्राम मे सम्पूर्ण-रूप से नई समस्याए उठती-उभरती

रही, जिन्हे सुलझाने के लिए वाशिंगटन को अपनी सारी प्रतिभा और होशियारी का प्रयोग करना पडा। फ्रासीसी बेडा केवल उधार पर ही मिल सकता था, अत यह कठिन था कि बहुत पहले तत्सम्बन्धी योजना बनाई जाए। इस प्रकार सैनिक महत्व के निर्णय न केवल काग्रेस को ध्यान मे रख कर करने पडते थे, बल्कि फ्रास के दरबार तथा अमेरिका-स्थित फ्रासीसी सेनापतियो के दृष्टिकोणो को भी ध्यान मे रखना पडता था।

वास्तव मे, वाशिगटन को यह भय था कि फ्रांस के बीच मे पडने से कही ऐसा न हो कि उसके अपने देशवासी अपने प्रयासो मे भयकर-रूप से शिथिल हो जाये। जहाँ तक शत्रुता (क्षति-पहुँचाने) का प्रश्न है, अमेरिका के लोगो की अपनी उदासीनता और कार्यो मे अकुशलता इतनी ही खतरनाक थी, जितनी कि क्लिटन की समस्त लाल-कोट सेना। हो सकता है कि वाशिंगटन को ही ऐसा प्रतीत होता हो, क्योकि हमे यह भूलना नही चाहिए कि उन्हे अपना अधिकतर समय युद्ध करने मे नही, बल्कि अनन्त प्रशासनिक सकटो के समाधान मे गुजारना पडता था। उन्हे इतना ज्यादा पत्र-व्यवहार करना पडता था कि कभी-कभी उन्हे एक ही समय बहुत से सचिव रखने पडते थे और जो भी चिट्ठिया वे लिखते थे, उनका सम्बन्ध खुराक, शस्त्रास्त्र, बारूद, वस्त्र, कम्बलो, घोडो, वेतन (जो निरन्तर अवशिष्ट रहा करता था), अथनाओ, भर्ती-कार्यो, उन्नतियो (और उन्नतियो के लिए इन्कारो), दण्डो, उपहारो, मिलिशिया के अभ्याशो इत्यादि से था। वह महसूस करते थे कि इस प्रकार के श्रम बहुत हद तक घटाए जा सकते है, यदि काग्रेस, मित्र-राज्य तथा व्यक्तिगत रूप से अमेरिकावासी अपनी जिम्मेदारियो को पूरी तरह निभाए। यह सम्भव है कि वह आवश्यकता से अधिक शिकायत करते थे और अपनी सेना की न्यूनताओ को बताने मे कुछ हद तक अत्युक्ति से भी काम लिया करते थे। किन्तु उनका यह रवैया ठीक उस बुद्धिमान ग्राहक की तरह था जो इसलिए अपनी आवश्यकता से बढ-चढ कर मागता है, क्योकि वह जानता है कि इसकी माग को पूर्ण

रूप से पूरा नही किया जायगा। फिर भी, सच तो यह है कि वह अत्युक्ति नही कर रहे थे, जबकि उन्होने १७८१ के अप्रैल मे घोषणा की कि 'हम अपनी सीमाओ के अन्त मे पहुँच गए है।' उनके ख्याल मे उस वर्ष फोर्ज घाटी की शरद् कुछ अवस्थाओ में १७७८-१७७९ तथा १७७९-१७८० की शरद जैसी सख्त नही थी, क्योकि इनमे से प्रत्येक वर्ष सयुक्त-राज्य की सेना मे छुटपुट विद्रोह हुए थे। नैथानील ग्रीन ने दक्षिण से लिखते हुए इसी प्रकार के अशुभ लक्षणो का सत्यापन किया। उसने लिखा—"जब तक इस सेना को आशाओ से अधिक पोषण और सहारा नही मिलता, यह देश (अर्थात्-दक्षिण-भाग) हाथो से ऐसा निकल जाएगा कि दुबारा जीत कर वापस लेना असम्भव हो जाएगा।"

यह समझ मे आता है कि वाशिगटन का रोष ब्रिटिश लोगो और उनके अमेरिका के अनुदार दल के 'टोरी' समर्थको के खिलाफ (दिनो-दिन) क्यो बढता जा रहा था। वफादार कौन है ? इस बारे मे क्लिटन और वाशिगटन मे से प्रत्येक का उत्तर एक दूसरे से विरुद्ध था। यह ठीक है कि उनमे से हर एक अपने उस उत्तर के औचित्य को अपने दृष्टिकोण से सिद्ध करने की कोशिश करता। एक की नजरो मे 'टोरी' देश-भक्त थे, किन्तु दूसरे की राय मे वे सम्भाव्यत देश-विद्रोही थे। वाशिगटन अपने सुविकसित गुप्तचर-विभाग को एक यथार्थ सहायक अग के रूप मे मानते थे, किन्तु तादृशी क्लिटन की क्रियाओ को वह अनुचित और निंद्य समझते थे। इससे ठीक उल्टा क्लिटन का दृष्टिकोण था। क्लिटन को 'टोरी' लोगो के उत्साह-हीन रवैये से निराशा हुई, यद्यपि सिमकोज रैगर्स तथा अन्य राजभक्त सस्थाओ ने उसकी मूल्यवान सेवाए की। दूसरी ओर 'टोरी' लोगो की इगलैण्ड के प्रति गुप्त सहानुभूति से वाशिगटन का दिल खट्टा हो गया था। यहाँ-तहाँ देश-विद्रोही लुके-छिपे मौजूद थे। कोई यह निश्चयपूर्वक नही जानता था कि आया चार्ल्स ली अपने कारागार के दिनो मे शत्रुओ द्वारा 'भ्रष्ट' कर दिया गया था या नही। क्या यह ठीक नही था कि उसे १६ वें लाईट ड्रैगून के तथा

हो के प्रहरियो द्वारा ले जाया गया था ? सोलहवी लाईट ड्रैगून उसकी पुरानी रैजमैण्ट हुआ करती थी, जबकि वह ब्रिटिश अफसर था। सन् १७७८ के जून मास मे पैट्रिक हैनरी वर्जीनियावासियो की मानसिक स्थिति से इतना उद्विग्न हो उठा था कि उसने अपने राज्य के एक काग्रेम सदस्य को लिखा—"परमात्मा के लिए अपने देश की सभाओ को उस समय तक मत छोडिये जब तक कि आप हमे 'ग्रेट ब्रिटेन' से सदा के लिए पृथक् होते हुए न देख ले। पुराने विस्तृत प्रभाव भी आज अपना रग दिखा रहे है। मिश्र के मास के बर्तन आज भी अपने स्वाद के कारण लोगो की जीभो को कलुषित कर रहे है।' उसके शब्द दो साल बाद किसी सिद्ध की वाणी के समान ही सच्चे साबित हुए, जबकि बैनीडिक्ट आरनाल्ड, जो अमेरिका की सेना मे सर्वाधिक त्वरित गति से काम करने वाला अफसर माना जाता था, वैस्ट पौआइट की रक्षा-पक्ति के रहस्योद्घाटन करने पर उद्यत देखा गया। आरनाल्ड न सिर्फ बच कर भाग गया, बल्कि इससे भी खराब बात यह हुई कि उसे मुक्तहस्त इनाम मिला—वह अग्रेजी सेना मे ब्रिगेडियर-जनरल बना दिया गया। इस उच्च पद पर आकर उसने कनैक्टीकट और वर्जीनिया मे विनाशकारी छापे मारे। इस षडयन्त्र का पता उस समय चला जबकि मेजर एण्ड्रे, जो एक आकर्षक युवक और ब्रिटिश सेनाधिकारी था, पकडा गया। वह उस वक्त क्लिटन के हुक्म के मातहत आरनाल्ड के पास आ-जा रहा था। वाशिंगटन ने तब उस कठोरता से, जिसकी गध भी उनमे नही पाई जाती थी, उस गुप्तचर को फासी के तख्ते पर चढवा दिया।

ये दिन ही कडे थे। मन्माऊथ मे ग्रीष्म काल के मध्य के बाद, लम्बे मध्यान्तर मे, इस प्रकार के शब्द जैसे 'मान-हानि', 'व्यग्रता', तथा 'दुर्भाग्य' निस्सकोच रूप से वाशिंगटन की लेखनी से प्राय निकला करते। यह बात न केवल अभियानो के सम्बन्ध मे, बल्कि पडाव के दौरान मे भी सार्थक थी। अमेरिका की सेना ने भूमि पर कुछ छुट-पुट सफलताए अवश्य प्राप्त की, परन्तु जान पाल जोन्स और अन्य कई लोग भी, जो नव नौसेना मे कैप्टन के पद पर थे,

जल पर अपनी भिन्न-भिन्न छोटी-मोटी लडाइयो मे बडी कामयाबिया हासिल करते रहे । किन्तु इन सबसे युद्ध की दशा मे कोई अन्तर नही पडा । ब्रिटिश लोगो ने अपना मुख्य ध्यान दक्षिण के क्षेत्र पर केन्द्रित किया । उन्होने न्यूपोर्ट को १७८० के अन्त मे खाली कर दिया, ताकि अपनी सेनाओ का अधिक लाभ के साथ दूसरे स्थानो मे प्रयोग कर सके । उन्होने एक साल पूर्व जार्जिया मे सवन्नाह को अपने कब्जे मे कर लिया था और अब १७८० के शरत्काल मे क्लिटन ने समुद्री मार्ग से सेना लाकर चार्ल्सटन पर घेरा डाल दिया । उसके सकार्यो मे अनेक विघ्न-बाधाए थी, किन्तु फिर भी उसे यथेष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हो रही थी । चार्ल्सटन अमेरिका वालो के कब्जे से निकल गया । उनके साथ पाच हजार से अधिक अमेरिका रक्षादल के सैनिक भी शत्रु के हाथ लगे । यह इस लडाई की सर्वाधिक मूल्यवान क्षति थी । क्लिटन तो न्यूयार्क लौट गया, परन्तु वह अपने पीछे आठ हजार सैनिक कार्नवालिस के अधीन छोड गया, ताकि जार्जिया और दक्षिणी कैरोलीना को राजभक्तो की रक्षा के रूप मे अपने कब्जे मे रखा जासके । वार्शिगटन मजबूर हो कर हड्सन पर ही रहे, क्योकि उन्हे क्लिटन पर नजर रखनी थी । दक्षिणी रण-क्षेत्र के लिए जो कुछ उनके बस मे था, उन्होने किया । जितने सैनिक वह बचा कर भेज सकते थे, उन्होने वहा भेजे । कांग्रेस ने होरेशो गेट्स को कमान सम्भालने के लिए दक्षिण की ओर भेजा ।

आखिरकार सघर्ष नाटकीय ढग से त्वरित गति से आगे बढा । इसके मुख्य-मुख्य अभिनेता, अनजाने मे, हजारो मीलो की विस्तृत भूमि पर सैनिक हलचलो मे जुट गये ताकि मिल कर अन्तिम निर्णयात्मक लडाई लडे । छोटे दर्जे के अभिनेताओ को, चाहे वे इस योग्य थे या नही, असम्बन्धित समझ कर एक तरफ हटा दिया गया । इनमे कई एक इन क्षेत्रो मे प्रसिद्धि पा चुके थे, जैसे कि गेट्स । किन्तु उसने अगस्त १७८० मे दक्षिण कैरोलीना के कैमडन स्थान पर कार्नवालिस से जबरदस्त शिकस्त खाई थी, जिसके फलस्वरूप वह तीन मास के अन्दर-अन्दर अधिक्रमित हो गया । सम्मानित

बैरन डी काल्ब, कैमडन के स्थान पर, घातक रूप से आहत हो गए, जिसके कारण इस लडाई मे सम्मिलित नही हो सके । चार्ल्स ली का पहले ही बहिष्कार हो चुका था। क्लिटन न्यूयार्क मे बन्द हो जाने से और हिलजुल न सकने के कारण दात पीस रहा था। अपना निदान करते हुए उसका मत था कि वह एक 'लज्जाशील कुतिया' की तरह रह गया है, वह इतिहास के सौभाग्यवान् सेनानायको मे से नही है।

इस नाटक के शेष पात्रो मे पाच प्रमुख थे और अन्य (ग्रीन, सट्यूबेन, आदि) उनके सहायक। इन पाचो के नाम थे कार्नवालिस, लिफायट, वाशिंगटन और दो बाद मे हुए कोम्टे दी रोचम्बियू और एडमिरल डी ग्रास।

कार्नवालिस का १७८०-८१ का शरद् अभियान निर्णायक रहा। यह उसका दुर्भाग्य था, क्योकि यह एक योग्यतापूर्ण अभियान था। उसका हमला वेगपूण था, उसके पास सब साधन थे और उसने अमेरिका की परिस्थितियो के अनुसार अपने सैनिक व्यूह-कौशल को ढाला था। वह और उसकी घुडसवार सेना के नेता, बनैस्टर टार्लेटन ने गेट्स को कैमडन पर परास्त किया था। और (मार्च १७८१ मे मिल्फोर्ड के कोर्ट हाउस के पास) ग्रीन पर जोर की चोट की थी। इसके बावजूद, कार्नवालिस मानो पानी पर लिख रहा था। जैसे ही वह शीघ्रता से उत्तर की ओर जाता, फिर दक्षिण मे आता, बाद मे फिर उत्तर की ओर लौटता, उसके पीछे प्रतिरोध नए सिरे से उठ खडे होते। मई के मास मे वह वर्जीनिया मे था, जहा टार्लेटन ने गवर्नर थामस जैफर्सन को तथा घबराए हुए राज्य-सविधान-सदस्यो को लगभग पकड ही लिया। कार्नवालिस साहसी था और प्रतिभावान भी। किन्तु दुर्भाग्य ने उसे आ घेरा। जब वह लैफाएट और स्ट्यूबन के नेतृत्व मे फुर्तीली अमरीकी सेना को खत्म करने मे असफल रहा, तो उसने समुद्री तट पर पहुचकर क्लिटन से सम्पर्क जोडने का निश्चय किया। उसने समुद्री-तट पर यार्क टाऊन को चुना। गत अभियानो मे इसलिए ही सफल नही

हुआ, क्योकि वह अतिशय सतर्कता से काम लेता था और बर्गोयने को इस वास्ते सफलता नही मिली, क्योकि वह सतर्कता जानता ही नही था। यद्यपि क्लिटन और हो इस पहलू मे मिलते जुलते थे, कार्नवालिस ने (जैसा कि एक समकालीन ने टीका-टिप्पणी की) 'पूर्णतया बर्गोयने के सदृश व्यवहार किया।' यार्कटाउन की रक्षा आसानी से नही हो सकती थी और कार्नवालिस के पास आठ हजार से कम आदमी थे।

वाशिंगटन ने पहले तीन सालो मे जो यातनाए भोगी वे किसी के भी प्राण खुश्क कर सकती थी। बाद के तीन साल इस प्रकार के थे कि कोई मनुष्य भी अपना धैर्य खोए बिना नही रह सकता था। अब वह समय आ गया था जबकि उसकी परीक्षा होनी थी कि वह कहा तक भगवान् द्वारा दिए गए अवसर का लाभ उठाने की क्षमता रखते हैं। इस समय उनकी आजमाइश थी कि वह कहा तक पहले की तरह अत्यन्त अल्प शक्ति से सम्मिलित सेनाओ के साथ मिल कर सैनिक कार्यवाहियो द्वारा सदा के लिए समित्रता के महान् उद्देश्यो को पूर्ण कर सकते है। यह अवसर रोचमब्यू और डी-ग्रास के द्वारा पैदा हुआ। इन मे से पहला व्यक्ति सुयोग्य सैनिक और सुशील स्वभाव का था। वह न्यूपोर्ट मे पाच साल से फ्रासीसी सैनिको के साथ पडाव डाले हुए था। डी-ग्रास फ्रास के वैस्ट इण्डीज बेडे का सेनापति था। उसने यह खबर भेजी कि उसके जहाज तथा तीन हजार और फ्रासीसी सैनिक कुछ समय के लिए अमेरिका वालो को मिल सकेंगे। उसने यह भी बतला दिया कि वह चैसापीक खाडी की तरफ बेडे के साथ प्रस्थान कर रहा है।

वाशिंगटन इस बात पर विचार कर रहे थे कि वह रोचमब्यू के साथ मिल कर न्यूयार्क पर हमला करे। जब उन्हे डी-ग्रास का पत्र मिला, तो उन्होने अपना इरादा बदल दिया और वर्जीनिया की ओर सेना लेकर बढे। डार्चेस्टर हाइट्स के बाद यह पहला अवसर था कि उनकी हर बात बिना किसी विघ्न-बाधा के सम्पादित हुई, मानो इस काण्ड मे भाग लेने वाले पात्रो द्वारा पूर्वाभिनय हो चुका

हो। डी-ग्रास चैसापीक खाडी के मुख्य द्वार पर ब्रिटिश सगुल्भ से पूर्व ही पहुच गया। वहाँ पहुच कर इसने कार्नवालिस का समुद्र की ओर का बाहरी मार्ग बन्द कर दिया। कुछ ही दिनो के अन्दर-अन्दर वाशिंगटन, रोचम्ब्यू, लिफायट और डी-ग्रास का एक स्थान मे अभिसरण हुआ और वे आपस मे मिले। १७ हजार समिलित सेनाओ ने (जिनमे से आठ हजार फ्रासीसी थे) न्यूयार्क को घेर लिया। उस समय फ्रासीसियो की नौ-सेना-शक्ति सर्वोच्च थी। यह आक्रमण एक चमत्कार था जो कार्यान्वित हुआ। ऐसा मालूम हो रहा था कि यह नाटक मानो वाशिंगटन के अपने ही व्यवस्थापन मे खेला जा रहा हो। कुछ ही मीलो की दूरी पर विलियम्सवर्ग था, जहा अठाईस वर्ष पूर्व उन्होने ओहियो प्रदेश से लौट कर डिनविड्डी को (फ्रास देश के राज-चिन्ह वाले) फ्रासीसियो की अतिक्रमण-सम्बन्धी चेतावनी दी थी। किन्तु अब सन् १७८१ के सितम्बर और अक्तूबर के महीनो मे वाशिंगटन इस बात से सम्यगतया सन्तुष्ट थे कि वह फ्रास-देश के राज-चिन्ह (झण्डे) को अमेरिका के झण्डे के साथ (जिसमे एकातरिक लाल और सफेद तेरह धारिया होती है और नीली पृष्ठभूमि पर तेरह सफेद सितारे) एक पक्ति मे लगा दे।

वाशिंगटन की सयुक्त-राज्य की सेना यह कोशिश करती थी कि वह भी व्यावसायिक योग्यता रखने वाली फ्रास की सेनाके पद-चिन्हो पर चले। यह वह युग था जबकि सेना-शिष्टाचार का बोलबाला था और अमरीकी सेना मे पुरानी फटे-हाल रहने की अवस्था बीत चुकी थी। समित्र सेनाओ ने तोप-गोलो से नगर पर ज़बरदस्त मार की। यह देखकर कार्नवालिस का दिल बैठ गया कि उसकी अपनी सेना शत्रु की सेना से आधी है और तूफान के कारण यार्क नदी को पार करके ग्लाऊसैस्टर पाइट पर पहुँचने के उसके सारे प्रयत्न विफल हुए है। १७ अक्तूबर को, जिस दिन कि साराटोगा की विजय का तीसरा वार्षिकोत्सव था, कार्नवालिस ने वाशिंगटन को एक सक्षिप्त और दर्द-भरा पत्र भेजा। यह हृदय-

वेदना ऐसी थी जिसे केवल कल्पना मे ही लाया जा सकता है। उसने लिखा —

श्रीमान्,

मैं यह प्रस्ताव करता हू कि २४ घण्टो के लिए विरोधी कार्यवाहियो को बन्द कर दिया जाए और प्रत्येक पक्ष मे से दो अधिकारी नियुक्त किए जाए जो यार्क और ग्लाऊसैस्टर की चौकियो के आत्म-समर्पण की शर्ते तय करे।

मेरा गौरव है—आदि-आदि

**कार्नवालिस**

शब्द 'गौरव' के स्थान मे यदि कार्नवालिस वाशिंगटन के अशुभ दिनो का वर्णन करनेवाले शब्दो मे से कोई शब्द, जैसे—'मान-हानि' 'व्यग्रता', 'दुर्भाग्य' का प्रयोग करता, तो उसकी मानसिक अवस्था का ठीक चित्रण होता। उस समय जनरल वाशिंगटन के लिए यह ड्रामा अपनी गौरवशाली पराकाष्ठा के क्षणो मे था, जबकि ब्रिटिश और हैसियन सेनाए अपने-अपने झण्डे फहराती हुई पक्तिबद्ध होकर, एक एक बटैलियन करके, हथियार समपण करने के लिए चली जा रही थी। इस चमत्कार के लिए ससार के कोने-कोने मे वाशिंगटन की (जिसमे कि ब्रिटेन भी शामिल था) सराहना हुई। अब हम इस योग्य हो गए हैं कि इस कहानी को यही समाप्त कर दें।

किन्तु—कोई कहानी 'किन्तुओ' से इतनी भरी हुई नही है जितनी कि यह। अभी सघर्ष का अन्त नही हुआ था। इस खुशी की चरमसीमा के प्रभाव को कम करने के रूप मे, आगामी दो वर्ष ऐसे बीते जो उकताने वाले नाटक के उपसहार के सदृश थे। लडाई की स्थिति उल्लास, सन्देह और परस्पर दोषारोपण के मिश्रित वायुमण्डल मे धीरे-धीरे विलीन हो गई। यार्क टाऊन मे जो प्रसन्नता की लहर दौडी थी, वह वाशिंगटन के सौतेले बेटे जैक क्यूटस की असामयिक मृत्यु के कारण अधिच्छादित हो गई। अगरक्षक के रूप मे काम करते हुए जैक को 'कैम्प-ज्वर' हुआ था। इस दुर्घटना के अतिरिक्त, वाशिंगटन को जो खुशी सयुक्त-राज्य सेना के अन्तिम

मुहासिरे मे अत्यन्त श्रेष्ठ कार्य करने पर हुई थी, वह अगले कुछ महीनो मे जाती रही। कारण यह कि उनकी सेना मे दोषारोपण और शिकायतो का सिलसिला शुरू हो गया। उनके सैनिको ने यह युक्ति दी कि जहाँ अन्य देशो के सैनिको ने लडाई के कारण खूब मजे किये हैं, वहा उन्होने भुखमरी काटी है। उनका यह कहना था कि जब उन्होने सयुक्त-राज्य अमेरिका के लिए स्वतन्त्रता हासिल की है, तो उन्हे अवशिष्ट वेतन के लिए दलीले देने की जरूरत ही क्या है? उस समय वाशिगटन को जो काग्रेस और अपने सैनिको के प्रति उत्तरदायी थे और जि हे उन से हार्दिक सहानुभूति थी, क्रुद्ध अफसरो को सा त्वना देने के लिए अपने पूरे चातुर्य से काम लेना पडा। वह सोचते होगे कि क्या उन्होने इसलिए ब्रिटेन वालो को हराया था कि एक-दूसरे के सिर फोडें?

किन्तु लडाई तो जीती ही गई। यार्कटाऊन की विजय के बाद कही भयकर युद्ध नही हुआ। ब्रिटेन का बेडा जो कार्नवालिस के लिए कुमक लाया था, बिना किसी उपयोग मे आए न्यूयार्क वापस चला गया। साराटोगा के बाद भी क्लिटन अपने बेडे को न्यूयार्क वापिस ले आया था। कुछ अर्से के बाद हो का अनुसरण करते हुए उसने त्याग-पत्र दे दिया और इगलैण्ड के लिए रवाना हो गया। शेष कहानी, जहा तक ब्रिटिश सेना का सम्बन्ध है, अरोचक थी। थोडा-थोडा करके इन लोगो ने अपने बोरिये-बिस्तरे बाधे, किले और बन्दरगाहे खाली की और अमेरिका छोड कर समुद्री-मार्ग से चल पडे।

पैरिस अब दिलचस्पी का केन्द्र बन चुका था। यहा अमेरिका के आयुक्त, जान एडम्ज, फ्रैंक्लिन, जे और लारैन्स—अपनी आशाओ से अधिक लाभप्रद सौदा तय कर सके थे। सयुक्त-राज्य की स्वाधीनता को मान लिया गया और उसका विस्तार समुद्र-तट से मिससिपी तक और ग्रेट लेक्स से स्पेनिश फ्लोरीडा तक समझा गया। यह समझौता सन् १७८३ के सितम्बर मास मे काग्रेस द्वारा सम्पुष्ट हो गया।

इस प्रकार जहा युद्ध मे सफलता मिली, वहा शान्ति भी प्राप्त हुई। जब वाशिंगटन ने जून, १७७५ मे सेना की कमान हाथ मे ली थी, तब उन्होनें मर्था को सान्त्वना देते हुए लिखा था कि वह 'आशा करता है कि उसके पास शरद् मे सुरक्षित लौटेगा।' हो सकता है कि उसके मन मे यह आशका हुई हो कि सम्भवत कर्तव्य सम्पादन मे उन्हे इससे बहुत अधिक समय लग जाएगा। किन्तु उन्होने कभी यह अनुमान नही लगाया था कि यह युद्ध-कार्य साढे आठ वर्ष तक चलता जाएगा। जब वह वापस घर लौटने लगे, तो उन्हे हार्दिक प्रसन्नता हुई। किन्तु इस सारे काल मे स्थिति मे जो परिवर्तन हुआ था, उसके कारण उन्होने गहरी भावना के साथ 'अपने सार्वजनिक जीवन को तिलाजलि दी।' इस अन्तरिम काल मे अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाए हुई थी। सन् १७८३ के मई मास मे न्यूयार्क नगर के फ्रासिस टेवर्न मे अपने अफसरो से विदाई लेते समय वह और उसके अधिकारी आसू बहा रहे थे। और जब कुछ दिन पीछे वाशिंगटन ने कांग्रेस को एनापोलिस मे अपनी प्रधान सेनापति की कमीशन वापिस की, तो उस मौके के महत्व एव बोझ ने दर्शकों को भावना-व्यग्र कर दिया। इतनी अधिक बाते कहने को थीं कि उन्हे जबान से कहना मुश्किल था। बेशुमार घटनाओ ने मिलकर इतिहास का निर्माण किया था और अब भी कर रही थीं। यह विचार अमेरिका-वासियो मे एव वाशिंगटन मे उस समय भी समाया हुआ था जब वह क्रिसमस से एक रात पहले माऊट वर्नन पहुचने के लिए घोडे पर सवार त्वरित-गति से जा रहे थे।

### प्रधान-सेनापति के वीरतापूर्ण कार्य

प्रश्न यह उठता है कि सेना-नायक के रूप मे वाशिंगटन का क्या स्थान है ? हम किस प्रकार विद्वेष-भावना तथा खुशामद त्याग कर उनके द्वारा सम्पादित कार्यों के बारे मे न्याय-सगत अनुमान लगा सकते हैं ? जिस प्रकार का युद्ध उन्हे करना पडा, वह हमे इजाजत नही देता कि हम इतिहास के दूसरे प्रसिद्ध अभियानो से उनके अभियानो का मुकाबला करे। यह युद्ध इस प्रकार का था

कि इसमे सिवाए अन्तिम लडाई के अमरीकियो ने शेष सब मे लगभग मार ही खाई। इसमे दूसरी खास बात यह थी कि कोई भी मुठ-भेड बहुत बडे पैमाने पर नही हुई। जहाँ तक हम निर्णय दे सकते हैं, वाशिंगटन ने रण-क्षेत्र मे किसी अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय नही दिया, यद्यपि उन्हे इसके लिए सीमित अवसर प्राप्त हुए थे।

सम्भवत यह हमारे लिए अत्यधिक न्याय-सगत होगा यदि हम उनकी तुलना अलैक्जैण्डर, फ्रैड्रिक अथवा नेपोलियन से न करके उनके अपने ही उन देशवासियो से करे, जिन्होने बाद मे अमेरिका के गृह-युद्ध मे भाग लिया। उनकी सैनिक-बुद्धि इतनी उन्मादपूर्ण नही थी, जितनी कि स्टोनवाल जैक्सन की थी। न ही उनका सैनिक ज्ञान इतना पूर्ण था, जितना कि राबर्ट ई० ली का। ली अथवा मैक्टेलेन की तरह वह अपने साधारण सैनिको मे उत्साहपूर्ण अनुराग भी उत्पन्न नही कर सके थे। टामपेन, जो सामन्तशाही से घृणा करता था, के लेखो से उत्तेजना पाकर वाशिंगटन बलपूर्वक कह सकते थे कि केवल भद्र लोग ही अफसर बनने के योग्य हैं। ये अफसर लोग ही उनकी अत्यधिक प्रशसा करते थे। वह आम सैनिको के साथ कम मेलजोल रखते थे। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि किसी ने—यहा तक कि ब्रिटिश पक्ष की ओर से भी किसी ने—(प्यार से या चिढाने के लिए) उनका उपनाम नही रखा। जब वे अपने समकक्ष लोगो के साथ बैठकर, रात के खाने के बाद, शराब पीते होते, या अपना मनचाहा भोज्य, अखरोट, खाते होते, तो उनसे ऐसे घुल-मिल जाते थे कि सबको बहुत अच्छा लगता था। किन्तु वह हसी-मजाक नही करते थे। अखरोट जरूर तोडते थे। एक साधारण सैनिक के लिये वह कठोर-स्वभाव, भयोत्पादक व्यक्ति थे। यह सच है कि वह उन सैनिको की आवश्यकताओ का ध्यान रखते, उनके खतरो और कष्टो मे उनके साझीदार बनते, किन्तु वह उनमे से नही थे। वह उनसे दूर-दूर रहते थे। अपने अनेक आदेशो मे वह इसी बात पर जोर भी दिया करते थे। उनके आदेश कठोर और भयोत्पादक

हुआ करते थे। उनमे प्राय निर्भत्सना तथा निषेधाज्ञाए पाई जाती थी। जहा कही उनमे प्रशसात्मक बात भी होती, तो उनमे बर्फ जैसी ठण्डक अर्थात् उत्साहहीनता पाई जाती। वे आदेश प्रशसा-युक्त नही होते थे, प्रत्युत प्रशसा प्रदान करने वाले होते थे।

इस बात को अधिक विस्तार देना कोई अक्लमन्दी नही है। न ही इसमे समझदारी है कि हम १८ वी शताब्दी के वर्जीनिया के भू-स्वामी से यह आशा रखें कि वह किसी बीसवी सदी के जनता-सम्पर्क-विशेषज्ञ सरीखा व्यवहार करेगा। तथापि समकालीन साथियो को भी वह चुप-चाप रहने वाले मनुष्य लगे। यह सत्य है कि युद्ध उनके लिए सब कुछ था, किन्तु उन्होने शाब्दिक रूप मे इसकी प्रमुख घटनाओ के अनुकूल अपने आप को नही ढाला था। जब साराटागा का समाचार उन्हे मिला, तो वह उस समय चार्ल्स विलसन पील से अपना चित्र बनवा रहे थे। पत्र हाथ मे लेते ही उनके मुह से निकला—'ओह ! बर्गोयने हार गया' और बस इतना कहने के बाद वह जैसे ही बैठे रहे। और जब कार्नवालिस ने घुटने टेके, तो काग्रेस को सूचित करने के लिये बजाय अपने आप सन्देश-सामग्री बनाने के, उन्होने अपने एक अगरक्षक अफसर को यह निर्देश दिया कि वह इस विषय मे सन्देश बनाए। यह सूचना सक्षिप्त विवरण के दायरे मे न रह कर निराशाजनक रूप से नीरस रचना बनी।

किन्तु यह उस प्रकार की गम्भीर त्रुटिया नही है, जिन्हे हम ध्यानपूर्वक अवलोकन से जार्ज बी० मैक्लेलेन नाम के दूसरे अमरीकी जनरल मे पाते हैं। अमेरिका के गृह-युद्ध के दौरान मे इस जनरल को कुछ काल के लिए सयुक्त-राज्य को बचाने का श्रेय प्राप्त हुआ था। इन दोनो व्यक्तियो मे यह विचित्र बात थी कि इनमे विनय-शीलता और आत्म-विश्वास पाए जाते थे। किन्तु मैक्लेलेन कोई प्रसिद्ध योद्धा नही था। शत्रु के सामने आने पर वह विनय का प्रदर्शन करता और जब उसके प्रमुख अफसर या सहयोगी होते, तो इस हद तक आत्म-विश्वास दिलाता कि वह मिथ्याभिमान का रूप ले लेता। इसमे शक नही कि वह एक सुयोग्य व्यक्ति था, किन्तु वह

बारी-बारी कभी तो अधीर और कभी भगवान् पर भरोसा करने वाला बनता। दूसरी ओर वाशिंगटन एक ऐसे योद्धा थे, जो अपवाद रूप मे कुछ मौको को छोड कर, हर समय अपने मन मे किसी विषय के बारे मे स्पष्ट धारणाए रखते थे। एक योद्धा के रूप मे यदि उन्होने कभी भूल भी की, तो जल्दबाजी की भूल की। वह अपने गहरे आत्म-ज्ञान द्वारा, जिसकी झाकी वह दूसरो को भी दिया करते थे, यह जानते थे कि वह इसलिए इस त्रुटि का शिकार होते है, क्योकि उन्हे इस बात पर क्रोध आता है कि कही लोग उन पर भीरु होने का आरोप न लगाए। दूसरे लोग चाहे फेबियस के व्यूह-कौशल का प्रशसात्मक रूप से अनुमोदन करते हो, किन्तु जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, वे कभी 'विलम्बकारी' फेबियस ककटेटर को दिमाग मे नही लाए।

अत यह बात ठीक है कि वाशिंगटन मे किसी पूर्ण योद्धा के गुण नही पाए जाते थे, किन्तु उनमे ऐसे व्यक्ति के गुण थे, जो असम्भव अपेक्षाओ को पूरा कर सकता है। काग्रेस सव प्रथम ऐसा सेनापति चाहती थी, जो स्वतन्त्रता की लडाई की शान को बढाये। वाशिंगटन ने इस कार्य को इतने सुसस्कृत ढग से किया कि चैथम जैसे अमेरिका से सहानुभूति रखने वाले अग्रेजो की बात दूर रही, ह्रो जैसे विरोधी भी उनका लोहा मानते थे। चैथम ने फरवरी, १७७७ मे हाउस आफ लार्ड्स मे कहा था——'अमेरिका वासी कोई जगली और कानून भग करने वाले डाकू नही हैं। वे ऐसे लोग नही हैं कि जिनके अपने पास हानि उठाने के लिए तो कुछ न हो, पर वे इसलिए सार्वजनिक उथल-पुथल मे भाग लेते हो कि इससे वे अपने हाथ रग सकेंगे। इस देश मे कितने ही ऐसे नेता हैं जिन्हे इस लडाई के फलस्वरूप बडी-बडी हानियो की सम्भावनाए हैं। मुझे बतलाया गया है कि जो सज्जन अमेरिका मे सेनाओ का सचालन कर रहे हैं, उनकी भू-सम्पति की वार्षिक आमदनी चार-पाच हजार पौण्ड है।' इससे अधिक महत्वपूर्ण छाप वाशिंगटन ने फ्रासीसियो पर डाली। सम्भवत उन्होने उन लोगो को प्रसन्न करने का भरसक प्रयत्न

किया था। यदि यह ठीक है, तो उन्होने इसमे आश्चर्यपूर्ण ढग से सफलता प्राप्त की। वह उन सबके लिए सचमुच बिना भय और धिक्कार के 'शिवालियर बयर्ड' थे। इसमे वे सब सहमत थे कि वाशिंगटन ऐसे सज्जन हैं कि जिनमे साधारण रूप से सन्तुलन और इयानतदारी पाई जाती है।

काग्रेस दूसरी चीज यह चाहती थी कि उसका प्रधान-सेना-नायक ऐसा हो, जो योरूप की सेना के नमूने पर भर्ती कर सके और उसका निर्देशन भी उसी ढग से कर सके, ताकि अमेरिका की सेनाए व्यवसायी सैनिको से लोहा ले सकें। उनका अभिप्राय सचमुच की अमरीकी सेना से था जो सयुक्त राज्य की शान के शाया हो। यह वाशिंगटन की भी प्रबलतम इच्छा थी कि अमरीकी सेना मे 'व्यवस्था, नियमितता और अनुशासन बद्धता' होनी चाहिए। यह सत्य है कि उन्होने इन तत्वो के समावेश के लिए केवल पैदल सेना को ही मुख्य-रूप से अपने सामने रखा। घुडसवार सेना और अन्य प्रकार की सेनाओ मे कुछ-कुछ उपेक्षा बर्ती गई। किन्तु उन्होने अपने दिमाग मे एक ऐसी सेना की तस्वीर बनाई थी जिसमे अनुभव प्राप्त योद्धा हो। यह उनकी नीति का एक आवश्यक अग था और यही कारण था कि लडाई के दौरान मे वह इतने दुखी रहा करते थे।

काग्रेस तीसरी बात यह चाहती थी कि सेना-नायक इस प्रकार का हो, जिसकी सेना मे बहुसख्यक अल्पकालीन मिलिशिया के लोग, अनियमित-रूप से भाग लेते हो। काग्रेस के मत मे डाकुओ को भी, चाहे चैथम ने अपने विचार इस बारे मे कैसे भी व्यक्त किए हो—भर्ती करने की छूट थी। काग्रेस को ऐसा आदमी चाहिए था जो इस प्रकार की अस्थाई सेना को वश मे कर सके और उनके विशेष गुणो का लाभ उठा सके। हमारे विचार मे शायद यहाँ काग्रेस ने वाशिंगटन से जो आशाए बाधी थी, उन्हे पूरा करना उनके लिए सम्भव नही था। वह स्वभाव से अमेरिका की तात्कालिक परिस्थितियो के लिहाज से कुछ-कुछ जरूरत से ज्यादा 'योरोपियन मनोवृत्ति' के थे। उनके मिलिशिया के अनुभव, वर्जीनिया-सीमान्त की घट-

नाओ के समय से लेकर अब तक के लगभग सतत रूप से कड़ुवे थे। ऐसा इत्तफाक हुआ कि बकर अथवा ब्रीड्स हिल से काउपेन्ज की मुठभेडो मे, जिनमे मिलिशिया ने नाम पाया था, वह मौजूद नही थे। इसलिए उन्हे यह स्वीकार करने मे झिझक थी कि मिलिशिया मे कभी उत्तम गुण मिल सकते हैं। इस मामले मे उनको पर्याप्त सभ्रम थे। वह प्रासगिक स्थितियो को छोड कर लाल-कोट वर्दी वाले (अग्रेज) सैनिको को परेशान करने मे रुचि नही रखते थे, बल्कि उन्हे इस बात मे दिलचस्पी थी कि येन-केन प्रकारेण उन्हे जमे हुए रणक्षेत्र मे बुरी तरह हराया जाये। यहाँ भी वह इतना कुछ कर सके, जितनी कि काग्रेस को किसी भुलक्कड से आशा हो सकती थी।

वाशिगटन निश्चय ही ऐसे कठोर अनुशासक नही थे, जो अमेरिका पर, अन्धाधुन्ध तरीको से विदेशी नमूने का सैनिक आचार-व्यवहार थोपना चाहते हो। वह इस बात को भली भाति जानते थे कि अमेरिका की परिस्थितियो के लिए विशेष ढग के, बल्कि अरूढिवादी, सैनिक-समाधान चाहियें। किन्तु वह इस प्रक्रिया को अधिक दूर नही ले जाना चाहते थे। जनरल की कार्य-विधि मे वे कार्नवालिस से बहुत मिलते-जुलते थे। कार्नवालिस एक नियमित-रूप से प्रशिक्षित सैनिक अफसर था, जिसे सुप्रशिक्षित सेना के साथ रणक्षेत्र मे लडने का अभ्यास था। वाशिगटन के सामने भी ऐसा ही लक्ष्य था।

सम्पत्तिवान भद्रपुरुष, दोष रहित प्रधान सेनापति गोरिल्ला लडाई मे शूरवीर योद्धा—इन सब गुणो का समावेश काग्रेस वाशिगटन मे चाहती थी। इनके अलावा काग्रेस यह भी चाहती थी कि ऐसा अनुपम व्यक्ति एक नागरिक के रूप मे अपने आपको समझे। उसकी यह भी ख्वाहिश थी कि इस प्रकार का प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सेनापति, जहाँ तेरह भिन्न भिन्न और अर्ध स्वशासित राज्यो की नियमित सेना एव मिलिशिया पर नियन्त्रण रखने के योग्य हो, वहाँ वह काग्रेस की सर्वोच्च सत्ता के आगे हर्षपूर्वक नतमस्तक रहे।

आश्चर्य तो यह है कि नितान्त असम्भव अपेक्षाए रखते हुए भी काग्रेस जार्ज वाशिंगटन मे लगभग वे सारी अभिवाछित बाते पा सकी। अतिरिक्त लाभ के रूप मे उसे एक ऐसा आदमी मिल गया, जिसमे असाधारण दृढता-स्थिरता थी। हमे इस बात की आशा नही कि बहुसख्या मे लोग फिट्स पैट्रिक द्वारा सकलित वाशिंगटन के लेखो का विशाल सस्करण आद्योपान्त पढ सके। उस सस्करण मे केवल युद्ध के समय से सम्बन्धित १०००० पृष्ठ हैं और जो उनमे दस्तावेज दिए गए है वे इतने सूक्ष्म विवरणो से भरे पडे है और इनमे इतनी अधिक पुनरावृत्तियाँ है कि उन्हे पढने के लिए मन मे तीव्र इच्छा जागृत नही होती। तो भी, इस महापुरुष के स्वभाव को समझने के लिए इन पुनरावृत्तियो का अनुशीलन करना आवश्यक है।

इस पुस्तक मे हम वाशिंगटन को सीधी-सादी भाषा मे, जिसमे न तो रस है और न शब्दाडम्बर, न अभिमान की बात है और न ही क्षमा याचना की ध्वनि, अपनी बात को बलपूवक और बार-बार कहते हुए देखते है। उनकी बात या तो सर्वमान्य होती है और या वह इस नतीजे पर पहुँचते है कि उसके माने जाने की बिल्कुल सम्भावना नही। यह बात विशेष रूप से यहाँ लागू होती है जबकि वह युद्ध का अन्त करने वाले साधनो के विषय मे, चाहे वे दूर भविष्य के ही क्यो न हो, लिखते हैं। विजय को अपना लक्ष्य मानते हुए उनकी दृष्टि उसी पर गढी रहती है। ब्रिटिश सेनापतियो के समान इस प्रकार की निराशाजनक भूल वह कभी नही करते थे कि अपने प्रमुख लक्ष्य को छोडकर गौड लाभ को अपने सामने रखे। वह विशेष रूप से बहुत बडे पैमानो पर युद्ध-चातुर्य नही चाहते थे (और सम्भवत उनका विश्वास था कि इसे अमल मे लाना उनका नही, प्रत्युत काग्रेस का कार्य है)। सन् १७७५-७६ के कैनेडा के आक्रमण के बाद उन्होने इस प्रकार की महत्वाकाक्षा-पूर्ण परियोजनाओ को कभी प्रोत्साहन नही दिया। इसकी बजाय उन्होने उन बातो पर सारा ध्यान केन्द्रित किया, जो नितान्त आवश्यक थी, जैसे—एक बडी सेना, इसके सचारण के उत्तमोत्तम

उपाय, राज्यो की ओर से अधिक शीघ्रतापूर्वक और उदारता से सेनाओ और युद्ध-सामग्री का भेजा जाना, ऐसी नौ-सेना, जो कम से कम, कुछ स्थलो मे ब्रिटिश नौ-सेना से बाजी ले जाय, आदि-आदि। यार्कटाऊन की विजय के रूप मे उन्हे बहुत देर के बाद अपने दीर्घकालीन प्रयत्नो का इनाम मिला।

साउथ कैरोलीना के डैविड रैम्जे ने १७८९ मे 'अमेरिका क्रान्ति का इतिहास' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की। उसने उस पुस्तक मे लिखा—'ऐसा विदित होता था कि युद्ध के कारण न सिर्फ सुयोग्य लोगो की आवश्यकता महसूस हुई, बल्कि उसके कारण सुयोग्य व्यक्ति बने भी।' यह बात जार्ज वाशिंगटन पर बिल्कुल ठीक बैठती है। लार्ड हो के सचिव एम्बरोसे सरले ने वाशिंगटन पर व्यग करते हुए उन्हे सन् १७७५ मे 'मिलिशिया का तुच्छ कर्नल' कहा था। किन्तु क्या उसे ऐसा समझना ठीक था? वाशिंगटन के आलोचक यह कहा करते थे कि वह अपनी (मानसिक और आध्यात्मिक) शक्तियो के लिहाज से इतना नही बढा, जितना कि वह जनता के आदर और श्रद्धा के कारण ऊचा उठा। परन्तु जब युद्ध का अन्त हुआ, तो उन्ही लोगो को यह मानना पडा कि वाशिंगटन को जो प्रतिष्ठा-पद मिला, उन्होने उसे शोभा और विनीत-भाव से सम्भाले रखा।

हम वाशिंगटन महोदय के व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया उन १० हजार सकुल पृष्ठो वाली पुस्तक से जान सकते हैं, जो फिट्स पैट्रिक महाशय द्वारा सकलित हुई। इन पृष्ठो मे हम उनमे थोडी थोडी मात्रा मे बढते हुए भरोसे, सूझ-बूझ और चित-स्थिरता के चिन्ह पाते है। फ्रासीसी अफसर जो सघर्ष की अन्तिम अवस्थाओ मे उनके साथ शामिल हुए थे (जब कि वे पहले से काफी ज्यादा परिपक्व हो चुके थे), उनकी टिप्पणिया भी उनके बारे मे इस प्रकार के विचार उद्घोषित करती है। वे टिप्पणिया उन्हे इस प्रकार का व्यक्ति जाहिर करती है, जो प्राय सब ही के आदर का पात्र है—यहा तक कि कुछ लोग उनके लिए पूज्य भाव भी रखते है, जिसे

देखकर चाहे लोगो के मन प्रफुल्लित न भी होते हो, पर वे सुख का अनुभव अवश्य करते है, जो खिलाने-पिलाने मे उदार है, किन्तु स्वय पियक्कड नही है, जो सुन्दर और अच्छे सिले हुए कपडे पहनता है, पर जिसमे तडक-भडक और दिखावा नही है, जो गर्वीला है, पर जिसमे मिथ्याभिमान की गन्ध तक नही है, अर्थात् जो तथ्य और पद दोनो के लिहाज से 'परम श्रेष्ठ' कहलाने योग्य है।

अमेरिका मे केवल वाशिगटन ही ऐसे व्यक्ति नही थे, जिनकी योग्यता का निर्माण आपातिक स्थिति के कारण हुआ था। सम्भव है कि होरेशो गेट्स जैसे सुयोग्य आदमियो को बदनाम करके उनकी ख्याति को अनुचित रूप से बढा-चढा कर पेश किया गया हो। लोग कह सकते हैं कि यदि उनके आसन पर कोई दूसरा आदमी भी बिठा दिया जाता, तो उनके समान ही वह पर्याप्त रूप से परीक्षा मे पूरा उतरता। उदाहरण के लिए यदि फिलिप्स स्कूलर को उनके स्थान पर नियुक्त किया जाता, तो सम्भव है कि वह अपने उच्च वश के तौर-तरीको और न्यूयार्क-सम्बन्धी प्रान्तीयता की भावनाओ से ऊपर उठ जाता, जिस प्रकार कि वाशिगटन ने भी न्यू-इगलैण्ड तथा अन्य उपनिवेशो के विरुद्ध अपनी प्रान्तीय पक्षपाती भावनाओ पर विजय पा ली थी। यदि नैथेनील ग्रीन, जो रोड-द्वीप का क्वैकर जनरल था और जो बहुत वफादारी से लडा था, सेनापति की हैसियत मे होता, तो सम्भवत अपने देशवासियो को सन्तुष्ट कर सकता था। किन्तु यह विश्वास करना कठिन है कि बुद्धिमान, किन्तु रूखे, चिडचिडे और क्रोधी स्वभाव का चार्ल्स ली शत्रुओ के आक्रमणो को रोक सकता। पर शायद आर्टिमस वार्ड जिसे ली ने घृणा से 'गिर्जेघर की देखभाल करने वाला' कह कर मार्ग से हटा दिया था, नेतृत्व की योग्यता रखता था, किन्तु सन् १७७५ में एक ओर धकेल दिए जाने के कारण उसका वह गुण अभिव्यक्त नही हो सका था। यह भी समझ मे आता है कि यदि बैनिडिक्ट आर्नल्ड अभिवाछित प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता, तो बजाय देश-विद्रोही बनने के अपने दोष को भस्मी-भूत कर देता। ये केवल अटकलपच्चू

बातें हैं। वास्तव मे ध्रुव सत्य यह है कि काग्रेस (और सयुक्त-राज्य अमेरिका) इस बात के लिए अपनी युक्ति-सगत आशाओं से भी अधिक सौभाग्यशाली रही कि उसने कर्नल वाशिंगटन को अपना प्रधान सेना-पति चुना। 'सुलभ' व्यक्ति, अपने छोटे-मोटे दोषो के बावजूद 'अपरिहार्य' व्यक्ति सिद्ध हुआ।

---

## अध्याय ४

# राष्ट्रपति वाशिंगटन

भगवान करे कि कृषक वाशिंगटन, सिनसिनेटस की भाति, हल जोतने के कार्य से हटाया जा कर महान् राष्ट्र का शासन करे!

(सन् १७८८ में, डिलावेयर स्थित विलिमिंगटन में ४ जुलाई को सम्पन्न समारोह में, 'टोस्ट' (स्वास्थ्य कामना) पेश करते हुए की गई प्रार्थना।)

### 'अपने भीतर निवर्त्तमान होना'

जनरल वाशिंगटन की तीव्र इच्छा थी कि वह कृषि के काम पर वापिस लौट जाए। वह भौतिक एव अध्यात्मिक रूप से सैनिक जीवन से थक चुके थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नही था—उनके दांतों मे सख्त तकलीफ थी। इसके बावजूद उन्हे नौ वर्षों तक भारी उत्तरदायित्वो का इकट्ठा बोझा ढोना पडा था। वास्तव मे, जैसा कि उन्हे शीघ्र पता चल गया, वे सन् १७८३ के बाद निजी जीवन बसर करने वाले ऐसे नागरिक बने, जिन्हे फिर कभी सच्चा एकान्त-वास नसीब नही हो सका। अत यह स्वाभाविक ही था कि वह शान्त जीवन का छोटा सा और उत्सुकतापूर्ण स्वप्न ले, वह कविता-मय ग्रामीण जीवन को अपने मस्तिष्क मे ले आए।

किन्तु इस ग्रामीण जीवन की छोटी सी कविता को परिस्थि-

तियो ने शीघ्र ही दबोच लिया। हा, इतना जरूर है कि हम उनकी इस कल्पना को उन पत्रो मे अब भी देख सकते हैं, जो उन्होने सन् १७७४ के आरम्भिक महीनो मे लिखे थे। वर्जीनिया के इस स्वाभिमानी बागान-स्वामी ने उन पत्रो मे माऊन्टवर्नन का उल्लेख करते हुए विचित्र विनम्रता का परिचय दिया था। तब उन्होने इसे 'झोपडी' और अपना 'देहाती घर' कह कर पुकारा था। इससे पूर्व कभी उन्होने इन शब्दो मे अपने विस्तृत भू-भाग का वर्णन नही किया। इस समय उन्होने स्वय को वैयक्तिक जीवन बसर करने वाला ऐसा अमरीकी नागरिक महसूस किया जो पोटोमिक नदी के किनारे पर अपना डेरा डाले हुए है और सैनिक कैम्प के भीड-भडाके और राज-दरबार के षडयन्त्रो से मुक्त होकर अपनी अगूरो की बैलो और अजीरो के पेडो की छाया तले रह रहा है।' उन्होने स्वय को एक ऐसा नागरिक महसूस किया जो 'अपनी अन्तिम घडी मे पहुचने तक जीवन की धारा के साथ-साथ धीरे-धीरे बहता चला जाएगा।' उनका कहना था--'मैं न केवल समस्त सार्वजनिक सेवा से निवृत्त हो चुका हू, बल्कि मैं अपने भीतर निवर्त्तमान हो रहा हूँ।'

सम्भवत वह अर्द्धचेतना से सिनसिनेटस का भाग अदा कर रहे थे। उन दिनो बहुत से आदमी उस देशभक्त से उनकी तुलना किया करते थे और बात को इस ढग से पेश करते थे कि जिससे यह प्रकट हो कि वह एक महत्वपूर्ण जागीरदार होने की अपेक्षा एक सरल व साधारण कृषक है। किन्तु उन्हे इस प्रकार के 'स्वप्न' लेने का अवसर अल्पकाल के लिए ही प्राप्त हो सका। यह देख कर कि उन्हे सेवा-निवृत्ति के तुरन्त बाद पर्याप्त अवकाश मिल जाएगा, उन्होने कई पुस्तको को खरीदने के लिए आदेश दे दिए। (इनमे कुछ पुस्तकें यात्रा की कहानिया थी, जिनसे उनके दूसरे स्वप्न अर्थात् फ्रास मे जाने का सकेत मिलता है, जहाँ उन्हे लिफायट और अन्य लोगो द्वारा स्नेहपूर्ण स्वागत की आशा थी। परन्तु वह स्वप्न भी मिथ्या सिद्ध हुआ।) उन्होने बिना कोई विशेष कारण बताए टरो गिरजा के अधिकार-क्षेत्र की प्रबन्ध-कारिणी सभा से त्यागपत्र दे

दिया। सम्भवत उन्हे यह सदस्यता भी एक अन्य लघु सार्वजनिक सेवावृत्ति' लगी, जिससे छुटकारा पाना, उन्हे आवश्यक जान पडा। यह उल्लेखनीय है कि उन्होने वर्जीनिया के राजनैतिक क्षेत्र मे प्रविष्ट होने की लेशमात्र कोशिश नही की, यद्यपि वह कहने मात्र से राज्य सविधान सभा मे स्थान पा सकते थे। वे चाहते तो राज्यपाल का पद भी प्राप्त कर सकते थे। अपवादरूप मे उन्होने केवल एक उच्च पद पर रहना स्वीकार किया और वह भी बिना किसी वेतन के। यह पद सिनसिनेटी सभा के प्रमुख प्रधान का था। यह सेना के पूर्वाधिकारियो की सस्मरण-सस्था थी, किन्तु वे न तो उस सस्था के सस्थापको मे से थे और न ही कभी उन्होने यह चाहा था कि इसमे प्रमुख स्थान ग्रहण करे। उनकी तो केवल एक आकाक्षा थी कि जीवन के आगामी वर्षो मे वह केवल अपने ही मामलो के प्रबन्ध मे समय गुजारेगे। कुछ मामले अपने आप मे इतने विविधतापूर्ण और शक्ति और समय लेने वाले थे कि वाशिंगटन को यह विचार छोडना पडा कि उन्हे कभी फुर्सत भी मिल सकती है अथवा वह कभी एकान्त जीवन भी व्यतीत कर सकते हैं। शीघ्र ही वह उन तीन कामो मे उलझ गए जिनके लिए उनके हृदय मे पहले से ही अत्यन्त उत्साह था। पहले काम का सम्बन्ध उनके माऊट वर्नन वाले घर से था, जिस पर उन्हे उचित रूप से गर्व था। दूसरा कार्य कृषि से सम्बन्धित था। तीसरा काम पश्चिम की भूमियो के विकास के बारे मे था। ये तीनो कार्य सकेन्द्रित-वृत्तो के समान घेरने वाले थे और इनके कारण उनकी युद्धोत्तर शान्ति की सक्षिप्त कल्पना अपना अस्तित्व खो बैठी थी।

सन् १७५७ मे जब कि वाशिंगटन ने अपनी भू-सम्पत्ति के सुधार का बीडा उठाया था, उन दिनो माऊट वर्नन सही रूप मे झोपडी ही थी। किन्तु सन् १७८३ मे आकर इस भवन ने, अमेरिका के माप-दड के अनुसार एक सुन्दर प्रासाद का, एक विशाल सम्पदा का रूप धारण कर लिया था। जो पर्यटक आज-कल उसे देखने के लिए जाते है, वे इसे निर्मल और प्रशान्त-रूप से पूर्ण पाते है। किन्तु

जब कई वर्षों के निर्वसन के बाद वाशिंगटन की दृष्टि माऊट वर्नन पर पडी, तो उन्हे यह अधूरे चित्र के समान लगा। अलकार रूप मे चाहे वह अगूर की बेलो और अजीर के पेडो की बात कहते हो, यह निश्चित बात थी कि जब तक वह उन्हे बो न दे और उन्हें पाल-पोस कर बडा न कर दे, तब तक वह उनके नीचे नही बैठ सकते थे। अत अपने लौटने के बाद प्रथम मास मे ही वह अपने भवन की चिमिनयो की दशा सुधारने, भवन के बीच के खुले स्थानो के फर्श लगाने और अपने नए कमरे, 'भोज के हाल' के निर्माण के विषय मे चिट्ठी-पत्री मे व्यस्त हो गए। तब से उन्होने माऊट वर्नन की जिस कदर देख-रेख की, उसके विवरणात्मक साक्ष्य के रूप मे उनके पत्र व डायरी के सकुल पृष्ठ उपलब्ध है। उन्होने इस कार्य के लिए अनुबद्ध-श्रमिको को 'खरीदा'। ये लोग उन्ही दिनो बढई और राज के तौर पर काम करने के लिए जर्मनी से आए थे। उन्होने अपने मकान के भीतर दीवारो पर कागज चिपकाए, किताबे रखने की अलमारियाँ बनवाईं और खिडकियो मे वेनिस के अधक लगवाए। अपने घर से बाहर उन्होने एक विशाल वनस्पति-काच-घर बनवाया, सडकें बिछवाईं, रास्ते व लान बनवाए और झाडियो के जगल लगवाए। उन्होने अपने बर्फ घर का नए ढग से निर्माण किया, एक हिरन-पार्क बनवाया, जिसके चारो ओर बाढ लगवाई और उसमें हिरन रखे, एक फलो का बगीचा बनवाया।

उस भवन और उन मैदानो के आगे माऊट वर्नन के पाच 'फार्म' अथवा बागान थे। (इनमे से कोई शब्द भी प्रयोग मे लाया जा सकता है—वाशिंगटन इन दोनो शब्दो का प्रयोग करते थे, क्योकि उन्होने रुई तो नही बोई, परन्तु उसके स्थान मे गेहूँ की पैदावार की, जिसे 'फार्म' की फसल कहा जाता है)। दूसरी ओर, उनके श्रमिक 'बागान' के दास कहलाते थे। वे कुल मिला कर कोई दो सौ थे (जिसमे बच्चे और बूढे दोनो ही शामिल थे)। चूकि वाशिंगटन युद्ध से लौटने पर 'खाली हाथ' थे और उनके पास नकद रुपया-पैसा न था, अत यह अत्यन्त आवश्यक था कि वह अपने

मामलो की ठीक व्यवस्था कर लें । कुछ इस प्रकार के प्रस्ताव आए कि उन्हे अमेरिका का प्रथम नागरिक होने के नाते काग्रेस से विशेष भत्ता स्वीकार करना चाहिए, किन्तु आत्माभिमान के कारण उ हे इन्कार करना पडा । व्यवहार-कुशलता का यह तकाजा था कि वह अपने पूरे दिल से खेती के काम मे जुट जाए । उनके सम्मान की भी यही माग थी । इस मामले मे वह तथा थामस जैफर्सन समान भाषा का प्रयोग करते थे—वह भाषा जिसमे बीजो, खाद तथा खेती के औजारो सम्ब धी यथार्थ शब्दावलि आ जाती है । इन शब्दो के प्रयोग से भला यह बात कब छिपी रह सकती थी कि उन लोगो के हृदयो मे खेती-व्यवसाय के लिए सामान्य-रूप से अनुपम अनुराग उमड रहा है । वाशिंगटन खेती द्वारा आजीविकोपार्जन को 'सर्वाधिक आनन्द' की वस्तु कहा करते थे । इसमे शक नही कि इस व्यवसाय मे कठोर परिश्रम करना पडता था, इसमे निराशाए भी मिलती थी, फिर भी वाशिंगटन को असदिग्ध रूप से यह पेशा बहुत प्य.रा था । उन्होने अग्रेज कृषि विज्ञ आर्थर-यग से भी इस बारे मे परामर्श लिए । उन्होने यग महोदय के द्वारा दिए गए विशेष विवरणो के अनुसार अन्न-भण्डार बनाया और बाहर से एक अग्रेज कृषक मँग-वाया, जो उनके बाग-बगीचो और खेती के कार्य की देख-रेख कर सके । उन्होने नई किस्म के पशु पाले, विचित्र फसलो तथा सस्या-वर्त्तन की पद्धतियो से परीक्षण किए और भूमि-अपक्षरण को रोकने के लिए भारी प्रयास किए ।

किन्तु वाशिंगटन को केवल माऊट वर्नन का ही ध्यान नही था । उनकी पश्चिम की भू-सम्पत्ति बेकार सी थी—उसमे अत्यन्त अल्प परिमाण में फसल होती थी और उसका कोई लाभ नही हो रहा था । कुछ एक भागो को अनधिवासी घेर कर बैठे हुए थे । कहीं-कही अनधिकार रूप से कृषको ने कब्जा कर रखा था और वे उन्हें उन भू-खण्डो का स्वामी मानने से इन्कारी थे । अत सन् १७८४ की शरद् ऋतु में वह एक बार फिर एलघनीज के उस पार यह देखने के लिए चल पडे कि वहा क्या परिस्थिति है । उन्हो

ने अपना पुराना मार्ग पकडा। उसके साथ उनकी बहुत सी स्मृतिया बधी थी, परन्तु वर्जीनिया की उपहार-स्वरूपप्राप्त भूमि को अनधिवासियो द्वारा घिरी देखकर उ हें सन्तोष कहा मिल सकता था। अत उन्होने आगे यात्रा करने तथा अपने ओहियो तथा ग्रेट कनावा के दावो का निरीक्षण करने का ख्याल छोड दिया। यद्यपि आगे जाकर इस यात्रा के महत्वपूर्ण परिणाम निकले, किन्तु उनकी तात्कालिक जीवनचर्या को देखते हुए इस यात्रा का अर्थ था उनके माऊट वर्नन के प्रति निरन्तर कर्तव्यो मे बाधा का पडना। वाशिगटन को सन् १७८५ की ग्रीष्म ऋतु से पहले निजी सचिव नही मिला, जिसका परिणाम उनका एक शिकायत का पत्र था जो उन्होने अपने एक मित्र को लिखा—

'मै तुम्हे सच्चाई से यकीन दिला सकता हू कि जितना मुझे आज-कल लेखनी-बद्ध करना पड रहा है मुझे लडाई के दिनो मे किसी समय भी उससे आधा लिखना नही पडा। विदेशो से (अक्सर निरर्थक) पत्र आते रहते हैं। मुझ से डिक, टाम और हैरी के बारे मे, जो आजकल वही होगे और किसी समय सयुक्त-राज्य की नौकरो कर रहे होगे, पूछताछ होती रहती है। अपने-अपने राज्यो से बाहर जाने वाले लोग मेरे से चिट्ठिया तथा नौकरी के प्रमाण-पत्र लेने आते है। अक्सर लोग मेरे पास परिचय-पत्र प्रतिलिपियो के लिये प्रार्थना पत्र, सहस्रो पुरानी बातो के उ लेख लेने के लिये जिन के कारण मुझे असुविधा मे नही डाला जाना चाहिए, पहुच जाते है। परिणामत मुझे मुगल महान् से भी अधिक व्यस्तता रहती है, क्योकि इन पत्रो का कुछ न कुछ उत्तर देना ही पडता है। इन व्यस्तताओ के कारण मैं सामान्य व्यायाम से भी वचित रहता हू। यदि इनसे मुझे राहत न मिली, तो मेरे स्वास्थ्य पर हानिकर प्रभाव पडने की सम्भावना है। मैं काम के इस बोझे को अभी महसूस करने लगा हू और कई बार इसके कारण सिर-पीड़ा भी होने लगती है।'

लोग उनसे उधार मागते थे, मित्र व पडोसी सदा मशविरा

लेने आते थे। उनकी अपनी अन्तरात्मा उन्हे विवश करती थी कि वह अपने सगे-सम्बधियो के कार्यों पर भी निगरानी रखे, क्योकि ये कार्य सदा सफलतापूर्वक अथवा समझदारी से सम्पादित नही होते थे।

सिनसिनाटी सभा के कारण वाशिंगटन के सिर पर एक और बोझ आ पडा। ज्यो ही इस सभा का श्रीगणेश हुआ, त्यो ही अनेक राज्यो मे इसके विरोध मे आवाजे उठने लगी। यह प्रधान के लिए एक क्लेशपूर्ण बात थी। जहा तक सभा के सदस्यो का सम्बन्ध है, वे इसे अवकाश-प्राप्त अनुभवी सैनिको की सख्या समझते थे और इसमे किसी की हानि नही देखते थे। इन लोगो ने इसका सिन-सिनाटस पर नामकरण करके इसके शान्तिपूर्ण उद्देश्यो पर जानबूझ कर बल दिया था। किन्तु इसके विरोधी ऐसा नही मानते थे। सर्वोत्तम रूप मे उनके लिए यह एक हास्यजनक, असभ्य लोगो का क्लब था (क्योकि इसकी सदस्यता केवल अफसरो तक सीमित थी और उत्तराधिकार के रूप मे प्राप्त होती थी)। निकृष्ट रूप मे, उनके लिए यह बागी रईसो की आन्तरिक परिषद् थी। वाशिंगटन ने भरसक प्रयत्न किया कि विरोधियो की आपत्तियो का उत्तर दिया जाए, किन्तु इस सभा के कारण उन्हे निरन्तर आकुलता होती ही रही।

यह ठीक है कि वाशिंगटन लोगो मे मिल-बैठ कर बहुत खुश होते थे, किन्तु उनकी सगति की भूख माऊट वर्नन मे ही शा त होती थी। वह स्वय और उनका घर—दोनो ही हर प्रकार के अतिथियो—पुराने परिचितो से लेकर कौतूहलपूर्ण विदेशियो तक—के मेल-मुलाकात का स्थान बन गया था। वे अतिथि उनके अतिथि-भवन को एक सप्ताह से दूसरे सप्ताह शरद् व ग्रीष्म मे, भरे रखने। वे मनो के हिसाब से खाद्य-वस्तुए खाते और गैलनो के हिसाब से शराब उडाते। एक बार सन् १७८५ की एक रात मे वाशिंगटन, उनका परिवार और अनेक अतिथि गहरी नीद मे थे, जबकि फ्रासीसी मूर्तिकार, हौडन, के आने से उनकी जाग खुल गई। हौडन

वाशिंगटन का चित्र बनाने के लिए आया था। उसके लिए और उसके तीन साथियो के लिए किसी न किसी तरह ठहरने का स्थान मिल गया। जिन दिनो वे उनके अतिथि थे, उन्ही दिनो मे वाशिंगटन अपने एक कमरे की छत का एक भाग तख्ते जमा कर बनवा रहे थे। उनके मकान पर उन्ही दिनो वाशिंगटन के भतीजे और हमनाम, जार्ज आगस्टीन, (जो लुण्ड वाशिगटन के स्थान पर जागीर का प्रबन्धक नियुक्त हुआ था) और मार्था वाशिंगटन की भतीजी, फ्रासिस बैसिट मे विवाह सम्पन्न हो रहा था। माऊट वर्नन के इस घिरे हुए स्वामी ने १७८५ के जून मास मे जाकर कही अपनी डायरी मे लिखा—'श्रीमती वाशिगटन के साथ भोजन किया। मेरा विश्वास है कि सार्वजनिक जीवन से निवृत्त होने के बाद यह पहला अवसर इस प्रकार का आया है।' किन्तु इस प्रकार का पृथकत्व उनके लिए दुर्लभ ही रहा।

किन्तु समग्र रूप मे वाशिंगटन उन वर्षो मे शायद उतने ही खुश रहे, जितने कि वह जीवन मे कभी हो सके। चिट्ठी-पत्री कष्ट का कारण भले ही रही हो, परन्तु उन्हे ससार के कोने-कोने से जो उपहार-भेट के रूप मे प्राप्त होते थे, उन से उन्हे अवश्य सन्तोष मिलता होगा। स्पेन के बादशाह ने उन्हे गधा उपहार-स्वरूप भेजा। मजाक मे वाशिंगटन ने इस पशु का नाम रखा—'शाही उपहार'। अश्वशाला मे भी वह उसके मन्दगति से किए कामो पर हँसी-मजाक उडाया करते थे। एक अग्रेज प्रशसक ने उन्हे सगमरमर की अगीठी भेंट की। एक फ्रासीसी ने उन्हे शिकारी कुत्तो का समुदाय भेजा। एक युरोपियन भद्र-पुरुष ने वाशिंगटन से उनका बडा चित्र मागा, ताकि वह उसे सैनिक वीरो के कक्ष के अन्तर्गत शामिल कर सके। उन्होने भी एक बार इसी तरह का सग्रह करने की असफल कोशिश की थी। उसे याद करते हुए (यदि उन्हे याद था तो) वाशिंगटन महसूस करते होगे कि वर्जीनिया की मिलिशिया का कर्नल अन्त मे अपने कृत्यो का उचित फल पा रहा है।

उनकी हानि-पूर्ति अन्य विधियो से भी हुई। धीरे-धीरे उन्होने

दैनिक कामो को इस ढग से व्यवस्थित किया कि अपने अतिथियो की उपेक्षा किए बिना वह अपने कामो को पूरा कर सके। व्यायाम करने के लिए वह प्रतिदिन घुडसवारी करते हुए अपने 'फार्मों' पर चक्कर लगाया करते। सर्दी के महीनो मे लोमडी के शिकार का आनन्द उठाते। उन्हे इस बात की बहुत खुशी थी कि माऊट वर्नन उस शोभा और सौन्दर्य को प्राप्त कर रहा है जिसकी उन्होने योजना बनाई थी। अनुरूप विवाह के कारण भी उनका जीवन सुख-चैन से कट रहा था (यद्यपि अतिथि-गण कभी-कभी जनरल वाशिंगटन के व्यवहार मे कठोरता और तीखापन पाते थे, परन्तु मार्था के मधुर स्वभाव की वे सभी प्रशसा कर लिया करते थे)। इनके अलावा छोटे बच्चो के कारण उन्हे नया उत्साह प्राप्त होता रहता था। ये छोटे बच्चे जैकी कस्टिस की सन्तान थे और इनमे से दो को वाशिंगटन ने उस समय गोदी मे लिया था जब इनकी माता ने पुनर्विवाह किया।

इस सब से बढकर उन्हे जिस तीसरी चीज के प्रति अत्यन्त अनुराग था, वह थी देश के यातायात को सुगम सुलभ करने की बात। सन् १७८२ मे उन्होने शान्ति-स्थिति से लाभ उठाते हुए न्यूयार्क के उत्तरीय भाग की यात्रा की और वहा भूमि का एक टुकडा खरीदा। वह अब भी वर्जीनिया और उत्तर कैरोलीना के मध्य मे स्थित डिस्मल स्वैम्प मे दिलचस्पी रखते थे और इनके अलावा घर के अधिक पास और भी उत्साहपूर्ण लाभ की सम्भावनाए थी। वास्तव मे सन् १७८४ की उनकी पश्चिमी यात्रा का एक यह भी उद्देश्य था कि इन सम्भावनाओ की जाच की जाय। वह इस दृढ विश्वास के साथ वापिस लौटे कि वर्जीनिया और पश्चिमी भाग को जल द्वारा एक दूसरे से मिलाया जा सकता है और मिलाया जाना चाहिए। पोटोमैक नदी के ऊपर का भाग बहुत दूर तक नौगम्य था और एक अल्प पत्तन-द्वार उसे ओहियो-नदी के सस्थान के मुख्य भाग से अलग करता था। इसमे आवश्यक सुधार हो जाने पर (इनमे मुख्य सुधार पोटोमैक प्रपात के गिर्द

नहर का बनना था), जो जबरदस्त और नित्य-प्रति बढने वाला यातायात उनके घर के आगे से होकर नए राजपथ पर चलेगा, उसका चित्र उनकी आखो के आगे घूम गया। उनके विचार मे इस प्रकार का सम्बन्ध हो जाने का यह असर हो सकता था (जिस का उल्लेख उन्होने अपनी डायरी मे एक लम्बी लिखावट मे किया है, जो किसी प्रविवरण का प्रथम प्रारूप मालूम होता है) कि वाणिज्य बढेगा, देश का पिछडा हुआ भाग आबाद होगा (जिसके कारण एलघनी के पार की जमीनो के स्वामी बहुत फायदे मे रहेगे) और अन्त मे, किन्तु महत्व मे किसी से भी न्यून नही, आन्तरिक भागो के लोग सयुक्त-राज्य के साथ बध जाएगे। यदि ऐसा न हुआ तो सम्भव है कि वे लोग, जो पहले से ही अधीर हो रहे थे, स्पेन और ब्रिटेन की चालो मे फँस जायें। कारण यह कि ओहियो घाटी की तरफ के मिसिसिपी और ग्रेट लेक्स के बाह्य मार्ग इन दोनो देशो के नियन्त्रण मे थे।

वाशिंगटन ने इस योजना पर जितना अधिक सोचा, उतनी ही यह उन्हे अधिक पसन्द आई। इस बात को महसूस किए बिना कि उनकी हिम्मत उन्हे कहाँ पहुँचाती है, वाशिंगटन ने योजनाओ को क्रियान्वित करने के लिए कदम उठाने आरम्भ कर दिए। अमेरिका के मध्य के राज्यो मे इन योजनाओ पर यत्र-तत्र चर्चाए हो रही थीं। जेम्ज नदी के मार्ग की बात-चीत भी चल रही थी। क्योकि पौटोमेक नदी के अधिकार वर्जीनिया और मेरीलैण्ड के साझे थे, इसलिए भय था कि कहीं स्थानीय ईर्ष्या-डाह के कारण गतिरोध न हो जाए। किन्तु शीघ्रतापूर्वक काम करते हुए और अपने नाम की प्रतिष्ठा से लाभ उठाते हुए वाशिंगटन ने सन् १७८४-१७८५ की शरद मे दोनो राज्यो की सविधान सभाओ की स्वीकृति प्राप्त कर ली। वर्जीनिया के आयुक्त होने के नाते वह मेरीलैण्ड के प्रतिनिधियो से मिले। इसके परिणाम स्वरूप पोटोमैक नदी कम्पनी की शुरूआत हुई। न मानते हुए भी वाशिंगटन को इसका प्रधान चुना गया। यह कम्पनी दोनो राज्यो की सरक्षता मे बनाई गई और इन दोनो

ने ही इसकी सहायता करने का जिम्मा लिया। बाद मे जेम्ज नदी कम्पनी का भी निर्माण हुआ।

पोटोमैक आयुक्तो ने सन् १७८५ के बसन्त मे माऊट वर्नन मे आकर अपने सम्मिलित इकरार-नामे को पुष्ट किया। इस सुझाव का भी साधारणतया स्वागत हुआ कि मेरीलैण्ड और वर्जीनिया के प्रतिनिधि भविष्य मे प्रतिवर्ष एक बार मिला करे। शनै शनै इस विचार मे विस्तार हुआ। जनवरी १७८६ मे वर्जीनिया की सविधान-सभा नें सघ के राज्यो को लिखा कि वे अपने-अपने आयुक्तों से सलाह-मशविरा लें और व्यापार और वाणिज्य के सम्बन्ध मे सामान्य दिलचस्पी के मामलो का सिंहावलोकन करें। इस तजवीज का असर यह हुआ कि एनापोलिस मे सितम्बर १७८६ मे, एक सम्मेलन हुआ, जिसमे पाच राज्यो ने (जिनमे वर्जीनिया भी था) अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे। इनमे से एक वर्जीनिया के प्रतिनिधि जेम्ज मैडीसन ने अपने प्रतिवेदन मे सिफारिश की कि एक और सम्मेलन सन् १७८७ के मई मास मे फिलेडैल्फिया मे बुलाया जाये। इसमे, जैसा कि सर्व-विदित है, नया सविधान बना। इस नए सविधान मे सयुक्त-राज्य के लिये राष्ट्रपति की तजवीज हुई। तदनुसार जार्ज वाशिंगटन को इस पद पर आसीन किया गया।

### नए सविधान की ओर

वाशिंगटन के कुछेक अतिशय-प्रशसा करने वाले जीवनी-लेखको ने उनके जीवन-कार्यों को इस ढग से पेश किया है कि मानो वे यथार्थ रूप मे अपने जीवन-काल के सम्पूर्ण अमेरिकन इतिहास के पर्यायी हो। उन्होने हर घटना में उन्हे केन्द्रीय स्थान दिया है। उनकी जीवन-कहानी को पीछे ले जाते हुए उन्होने परिस्थितियो की सीधी कारणात्मक शृखला देखी। यह शृखला सन १७५३ मे वाशिंगटन के लेबाफ के सदेश से आरम्भ होकर पोटोमैक कम्पनी की राजनीतिज्ञ-सदृश योजना तक और फिर सन् १७८९ मे उनके राष्ट्र-पति के गौरवास्पद पद पर आरूढ होने तक चली गई। इन लोगो ने घोषित किया कि देखिये, वाशिंगटन अपने राष्ट्र के पिता है,

उन्होने अलौकिक पूर्व-ज्ञान से तथा सघ के सच्चे अर्थों को पूर्ण रूपेण समझते हुए अपने बाल्यकाल से पुनीत वृद्धावस्था तक घटनाओ को ठीक मार्ग पर सचालित किया।

यह तर्क सर्वथा गलत नहीं है। गौर करने पर हम विचित्र रूप से परिस्थिति अनुक्रम पाते है। वाशिंगटन मे यह खूबी अवश्य पाई जाती है कि जहाँ-कही इतिहास का निर्माण हो रहा होता है, वह उसी स्थान मे और उसी क्षण वहाँ मौजूद होते है। किन्तु क्रान्ति-युद्ध से पूर्व की घटनाओ मे सयोग का तत्व ही दृष्टिगोचर होता है। उन दिनो उन्होने यद्यपि किसी हद तक विशिष्टता प्राप्त कर ली थी, किन्तु (अपने समकालीन लोगो की नजरो मे ही सही) उन्होने वास्तविक महानता प्राप्त नही की थी। यह महानता उन्हे युद्ध मे मिली। सेवा-निवृत्ति के बाद वह राष्ट्रीय जीवन का एक अवयव थे। जो भी कार्य वह करते, उसका प्रभाव सारे राष्ट्र पर पडता और यदि वह किसी काम को नही भी करते थे, तो भी निषेधात्मक रूप से उसका एक राष्ट्रीय महत्त्व था। वाशिंगटन इस बात से भली-भाति परिचित थे, और यदि वह न भी होते तो उनका सिनसिनाटी का प्रधान होने का अनुभव ही उनके हृदय पर यह पाठ भली-भाति अकित करने की सामर्थ्य रखता था।

सन् १७८३ और १७८९ के बीच के वर्षों मे वाशिंगटन मे जो विकास हुआ, उसके बारे मे सोचते हुए यह प्रश्न उठता है कि क्या यह अतिरिक्त महत्ता उनके अपने गुणो के कारण थी या उनके ऊपर इसे लादा गया था ? अर्थात् क्या यह ऐसी चीज थी जिससे वह अपने आपको बचा नही पाये थे ? क्या उन्होने सघ के पुनर्निर्माण के लिए स्वय नेतृत्व किया था अथवा उन्हे इसके लिये अवैतनिक रूप मे नियुक्त किया गया था ? इन दोनो मे से कौन सी बात ठीक है। सम्भव है कि सच्चाई इन दोनो के बीच मे हो। इस समस्या के पीछे एक और समस्या है जो आज तक के इतिहासकारो मे घोर विवाद का विषय है। वह प्रश्न यह है 'राज्य-सघ के दिनो मे अमेरिका की वास्तविक अवस्था क्या थी ? क्या यह 'नाजुक-

घडी' थी या अमेरिका सचमुच समृद्ध था ? क्या वास्तव मे सयुक्त-राज्य के लिए नए शासनतन्त्र की आवश्यकता थी ? और (अपने वीर पुरुष की ओर लौटते हुए) क्या वाशिगटन की यह सचमुच धारणा थी कि सघ खतरे मे है ? यदि ऐसा उनका विचार था, तो क्या उन्होने स्वय अपना ऐसा मत बनाया था या दूसरो ने उनमे ये विचार भरे थे ?

शायद इन सरीखे प्रश्नो के निश्चित और अन्तिम उत्तर देना सम्भव नहीं है। किन्तु ऐसे प्रश्न उठाना उचित ही है। इससे हम जार्ज वाशिगटन के परम्परा-गत और अति सरल चित्र से अपने मनो को विमुक्त कर सकते हैं, चाहे हमारे निष्कर्ष सामान्य व्याख्याओ से अभिन्न ही क्यो न हो।

स्वभाव-वश तथा प्रधान सेनापति का अनुभव रखने के नाते वाशिगटन एक दृढ राष्ट्रीय-शासन के हक मे थे। उनके विचार मे कम से कम ऐसा शासन होना ही चाहिए था जो आपात-क्षणो मे युद्ध-कालीन काग्रेस से, जिसके अधीन रह कर उन्होने कार्य किया था, अधिक प्रभावी हो। यह बात उनके उस परिपत्र से स्पष्ट होती है जिसे उन्होने जून १७८३ मे तैयार किये गये लम्बे ज्ञापन के रूप मे राज्यो को भेजा। इस ज्ञापन का निचोड उनके उस वाक्याश मे मिलता है, जिसका प्रयोग उ होने फिलेडैल्फिया मे भोजन के मौके पर 'टोस्ट' पेश करते हुए किया। यह उस दिन से एक दिन पहले की बात है, जबकि उन्होने कमीशन से छुट्टी ली थी। इस मौके पर उन्होने कहा था—'काग्रेस को साधारण उद्देश्यो के लिए सक्षम सत्ता मिले।' अनुमान है कि उन्होने तद्विषयक कार्य आरम्भ कर दिया था (यद्यपि उनकी अत्यधिक विनम्रता के कारण इसका सकेत ही यत्र-तत्र उनके पत्रो मे मिलता है) और अपने उदाहरण तथा प्रवचनो से वह इस नवीन राष्ट्र का मार्ग निर्देशित कर रहे थे। इस प्रकार अपने एक पत्र मे, जो उन्होने जान जे (प्रसघानाधीन विदेश म त्री) की ओर लिखा, वाशिगटन अपने देशवासियो की उपेक्षा-वृत्ति पर खेद प्रकट करते है। उन्हे इस बात का खेद था

कि वे उनकी 'भावनाओ और विचारो' की उपेक्षा करते हैं, यद्यपि वह उन्हे अन्तिम वसीयतनामे के रूप मे इन्हे गम्भीरता-पूर्वक समय समय पर देते रहे।' उन्होने इस गहराई से अमेरिका के साथ अपना समीकरण कर लिया था। उनकी एव अमेरिका की कीर्ति सघन रूप से आपस मे जुडी हुई थी और यह बात देख कर उनके दिल को चोट लगती थी कि अमेरिका विदेशियो के सामने आपसी फूट का तमाशा दिखाए। ब्रिटिश प्रतिक्रियाए उन पर विशेष रूप से प्रभाव डालती थी। वह अपने शत्रु, अग्रेजो से, जिन्हे उन्होने युद्ध मे परास्त किया था, इसलिए स्वाभाविक रूप से खीझे हुए थे, क्योकि सधि की शर्तों के अनुसार वे भिन्न-भिन्न पश्चिमी चौकियाँ खाली करने से इन्कारी थे। उन्हे यह बात भी चुभ रही थी कि कई एक अमेरिका के राज्य सन्धि-पत्र का पालन नही कर रहे थे, जिससे कि अग्रेजो को उस समय शर्तें न मानने का बहाना मिल रहा था।

किन्तु जे को लिखा गया पत्र सन् १७८६ की गर्मियो मे भेजा गया। इससे वाशिंगटन के विगत दो वर्षों के दृष्टिकोण की सही तौर पर जानकारी नही मिलती। उस समय वह किसी उलझन मे नही पडना चाहते थे। भले ही उनकी तुलना कैटो से अथवा सिनसिनेटस से की गई हो, उन्होने अपना कर्त्तव्य निभा दिया था और अपने विचार व्यक्त कर दिए थे। इस समय वे एक दर्शक के तौर पर थे और उन्होने यह निश्चय कर लिया था कि वह अपने जीवन के शेष साल अपनी निजी सम्पत्ति के सम्मेलन मे लगाएगे। यद्यपि उनके अपने सीधे उत्तराधिकारी नही थे, किन्तु वर्जीनिया के अन्य शासको की तरह उनमे सम्पत्ति-सचय का उत्साह मन्द नही पडा था। यह सत्य है कि उनमे अमरीका की वास्तविक अथवा सम्भाव्य राष्ट्रीयता के प्रति अन्य बहुत से लोगो की अपेक्षा अधिक तीव्र भावना थी। किन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि पोटोमैक-योजना के प्रति उनमे (अमरीकन होने के नाते नही, अपितु) वर्जीनिया वासी होने के नाते गर्व की भावना भरी थी। इस योजना की सिफारिश मूलत एक दूसरे वर्जीनियावासी, जैफर्सन, ने की थी और

जब वाशिंगटन ने उसकी बाग डोर अपने हाथो मे ली, तो शुरू शुरू मे उन्होने उस पर राष्ट्रीय भावना से नही, बल्कि प्रादेशिक भावना से प्रेरित होकर विचार किया था। उत्तर मे रहने वाले परिचितो को लिखते हुए उन्होने ब्रिटेन का कडा विरोध करने की तुरन्त आवश्यकता पर जोर दिया जबकि अपने क्षेत्र के लोगो को लिखते हुए उन्होने बताया कि उन्हे समान रूप से न्यूयार्क के लोगो की प्रतिद्वन्द्विता की चिन्ता है कि कही वे हडसन नदी द्वारा अपने राज्य के अन्दर तक का मार्ग न बना लें।

हमारे कहने का तात्पर्य यह कदापि नही कि वाशिंटगन अपने व्यवहार मे ईमानदार नही थे, किन्तु हमारा आशय यह है कि सन् १७८४-१७८५ मे उनकी विचारने की प्रणाली सयुक्त-राज्य अमेरिका के नागरिक होने के नाते नही थी। उन्हे अपने (वर्जीनिया) राज्य पर गर्व था, किन्तु उनका इस प्रकार गर्वित होना सम्पूर्ण अमेरिका के हितो के विरुद्ध नही था। परन्तु कुछ काल के लिए ये हित भी उनकी नजरो से ओझल हो गए थे। उस समय उनकी कल्पना पर इनका प्रभुत्व नही था। उनके मित्र, जो काग्रेस के सदस्य थे, चिट्ठी-पत्री द्वारा उनके सम्पर्क मे रहा करते थे, उनका फूला हुआ डाक का थैला सयुक्त-राज्य के बहुत से भागो—मैसाचूसैट्स से जार्जिया तक—के हालात के बारे मे समाचार लाया करता था। किन्तु काग्रेस के अधिवेशन दूर-दूर लगते थे, क्योकि उसके स्थान बदलते रहते थे। काग्रेस अन्नापोलिस से ट्रैटन गई। वहा से उसे न्यूयार्क ले जाया गया।

वाशिंगटन अपनी घरेलू व्यस्तताओ मे फसे हुए थे। उनकी यह इच्छा थी कि वह सेवा-निवृत्त जीवन के आचार-व्यवहार को बनाए रखे। पत्र-लेखक उन्हे जो भी लिखते, उसका वास्तविक अभिप्राय क्या है—इस बारे मे वह निश्चय से जान नही पाते थे। इसके अलावा वह आपसी फूट से तग आ चुके थे। इस कारण जो भी सम्मतिया वाशिंगटन प्रगट करते थे, वे भविष्यवक्ता की तरह अस्पष्ट रहती थी। जान जे, हेनरी ली और जेम्ज मेडीसन सरीखे

आदमी थे जिन्होने नई ढग की सरकार बनाने के लिए अपने आपको (यद्यपि सतर्कतापूर्वक) वचनबद्ध कर लिया था। ये लोग थे जिन्होने इस विषय मे नेतृत्व किया। वे इस काम मे वाशिगटन की मदद चाहते थे। उनकी कलम या दिमाग की नही, बल्कि उनके यशस्वी नाम की। अमरीकियो के लिए वाशिगटन विजय और ईमानदारी के प्रतीक थे, किन्तु इस समय वह, जहाँ तक नई राष्ट्रीय सरकार बनाने का प्रश्न था, अग्रणी लोगो मे नही थे।

अत जे ने उन्हे मार्च १७८६ मे लिखा—'क्या आप एक तटस्थ दर्शक की तरह' अमेरिका को विघटित होते हुए देख सकेंगे ?' आगे सुझाव देते हुए उसने लिखा— 'आज यह राए बनती जा रही है कि प्रसघान की धाराओ के पुनरीक्षण के लिए साधारण सम्मेलन बुलाया जाना उचित रहेगा।' एक मास बाद इसका उत्तर देते हुए वाशिगटन ने सहमति प्रगट की कि देश का 'ढाचा' 'डगमगा' रहा है, किन्तु उन्होने सतर्कतापूर्ण सामान्यताओ तक अपने आपको सीमित रखा।

हमारा यह आशय नही कि वाशिगटन पर यह आरोप लगाया जाए कि वह मूर्ख अथवा अनुत्तरदायी थे। हम केवल इस बात पर बल दे रहे है कि उनके पास कोई तैयार-शुदा समाधान नही था। अमेरिका को खेतिहरो और व्यापारियो का समुदाय समझने की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि उस समय यह देश समृद्ध था। काग्रेस भी बिलकुल अनुपयुक्त (अथवा अवैध) नही थी, बल्कि उस देश की वैध सरकार थी।

प्रश्न यह था कि यदि काग्रेस अपना सुधार स्वय करने को तैयार नहीं भी थी, तो क्या उस पर किसी अस्थायी सम्मेलन द्वारा वैध रूप से सुधार लादे जा सकते थे ? लोग इस बारे मे क्या करेंगे ? राज्य इस बारे मे क्या विचार प्रगट करेंगे ? दूसरी तरफ प्रसघान की धाराए ऐसी थी जो व्यवहार मे सुदृढ राष्ट्रीय सरकार के निर्माण मे सहायक सिद्ध नही हो सकती थी। राज्य भयकर-रूप से काग्रेस से उदासीन थे और एक दूसरे के प्रति वैर-विरोध रखते

थे। अत यह जरूरी मालूम होता था कि कुछ न कुछ किया ही जाय।

जो लोग सक्रिय रूप से वाद-विवाद मे उलझे हुए थे, उनसे कुछ पीछे रह कर चलते हुए, जैसा कि उन्होने सन् १७७५ से पूर्व किया था, वाशिंगटन धीरे-धीरे अपने विचारो को व्यवस्थित करने लगे। इस प्रकार १ अगस्त, १७८६ के दिन उन्होने तीन पत्र लिखे। दो पत्र उन्होने फ्रास भेजे—एक शिवेलियर डीला लुजरने को और दूसरा अमरीकी मन्त्री, थामस जैफर्सन को। तीसरा पत्र उन्होने न्यूयार्क मे जे को लिखा। पहले दोनो मे जहाँ प्रसन्नता ध्वनित होती थी, वहाँ तीसरा पत्र सकट की आशकाओ से भरा हुआ था। यह अन्तर क्यो ? उसका बडा कारण यह था कि वाशिंगटन यह नही चाहते थे कि अमेरिका को विदेशो में अपयश मिले, यहाँ तक कि उन्होने अपने परम मित्र लिफायट के सामने भी अमेरिका का आशाजनक चित्र पेश किया। एक दूसरा छोटा सा कारण यह भी हो सकता है कि वह स्वय अभी तक अपना कोई एकमत नही बना पाए थे और इसलिए अलग-अलग पत्र-लेखको के साथ उनमे अलग-अलग प्रतिक्रिया होती थी। इसलिए उन्होने निराशावादी जे को लिखते हुए स्पष्टता-पूर्वक स्वीकार किया कि 'मैं एक तटस्थ दर्शक की भाति अपने आपको महसूस नही करता—मैं आपके विचारो से कि हमारा देश द्रुतगति से सकट की ओर बढ रहा है, बिल्कुल सहमत हूँ।'

वाशिंगटन की नजरो में यह सकट मैसाच्यूसेट्स के राज-विद्रोह के रूप मे सन् १७८६ की शरद् मे प्रकट हुआ। यह उस पिछडे हुए प्रदेश के असन्तुष्ट लोगो की निरर्थक और असफल बगावत थी। किन्तु यह विद्रोह और जिस ढग से इसको दबाया गया—दोनो ही वाशिंगटन को बहुत गहरी अव्यवस्था के सूचक प्रतीत हुए। उनके इस विषय मे लिखे गए पत्रो में आलकारिक भाषा का अभाव है। गुस्से और घबराहट मे वह चिल्ला उठे—'क्या आपके लोग पागल हो चले है ?' इस सबका कारण क्या है ? कब और कैसे इसका अन्त होगा ?—यह गडबड। भगवान बचाए ! किसी 'टोरी'

अथवा ब्रिटेन के सिवाए कौन ऐसी घटनाओ की भविष्य-वाणी कर सकता था ?—दयालु भगवान् ! आदमी भी क्या चीज है ? उसके व्यवहार मे इतनी अधिक असगति और इतना अधिक छल-कपट पाया जाता है !—ऐसा लगता है कि हम शीघ्र ही अराजकता और गडबडी की ओर लुढक रहे है।'

अब प्रश्न यह था कि वह क्या करे ? महीनो वह चिताग्रस्त और झझक मे रहे। उन्ही दिनो अन्य अमरीकियो ने, जो अधिक सक्रिय थे, मई १७८७ मे फिलेडैल्फिया सम्मेलन की आधार-भित्ति स्थापित की। वाशिगटन के दिमाग मे यह प्रश्न बार-बार उठता था कि क्या उन्हे वर्जीनिया का प्रतिनिधि बन कर सम्मेलन मे शामिल होना चाहिए ? उन्हे अनुरोध-पूर्वक कहा गया कि वह इस विषय मे घोषणा करें। कांग्रेस ने जब १७८७ के आरम्भ मे इस सम्मेलन को आशीर्वाद दिया, तो उनकी एक आकुलता जाती रही। किन्तु अनेक सशयो के कारण वाशिगटन का बुरा हाल था। वह आयु मे पचपन वर्ष के हो चुके थे और वातरोग के कारण अपनी आयु से अधिक उम्र के लगने लगे थे। उनके पास नकद रुपये की कमी थी। उन्होने पहले से ही सिनसिनाटी की त्रिवर्षीय बैठक मे उपस्थित होने से इकार कर दिया था। यह बैठक भी फिलेडैल्फिया मे ही होनी निश्चित थी और उसका समय भी वही था। अब वह कैसे कहे कि उनके वहाँ न उपस्थित होने का कोई ठोस कारण नही था, बल्कि एक बहाना-मात्र था ? सबसे बडी बात यह थी कि वाशिगटन ऐसे सम्मेलन मे शामिल होने से झिझकते थे जो सितम्बर १७८६ मे सम्पन्न एन्नापोलिस सम्मेलन की तरह अशक्त सिद्ध हो। उन के विचार मे यदि उत्तर के राज्यो के प्रतिनिधि एन्नापोलिस सम्मेलन की तरह यहाँ भी अलग अलग रहे, तो फिलेडैल्फिया के प्रतिनिधि कुछ कर नही पाएगे। बात इससे भी ज्यादा बिगड सकती है। हो सकता है कि वे सम्मेलन के उद्देश्य को ही क्षति पहुचाएँ। इससे न केवल उन के देश को नुकसान पहुँचेगा, बल्कि उन की कीर्ति भी सकट मे पड़ जायगी।

अत वाशिंगटन किसी षडयन्त्र या दिखावे मे हिस्सा लेना नही चाहते थे।

वाशिंगटन का सबसे प्रथम जीवन-लेखक, डागलस साउथहाल फ्रीमैन का यह विचार है कि इस समय का उन का व्यवहार अप्रिय-रूप से स्वार्थ-पूर्ण था। यदि उनका ख्याल था कि अमरीका पर सकट के बादल उमडे हुए हैं, तो फ्रीमैन आश्चर्य करता है कि इसे बचाने के लिए वह जल्दी से क्यो आगे नही बढे? हमारे विचार मे यह निर्णय अनुचित-रूप से कडा है। वाशिंगटन के बारे मे जो हम अधिकाधिक कह सकते हैं वह यह कि वह भी तो आखिरकार एक मानव ही थे। वह कोई ऐसे देशभक्त नही थे जो सरकार की नौकरी मे बधे हुए आदर्श और स्थायी अफसर हो? इस समय उनके प्रयोजन भले ही वीरोचित न हो, किन्तु वे प्रयोजन हमारी समझ मे आ सकते है। फिर भी उनके इस व्यवहार पर आश्चर्य होता है। क्या अतिशय विनम्रता कभी अपने से विरोधी गुण-अत्यधिक अभिमान-का रूप भी धारण कर सकती है? क्या उनके मामले मे ऐसा ही हुआ?

सम्भवत यही बात हो। आवश्यक तथ्य यह है कि वाशिंगटन ने अन्त मे यह फैसला कर लिया कि वह फिलेडल्फिया जाएँगे। वह वहाँ मई के आरम्भ मे पहुच गए। उन्हे अन्य प्रतिनिधियो की सर्वसम्मत इच्छा से सम्मेलन का प्रधान चुना गया। वह थकाने वाली युक्तियो और वाक्चातुर्य के प्रदर्शनो के बीच मे सितम्बर के मध्य मे सम्मेलन की समाप्ति तक प्रधान के आसन पर विराजमान रहे। उस से पहले अगस्त मे एक लम्बे अर्से के लिए बैठक स्थगित हुई थी। वाशिंगटन इस अवकाश का लाभ उठाते हुए वैलीफोर्ज तथा ट्रैंटन नगर देखने चले गए थे। यह वही स्थान था जहाँ एक बार उन्होने गत लडाई के दिनो में अपना कैम्प लगाया था। यही पर उन्होने हैसियन सेना पर अचानक धावा बोला था। निस्सन्देह इस बीच की अवधि के कारण उन मे ताजगी आ गई थी। यह भी निश्चय के साथ कहा जा सकता है

कि अतीत की झलक ने अवश्य उनके हृदय को स्पर्श किया होगा। किन्तु यदि ऐसा हुआ भी, तो इस का उल्लेख उन्होने अपनी डायरी मे नही किया। हॉ, अन्य बातो का उल्लेख उस मे अवश्य मिलता है।

फिलेडैल्फिया की सख्त गर्मी मे चलते हुए सम्मेलन मे जो कार्य उन्हे करने को मिला, वह उन के बिल्कुल उपयुक्त था। जब कभी किसी बात के ऊपर मत लिए जाने होते, तो वह अपनी कुर्सी से नीचे उतर आते और अन्य प्रतिनिधियो के साथ मतदान करके अपनी अभिरुचि को प्रगट करते। और समयो मे वह अपनी तटस्थता कायम रखते। वाद-विवाद की जटिलताओ मे भाग न लेते हुए वह प्रतिनिधियो के भाषणो को सुनते और आराम से भिन्न विषयो पर अपना मत बनाते। वह उन के बीच मे बैठ कर अपना पक्ष निर्धारित करते, यद्यपि उन का मत हूबहू प्रतिनिधियो जैसा नही होता था। उनका कार्य निर्णायक का था, न कि वकील का। उन उपस्थित प्रतिनिधियो मे केवल एक व्यक्ति और था जो उनके समान ही उपयुक्ततापूर्वक प्रधान की कुर्सी को सुशोभित कर सकता था और वह थे बजामिन फ्रैंकलिन। किन्तु फ्रैंकलिन की आयु इस समय अस्सी से ऊपर पहुच चुकी थी। और यद्यपि वह मरणासन्न तो नही थे, किन्तु बीमार और निर्बल अवश्य थे।

कभी कभी वाशिंगटन हारते हुए पक्ष की ओर अपना मत देते। यह पक्ष प्राय उन लोगो का होता था, जिन्हे बाद मे जा कर सघानीय (फ्रैड्रिल) पक्ष के लोग कहा गया—अर्थात् वह पक्ष जो इस हक मे था कि राष्ट्रीय सरकार दृढ होनी चाहिए और उसकी कार्यकारिणी शाखा कार्य-साधक हो। आहिस्ता-आहिस्ता सघानीय पथ के लोग बाजी ले गए। इन मे वाशिंगटन भी थे। एक भी ऐसा नही था जो धीरे धीरे बनने वाले उस दस्तावेज से सोलह आने सन्तुष्ट हो। कइयो का तो दिल इतना खट्टा हो गया कि वे या तो छोड़ कर चले गए और या उन्हो ने तैयार-शुदा मसौदे पर अपने हस्ताक्षर नही किए। कुछ एक को यह अफसोस था कि इस सविधान के द्वारा

राज्य-सरकारो के अधिकार सघानीय शासन को मुक्तहस्त होकर सौंप दिए गए है। वे प्रतिनिधि जो वर्जीनिया और मैसाचूसेट्स जैसे बडे राज्यो से आए थे, उन पर यह डर छा गया कि उन्होने न केवल सघानीय शासन को ही, किन्तु डिलावेयर और न्यूजर्सी जैसे छोटे छोटे राज्यो को भी अपने विशेषाधिकार सौप दिए है। और (मजे की ब त यह कि) छोटे राज्यो के प्रतिनिधि इस बात पर अड गए कि उन्हे प्रसघानीय धाराओ के अनुसार जो बराबर का प्रतिनिधित्व मिला था वह अब भी मिलना ही चाहिए। कई मौको पर सम्मेलन मे गतिरोध पैदा होते होते बचा, किन्तु धीरे धीरे कार्यवाही आगे चलती रही। वाशिगटन अपने बहुसख्यक प्रतिनिधियो से सहमत थे कि सम्मेलन के समझौते किसी कारीगर के कौशल के समान है। राजनीति, कार्य की ऐसी शैली है, जो सम्भव बातो पर ही आधारित है। उस समय जो नया सविधान बना, परिस्थितियो को देखते हुए वह सर्वोत्तम था।

अन्य लोग चाहे कुछ भी सोचते हो, कम से कम वाशिगटन का यही ख्याल था। उन्होने सविधान के अन्तर्गत इस प्रकार की शर्तों का अनुमोदन किया था, जैसे—कार्यपालक अग (राष्ट्रपति के रूप मे), काग्रेस (दो सदन-एक सेनेट और दूसरा सदन, लोक-प्रतिनिधियो की सभा) और एक निर्णायक-पद्धति, जिसके सर्वोपरि स्थान पर सघानीय उच्चतम न्यायालय का होना। इन मे से प्रत्येक शाखा एक दूसरे से अलग थी। उन के अनुभवो की रोशनी मे इस प्रकार का प्रबन्ध उन्हे तर्क-सगत लगता था। राष्ट्रपति वर्जीनिया के राज्यपाल की तरह ही होगा (सिवाए इसके कि अब कि उसे लन्दन से हिदायते और अभिषेध प्राप्त नही होगे)। सेनेट, राज्यपाल की परिषद् की तरह होगी, (प्रत्येक राज्य मे दो के हिसाब से छब्बीस मानसिक रूप से प्रौढ सदस्य होगे)। प्रतिनिधियो का सदन वर्जीनिया की स धारण सविधान सभा के समान होगा। वस्तुत इस प्रतिनिधि-सदन मे वर्जीनिया की आवाज प्रभावशाली होगी, क्योकि यह सर्वाधिक आबादी वाला राज्य होने

के कारण इसके सदस्य अन्य राज्यो की अपेक्षा सख्या मे अधिक होगे — उदाहरण के लिए दस। इसके मुकाबले मे रोड-द्वीप का एक ही प्रतिनिधि होगा।

नए सविधान मे जहा हर राज्य को कुछ सीमा तक अपने शासन-सम्बन्धी कामो मे स्वतन्त्रता होगी, वहा (वाशिगटन प्रसन्न थे कि ) इसके कारण सघानीय शासन अधिक शक्तिशाली बनेगा। व्यवहार मे इसे वे सब शक्तिया प्राप्त होगी जो अब तक कांग्रेस के पास सिद्धान्त रूप मे थी। इनके अतिरिक्त इसे नई शक्तिया भी मिलेगी। सविधान के अनुसार सघानीय शासन इस योग्य होगा कि विदेशियो के खिलाफ सयुक्त मोर्चा बना सके, लगान और कर वसूल कर सके, और साधारण रूप मे कानून पर चलने वाले किसी भी अमरीकन के लिए सुविधाए पैदा कर सके — चाहे वह अमरीकन बाग-बगीचो का स्वामी हो, उद्योगपति हो अथवा व्यापारी हो।

सितम्बर मास मे सम्मेलन भग होने पर वह अपनी गाडी मे सवार हो कर माऊट वर्नन वाले घर को इस विश्वास के साथ लौटे कि उन्होने अपने कर्त्तव्य को ठीक ठीक निभा दिया है। उनका गृह-भवन इस समय लगभग पूर्ण हो चुका था। अन्तिम कार्य के रूप मे, एक लोहे की बनी शान्तिसूचक फाख्ता माऊटवर्नन के गुम्बद पर वायु-दिशा-दर्शक के तौर पर लगाई जा रही थी। किन्तु नया सविधान अभी तक अपूर्ण ही था, क्योकि अभी इसे राज्य-सम्मेलनो द्वारा सम्पुष्ट होना था और अमल मे लाया जाना था। वाशिगटन का जीवन एक नए दौर मे आया। उन्हे इस समय भी लगभग उतना ही क्लेश और अनिश्चितता थी, जितनी कि उन्हे फिलेडैलफिया चलने से पूर्व मासो मे थी। नए सविधान का समर्थन करने के लिए वह वचनबद्ध थे। इस हेतु जो उनसे बन पडा, उन्होने किया। वर्जीनिया राज्य मे उनके अपने प्रभाव ने सविधान सम्पुष्ट कराने मे मदद दी। किंतु जब एक के बाद दूसरे राज्य से विरोध आते गए, तो वह विकल हो उठे। फिलेडे-ल्फिया के प्रतिनिधियो पर यह आरोप लगाया गया (और इसमे

कुछ सचाई भी थी ) कि वे राज्यो द्वारा दी गई हिदायतो की सीमा से आगे बढ गए हैं। वे गुप्त रीति से इकट्ठे हुए और उन्होने तब तक अपने निर्णयो की घोषणा नही की जब तक कि बैठक भग न हुई। अत ये प्रतिनिधि षडयन्त्रकारी, रईस लोग थे। वे अत्यन्त शीघ्रता मे थे, इसलिये एक और सम्मेलन होना चाहिए, जिसमे पहले सम्मेलन की तजवीजो का पुन निरीक्षण हो। इस प्रकार की युक्तिया थी जो सविधान-निर्माताओ का विरोध करते हुए दी गईं। रैडीकल सिद्धान्त रखने वाले रोड-द्वीप ने फिलेडैल्फिया के लिए कोई प्रतिनिधि नही भेजा। अन्य कई राज्यो मे सविधान की सम्पुष्टि सन्देहजनक प्रतीत हो रही थी। इन सस्थापक पिताओं (अथवा नैया को मझधार मे डालने वाले पिताओ) की आलोचना करने वाले केवल ऋणी और कागज की मुद्रा रखने वाले लोग ही नही थे। अच्छी स्थिति के असन्तुष्ट लोग भी विरोध करने वालो मे से थे। इनमे न्यूयार्क के राज्यपाल, क्लिटन, मैसाचूसैट्स के राज्यपाल, जान हैनकाक तथा वाशिगटन के अपने राज्य के पैट्रिक हैनरी, रिचर्ड हैनरी ली, एडमण्ड रैण्डौल्फ, यहाँ तक कि उनके पुराने मित्र और पडौसी, जार्ज मैसन, के नाम उल्लेखनीय हैं।

सविधान के अभिस्वीकरण के लिए यह आवश्यक था कि तेरह में से नौ राज्य इसका अनुमोदन करे। जनवरी, १७८८ तक पाच राज्यो ने इसे सम्पुष्ट किया। फरवरी मे मैसाचूसैट्स बहुमतो के अत्यल्प अन्तर से अनुमोदको मे शामिल हो गया। उस पर सघान-वादियो की इस सूचना का प्रभाव पडा कि उसके राज्यपाल, हैनकाक, को सम्भवत नई सरकार का उप राष्ट्रपति बनाया जायगा और यदि वर्जीनिया सविधान का अनुमोदन नही करता और इस प्रकार वाशिगटन मैदान से हट जाते हैं तो उसके राष्ट्रपति बनने की भी सम्भावनाए है। हैनकाक को इस प्रकार अपने पक्ष मे कर लिया गया। केवल इतना ही नही, उसने एक मूल्यवान सूत्र प्रस्तुत किया, जिसका अनुसरण शेष राज्यो ने भी किया। वह सूत्र यह था कि मैसाच्यूसैट्स इस शर्त पर सविधान को स्वीकार करता है कि जो भी कोई आप-

त्तियाँ इस दस्तावेज के विरुद्ध उठाई जाए, उनके आधार पर बाद मे सशोधन मान लिए जायें। ये सशोधन एक प्रकार से अधिकारो के विधेयक के रूप मे होगे। ये उसी तरह के होगे जिस प्रकार के, विधेयक भिन्न-भिन्न राज्यो के सविधानो मे शामिल किए जा चुके है।

कुछ समय बाद दो और राज्य सम्मिलित हो गए। इस प्रकार कुल जोड आठ का था और वर्जीनिया, जो सबसे अधिक छान-बीन करने वाला राज्य था, जून मास के अन्त मे घोर सघर्ष के बाद शामिल हुआ। एक और भी अच्छी बात हुई। वर्जीनिया मे यह सुनने मे आया कि न्यूहेम्पशायर ने पहले से ही सविधान को स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार दस राज्य सविधान के पक्ष मे हो गए—अर्थात् आवश्यक न्यूनतम सख्या से एक अधिक। अलैक्जैण्डर हैमिल्टन और उसके दूसरे उत्साही सविधानीय शासन के विचारो के लोगो ने इस सुखद समाचार का प्रयोग न्यूयार्क मे किया, ताकि इस राज्य मे विरोध के दात तोड दिए जाए। इस प्रकार फिलेडैल्फिया के प्रतिनिधियो के विसर्जन होने के एक वर्ष बाद, जिस सविधान को उन लोगो ने तैयार किया था, वह तेरह मे से ग्यारह राज्यो द्वारा आरक्षण सहित अथवा बिना आरक्षण के, समोदित हो गया। केवल उत्तर कैरोलीना तथा रोड द्वीप पृथक् रहे। उनकी जिद्द यद्यपि दुर्भाग्यपूर्ण थी, किन्तु घातक नही थी।

आगे कौन सा कदम उठाया जाना चाहिए था ? सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए यह आवश्यक था कि वर्तमान काग्रेस की इतिश्री हो और नई काग्रेस चुनी जाय। भविष्य मे कहाँ सरकार की स्थापना हो ? इस पर काफी झगडा हुआ। अन्त मे यह अस्थाई रूप से निश्चय हुआ कि कुछ काल के लिए इसे न्यूयार्क रखा जाए। जहाँ तक वाशिंगटन का सम्बन्ध है, यह एक प्रकार से निश्चित ही था कि वह राष्ट्रपति चुने जाएगे। जिन दिनो सयुक्त राज्य के अनुमोदन पर वाद-विवाद चल रहे थे, उन्ही दिनो मे उनका नाम सघानीय विचारो के लोगों द्वारा खुल कर लिया जाता रहा था। किसी ने सुझाव दिया था कि

सघानीय विचारो के लोगो को 'वाशिंगटन-विचारवादी' कहा जाना चाहिए औ॰ इसके विरुद्ध मत रखने वालो को मैस।चूसैट्स के विद्राही, डेनियल शेस के नाम पर 'शेस-विचारव।दी' कहन। चाहिए। स॰िधान की शर्तें छपने के बाद वाशिंगटन ही स्पष्ट रूप से र ष्ट्रपति पद के उपयुक्त उम्मीदवार लगते थे। वह ही एक ऐसे व्यि त थे जिन्हे सब राज्यो के लोग जानते-पहचानते थे, जिनका उन जगहो मे आदर मान था और जिन पर उन्हे विश्वास-भरोसा था। वयो-वृद्ध फ्रैंक्लिन को छोड कर अकेले वही व्यक्ति थे जो बडे-बडे सरकारी पदो पर आरूढ होने के योग्य आवश्यक जादू यश और प्रतिष्ठा (इस गुण के लिए पर्याप्त शब्द नही) रखने थे। समाचार पत्रो मे यही विचार ध्वनित होते थ और उनके मित्र भी अनुरोध पूर्वक यही कुछ कहा करते थे। लिफायट ने सन् १७८८ के जनवरी मास मे उन्हे लिखा—

"अमेरिका के नाम पर, मनुष्य-मात्र के लिए और आपकी अपनी ख्याति के लिए, मेरे प्यारे जनरल, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कि आप आ॰िभक वर्षो के लिए ही राष्ट्रपति के पद को ठु॰राएँ नही। केवल एक आप ही है जो इस देश की राजनीति के यन्त्र को जमा सकते है।"

वाशिंगटन के अपने भाव मिले-जुले थे। वह जहाँ प्रसन्न थे, वहाँ व्यग्र और भयभीत भी। प्रस्तावित प्रतिष्ठा अतिमात्रा मे थी। किन्तु जब तक वह वास्तविक-रूप धारण न कर ले, वह उसकी चर्चा कैसे कर स॰ते थे? प॰ले से ही कोई निकाला गया निष्कर्ष वास्तविक निर्वाचन से बिलकुल भिन्न वस्तु है। किन्तु यदि उन्हे राष्ट्रपति का पद पेश किया गया, तो उन्हे अवश्य उसे स्वीकार करना चाहिए। यदि उन्होने इसे स्वीकार कर लिया, तो वह दया-रहित प्रसिद्धि मे जीवन के चार बोझल वर्ष कैसे गुजार सकेंगे? इसमे ज़रा भी शक नही कि कोई दूसरा आदमी ऐसा नही था जो इस कार्य-भार को उठाने के लिए उनसे अधिक योग्य हो। उनका यह कहना था कि 'यह मेरे लिए बिल्कुल अपरिचित क्षेत्र है, जो चारो

ओर से बादलो और अन्धकार से घिरा हुआ है।' परन्तु १७८८ की शरद मे जब अपने पत्र मे उन्होने इस प्रकार के उद्गार प्रगट किए, तो उनके जानने वालो को यह विश्वास हो गया कि वही राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने वाले हैं। सारी सर्दियो मे वे उन्हे अपने कर्त्तव्य की याद दिलाते रहे, परन्तु वह बिना कोई उत्साह दिखाए अपनी आने वाली आजमाइश के बारे मे सोचते रहे। १७८९ के अप्रैल मास मे जिन दिनो वह माऊंट वर्नन मे उस समाचार की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो निश्चित रूप से उन्हे मिलने वाला था, उन्होने अपने पुराने मित्र हैनरी नौक्स को विश्वस्त रूप से लिखा—

"शासन के राष्ट्रपति पद पर आरूढ होते समय मेरे मन को वैसी ही भावनाए आन्दोलित करेंगी, जैसी कि उस अपराधी को करती है जो फासी के तख्ते पर लटकने के लिए जा रहा हो। मेरा लगभग सारा जीवन सार्वजनिक चिन्ताओ मे व्यतीत हुआ है। अब अपनी उम्र के अन्तिम वर्षों मे अपने शान्तिपूर्ण घर को छोड कर बिना राजनैतिक निपुणता, योग्यताओ और झुकाव के, जो इस पद के लिए आवश्यक हैं, मैं सकटो के सागर मे उतर पडूं-इसके लिए मेरा जी नहीं मानता। मैं यह समझता हूँ कि इस समुद्र यात्रा मे मेरा साथ देनेवाले मेरे देशवासी होगे और मेरी सुख्याति होगी, किन्तु बदले मे उन्हे क्या मिलेगा—यह केवल भगवान् ही कह सकता है।"

### प्रथम शासन १७८९–१७९३

दो सप्ताह बाद डर की नही किन्तु प्रतीक्षा की अवधि समाप्त हो गई। कांग्रेस ने उन्हे सूचित किया कि निर्वाचन क्षेत्र मे वे सर्व-सम्मति से कामयाब हो गए है और मैसाचूसैट्स के जान एडम्ज को इतनी पर्याप्त सख्या मे मत मिले है कि वह उप-राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर सकता है। वाशिंगटन न्यूयार्क के लिए तत्काल चल पडे। सडक कीचड से लथ-पथ, दलदल वाली थी और उन्हे यात्रा मे आठ दिन लगे। सारे रास्ते उनका जोर-शोर से स्वागत हुआ। पुष्पो की वर्षा की गई, झडिया फहराई गईं, विजय-द्वार खडे किए गए, अभिनन्दन-पत्र पढे गए, मिलिशिया ने मार्ग मे साथ चल कर रक्षा की, समा-

चार-पत्रो मे 'हमारे पूज्य नेता और शासक' के प्रति प्रशसात्मक लेख निकले ।

दर्शको के लिए उनकी आकृति भव्य थी, किन्तु अन्दर ही अन्दर उन पर डर का भूत सवार था । उपरोक्त प्रचुर प्रमाणो के होते हुए उनकी लोकप्रियता मे किसी को कब सन्देह हो सकता था ? किन्तु प्रत्येक नए प्रदर्शन से उनकी चिन्ता और भी गहन हो जाती थी । उनके देशवासी उनकी प्रशसा करते हुए जब उन्हे मानवातीत गुणो वाला कहते थे, तो उनसे मानवातीत कामो की भी अपेक्षा रखते थे । यदि वह किसी ऐसे कार्य के करने मे असफल रहे, जिसे वह स्वय भली-भाति निश्चित न कर सकते हो, तो उनकी कितनी भयानक असफलता समझी जाएगी ? ख्याल कीजिए, वहा तेरह असवादी राज्य थे—जिनमे से दो अभी तक उस सघ मे शामिल ही नही हुए थे । सविधान की दशा यह थी कि अभी तक वह जोखिम अवस्था मे था । जो भी राज्य थे, वे सब अपनी 'प्रिय-प्रभुता' को बचाए रखने के पक्ष मे थे । इनका विस्तार अन्ध-महासागर तट पर पन्द्रह सौ मील तक था, जनसख्या चालीस लाख से कम नही थी । (पूरी सख्या को उस समय कोई नही जानता था) । इस जनसख्या मे हर पाच व्यक्तियो के पीछे एक नीग्रो दास था । यह ऐसा राष्ट्र था जिस के लिए राष्ट्रीयता सर्वथा नवीन वस्तु थी और जो इस समय सघानीय गणतन्त्रवाद का प्रयोग कर रहा था । सिर पर ऋण का बोझा था और बाहर से शत्रुओ का हर समय खटका लगा रहता था । प्रश्न यह था कि यदि किसी समय देश पर विपत्ति का पहाड टूट पडे, तो इसका क्या होगा ?

किन्तु वाशिगटन की बडी-बडी खूबियो मे से एक खूबी यह थी कि वह कभी धैर्य नही छोडते थे । कुछ आदमियो मे चिन्ता के कारण इच्छा शक्ति को लकवा मार जाता है या उनकी कार्य-शक्ति अचानक दिशाहीन हो जाती है । किन्तु वाशिगटन चिन्ता के कारण जहा अधिक मात्रा मे सावधान हो जाते थे, वहा वह अपने हाथ मे लिए हुए कामो मे अतिरिक्त हठ से जुट जाते थे ।

उस समय का कोई भी कडुवा आलोचक यह महसूस करता था—और उस समय एक या दो ऐसे लोग भी थे जिन्हे सन् १७८९ मे वाशिंगटन जैसी भव्य मूर्ति के विषय मे भी सन्देह थे—कि अमेरिका के इतिहास मे उस महत्वपूर्ण काल मे राष्ट्र के प्रमुख कार्य-पालक (वाशिंगटन) उनकी आशाओ को पूरे तौर पर पूर्ण करने मे असमर्थ होगे। उन्हे घरेलू मामले तग कर रहे थे, क्योकि उन्हे ऋण चुकाने थे, उनकी अनुपस्थिति मे माऊट वर्नन की देख-रेख का प्रबन्ध किया जाना था, न्यूयार्क के घर को सजाना था एव प्रोटोकोल-सम्बन्धी बाते तय करनी थी। साथ ही उन्हे इस बात की भी जरूरत महसूस होती थी कि वह इस आरोप के विषय मे (जिसे कोई और नही लगा रहा था) कि उन्होने अपने पूर्व के सेना-निवृत्ति के वचनो को क्यो भग किया है, वह अपनी सफाई पेश करते हुए अपने आपको निर्दोष सिद्ध करे। इन सब परेशानियो ने उनकी शक्ल सूरत को गम्भीर व कठोर बना दिया था। कम से कम पैन-सिलवेनिया के विलियम मैक्ले जैसे दर्शक को ऐसा ही लगा। मैक्ले सैनेट का सदस्य था और अनादर-पूर्ण व्यग कसा करता था। अशत रोब मे आकर अशत फब्तियो के अन्दाज मे मैक्ले ने वाशिंगटन के उद्घाटन सम्बन्धी भाषण के बारे मे लिखा—

"यह आदमी समर मे निशाने के लिए लगाई गई तोप अथवा बन्दूक से कभी इतना नही घबराया होगा, जितना कि वह उस समय व्यग्र और घबराया हुआ था। वह काप रहा था और कई बार तो लिखे हुए भाषण को भी पढ नही पाता था, यद्यपि यह मानना ही होगा कि उसने इसे पहले दो-एक बार अवश्य पढ़ा होगा।"

मैक्ले के विचार मे वाशिंगटन की भाव-भगी से फूहडपन टपकता था। उसके मतानुसार उनके वस्त्र भी विचित्र से थे क्योकि वह अमेरिका मे बटी ऊन से बने कपडे का सूट पहने हुए थे। इन वस्त्रो के साथ उन्होने तलवार लटकाई हुई थी और सफेद रेशम के मौजे पहने हुए थे। वे मौजे उस किस्म के थे, जो उन दिनो

योरुप के राजदरबारी उत्सव के अवसरो पर पहना करते थे। इनके अलावा, उसकी राय मे, भाषण मे कोई स्मरणीय बात भी नही थी। भाषण परिश्रमीय और अधिकारीय था तथा सतोषजनक होते हुए भी अभिभून करने वाला नही था।

किन्तु, मैक्ले के विपरीत, भीड मे से, जो उनके अप्रैल के उद्घाटन को देख रही थी, बहुत से लोग अत्यन्त प्रभावित हुए थे। यदि उनमे थोडा बहुत भद्दापन दिखाई भी देता था, तो उन लोगो ने उस पर ध्यान नही दिया, बल्कि उन्हे उनमे अधिक विश्वास पैदा हो गया। वाशिंगटन को उस समय मालूम हुआ—यद्यपि उससे पहले उन्हे इस चीज का आभास था—कि उनकी राष्ट्र मे अनुपम स्थिति अमेरिका के लिए एक अमूल्य सम्पति है। दूसरे तत्व भी उनके पक्ष मे थे। यह ठीक है कि वह वित्तीय मामलो के विशेषज्ञ नही थे। न ही वह राजनैतिक मामलो मे दाव-पेच खेलने मे फुर्तीले थे। सविधान-सम्बन्धी सिद्धा तो के निर्माण-कर्त्ताओ मे भी वह नही थे। इनके अलावा वह ऐसे कूटनीतिज्ञ भी नही थे, जो विदेशी मामलो को सीधी तरह जानते हो। किन्तु यदि हम उनके आरम्भ के वर्षों के विलियम्जवर्ग तथा अन्य स्थानो के अनुभवो को छोड भी द, तो उन्होने प्रधान सेनापति के नाते तथा सविधान सम्बन्धी सम्मेलन के प्रधान होने के नाते इन मामलो से तथा शासन के अन्य पहलुओ से अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली थी। वह चाहे राजनीति की उच्चतर प्रणालियो से परिचित नही भी थे, उनमे चाहे राजनीति-सम्बधी उच्चस्तरीय ज्ञान की कितनी भी न्यूनता क्यो न थी, यह असदिग्ध है कि वह ईमानदार, शिष्ट तथा विधिपूर्वक काम करने वाले शासक थे। उदाहरण के लिए, उनके पास असख्य ऐसे लोग पहुँचे थे, जो नई सरकार के अधीन नौकरी चाहते थे। अपनी सामान्य बुद्धि से काम लेते हुए उन्होने किसी को भी वचन देने से इन्कार कर दिया था। इसमे कोई शक नही कि वह न्यूयार्क मे जब आए तो उनका मन भारी-भारी था, पर हाथ पवित्र थे।

सौभाग्य से सन् १७८९ की गर्मियो मे किसी तात्कालिक सकट का भय उत्पन्न नही हुआ। काग्रेस के अधिवेशन देर से आरम्भ हुए और थोडा काल रहे। काग्रेस ने मुख्य रूप से कार्यविधि जैसी छोटी समस्याओ की चर्चा की। किन्तु इसके अधिवेशनो मे बिल्कुल मधुरता का और हल्का वातावरण नही था। सघानीय सरकार के लिए कौन सा स्थायी स्थान हो—इस पर लम्बे-चौडे झगडे चले। इनसे स्पष्ट था कि क्षेत्रीय ईर्ष्या-डाह अब तक कायम है। अब तक बुनियादी बातो मे भी आपसी मत-भेदो के चिन्ह थे। इसके बावजूद, खूबी की बात यह कि काग्रेस तथा समग्त राष्ट्र ने नए सविधान को बिना हो-हुल्ला के स्वीकार किया। अधिकार-विधेयक के लिए आवश्यक सशोधन एकत्र कर लिए गए। फिर उ हे राज्यो मे भेज दिया गया, जहा वे निर्विघ्नता-पूर्वक अनुमोदित हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि उत्तर कैरोलीना और रोड-द्वीप दोनो सयुक्त राज्य मे शामिल हो गए। सविधान की धाराओ के अनुसार सघानीय न्यायालय पद्धति की स्थापना के लिए न्यायिक विधेयक सन् १७८९ मे पास किया गया। इस प्रकार वाशिगटन के उद्घाटन के कुछ महीनो के अन्दर ही अन्दर सघानीय सरकार का सविधान, जिसका बीज फिलेडैल्फिया मे बोया गया था, स्वतन्त्र रूप से पनपने लगा। लोग इसे बिना किसी अवरोध के, निर्देश के रूप मे, स्वीकार कर रहे थे। वस्तुत जिस प्रकार वाशिगटन सयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतीक के रूप मे पूज्य माने जाते थे, उसी प्रकार सविधान भी सयुक्त राज्य के द्वितीय और अधिक स्थाई प्रतीक के रूप मे एक पवित्र वस्तु समझकर मान्यता प्राप्त कर रहा था। अमेरिका के लोग जार्ज वाशिगटन का अत्यधिक आदर करते थे, किन्तु इससे भी अधिक आदर वे प्रतिनिधायी सरकार के भाव का करते थे। वे भिन्न-भिन्न तरीको से इस भाव के अर्थ करते थे। कभी-कभी काग्रेस के अधिवेशनो के वाद विवाद कडुवाहट-पूर्ण होते थे और कभी-कभी शुद्धता-पूर्ण। किन्तु वे निर्देशो के ढाचे अन्दर किए जाते थे। उनसे बाहर जाकर नही। इस निर्देश-

ढाचे मे अमरीकी चिरकालीन अनुभव के कारण निपुण थे। सविधान इसलिए व्यावहारिक था, क्योकि बहु-सख्यक अमेरिकन इसे कार्यान्वित करना चाहते थे। दर असल ये महत्वपूर्ण तत्त्व अर्थात् अभ्यास-लब्ध निपुणता एव एकरसता न होते, तो वाशिंगटन के सब प्रयास तथा प्रेरणाए बेकार चली जाती।

वाशिंगटन का कार्य इस कारण भी अधिक सुगम हो गया, क्योकि नई सरकार ने, जिसका पुनर्गठन १७८९ मे हुआ था, शासन की ठोस विशेषताओ को विरसे मे ले लिया था। इस प्रकार एक हद तक इन वास्तविक सस्थाओ मे अविच्छिन्नता बनी रही। राष्ट्रपति ने सयुक्त-राज्य की काग्रेस के भूतपूर्व सचिव, विलियम जैक्सन को अपने छोटे से सचिव-समुदाय मे, जिस में टोबियस लीयर, डैविड हम्फ्रेज तथा अन्य ज्ञानवान व सुवक्ता लोग थे, शामिल कर लिया। इससे व्यक्तिगत रूप से भी उन्हे लाभ हुआ। किन्तु उन्हे इससे भी अधिक लाभ पुराने कार्य-पालक विभागो के बच जाने से हुआ, क्योकि उनके बहुत से अध्यक्ष भूतकाल मे उनके घनिष्ठ सम्पर्क मे रहे थे। सविधान के अधीन इन विभागो का टेढे-मेढे तरीको से उल्लेख था। किन्तु काग्रेस ने आवश्यक विधान पास करके उनकी पुनर्स्थापना की और कुछ बहस के बाद इस बात को स्वीकार कर लिया कि राष्ट्रपति को अपने आज्ञापालक अधिकारियो को हटाने अथवा नियुक्त करने का अधिकार होना चाहिए। यह एक महत्त्वपूर्ण बात थी।

वाशिंगटन ने अपने पुराने तोपखाने के सेनाध्यक्ष को युद्ध-सचिव के रूप मे नियुक्त किया। न्यूयार्क का जान जे, जो सन् १७८४ से अब तक विदेशी मामलो का सचिव रहा था, उच्चतम न्यायालय का प्रथम मुख्य न्यायाधीश बना। जे के स्थान मे वाशिंगटन ने अपने वर्जीनिया के प्रतिभावान मित्र थामस जैफर्सन को अध्यक्ष बनाया और विदेशी मामलो के विभाग का नाम बदलकर 'स्टेट विभाग' रखा। एक और वर्जीनिया-वासी को, जिसका नाम एडमण्ड रैन्डाल्फ था और जिस ने इस बीच मे सविधान के प्रति

अपने विश्वासो को बदल लिया था, महा-न्यायकारी का पद दिया गया। वित्तीय विभाग, जिसका उन दिनो 'स्टेट विभाग' के समान ही महत्त्व था, कुछ काल से एक अल्पसख्यक समिति द्वारा सचालित हो रहा था। वाशिगटन ने इस समिति के स्थान मे उसे न्यूयार्क के अलैक्जैण्डर हैमिल्टन के सुपुर्द किया। इस व्यक्ति ने, यद्यपि यह उम्र मे केवल ३० साल के लगभग था, योद्धा, विधिविज्ञ तथा सिद्धान्त बनाने मे निपुण होने के कारण अपना अच्छा नाम पैदा किया था। अत मे डाक-सघटन को, जिसका कभी बैंजामिन फ्रैंक्लिन ने निर्देशन किया था, अबमहा-प्रेषपति सैमुअल-ओसगुड के हवाले कर दिया गया। यह महाशय इससे पूर्व वित्तीय बोर्ड के सदस्य रह चुके थे। इस प्रकार वाशिगटन ने उन प्रसिद्ध आदमियो को अपने प्रशासन मे स्थान दिया, जो अधिक-न्यून अपने कामो से परिचित थे। वस्तुत न्यूयार्क मे उन व्यक्तियो का जमघटा लग गया, जिन्होने अमेरिका की स्वतन्त्रता-प्राप्ति मे और एक सयुक्त-राज्य बनाने मे किसी न किसी रूप मे कार्य किया था। उदाहरण के लिए जेम्ज मैडिसन, जो यद्यपि वर्जीनिया मे विरोध के कारण सैनेट मे स्थान पाने से वचित रहा था, वह इस समय प्रतिनिधियों की ससद् मे अग्रणी व्यक्ति था।

अब तक वाशिगटन केवल काग्रेस द्वारा निर्मित विधान को कार्यान्वित करने के लिए सविधान के खाके को विस्तार दे रहे थे किन्तु कुछ ऐसे मामले भी थे जिन मे सन्देह था। इन मामलो मे से एक यह था कि राष्ट्रपति के पद का सही स्वरूप क्या होना चाहिए। वाशिगटन और उसके समकालीन साथी मोटे तौर पर इस बात मे एक राय रखते थे कि कई एक अधिकारो और कर्त्तव्यो मे काग्रेस की दोनो शाखाओ का साझीदार होते हुए भी राष्ट्रपति को अशत इन से दूर रहना चाहिए। सविधान सम्बन्धी सम्मेलन मे फ्रैंक्लिन ने इस बात का विरोध किया था कि राष्ट्रपति को वेतन मिले। उनकी युक्ति यह थी (जैसे कि ब्रिटेन के राजनीतिक ढाचे से भयकर रूप से जाहिर होता था) कि जब कोई 'प्रतिष्ठा का पद'

लाभप्राप्ति का स्थान भी बन जाता है, तो उसके परिणाम-स्वरूप महत्त्वाकाक्षा और धन-लिप्सा घोरतम रूप धारण कर लेते हैं। वाशिंगटन ने प्रधान सेनापति की हैसियत मे वेतन नही लिया था। वह केवल अपना खर्चा ही वसूल करते रहे थे। उन्होने अपने उद्घाटन भाषण मे भी इस प्रकार के नियम बनाने की तजवीज की थी। यदि यह सुझाव मान लिया जाता, तो सभवत वह तबाह हो जाते। किन्तु यह उनके तथा उनके अधिकारियो के लिए सौभाग्य की बात हुई कि काग्रेस ने राष्ट्रपति का वार्षिक वेतन २५,००० डालर नियत कर दिया। सन् १७८९ के समय की दृष्टि से यह एक ठोस आय थी, जो सयुक्त राज्य अमेरिका के सचिव तथा वित्त-विभाग के सचिव, जिनमे से प्रत्येक को ३५०० डालर वार्षिक मिलते थे, से काफी ऊची थी। यह आय काग्रेस के सदस्यो से भी अधिक थी, जिन्हे प्रत्येक दिन के लिए ६ डालर मिला करते थे।

इस प्रकार काग्रेस वाशिंगटन से यह अपेक्षा करती थी कि (इस विपुल वेतन से) रहन-सहन के स्तर को ऊचा बनाए रखेंगे। किन्तु (एक प्राचीन पहेली की भाषा मे) यह ऊचाई कितनी ऊची रखनी चाहिए थी ? इसका पूर्ण उत्तर अप्राप्य था। तडक-भडक से रहने मे खतरा यह था कि मैक्ले जैसे लोग, जिन्हे अब भी यह सदेह था कि कुछ अमरीकी सम्राट् बनने की लालसा रखते है, (बेकार मे) शत्रु बन जाते। दूसरी ओर अनुचित किफायत करना राष्ट्रपति के प्रतिष्ठित-पद को घृणास्पद बनाने वाली बात थी। वाशिंगटन ने मध्य-मार्ग का अवलम्बन किया और इससे उनके बहुत से देशवासी खुश थे। अपने उद्घाटन-भाषण के समय उन्होने जो वस्त्र ओढे हुए थे, उनसे भी यह मध्य-मार्ग उपलक्षित था। उस समय उन्होने इस प्रकार के भद्र पुरुष के कपडे पहने हुए थे जो निश्चित रूप मे अमेरिका का भद्र-पुरुष प्रतीत होता था। शान और सामान्य बुद्धि उनके पथ-प्रदर्शक थे। दूसरी समस्या यह थी कि उन्हे किस प्रकार सम्बोधित किया जाए ? जान एडम्ज ने, जबकि वह सैनेट की अध्यक्षता कर रहे थे, इस बात पर जोर

दिया कि उनके लिए कोई राजसी अभिधान हो। इस पर लोगो ने उनकी खिल्ली उडाई। सैनेट ने यह सुझाव दिया कि उन्हे 'महाराज, सयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति एव उसकी स्वतन्त्रता के रक्षक' कह कर पुकारा जाए। किन्तु सदन 'सयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति' जैसा सरल अभिधान चाहता था। (कहते हैं कि वाशिंगटन 'शक्ति-पुज, सयुक्त-राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति' अभिधान को अधिक पसन्द करते थे)। उन्होने समझदारी से काम लिया, जबकि उन्होने उस वाद-विवाद को उस समय तक प्राकृतिक रूप से ठण्डा होने दिया, जब तक कि आम प्रयोग के कारण 'राष्ट्रपति महोदय' का सरल अभिधान प्रचलित नही हुआ।

वाशिंगटन ने सामान्य बुद्धि के आधार पर ही अपनी आतिथ्य तथा मुलाकात-सम्बन्धी नीति अपनाई। माऊटवनन वाले घर को उन्होने खुला छोडा हुआ था, कोई मुलाकाती किसी समय भी आ-जा सकता था। न्यूयार्क मे यह सम्भव नही था। अत पूर्व परामर्श करके उन्होने साप्ताहिक मुलाकातो की पद्धति चलाई। इस दिन औपचारिक रूप से मुलाकातें हो सकती थी और बाद मे (देर से साझ के समय जब मुलाकातें समाप्त होती) रात्रि का भोज हुआ करता था। वह व्यक्तिगत निमन्त्रण स्वीकार नही किया करते थे, यद्यपि नाटक देखने की उत्सुकता के कारण वह कई बार अपने कार्य के बोझ को हल्का करने के लिए अतिथियो के साथ नाट्यशाला जाया करते थे। दुबारा परामर्श पा कर, उन्होने निश्चय किया कि अमेरिका के भिन्न-भिन्न भागो मे यात्रा की जाय। तत्पश्चात् उन्होने देश-पर्यटन मे सतुलन रखने का प्रयत्न किया, यदि वह सन् १७८९ मे न्यू इगलैंड मे घूमे-फिरे, तो दो वर्ष बाद उन्होने दक्षिण के राज्यो मे पर्यटन किया।

शायद यह सब (उनके कामो का) कुछ कुछ कठोर स्वरूप था। यही बात निश्चय से उनके काग्रेस के साथ सम्बन्धो के बारे मे लागू होती थी। दोनो का एक दूसरे से अत्युत्तम व्यवहार था। किन्तु अत्युत्तम व्यवहार (सदा) सरल व्यवहार नही हुआ करता। उनके ससद्

मे दिए गए भाषणो के औपचारिक उत्तर मिलते, फिर उन उत्तरो के प्रत्युत्तर मिलते। इसका एक परिणाम, जिसके बारे मे 'संस्थापक-पिताओ' ने पहले कभी नही सोचा था, यह निकला कि राष्ट्रपति और सैनेट एक दूसरे से दूर होते चले गए। शायद यह अवश्यभावी भी था, क्योकि नई सरकार के सब विभाग अपने-अपने विशेषाधिकारो तथा कदम-कदम पर बनने वाले पूर्वोदाहरणो के विषय मे अत्यधिक सचेत थे। किन्तु किंचित् उदासीनता और सभ्रान्ति अवश्य पैदा हो गई। सैनेट वाशिंगटन की आन्तरिक परिषद् बनने की बजाय, उनसे दूरी पर रहने लगी। वह केवल एक बार ही विदेश-नीति पर विचार-विनिमय के लिए सनेट मे आए। यह ऐसा क्षेत्र था जिसमे कार्य-पालक विभाग और सैनेट, दोनो की साझी जिम्मेदारी समझी जाती थी। इस मौके पर शोकपूर्ण असफलता मिली। यदि मैकले का विश्वास करे, तो उसके शब्दो मे, वाशिंगटन उस अवसर पर दुर्विनीत और अधीर थे और जब सैनेट ने उनकी इच्छाओ को तत्काल स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, तो वह खीझ कर सैनेट से उठ कर चले गए।

किन्तु मैकले भी इस बात को स्वीकार करता है कि जब वाशिंगटन स्थगन के पश्चात् दोबारा लौटे, तो उस समय वह प्रसन्न मुद्रा मे थे। उन्होने न केवल अपने पिछले व्यवहार को ही नही दुहराया, बल्कि अपनी इच्छाओ को मनवाने मे जिद्द भी नही की, अन्यथा आपसी तनाव विध्वसकारी होता। कुछ भी हो, उन्हे सलाह-मशवरे की कमी नही थी। शुरू-शुरू के सालो मे जेम्स मैडीसन के साथ उनके घनिष्टतम सम्बन्ध थे। मैडीसन उन्हे मिलने आता, उनके लिए कागजात तैयार करता और सावैधानिक राय देता। जब सन् १७९२ मे वाशिंगटन ने अपनी प्रथम अवधि की समाप्ति पर राष्ट्रपति पद से निवृत्त होने की बात सोची, तो मैडीसन ने विदाई के समय के भाषण का प्राथमिक प्रारूप तैयार किया। चार साल पीछे इसी भाषण ने एक शोहरत पैदा कर दी। अलेक्जैण्डर हैमिलटन पर भी वह बहुत आश्रित रहते थे। उससे कम जान

जे और उपराष्ट्रपति एडम्ज पर। धीरे-धीरे वह कार्यपालक विभाग के अध्यक्षो पर अधिकाधिक निर्भर रहने लगे। यह प्रक्रिया बिना किसी योजना के थी, क्योकि किसी ने कभी ख्याल नही किया था कि राष्ट्रपति को प्रधान-मत्री के उत्तरदायित्व निभाने होगे। फिर भी वस्तु-स्थिति यह थी कि वाशिंगटन के प्रथम शासन-काल के अन्त मे (प्रधान मत्री की तरह ही) उनका एक 'मन्त्री-मण्डल' सा बन गया। लोगो मे इस शब्द का प्रयोग भी होने लगा और इस विचार ने बीज-रूप मे अपना अस्तित्व जमाया।

उस समय तक, बिना किसी पूर्व योजना के, वाशिंगटन को एक प्रकार की दल-पद्धति का भी सामना करना पडा। वास्तव मे वह स्वय घोर विरोधो का केद्र बन गए। उदाहरण के रूप मे, परिणाम यह हुआ कि वह और मैडीसन पूर्ण रूप से एक दूसरे से भिन्न मार्ग पर चले गए। मैडीसन ने एक भविष्यदृष्टा के तौर पर यह महसूस किया था कि किसी भी राष्ट्र मे 'दल और दलीय झगडो की भावना' का होना आवश्यक है और इन भिन्न-भिन्न बद्धहित दलो का समाधान करना, अपरिहार्य रूप से, काग्रेस तथा राष्ट्रपति का काम होगा। वाशिगटन ने भी राष्ट्रपति बनने से पहले इस बात को पहचाना था कि सामान्य प्रान्तीय स्पर्धाओ के अतिरिक्त, देश नए सविधान के विषय मे गम्भीर रूप से बटा हुआ है। उन्हे यह भी ख्याल था कि यह सम्भव है कि सघानीय पक्ष के विरोधी लोग चुनाव-क्षेत्र मे उनके विरुद्ध अपने मत दे।

वाशिंगटन और उनके साथ अनेक लोग यह देखकर निराश हुए कि सविधान के पारित होने के बाद, वाद विवाद का अन्त होने की बजाय इसके गुणावगुणो पर और भी अधिक चर्चा होने लगी है। साधारण-रूप से वे लोग जिन्होने १७८७-१७८८ मे सविधान का सक्रिय रूप से समर्थन किया था, उन्होने श्रेणी-बद्ध होकर उन लोगो का विरोध करना शुरू किया जिन्हे इस बारे मे शकाए थी। उन्होने अपने आपको सघवादी और दूसरे पक्ष को असघवादी के नाम से पुकारा जाना पसन्द किया और अपने बाल-राष्ट्र के अभीष्ट-

स्वरूप पर जोर-शोर से लडना झगडना जारी रखा। उन मे साफ-साफ विभाजन नही था। मैडीसन और रैंडौल्फ जैसे कुछ आदमियो ने अपने विचार बदल लिए थे। एक ही परिवार मे मत-भेद पाए जाते थे। मैसाचूसैट्स निवासी फिशर एमेश का, जो प्रतिनिधि-ससद मे सघवाद का अत्यन्त ओजस्वी समर्थक था, अपना ही सगा भाई नैथानील घोरतम शत्रु था। इस नैथानील ने कुछ साल पीछे अपने भाई फिशर की अर्थी मे इसीलिए शामिल होने से इन्कार कर दिया, क्योकि उसका विचार था कि इसे सघवाद के प्रचार का साधन बनाया जा रहा है। मोटे तौर पर सघवाद के पोषक (जो नैथानील ऐमेस के विचार मे 'दम्भी-टोला' था) धनी और समृद्ध लोग थे, जैसे वकील, व्यापारी आदि, और बहुत अशो मे वे देश के पूर्वीय भागो के थे। उनके विरोधी (जिन्हे उस समय की शब्दावली मे 'एक-छत्र राज्यवादी' के विरोधी पक्ष के रूप मे 'अराजक-भीड-राज्य-वादी' कहा जाता था, भिन्न-भिन्न कारणो से विरोधी-पक्ष के थे। कुछ लोग अब भी एक सुदृढ राष्ट्रीय सरकार को नहीं चाहते थे, अथवा वे इस सिद्धान्त के भी खिलाफ थे कि कोई प्रशासकीय अधिकारी हो। टामपेन की तरह ही उनका भी विचार था कि 'प्रशासन निर्दोषता के लोप का चिन्ह है।' अन्य लोग, विशेष रूप से पश्चिमी और दक्षिण भागो के वासी, इसलिए विरोध करते थे, क्योकि उनकी राय मे सघवादी स्वार्थी व्यापारियो का गुट था।

आगे जाकर जो सघर्ष चला, वह वाशिंगटन के लिए, कम से कम इन चार कारणो से घोर अरुचिकर और विक्षोभोत्पादक था। प्रथम, वाशिंगटन को इस बात से बहुत दुःख होता था कि सयुक्त-राज्य अमेरिका की स्थिरता को सकट-ग्रस्त करने के प्रयास किए जाए। दूसरे, उनके अपने ही कार्य-पालक विभाग के अन्दर इसी प्रकार का सघर्ष जारी था। तीसरे, यह सघर्ष विदेशी-नीति के क्षेत्र मे भी अपने पाव फैला रहा था। चौथी बात यह कि उस सघर्ष की वजह से उनकी अपनी सुकीर्ति को धक्का पहुच रहा था।

जब सन् १७८९ मे वह राष्ट्रपति के पद पर आरूढ हुए, तो उनका ख्याल था कि सरकार के प्रमुख सचालक के रूप मे उनकी सेवाओ की अपेक्षा रहेगी। यह इस लिये नही कि उनमे मिथ्याभिमान की भावना थी, बल्कि इसलिये कि बहुत से अमरीकियो ने उन्हे ऐसा विचार दिया था। यदि हम जहाज-सम्बधी अलकार का प्रयोग करे, तो यह कहना अधिक उत्तम मालूम होगा कि उनकी जरूरत 'सेतु' पर थी। जैसा कि उन्होने महसूस किया, अमेरिका की प्रमुख आवश्यकता थी एक दूसरे का विश्वास। सयुक्त-राज्य अमेरिका का सरकारी मोटो उपयुक्त रूप से यह हो सकता था—'जैसा-जैसा वह आगे बढता है, वैसे ही अभिवृद्धि को प्राप्त करता जाता है।' वाशिंगटन के विदाई-भाषण के शब्दो मे 'प्रशासन के सही रूप को प्रस्थापित करने के लिए समय और अभ्यास इतने ही आवश्यक है जितने कि अन्य मानवीय सस्थाओ मे।' उनका मत यह था कि एक बार राज्य-सघ को सही आधार पर स्थापित कर दिया जाय, तो अन्य सभी बाते इसके पीछे-पीछे चलेगी। राष्ट्र के पास छोटे पैमाने पर जल और स्थल सेना हो और शान्ति रखने के लिए उपयुक्त नागरिक-सेना का सगठन हो, लगान और कर वसूल कर लिए जाये, कानून का पालन हो और देशाभिमान को बढावा दिया जाय। इतना हो जाने के बाद सब कार्य अपने-अपने ढग से चलेगे। उनकी यह धारणा थी कि अमेरिका और राज्य-सघ सम्भाव्यत ठोस और महान् है। यह कोई ऐसा सिद्धान्त नही था कि जिसे उन्होने कविता के रूप मे अभिव्यक्त किया हो अथवा अधिक गहनता के साथ उसका विश्लेषण किया हो। न ही वह अपना धीरज कायम रखने के लिए इन सुन्दर शब्दो का प्रयोग कर रहे थे। यह उनके विश्वास का अग था। यह ऐसी चीज थी कि जिसे वह हृदय से महसूस करते थे।

इस प्रकार के विचार रखते हुए वाशिंगटन ने जहा तक विधान का सम्बन्ध था—प्रमुख अधिकारक की तरह अपना कार्य सम्पादित किया, न कि प्रमुख कार्य-पालक के रूप मे। हैमिल्टन के लिए

'सविधान इस प्रकार का ढाचा था, जो कभी विचल नही रह सकता और यदि उसे आगे न ले जाया गया तो वह पीछे की ओर चलेगा।' डैमास्थीनीज के मूल कथन को उदधृत करते हुए हैमिल्टन कहा करता था कि राजनीतिज्ञ का कर्तव्य है कि वह 'मामलो का अग्रगामी बने और 'घटनाओ को स्वय अस्तित्व मे लाए।' अत उसकी नजरो मे विश्वास ऐसी चीज थी जिसे साधा और पुष्ट किया जाता है—वस्तुत जिस का निर्माण किया जाता है। हैमिल्टन का 'राजनीतिज्ञ' से अभिप्राय स्वय से था।

हैमिल्टन अमेरिका के इतिहास के चित्ताकर्षक व्यक्तियो मे से था। वाशिंगटन हमारे लिए पहेली है, क्योकि वह इतने श्रेष्ठ प्रतीत होते है कि विश्वास ही नही होता। उस से विपरीत हैमिल्टन का व्यक्तित्व रहस्यमय है—आश्चर्यजनक रूप से विविध और असगत। वह कभी आत्मसमर्पण करता हुआ और कभी स्वार्थ में अन्धा बना हुआ दीखता है, कभी जरूरत से ज्यादा सावधानी बर्तने वाला और कभी अव्यवस्थित रूप से कार्य करने वाला, कभी समझ से काम लेने वाला और कभी अन्धा-धुन्ध काम करने वाला, कभी गुर्रानेवाला और कभी शुद्ध, पवित्र व्यवहार वाला, कभी क्रियात्मक और कभी स्वप्न लेने वाला। ऐसा व्यक्ति कभी भी किसी राष्ट्रपति के लिए इने-गिने आदमियो मे से होता होगा। ऐसे समय मे जबकि सरकार के ढाचे के विस्तार अभी तय नहीं हुए थे, यह अत्यन्त आत्मविश्वासी और असाधारण रूप से योग्य युवक कार्य-पालक विभाग पर अपना सिक्का जमाने की फिक्र में था। इस बात का खतरा था कि वह कही प्रधानमन्त्री के प्रकार की सत्ता न हथिया ले और वाशिंगटन केवल सीमित सत्तायुक्त सवैधानिक सम्राट् के सदृश न रह जाए।

इन महत्त्वाकाक्षाओ के अतिरिक्त हैमिल्टन कुछ और कारणो से भी अपनी इस प्रकार की स्थिति को निश्चित करना चाहता था। तत्कालीन ब्रिटेन मे (जिसकी परिस्थितियो का उसने निकट हो कर अध्ययन किया था और जिसके सविधान को वह प्रतिष्ठा की

दृष्टि से देखता था) विलियम पिट प्रधान-मन्त्री होने के साथ साथ राज्य-कोष महामात्र भी था। पिट उम्र मे हैमिल्टन से भी छोटा था। चूँकि अमेरिका की वित्त-सम्बन्धी व्यवस्था का किसी न किसी हालत मे नियमन आवश्यक था, अत यह लाजमी था कि वाशिगटन के प्रथम प्रशासन मे हैमिल्टन की योजनाए प्रमुख-रूप से आगे आएँ। इसके अलावा हैमिल्टन की नियुक्ति मे इस प्रकार की भाषा भी थी जिससे यह सकेत मिलता था कि कार्य-पालक अध्यक्षो के सामान्य कर्तव्यो के अतिरिक्त उसका विशेष कार्य यह होगा कि वह राष्ट्रपति और काग्रेस का अन्त स्थ बने। अन्त मे, उसकी विशेष स्थिति इसलिए भी बन गई, क्योकि एक अन्य कार्यपालक-अध्यक्ष, थामस जैफर्सन, ने अपना दायित्व तब सभाला जबकि हैमिल्टन को इस पद पर आरूढ हुए छ मास हो चुके थे। इन छ महत्त्वपूर्ण मासो मे सब प्रमुख मामलो पर, जिन मे विदेश-नीति भी थी, हैमिल्टन की नितान्त रूप मे सलाह मागी जाती रही थी। हैमिल्टन ने इस प्रकार की सलाह देने मे कभी गफलत नही की।

इसके परिणाम लगभग विध्वसकारी निकले, क्योकि जैफर्सन और हैमिल्टन शीघ्र ही आपस मे उलझ पडे। यह सम्भव है कि हैमिल्टन जैफर्सन मत-भेदो पर लोग इसलिए अधिक बल देते हो, क्योकि इन से अमेरिका की कहानी के बुनियादी मत-भेद प्रगट होते हैं। तथ्य यह है कि उनके सैद्धान्तिक मत-भेद इतने गहरे नहीं थे, जितने मत-भेद कि इतिहास की अनेक अन्य घटनाओ मे से पैदा हुए। फिर भी इससे इन्कार नही किया जा सकता कि उन के पारस्परिक झगडो मे तीखापन था। न ही कोई उस शोर-गुल से इन्कार कर सकता है जो अमेरिका के राजनैतिक विरोधी-दलो के कारण उठा करता था, जिनके नमूने के रूप मे यह दोनो महाशय थे। थामस जैफर्सन यद्यपि हैमिल्टन के समान महान्, सम्भवत उससे अधिक महान् था, किन्तु उस जितना कलह-प्रिय नही था। हैमिल्टन के विपरीत वह व्यक्तिगत रूप से विवाद मे नही उलझता था। न ही उसमे हैमिल्टन के समान चोटी पर

पहुचने की लालमा थी। वह ऊचे खतरनाक पदो से आकर्षित नहीं होता था। हैमिल्टन ने (अपने सैनिक जीवन मे) लडाई मे फौज का नेतृत्व किया था (और यार्क टाऊन मे किले की मजबूत दीवार पर गोलाबारी की थी) और अब फिर उसकी जोखम मे पडने की अभिलाषा थी। (प्रसगवश, मौका लगने पर, वह अपने और राज्य सचिव के पद के अलावा युद्ध-सचिव के रूप मे भी नौकरी करने के प्रलोभन का प्रतिरोध नही कर सका)। जैफर्सन कभी सैनिक नही रहा था और न ही कभी उसने सैनिक गुणो से सम्पन्न होने का दावा ही किया।

फिर भी ये दोनो व्यक्ति क्रोधावेश मे बार-बार एक दूसरे के साथ टक्कर लेते थे। सविधान मे अधिकार-सम्बन्धी विधेयक शामिल किए जाने पर जैफर्सन इससे काफी सतुष्ट था, किन्तु जहा तक हैमिल्टन की नीतियो का सम्बन्ध है, जैफसन, मैडीसन तथा अन्य कई लोग इनमे खुश नही थे। उनकी नजरो मे ये नीतिया अति-सघवादी और दुष्टता पूवक बनाई गई थी। वाशिगटन इन पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा चुके थे। इनमे से बहुत सी अमल मे भी आ चुकी थी। आज वही नीतियाँ अमेरिका की बपौती बन चुकी है और वे इतनी सामान्य लगती हैं कि कल्पना मे नही आता कि उनके कारण उस समय इतना विरोध क्यो हुआ।

इसका मुख्य कारण हमे यह लगता है कि हैमिल्टन की तजवीजे संघ के अनुदार तथा वाणिज्य तत्वो को बहुत भाती थी, किन्तु इसके विपरीत उन्मूलनवादी (रैडीकल तत्व) तथा कृषक-समुदाय इनका विरोध करते थे। इन परिस्थितियो मे किसी समझौते पर पहुँचना कठिन था। परिणामत एक न एक बद्धहित-समुदाय का असनुष्ट रहना अवश्यम्भावी था।

सवप्रथम समस्या जिसे हैमिल्टन ने सन् १७९० मे सुलझाने का प्रयास किया, वह अमेरिका के ऋणो से सम्बन्धित थी। ये ऋण, जिनकी राशि लगभग आठ करोड डालर थी, क्रातिकारी युद्ध के दौरान मे अमेरिका पर चढे थे। इनमे से अढाई करोड की राशि

भिन्न-भिन्न राज्यो की तरफ से कर्जे के रूप मे दी गई थी। हैमिल्टन ने तजवीज किया कि उन्हे पूर्णतया चुकाया जाए, यद्यपि उनके द्वारा प्रतिनिहित पत्र प्रतिभूतियो के मूल्य बहुत गिर चुके थे। उसने तजवीज किया कि अकित मूल्य पर राष्ट्रीय ऋण का निधीयन किया जाए और राज्यो के ऋणो को लगभग सम-मूल्य पर ही राष्ट्रीय ऋण के रूप मे चुकाया जाए। हैमिल्टन वाद-विवाद मे जीत गया। उसने अपनी युक्तियो के दो आधार बनाए--राष्ट्र की प्रतिष्ठा और राष्ट्र की सीख। ये दोनो दलीले वाशिंगटन को ठोस लगी। निधीयन तथा अभिधारणा के विरुद्ध जो तर्क दिए गए, वे भिन्न-भिन्न प्रकार के थे। किन्तु इन सब मे जिस युक्ति पर सर्वाधिक गर्मी पैदा हुई, वह यह थी कि हैमिल्टन अपनी योजना के द्वारा सट्टेबाजो को धनाढ्य बनाना चाहता है। कारण, कि सामान्यतः पत्र-प्रतिभूति-धारी मूलरूप मे इनके स्वामी नही थे, जिन्होने कि उन्हे देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर खरीदा हो और जरूरत पड जाने के कारण उपहार पर बेच दिया हो, किन्तु वे कपटी, पूर्वीय लोग थे। उनकी प्रतिभूतियो की पूर्ण-रूप मे चुकाने का अभिप्राय यह था कि उन्हे सघानीय शासन की ओर से साहाय्य दिया जाय। हैमिल्टन स्वय इस प्रक्रिया से भली भाति परिचित था, किन्तु उसने इसके ध्वनितार्थों को एक दूसरी रोशनी मे देखा। उसने यह सही भविष्यवाणी की कि जो उपाय उसने दिग्दर्शित किए है, उनसे सघ 'दृढ बन्धन मे 'जुड' जाएगा, क्योकि इससे प्रत्येक वह समुदाय जिसने इसके हित मे अपना धन जोखिम मे झोका है, इससे बध जाएगा।

जैसे जैसे हैमिल्टन की योजनाए खुले रूप मे आती गईं, जैफर्सन का क्रोध बढता चला गया। कारण यह कि उसे एक समझौते के आधार पर निधीयन और अभिधारणा का समर्थन करने के लिए तथा काग्रेस पर अपना असर डालने के लिए प्रेरित किया गया था। इन मामलो का वित्तीय व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नही था। उसने अब यह महसूस किया कि हैमिल्टन ने उसकी आखो मे धूल झोकी

है। इस समझौते के अनुसार उत्तर के काग्रेस-सदस्यो ने, जो हैमिल्टन के मित्र थे, राष्ट्र की राजधानी की सस्थापना के झझट वाले मामले पर दक्षिण वालो के साथ मतदान किया। इन मतो के कारण दक्षिण वालो की जीत हुई और फिलेडैल्फिया की बजाय पोटोमैक नदी के क्षेत्र मे राजधानी बनाने का निश्चय हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि सन् १८०० तक जब तक कि 'सघानीय प्रशासन की नई राजधानी' काग्रेस की बैठको के लिए तैयार नही हो जाती, काग्रेस के अधिवेशन फिलेडैल्फिया मे चलते रहेगे। यह सत्य है कि यह दक्षिण वालो के लिए एक रिआयत थी, और इसके अलावा वाशिगटन के लिए चुपचाप रूप से प्रसन्नता का स्रोत---क्योकि इनका घर इस स्थान से कुछ ही मीलो पर नदी के तट पर था। किन्तु ऐसा लगा कि हैमिल्टन की उन कोशिशो के विरुद्ध जो वह सविधान को सघानीय रूप-रेखा देने मे कर रहा था, यह सफलता एक प्रकार से थोथी थी।

सन् १७६१ के आरम्भ मे वित्त-सचिव और राज्य सचिव की राष्ट्रपति के सामने ही जोरदार टक्कर हो गई। हैमिल्टन प्रशासन के सरक्षण मे राष्ट्रीय बैक की स्थापना चाहता था। उसने अपने अत्युत्तम लेखो मे से एक मे इस बारे मे प्रतिनिधि-सदन को प्रतिवेदित किया था। इस कदम का इतने जोर शोर से विरोध हुआ कि वाशिगटन ने विवश होकर अपने कार्य-पालक अध्यक्षो से इस विषय मे लिखित सम्मति मागी। सम्मति इस बारे मे नही थी कि राष्ट्रीय बैक होना चाहिए अथवा नही, बल्कि इस बारे मे कि ऐसा बैंक स्थापित करना सावैधानिक होगा या नही। हैमिल्टन ने स्वाभाविक रूप से पहले की तरह तर्क पूर्ण ढग से उत्तर देते हुए इसे सावैधानिक बताया। जैफर्सन ने उसी प्रकार योग्यता से यह सिद्ध करने की कोशिश की कि सविधान को इतनी दूर तक खीचा नही जा सकता। वाशिगटन के लिए यह समस्या थी कि इस परिस्थिति मे वह क्या करे ? यह दोनो सम्मतिया एक दूसरे से सर्वथा विपरीत थी। इनमे से कोई एक भी पूर्णतया धार्य नही थी। चूकि काग्रेस ने विधेयक

को पारित कर दिया था, अब उन्हे निर्णय करना था कि वह उस पर हस्ताक्षर करे, या उसका अभिषेध करे। चूकि यह जैफसन के दिमाग को नही बल्कि हैमिल्टन के दिमाग की उपज थी, अत उन्होने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। थोड़े ही समय पीछे उन्होने मद्य-कर विधेयक की अनुमति दी। इसकी भी हैमिल्टन ने सिफारिश की थी। इसका उद्देश्य यह था कि आयात-शुल्क से पृथक्-रूप से प्राप्त आय मे वृद्धि की जा सके। यह कर उस मद्य पर लगाया जाना था जिसका उत्पादन करके पश्चिम के अनेक कृषक प्रमुख-रूप से अपनी आजीविका कमाते थे। इस प्रकार मत-विरोध का एक और मौका पैदा हो गया।

निधीयन, अभिधारणा, एक राष्ट्रीय बैंक, मद्य-कर—इन सबका अमल मे आना मैडीसन और जैफसन की नजरो मे यह सिद्ध करता था कि हैमिल्टन के हाथो मे सत्ता है और यदि वह इसी प्रकार अपनी योजनाओ मे सफल होता चला गया तो एक दिन वह अमेरिका को दूषित कर देगा। फिर अमेरिका के, जिसमे जागरूक खेती-व्यवसायी रहते थे, एक शान्त देश बनने के अवसर समाप्त हो जाएगे। उसकी बजाए 'एक-छत्र शासन' वाले लोग अपनी स्थिति सुदृढ बना लेंगे और अमेरिका को योरूप की नकल-मात्र मे परिवर्तित कर देंगे। कांग्रेस मे सरकारी नौकरी का जमघटा होगा, और यदि वह विष आगे फैला, तो अमेरिका वशगत राजवशीय शासन को पुन अपनाएगा। अत उनकी दृष्टि मे यदि कोई इसका निदान था, तो एक यह था कि हैमिल्टन का विरोध किया जाए। जैफर्सन इस विरोध का नेतृत्व अपने हाथो मे नही लेना चाहता था। वाशिंगटन की तरह ही उसकी तीव्र इच्छा थी कि वह अपनी जन्मभूमि वर्जीनिया मे लौट कर एक साधारण नागरिक की तरह रहे। किन्तु घटनाओ का अपना चक्र था। धीरे धीरे जफर्सन, मैडीसन और कुछ उनके साथी उन अमरीकियो के मुखरूप (प्रतिनिधि-वक्ता) बने, जो अपने आप को सम्राज्ञीय-शासन की विचार-धारा के विरुद्ध समझते थे। जब उनका शिथिल और कुछ-कुछ आकस्मिक सहमिलन

अधिक चेतनायुक्त हुआ, तो इसका नया नाम पडा। इसके सदस्य अपने आपको डैमोक्रैटिक-रिपब्लिकन अथवा सक्षेप मे, रिपब्लिकन कहने लगे।

विचारो मे इस बढती हुई दरार का एक चिन्ह उस समय दृष्टिगोचर हुआ, जबकि अक्तूबर १७९१ मे 'नेशनल गजट' नाम के 'रिपब्लिकन' पत्र का श्रीगणेश हुआ। यद्यपि 'फ्रैड्रलस्ट' पक्ष पर हमले करने वाला यह प्रथम पत्र नही था, फिर भी यह एक ऐसा पत्र था जो राष्ट्रीय स्तर पर फैड्रलिस्ट पत्र 'गजट आफ दी यूनाइटिड स्टेट्स' को प्रभावशाली--वस्तुत विनाशकारी--ढग से चुनौती देने की सामर्थ्य रखता था। इस पिछले पत्र का जन्म सन् १७८९ मे नई सरकार बनने पर हुआ। उसके सम्पादक का नाम जान फैनो था और हैमिल्टन को इससे निश्चित-रूप मे समर्थन मिलता रहता था। फैनो का प्रतिद्वन्दी सम्पादक कवि फिलिप फ्रैनो था, जो मैडीसन का कालेज के दिनो का मित्र था और उत्साही रिपब्लिकन विचारो का था। वह फ्रैनो से अधिक साहसी पत्रकार था और अशकालिक अनुवादक के रूप मे राज्य विभाग मे भी काम करता था। चूंकि सन १७९२ मे फैनो विवाद मे अधिक तर्क सगत दिख रहा था हैमिल्टन ने (फैनो के स्थान मे भिन्न-भिन्न उपनामो से लिखते हुए) कवि पर यह आरोप लगाया कि वह जैफसन की हाजिरी बजाने वाला है। फ्रैनो ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

सम्भवत बाद की पीढियो को यह स्थिति अजीब सी लगे। स्पष्टत वाशिंगटन के मन्त्रिमण्डल के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण सदस्य कडुवाहट-पूर्ण ढग से और बुनियादी बातो के आधार पर आपस मे लड-झगड रहे थे। यद्यपि यह गुप्त रीति से लड रहे थे, परन्तु इसका ज्ञान सबको था। उनकी देखा-देखी अन्य कार्य पालक अध्यक्षो का भी इनमे से किसी न किसी का पक्ष लेने की ओर रोहझान रहता था। नौक्स हैमिल्टन के साथ और रेण्डाल्फ अपने वर्जीनिया के साथी जैफर्सन के साथ थे। हैमिल्टन अब भी सक्रिय-

रूप से (यद्यपि चुपचाप) विदेशी मामलो से सम्बन्ध रखे हुए था। हैमिल्टन ने महा प्रेषपति का सघटन सम्भाल लिया, हालाकि इसे अधिक उपयुक्तता के साथ राज्य-विभाग को सौपा जाना चाहिए था। और नई सघानीय टकसाल, जिसे वित्त विभाग के आधीन रखा जाना अधिक तर्क सगत था, इसे जैफर्सन के आधीन कर दिया गया। क्या यह सब गडबड और विद्वेष के कारण था ?

उस समय वाशिंगटन के काल मे ऐसा नही माना जाता था। 'मत्री-मण्डल' मे अभी तक ससक्ति का अभाव था, 'दलो' मे उनका श्रेणी-बन्धन भी नही था। केवल कार्य-पालक-अध्यक्षो के कार्य क्रम ही मोटे और अनिश्चित-रूप मे राष्ट्रपति के कार्य-क्रम समझे जाते थे, न कि किसी सर्व-सम्मत प्रशासन के। हैमिल्टन और जैफर्सन दोनो राष्ट्रपति का आदर करते थे और उनके तथा अपने सघ सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विचारो के प्रति वफादार थे। उनकी उपस्थिति मे वे प्राय झगडा नही करते थे। उनकी शिकायते एक-दूसरे के विरुद्ध हुआ करती थी—वाशिंगटन के विरुद्ध नही, और यह कहना चाहिए कि उनमे से प्रत्येक एक दूसरे पर एतबार न करते हुए भी अपने प्रतिद्वन्दी की इज्जत करता था। यद्यपि आपसी लडाई-झगडे थे, परन्तु निराशा-जनक सकट की स्थिति पैदा नही हुई थी। (यह ठीक है कि) वाशिंगटन को कुछ-कुछ दूर हटकर रहना पडता था और विधान के सक्रिय प्रकल्पन तथा प्रवर्तन मे उनका हाथ नहीं था, किन्तु वह मूर्ख अथवा निर्बल नही थे। उनकी प्रथम पदावधि मे कोई उन पर यह भयकर आरोप नही लगा सकता था कि वह हेमिल्टन के हाथो खेल रहे है। क्रान्तिकारी युद्ध मे उन्होने हैमिल्टन को चार साल तक अच्छी तरह जाना-पहचाना था। उन दिनो वह वाशिंगटन का परिसहाय था। उन्होने बाद मे १७८६ मे फिलेडैल्फिया सम्मेलन मे हैमिल्टन के राज्य-सम्बन्धी अनुदार विचार भी सुने थे। उन्हे इस बात के भी यथेष्ट अवसर मिले थे कि वह फैनो तथा अन्य लोगो के उन विचारो का अध्ययन कर सके जो उन्होने हैमिल्टन की 'पद्धति' के बारे मे व्यक्त किए थे। निस्सन्देह उनके

मन पर इस युवक की बौद्धिक योग्यता की गहरी छाप पडी थी। सम्भवत वह अपने परिसहाय की युद्धकालीन बात-चीत से यह जानते थे कि हैमिल्टन बहुत पहले से ही अर्थात् सन् १७७६ मे भी वित्त व्यवस्था एवम् व्यापार-सम्बन्धी समस्य ओ मे दिलचस्पी लिया करता था। इसमे भी शक नही कि वह हैमिल्टन के स्वभाव की खामियो को भी पहचानते थे। इस प्रकार की जानकारी उन्हे अवश्य बहुत पहले १७८६ मे प्राप्त हुई होगी जबकि हैमिल्टन यह समझ कर कि मेरी बेइज्जती हुई है रुष्ट होकर वाशिंगटन के मुख्यालय से उठकर चला गया था।

जो भी हो, राष्ट्रपति के लिए सन १७९२ आकुलता का वर्ष था। गर्मियो के आने तक वह अपने कार्य-भार से पूर्ण निवृत्त होना चाहते थे—ऐसा कार्यभार जिसमे उन्हे कोई आनन्द नही मिल रहा था। उन्हे दो गम्भीर रोग आ चिपके थे—सन् १७८९ मे जाघ पर एक गाठ (अर्वुद) सी हुई और फिर १७९० मे निमोनिया का दौर चला। इसके अलावा उनके पत्रो मे कई ऐसे उल्लेख मिलते हैं जिन से यह पता चलता है कि इन्ही दिनो मे उनकी स्मरण-शक्ति भी क्षीण होती जा रही थी। वह बूढे हो चले थे और उनके हृदय मे माऊट वर्नन के लिए उसी प्रकार का अनुराग बढता जा रहा था, जिस प्रकार कि जैफर्सन का मौटीसैलो के लिए। जिन दिनो काग्रेस के अधिवेशन नही हुआ करते थे, वह माऊट वर्नन चले जाते थे और वहा ठहरने का प्रबन्ध करते थे। जब माऊट वर्नन से दूर चले जाते, तो अपनी चिट्ठियो मे अपने अधिदर्शको को लम्बी-लम्बी और सूक्ष्म-रूप से विशेष हिदायतें लिख कर भेजते।

क्या उनके लिए निवृत्ति पाना व्यवहार्य था? इण्डियनो के साथ सीमान्त पर निरन्तर सघर्ष होते हुए भी सघ समृद्ध था। किन्तु फैड्रलिस्ट—रिपब्लिकन वाद-विवाद बढता जा रहा था। उसकी तीव्रता मे किसी प्रकार की कमी नही आई थी। अपनी गुप्त बात-चीत मे मैडीसन ने वाशिंगटन से अनुरोध किया कि

उन्हे राष्ट्रपति के पद को छोडना नही चाहिए, क्योकि उसके विचार मे और लोग, यहा तक कि उनका अपना घनिष्ट मित्र, जैफर्सन भी, एकता की रक्षा नही कर सकेगा। उप-राष्ट्र-पति, जान एडम्ज जहा फेड्रलिस्ट था वहा वह अशिष्ट और न्यू-इगलैण्ड-वासी भी था। इन कारणो से वह भी सशयित था। यद्यपि जान जे के बहुत कम विरोधी थे, किन्तु वह भी अधिकाश मे फैड्रलिस्ट ही था। प्रमुख फैड्रलिस्ट होने के कारण हैमिल्टन का प्रश्न ही नही उठता था। यद्यपि मैडीसन ने बातचीत मे अपना जिक्र नही किया, पर चूकि वह स्वय रिपब्लिकन था, इसलिए उसे यह आशा नही थी कि इस पद के लिए उसे पसन्द किया जाएगा। केवल वाशिंगटन ही ऐसे व्यक्ति थे, जो (हर पहलू से) इस पद के लिए उपयुक्त थे।

यह विचार (कि वह दुबारा राष्ट्रपति का आसन ग्रहण करें) उनके लिए अरुचिकर था। हम नही कह सकते कि किस मौके पर उन्होने अपने आपको अन्तिम रूप मे भाग्य के भरोसे छोड दिया। सम्भवत अब तक वह यह धारणा लिए बैठे थे कि कोई न कोई और उम्मीदवार मिल सकेगा, बशर्ते कि वह हैमिल्टन और जैफर्सन के बीच की खाई को दूर कर सके। कुछ भी हो, उन्होने इस बात का प्रयास किया कि स्थिति को स्पष्ट किया जाए। जैफर्सन ने हैमिल्टन के विरुद्ध इक्कीस आरोपो की एक सूची पेश की। हैमिल्टन और उसके साथियो को 'कागजो के व्यापारियो का भ्रष्ट दल' और सामान्य-रूप से फैड्रलिस्ट प्रवृत्तियो वाले कहा गया। जैफर्सन के कथनानुसार इन लोगो का अन्तिम उद्देश्य परिवर्तन के लिए मार्ग तैयार करना और सरकार के वर्तमान रिपब्लिकन स्वरूप को ब्रिटिश सविधान के नमूने पर बदलना था। वाशिंगटन ने इन आरोपो की प्रतिलिपि बनाई और उसे बिना जैफर्सन का जिक्र किए हैमिल्टन के पास भेज दिया। ऐसा करके वह यह बताना चाहते थे कि प्रेषित सामग्री उन आलोचनाओ का सक्षेप है जो उन्हे भिन्न भिन्न स्रोतो से प्राप्त हुई है। यथोचित समय पर हैमिल्टन ने इसका उत्तर क्रोध से, किन्तु वाक्-पटुता

और परिस्थित्यनुसार दिया, जिसमे उसने सब आरोपो को मिथ्या बतलाया।

दोनो मे मेल-जोल पैदा करने की कोशिशे जारी रही। उन्होने चतुरता-पूर्ण भाषा मे दोनो व्यक्तियो से अनुरोध किया कि उन्हे सामान्य हितो को दृष्टि मे रखते हुए अपने मत-भेदो को भुला देना चाहिए। उनके उत्तर निराशाजनक थे। उनसे यह जाहिर होता था कि उनके स्वभावो मे क्रूरता भरी हुई है। जैफर्सन ने अपने आरोपो को दुहराया और साथ ही साथ नए आरोप लगाए। हैमिल्टन ने सारा दोष जैफर्सन के मत्थे मढा। उसने रिपब्लिकनो के विरुद्ध अपना आन्दोलन बन्द करने से इन्कार कर दिया। वाशिंगटन इस से अधिक और कर ही क्या सकते थे, सिवाए इसके कि उन्हे प्रेरणा करते कि वे एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता के भाव रखे और जैफर्सन को मनाते कि उसे राज्य-सचिव के पद से निवृत्ति पाने की बात नही सोचनी चाहिए। इन दोनो मे से किसी की भी सेवाए वह खोना नही चाहते थे, क्योकि वे दोनो दुर्लभ योग्यता के व्यक्ति थे, जिनकी सलाह उनके लिए अनिवार्य थी। हो सकता है कि उन्होने यह भी महसूस किया हो कि यदि उन्होने उन्हे अपने पर छोड दिया, तो वे पहले की तरह सक्रिय तो होगे ही, किन्तु पहले से अधिक तेज और सावधान हो जायेगे। और शायद यह वाशिंगटन को सूझा भी कि इन पदो पर आसीन वे किसी हद तक एक दूसरे को सतुलन मे रखते है। ऐसे 'मन्त्री-मण्डल' मे जिसमे जैफर्सन नही होगा, हैमिल्टन को अपनी नीतियो का विस्तार करने मे प्रोत्साहन मिलेगा। इससे इस युक्ति को अधिक बल मिलेगा कि राज-तन्त्र बनने की तैयारिया हो रही है। वाशिंगटन इस युक्ति को गम्भीरता से नही लेते थे। एक वार जब सन् १७८३ मे सेना-अधिकारियो के एक समुदाय ने उन्हे यह सकेत किया कि वह उनकी सहायता से सयुक्त-राज्य के बादशाह बन सकते है, तो उनके दिल मे कुछ-कुछ चोट पहुची और सम्भवत वह चकरा भी गए। हमारे पास कोई ऐसी चीज नही है, जिससे यह प्रगट हो कि वह

अपने लिए अथवा किसी और अमेरिका-वासी के लिए इस प्रकार की योजना को चित्य समझते थे। ऐसा जान पडता है कि जैफर्सन के विपरीत वह इस बात मे कोई हानि नही देखते थे कि सविधान के अधीन सिद्धान्त-रूप से राष्ट्रपति अनेक बार पुन निर्वाचित हो। किन्तु यदि राज-तन्त्र के सदेह हो, तो वह उ हे दूर करने के लिए उद्यत है। जहा तक हैमिल्टन को हटा कर 'मन्त्री-मण्डल' के निर्माण का प्रश्न था, उनकी राय यह थी कि इससे रिपब्लिकनो को हैमिल्टन की पद्धति का अन्त करने का प्रोत्साहन मिलेगा। वाशिगटन का विचार था कि इस पद्धति ने अपनी यथार्थता को सिद्ध कर दिया है। इसके अतिरिक्त, यदि हैमिल्टन को वर्गीय और व्यावसायिक पक्षपात रखने वाला माना भी जाए, तो वही बात जैफसन मे लागू होती थी, क्य कि उसने अपने इस इरादे की घोषगा की थी कि वह हर हालत मे दक्षिग का समर्थन करेगा।

सक्षप मे, वाशिगटन इस परिणाम पर पहुँचे कि उन्हे अपने कार्यालय-अध्यक्ष बनाए रहने चाहिए और उन्हे (कर्तव्य-भावना को सामने रखते हुए) राष्ट्र-पति बना ही रखना चाहिए। (यह बिल्कुल स्पष्ट था कि निर्वाचन-कर्ता इन्ही को ही १७९२ मे चुनेगे–यह और बात है कि वह उनमे प्राथना करें कि उन्हे न चुना जाय)। यदि उनकी यह अभिलाषा थी कि दोनो विरोधी गुट झगड-बाजी को बद करे, तो सम्भवत इससे उन्हे व्यग्यात्मक सतोष मिला होगा कि वे दोनो ही उनकी आवश्यकता महसूस करते है। जैफर्सन और हैमिल्टन दोनो ने ही (उनके साथ रैंडाल्फ, मैडीसन तथा अन्य लोगो ने भी जो उनके निकट थे) उनसे प्रार्थना की कि उन्हे राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। इस प्रकार एक बार फिर उन्हे और उनके साथ जान एडम्ज को चार-वर्ष के लिए राष्ट्रपति के अकेले वैभव-युक्त आसन पर बिठा दिया गया।

## द्वितीय-प्रशासन १७९३-१७९७

नही कह सकते कि वाशिगटन ने इस बात का अनुमान लगाया या नही—उन्हें अपने दूसरे प्रशासन-काल मे जितनी अधिक आलो-

चना का शिकार होना पडा, उतने वह सारे जीवन मे कभी नही हुए। राष्ट्रपति की हैसियत मे जहाँ उन्हे सम्पूण देश मे दलबन्दी के कारण चित्त मे व्यग्रता बनी रही, वहा उन्हे शासन के अन्दर की दलबन्दी ने विशेष रूप से अशान्त बनाए रखा। अब जबकि विदेशी-नीति-सम्बन्धी गम्भीर प्रश्नो के कारण देश मे मत-विभिन्नता पैदा हो गई थी, तो यह झगडे अधिक जोर-शोर से होने लगे।

वार्शिगटन के सन् १७८९ के प्रथम उद्घाटन के थोडे ही अरसे बाद फ्रास मे क्राति का आरम्भ हुआ। सन् १७९२ की शरद् मे जबकि वार्शिगटन हैमिल्टन और जैफर्सन मे आपसी समझौते कराने का प्रयत्न कर रहे थे, फ्रास ने अपने आप को गणतन्त्र-राज्य घोषित कर दिया। समवेदनापूर्ण अमरीकियो की नजरो मे यह सयुक्त-राज्य अमेरिका के उदाहरण का अनुसरण था, यद्यपि इसके द्वारा अफसोसनाक ज्यादतिया हुईं। फ्रास की 'मानवाधिकारो' की घोषणा जैफर्सन की स्वतन्त्रता-सम्बन्धी घोषणा की वशक्रमागत थी। इस प्रकार इस समय ससार मे केवल अमेरिका ही प्रजातान्त्रिक गणतन्त्र नही था, फ्रास भी उसके पद-चिह्नो पर चल रहा था। किन्तु मार्च सन् १७९३ मे, वार्शिगटन के दूसरे उद्घाटन के कुछ ही समय पश्चात्, फ्रासीसियो ने अपने पहले बादशाह, लुई १४ को फासी के तख्ते पर चढा दिया और ब्रिटेन को भी उन देशो की सूची में शामिल कर लिया जिनके साथ फ्रास की युद्ध की स्थिति थी।

यह समय वस्तुत नवीन राष्ट्र अमेरिका के लिए सकट का था। उसके लिए तटस्थता को बनाए रखना कभी भी सरल नही रहा है। वास्तव मे उसके सम्पूर्ण इतिहास मे योरूप की बडी २ लडाइयो मे तटस्थता असभव सिद्ध हुई है। सन् १७९३ मे स्थिति असाधारण रूप से तनाव-पूर्ण और नाजुक थी। इधर फ्रास अमेरिका का भूतपूर्व समित्र था। यार्क टाऊन मे प्राप्त विजय के कारण जो कृतज्ञता की भावना अमेरीका के लोगो पैदा हुई थी, उसने उनमे यह भावना भरी कि नई दुनिया (अमेरिका) को गणतन्त्र की रक्षा के लिए पुरानी दुनिया का साथ देना ही चाहिए। ऐसी

ही प्रेरणा उन्हें उन निश्चित दायित्वो के कारण मिली, जो फ्रास के साथ समित्रता की शर्तों की वजह से सयुक्त-राज्य पर आ कर पडे थे। अब जबकि उसका समित्र, समानता-प्रेमी फ्रास, अत्याचारी ब्रिटेन के साथ, जो अमेरिका का भूतपूर्व शत्रु था, उलझ गया, तो यह कैसे हो सकता था कि वह (अमेरिका) अपनी अधिमानता प्रगट न करे ?

दूसरी ओर ब्रिटेन के साथ अमेरिका के अधिक घनिष्ट सम्बन्ध थे। स्वतन्त्रता का युद्ध छिडने तक, अमेरिका के उपनिवेश, ब्रिटेन के समान ही फ्रास को अपना शत्रु मानते आए थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति का अर्थ यह नही था कि ब्रिटेन के साथ सम्पूर्ण सम्बन्ध ही टूट जाए। अनेक अमरीकियो के लिए (जिनमे हैमिल्टन प्रमुख था) जार्ज ततीय और विलियम पिट का देश, अपने सब दोषो के रहते हुए भी, एक निकट सम्बन्धी की तरह था। अमेरिका का बहुत सा समुद्र-पार व्यापार ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत देशो से था। यदि इस व्यापार का सिलसिला बीच मे टूट जाए, तो हैमिल्टन की राजस्व-पद्धति चकनाचूर हो जाती थी। दूसरी बात यह कि अमेरिका का गणतन्त्रवाद योरूप के गणतन्त्रवाद से बिल्कुल भिन्न तरीको पर प्रस्थापित हुआ था। योरूप मे इसे लाने के लिए खून की नदिया बही थी और तब जाकर क्रान्ति आई थी। अमेरिका मे 'टोरी' विचार-धारा रखने वाले लोगो को केवल तारकोल से पोत दिया गया था और उन पर पख चिपका दिए गए थे। फ्रास के रईस और कुलीन लोग, उस देश के बादशाह के समान, फासी के तख्ते पर लटकाए गए थे। वाशिंगटन का प्रिय मित्र, लेफायट, जो कुछ काल तक फ्रास के नेताओ मे से एक था, सन् १७९२ मे अपमानित होने पर आस्ट्रेलिया के एक कारागार मे डाल दिया गया। यह बन्दी-गृह एक सदिग्ध रूप से पावन स्थान था, जहा वह चार साल तक पडा सडता रहा। इस कैद के कारण वह अपने बहुत से साथियो से अधिक भाग्यवान् निकला, क्योकि वह फासी पर चढ़ने से बच

गया । वाशिंगटन की दृष्टि मे—जिसमें कि उनके आपस मे लडने-झगडने वाले सलाहकार भी एकमत थे—अमेरिका के लिए स्पष्ट मार्ग यह था कि वह तटस्थ बना रहे। अत उन्होने इस नीति की तुरत सरकारी रूप से घोषणा कर दी। पर उन्होने फ्रास के विचारो का आदर करते हुए (और जैफर्सन के विचारो का भी, जिसने इस बात का अनुरोध भी किया था) उन्होने अपने दस्तावेज मे 'तटस्थता' शब्द का प्रयोग नही किया। इसके अलावा उन्होने, फ्रासीसी सरकार के मन्त्री, नागरिक जैनेट, के स्वागत की तैयारिया करके एक प्रकार से फ्रास की नई सरकार का अनुमोदन किया। अत फ्रास की नई सरकार के बारे मे इतनी बात असदिग्ध और निश्चित थी। बाद में कुछ समय तक अमेरिका में क्रोधपूर्ण उपद्रव की स्थिति रही, क्योकि अमेरिका भले ही सरकारी रूप मे तटस्थ हो, किन्तु व्यक्तिगत रूप से अमेरिका-वासी तटस्थ नहीं थे। उन्होने फ्रास मे क्राति फूटते ही इसका पक्ष लेना आरम्भ कर दिया था। अब वह उत्साह से एव आश्चर्यजनक मात्रा में उल्लसित हो उठे थे। फ्रास के पक्ष के लोगो ने टाम पैन की पुस्तक 'मनुष्य के अधिकार' को बाइबल के समान माना, धनी लोगो के शासन की तीव्र निन्दा की और स्वतत्रता के लिए हर्ष के नारे लगाए। उन्हो अपने अपने प्रजातान्त्रिक क्लब बनाए और जब जेनेट अमेरिकन मच पर आया, तो उसका हृदय से स्वागत किया। 'अग्रेजो के पक्ष के लोगो' ने इस सब को भय और घृणा से देखा और उन्होंने अपने विरोधियो को विनाशकारी, उन्मत्त व्यक्ति कह कर उनकी निन्दा की।

डेढ शताब्दी के अन्तर पर भी इन घटनाओ के ठीक स्वरूप को देखना अथवा वाशिंगटन ने उन मे कितना भाग लिया—उसे ठीक २ आकना कठिन लगता है। कट्टर पथियो को छोड कर वह सब फैड्रलिस्टो के लिए एक वीर-पुरुष और राष्ट्र के प्रतीक थे। उनके नाम की प्रतिष्ठा सब वाद-विवादो मे दूसरो पर प्रभाव डालने के लिए अन्तिम हथियार थी। मर्यादा मे रहने वालो को

छोड कर वह सब गणतन्त्रवादियो के लिए एक काति-हीन योद्धा थे। उनकी दृष्टि मे वह फड्रलिस्ट लोगो की योजनाओ तथा कुमन्त्रणाओ का जाने-अनजाने मे मूर्त्त-रूप थे। सन् १७९३ मे, अपने लम्बे जीवन-कार्य मे प्रथम बार, वाशिंगटन खुली और निरन्तर आलोचना के शिकार बने। सन् १९८९ मे अमरीकियो ने ('गौड सेव आवर ग्रेशस किग' की तान पर) यह गाया था—'गाड सेव ग्रेट वाशिंगटन' (परमात्मा महान् वाशिगटन की रक्षा करे)। सन् १७९३ मे गणतन्त्रवाद के पोषक पत्रो मे वे एक दूसरे को स्मरण करा रहे थे कि वाशिंगटन कोई देवता नही हैं, बल्कि गलतिया करने वाले एक मानव है, जिन्होने अपने को 'दरबार के खुशामदी अनुचरो' तथा 'कुम्भी जैसे छोटे शासको' से घेर रखा है। दो वर्ष बाद फिलेडेल्फिया के एक पत्रकार ने वाशिंगटन को ऐसा व्यक्ति बताया 'जो राजनैतिक रूप से सठिया गया है' और जो 'अत्युद्धत और निष्ठुर-शासक है।' उसी पत्रकार ने १७९६ के अन्त मे लिखा कि 'यदि कभी कोई राष्ट्र किसी व्यक्ति द्वारा भ्रष्ट हुआ है, तो 'निस्सन्देह अमेरिका राष्ट्र वाशिंगटन द्वारा हुआ है।'

किन्तु समकालीन टिप्पणिया अधिक-परिमाण मे अपने लहजे मे वाशिंगटन के प्रति अधिक आदरपूर्ण थी। तो भी ये उदाहरण उस युग के भावो के माप-दण्ड हैं। गणतन्त्र-वादियो ने महसूस किया कि प्रमुख राष्ट्रपति एक दलीय सरदार बनता जा रहा है और निस्स्वार्थ देशभक्ति के चोले मे फैड्रलिस्ट अग्रेजो के हाथो मे खेल रहे हैं। वह यह मानते थे कि फ्रास का व्यवहार न सिर्फ एक पहेली है, बल्कि निन्दनीय भी है। उदाहरण के लिए जैनेट ने अपने व्यवहार मे इस कदर गवारूपन प्रदर्शित किया कि जैफर्सन को इस बात मे वाशिंगटन का समर्थन करना पडा कि फ्रास से उसे वापस बुलाने की माग की जाए। किन्तु, कुछ भी हो, वे ब्रिटेन की अपेक्षा फ्रास को अधिक चाहते थे, क्योकि उन्हे अतीत की अपेक्षा भविष्य का अधिक ख्याल था। वे देख रहे थे कि अमेरिका अपने सच्चे मित्र के प्रति तो उदासीन है और जो उसका वास्तविक शत्रु है उसके प्रति

उसमे आदर की भावना है। उन्होने जब सन् १७९४ मे यह सुना कि वाशिंगटन, एक प्रसिद्ध फेड्रलिस्ट और अग्रेजो के प्रशसक, जान जे को लन्दन इसलिए भेज रहे हैं, ताकि शेष बचे-खुचे चन्द भेद-भावो के सम्बन्ध में समझौते की बात चलाई जाय, तो उन्हे बहुत क्रोध आया। उनके सबसे बढ कर सन्देह मार्च, १७९५ मे, सम्पुष्ट हुए जब उस समझौते के विवरण अमेरिका मे पहुँचे जिन पर कि जे ने हस्ताक्षर किए थे।

लोगो को ऐसा लगा कि जे ने अमेरिका के अधिकारो को दृढता पूर्वक मनवाने की बजाय अग्रेजो के आगे विनीततापूर्वक मस्तक झुका दिया है। यह सच है कि इस समझौते के अनुसार ब्रिटेन सरकार ने वचन दिया कि वह अमेरिका के पश्चिम मे स्थित अपनी फौजी छावनियो को, जहाँ से वे लोग इण्डियनो को अमेरीकियो के विरुद्ध भडकाया करते थे, खाली कर देगी। किन्तु गिनती मे केवल यही एक महत्वपूर्ण रियायत थी, जो उन्हे मिली। इस विषय मे भी लोगो का यह कहना था कि आखिर इस समझौते के द्वारा ब्रिटिश सरकार केवल अपने उस वायदे को पूरा कर रही है, जो उसने दस वर्ष पूर्व किया था। इसे छोडकर शेष जितनी रियायते थी वे अमेरिका की ओर से ब्रिटेन को दी गई थी। मजेदार बात यह कि कई महत्त्वपूर्ण मामले भविष्य मे बातचीत के लिए छोड दिए गए थे। अत रिपब्लिकेन विपक्षियो का यह आरोप था कि अमेरिका मे ब्रिटेन के प्रशसक अपने देश के जन्मसिद्ध अधिकारो को बेच रहे हैं और जे देश-विद्रोही है (उन्होने उसका कागज का बुत बना कर उसे दियासलाई दिखाई थी), फैड्रलिस्ट गुण्डे हैं, 'वाशिंगटन राजनैतिक क्षेत्र मे बगुला-भक्त' है, वह राष्ट्र का वास्तविक पिता नही, 'सौतेला पिता' है। जे द्वारा किये गये समझौते पर इस प्रकार का लडाई-झगडा सैनेट द्वारा दस्तावेज के सम्पुष्ट होने और वाशिंगटन के हस्ताक्षर होने के बहुत काल बाद तक, सन् १७९५ के वष मे और १७९६ मे, अनेक मासो तक चलता रहा। किन्तु यह हल्ला-गुल्ला सब बेकार गया, क्योकि समझौता अमल मे आ गया और इस प्रकार समर्थन के कारण जे का सिर ऊचा हुआ।

दूसरी तरफ वार्शिगटन ने अपने फ्रास के वर्जीनिया-वासी गणतन्त्रवादी दूत, जेम्ज मनरो, का तिरस्कार करते हुए इसलिए उसे वापिस बुला लिया, क्योकि वह फ्रासीसियो को यकीन नही दिला सका था कि जे द्वारा किया गया समझौता समूचे अमेरिका की मरजी से हुआ था, न कि केवल फैड्रलिस्ट दल की इच्छा से।

ये विदेश-नीति के सम्बन्ध मे विचार थे, जिन्हे गणतन्त्रवादी वार्शिगटन के द्वितीय शासन-काल मे व्यक्त किया करते थे। देश में उन्होने फैड्रलिस्ट की विद्वेषपूर्ण नीतियो का एक और साक्ष्य ढूढ निकाला। यह हैमिल्टन का उच्छुल्क-कर (मद्य-कर) सम्बन्धी कानून था, जिसे जैफर्सन ने 'घृणित-रूप से अहितकर' कहा। इसके विरुद्ध रोष की आग इस कदर भडकी कि सन् १७९२ मे वार्शिगटन ने कडे शब्दो मे इसकी घोषणा करके इसे सबल बनाने का प्रयास किया। दो वर्ष बाद हैमिल्टन की इस सूचना से प्रेरणा पाकर कि पश्चिम पैनसिलवेनिया के 'मद्य-कर विद्रोही' सघ की सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं, उन्होने एक बहुत बडी मिलिशिया बुलाई और सम्मिलन-स्थान पर उनका निरीक्षण करके उन्हे गडबडी वाले स्थान पर भेज दिया। वहाँ किसी प्रकार की लडाई नही हुई, क्योकि गणतन्त्रवादियो के कथनानुसार-वहाँ वास्तव मे कोई विद्रोह था ही नही, केवल हैमिल्टन द्वारा अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए एक अवास्तविक वस्तु की कल्पना की गई थी। डेढ सौ पैनसिलवेनियन पकड लिए गए, जिनमे से दो को मौत की सजा मिली। वार्शिगटन ने बाद मे उन्हे माफ कर दिया। किन्तु ऐसा लगता है कि हैमिल्टन ने उन्हें अपने विचारो का बना लिया। मैडीसन की राय मे यह तमाशा इसलिए किया गया था कि प्रजातान्त्रिक सभाओ को विद्रोह के घृणित कार्य से सम्बद्ध किया जाए और काग्रेस मे गणतन्त्रवादियो का सम्बन्ध इन सभाओ के साथ जोड दिया जाये, ताकि राष्ट्रपति दूसरे (फैड्रिल) दल के प्रमुख नेता नजर आए। जैफर्सन ने एक वर्ष पहले राष्ट्रपति से कहा था कि हैमिल्टन का यह इरादा है कि उन्हे 'राष्ट्र की प्रमुखता से नीचे उतार कर एक दल का प्रमुख

बनाया जाय।' वाशिंगटन जब इस सीमा तक चले गए कि उन्होने नवम्बर, १७९४ मे अपने काग्रेस को दिए गए वार्षिक भाषण मे विद्रोह का आरोप 'कुछेक स्वय-निर्मित सभाओ' पर लगाया, तो मैडीसन के विचार मे 'उन्होने सम्भवत अपने राजनैतिक जीवन मे सब से बडी भूल की।'

उस समय की घटनाओ के विषय मे गणतन्त्रवादी क्या विचार रखते थे, उसका हमने जिक्र किया है। इस बारे मे हमे यह देखना है कि वाशिंगटन का अपना दृष्टिकोण क्या था ? (यह निश्चित है कि) वह न तो अग्रेजो के पक्षपाती थे और न फ्रासीसियो के। उनकी नजरो मे यह इस प्रकार से स्वतन्त्रता की लडाई का विस्तार ही था, किन्तु इसे बिना युद्ध के लडा जाना चाहिए था। अमेरिका के दायित्व को प्रमुख खतरा बाहर से था, क्योकि अभी तक अमेरिका मे, लज्जास्पद मात्रा मे, प्रभावशाली आत्म-शक्ति की कमी थी। अमेरिका अभी न तो पूर्णतया स्वतन्त्र था और न ही परिपक्व था। किसी भावना प्रधान नाटक की किशोर-नायिका की तरह, अमेरिका विपुल सम्पत्ति का अधिकारी था। इसके नकली अभिभावक इस बात के लिए कोशिश कर रहे थे कि उस किशोरी को निजी सम्पत्ति से वचित कर दिया जाए—या तो विवाह के लिए विवश करके और या जरूरत पडने पर उसे मौत के घाट उतार कर।

इन स्वत नियुक्त अभिभावको मे से फ्रास अधिक खतरनाक था। ब्रिटेन का रवैया रूखा और तिरस्कारपूर्ण था। साथ ही वह अपनी ही शैली मे तटस्थता-सम्बन्धी अधिकारो को ठुकराया करता था। किन्तु अमेरिका मे उस समय इतनी शक्ति नही थी कि वह ब्रिटेन को चुनौती दे सके। उसका उद्देश्य था व्यापारिक सम्बन्धो का सरक्षण और सुधार, अग्रेजी सेना को पश्चिमी किलो से निकलवाना, निकट के वायदो से बचना और सामान्य-रूप मे समय को किसी न किसी तरह बिताना। यद्यपि वाशिगटन जे के कार्य से निराश थे, फिर भी वह इस बात को जानते थे कि अमेरिका इतना निर्बल है कि उसके लिए कोई चमत्कार दिखाना सम्भव नही।

जहा तक फ्रान्स का सम्बन्ध है, खतरा अधिक सूक्ष्म था और इसलिए उसका मुकाबला करना अधिक कठिन था। वाशिंगटन ने 'तटस्थता' पर बल दिया, फ्रासीसी 'मैत्री पूर्ण तटस्थता' पर जोर देते थे। उन्होने वर्तमान समित्रता के समझौते का आश्रय लेना इसलिए पसन्द नही किया, क्योकि वे सयुक्त-राज्य के साथ पूर्व सम्बन्धो की अस्पष्टताओ से लाभ उठाने की आशा रखते थे। उन्हे रसद मिलती थी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे अमेरिका को लुटेरे-पोतो का और सम्भवत कैरिब्बीन तथा पृष्ठदेश मे साम्राजीय साहसिक कार्यों का अड्डा बना सकते थे। ये दोनो सम्भावनाएँ सक्रिय-रूप से जैनेट के ध्यान मे थी और, अपने उत्तराधिकारियो की ही तरह, उसने यह मान लिया था कि वह भलीभाति समर्थन पाने के लिए अमेरिका की क्रान्तिकारी भावनाओ पर भरोसा रख सकता है। उसे आशा थी कि यदि वाशिंगटन और फैड्रिल विचारो के लोग कभी रास्ते मे रोडे बनें भी, तो फ्रान्स उनसे आगे जाकर अमेरिका-वासियो तक अपनी बात पहुचाने की चेष्टा करेगा। वस्तुत सन् १७९६ आने पर अमेरिका मे ठहरे हुए फ्रासीसी कारिन्दो ने चुनावो मे गणतन्त्रवादियो की जीत के लिए ऐडी से चोटी तक का जोर भी लगाया।

दलो के षडयन्त्रो के कारण वाशिंगटन की समस्याए जटिल बन गई। हैमिल्टन जान-बूझ कर, बिना सोचे-समझे, ब्रिटेन के कूटनीतिज्ञ प्रतिनिधि को अपने भेद बता दिया करता। दूसरी ओर गणतन्त्रवादी (यद्यपि इस मे जैफसन इतना दोषी नही था) फ्रान्स को अपने सम्पूर्ण समित्र के रूप मे मानते थे। यद्यपि जैफर्सन ने सन् १७९३ के अन्त मे और हैमिल्टन ने सन् १७९५ मे अपने अपने पद से इस्तीफा दे दिया, फिर भी उनकी नीतियो का राष्ट्रीय मामलो पर प्रभाव पडता रहा। हैमिल्टन विशेष रूप से सरकारी मामलो मे प्रभावी रहा। यह मानना पडेगा कि यह अशत वाशिंगटन के निमन्त्रण के कारण था। उसने ऐसा इन्तजाम किया था कि न्यूयार्क मे विधि-व्यवसाय को करते हुए भी वह मन्त्रीमन्डल

का एक अदृश्य सदस्य सा बना रहे। जैफर्सन का उत्तराधिकारी राज्य-सचिव, एडमण्ड रैंडाल्फ, विचित्र परिस्थितियो मे सन् १७९५ मे पद-च्युत कर दिया गया। गलत या सही, वाशिंगटन का यह विचार था कि वह जे के समझौते के विरुद्ध फ्रान्स के मन्त्री से साज-बाज करने का अपराधी है।

किन्तु इन षडयन्त्रो, खुशामदो और स्पष्ट दुर्वचनो के बावजूद, वाशिंगटन अपनी नीति पर अडे रहे। हम इस परिणाम पर पहुचते है कि बाद के इतिहास की रोशनी मे—वह रोशनी जो उ हे उस समय प्राप्त नही थी—वह सही थे। और अति-गणतन्त्रवादी जो, यदि उनका बस चलता, अमेरिका को फ्रान्स के दायरे मे घसीट ले जाते, वे गलत थे, चाहे उनके आशय उचित ही क्यो न हो। वाशिंगटन समझदार और साहसी थे। यदि कभी वह आपे से बाहर भी हो जाते 'थे', तो भी वह अपनी पकड को नही खोते थे। यह भी नही कह सकते कि उनकी कूट-नीति परिणामो के लिहाज से सर्वथा निषेधात्मक थी। जे के द्वारा किए गये समझौते के अल्प लाभो के बदले मे इससे भी बढिया लाभ स्पेन के साथ १७९५ मे समझौता करने मे मिले, जिसे थामस पिकने ने सम्पादित कराया था। इस समझौते के अनुसार मिसीसिपी नदी मे (जिसका निकास स्पेन के इलाके मे होता था) स्वतन्त्रता-पूर्वक पोत चलाने के अमरीकी दावे को स्वीकार कर लिया गया। साथ ही उसके इस दावे को भी मान लिया गया कि उसकी पश्चिमी सीमा मिसीसिपी नदी है। उसी साल ओहियो क्षेत्र मे जनरल एथनी वेन की निर्णा-यिक जीत के बाद इण्डियनो के साथ एक समझौता हुआ जिसके फलस्वरूप उत्तर-पश्चिम सीमा अधिक सुरक्षित हो गई। वाशिंगटन ने अपने विदाई-भाषण मे इस बात को दोहराया—'मेरे राष्ट्रपति-काल मे मेरा प्रधान लक्ष्य यह रहा है कि मैं कोशिश करूँ कि हमारे देश को इतना समय मिल जाये कि उसकी स्थिति निश्चित हो जाये, उसकी आधुनिक सस्थाए परिपक्वावस्था मे आ जाये और वह इस कदर निर्विघ्नता-पूर्वक प्रगति करे कि उसे उस हद तक

शक्ति और स्थायित्व प्राप्त हो जो उसे अपनी सम्पदा को भली-भाति वश मे रखने के लिए आवश्यक है।'

इस प्रकार की परिस्थितिया उपलब्ध होने पर देश प्रगति किए बिना नहीं रह सकता था। वाशिंगटन ने उन्नति और समृद्धि के प्रमाण अपने चारो ओर अपनी आखो से देखे। उनके दूसरे प्रशासन-काल के अन्त तक तीन नए राज्य—वर्मोन्ट, कैटकी और टैनेसी—सघ में शामिल हो गए और शेष की भी उनके पद-चिन्हो पर चलने की आशा बध गई। शुल्क-द्वार वाली सडके बन रही थी। पेनसलेवेनिया मे कोयले के निक्षेप मिले। यद्यपि पोटोमिक कम्पनी की प्रगति की रफ्तार धीमी थी, फिर भी वह अभी तक जिन्दा थी। इसी प्रकार अल्प-सुधार योजनाए भी चालू थी। सघानीय राजधानी (जिसमे कि वाशिंगटन गहरी दिलचस्पी ले रहे थे) की नीव महत्ता और क्षुद्रता के मिश्रित वातावरण मे रखी जा रही थी—ऐसा वातावरण कि जिसने बाद मे सदा के लिए अपनी छाप छोडी।

इन महत्त्व-पूर्ण कामो की पूर्ति के लिए वाशिंगटन को बहुत सा श्रेय मिलना चाहिए-यद्यपि उन्होने कभी इसकी अभ्यर्थना नहीं की, क्योकि अपनी विदेश-नीति मे जो उन्होनें एकरूपता दिखाई, यदि उस में कोई न्यूनता रह जाती, तो उनके महान् कामो मे से एक-भी सम्पादित न हो सका होता। जे के समझौते के पारित होते ही फ्रासीसी विरोध अधिकाधिक तीव्र होता चला गया, यहा तक कि अमेरिका और फ्रास के बीच जो तनाव पैदा हुआ वह लगभग असह्य हो गया। जान क्विन्सी एडम्ज ने, जो उपराष्ट्रपति का सुपुत्र था, हालैण्ड से (जहा वह अमेरिका का राजदूत था) सन् १७९५ के अन्त मे लिखा—"यदि अब भी हमारी तटस्थता को सुरक्षित रखा जा सकता है, तो यह केवल राष्ट्रपति के कारण ही सम्भव हो सकेगा। उनके महान् चरित्र व सुख्याति, जिनके साथ उनकी दृढ़ता और राजनैतिक निर्भीकता भी शामिल हैं, का वजन ही इस वेगपूर्ण जल के प्रवाह को रोक सकते थे, जो अब भी

तीव्र कोप के साथ गडबडी मचा रहा है और जिसकी गूज अन्ध-महासागर के पार भी सुनाई दे रही है।"

यदि हम यह स्वीकार कर लें कि वाशिंगटन ने इन सकटपूर्ण सालो मे यह दिखा दिया कि उनमे नेतृत्व के अद्भुत गुण थे, तो क्या यह सही है कि एक प्रमुख कार्यपालक की बजाय उन्होंने यह सब कुछ एक राजनैतिक दल फैड्रिल दल—के नेता के रूप में किया ? हमने देखा है कि अपने बहुत से समकालीन लोगो की तरह, वह दलो की उत्पत्ति अवाछनीय समझते थे। उनका मत था कि राष्ट्रपति को राजनैतिक स्पर्धाओ से ऊपर उठना चाहिए और सर्वाधिक महत्त्व की बात यह है कि वह सयुक्त राज्य मे विधि और व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे। गणतन्त्रवादियो के विरोध की तीव्रता उनके लिए विस्मय और कडवाहट की चीज थी, यद्यपि, जब तक उनके आक्रमण हैमिल्टन तक सीमित रहे, उन्होने अपना सतुलन नही खोया। किन्तु दूसरे प्रशासन-काल मे जबकि राजनैतिक वाद-विवाद बढे और उन पर भी नुक्ताचीनियो की बौछार पडने लगी, तो वाशिंगटन के विचार धीरे-धीरे कठोरता पकडने लगे। 'मेरे विचार मे' जैफर्सन ने कहा, 'वह इन बातो को किसी भी आदमी से, जिसे मैं आजतक मिला हू, अधिक महसूस करते हैं।' १७९३ मे मन्त्रिमण्डल की एक बैठक मे वाशिंगटन फूट पडे कि फ्रैनो 'धूर्त' है, जिसका मुह बन्द करना चाहिए। बाद मे उसी वर्ष फ्रैनो के समाचार-पत्र का प्रकाशन तो बन्द कर दिया गया, किन्तु शेष गणतन्त्रवादी पत्रो ने अपने हमले जारी रखे। आलोचनाओ को सदा बुरा मानने के कारण तथा इस बात मे तर्क-सगत रूप से विश्वास रखते हुए कि गणतन्त्रवादी अनुत्तरदायी और दुराशय-पूर्ण हैं, वाशिंगटन अन्ततोगत्वा फैड्रिलवादियो से इस बात मे सहमत हो गए कि उनकी विरोधी कोई दूसरी पार्टी नही, 'बल्कि दलबन्दी वाले लोग' है, वे 'विपक्षी' नही, जिनके हाथो मे एक दिन न्याय-सगत रूप से हकूमत की बागडोर आ सकती है, बल्कि वे इस प्रकार के विरोधी लोग हैं जिनके विचारो मे राज-

विद्रोह, षडयन्त्र और फ्रास के लिए दीवानापन समाया हुआ है।', यही कारण था कि वह सर्वरूपेण गणतन्त्रात्मक सभाओ की निन्दा किया करते थे, यद्यपि इन मे से बहुत से अहानिकर राजनैतिक क्लब भी थे। इसी वजह से उन्होने अपने १७९८ मे लिखे एक पत्र मे यह क्रोधपूर्ण टिप्पणी की--"एक स्पष्ट घोषित प्रजातन्त्रवादी के सिद्धान्तो को बदलना ऐसा ही असभव है जैसाकि एक काले हब्शी को बार बार रगड कर सफेद बनाना।" यह भी लिखा कि इस प्रकार का आदमी 'अपने देश की हकूमत को उलटाने मे कोई कसर उठा न रखेगा।' (यही कारण था कि) उन्होने अपना अन्तिम मन्त्रिमडल केवल फैड्रिलवादी लोगो को लेकर बनाया।

अब इससे आगे केवल एक ही कदम था--वह कदम जो उन्होने सभवत अनजाने मे उठा ही लिया—अर्थात् वह इस बात को स्वीकार करे कि वह स्वय फैड्रिलवादी है। सन् १७९९ मे, जो उनकी आयु का अन्तिम वर्ष था और जबकि उन्हे अपना पद त्यागे दो वर्ष हो चुके थे, उन्हे सानुरोध यह प्रार्थना की गई कि वह १८०० मे राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए खडे हो। अनुरोध का आधार यह था कि सयुक्तराज्य अमेरिका गम्भीर सकट की स्थिति मे है। उन्होने इस प्रार्थना को मानने से इन्कार कर दिया। उन का कहना यह था कि 'आजकल व्यक्ति की बजाय सिद्धान्त ही विवाद का विषय है और भविष्य मे भी रहेगा।' आगे उन्होने कहा--'यदि मैं निर्वाचन के लिए खडा भी हो जाऊ, तो मुझे फैड्रिल-विरोधी पक्षो से एक वोट भी नही मिलेगा, और इसलिए मैं किसी और भली-भाति समर्थित फैड्रिलवादी से अधिक दृढस्थिति मे नही हूगा।' वह इस बात को मानने को तैयार नही थे कि गणतन्त्रवादी यथार्थ लोगो का ही दल है। किन्तु उन के पत्र समग्र-रूप से पढने पर (जिसमे उन्होने 'किसी अन्य फड्रिलिस्ट' का उल्लेख किया है) पता चलता है कि उन्होने अमेरिका की राजनीति के बदलते आधार को समझना आरम्भ कर दिया था।

यदि इस समय वह अपने (राष्ट्र-पति के) पद पर आरूढ होते,

तो शायद वह अपने आप को फैड्रिलवादी कहलाने को तैयार न होते। उस समय वह इस बात का प्रतिपादन करते कि राष्ट्रपति को अपने आपको अलग रहने की कोशिश करनी चाहिए। निश्चय ही इससे उन पर कोई गम्भीर दोष नही लगता, किन्तु इस प्रश्न पर उन्होने इस प्रकार की उच्चकोटि की तथा भविष्य-दृष्टा के उपयुक्त अक्षुब्धता प्राप्त नही की थी, जैसी कि उनके जीवनी-लेखको ने उनमे देखी और उद्घोषित की। उस दशाब्दी को सर्वथा वाशिंगटन अथवा फैड्रिलवादियो की आँखो से देख कर ही हम इस बात मे सहमत हो सकते है कि उन्होने राजनैतिक समीकार को न्यायोचित ढग से सविन्यस्त किया।

### अन्तिम कार्य निवृत्ति

ये कई एक परिकल्पी बातें हैं। चाहे किसी अन्य बात मे हमे सदेह ही क्यो न हो, इस बात मे जरा भी शक की गुजाइश नही है कि राष्ट्रपति-पद को छोडते हुए वाशिंगटन को अपार हर्ष हुआ। अनेक लोग उनसे आशा रखते थे कि वह तीसरी अवधि के लिए भी अपनी स्वीकृति दे देगे। यह किसी से छिपा नही था कि यदि वह खडे होते, तो सहज मे पुन निर्वाचित हो सकते थे। किंचित् विद्वेषपूर्ण टिप्पणिया होते हुए भी, वह सर्वाधिक प्रशसित अमेरिकन थे। किन्तु उन्होने काफी, बल्कि काफी से भी ज्यादा, समय तक इस प्रतिष्ठित-पद को शोभा प्रदान की थी। उनके उत्तराधिकारी जान एडम्ज को, यद्यपि राष्ट्रपति का प्रतिष्ठित-पद मिलने से काफी खुशी हुई, किन्तु इस सम्बन्ध मे उसे रत्ती भर भ्रम नही था कि किन विकट परिस्थितियो से उसे जूझना होगा। एडम्ज नेमार्च सन् १७९७ के उद्घाटन का वर्णन करते हुए अपनी धर्म-पत्नी को लिखा—'वस्तुत यह एक गम्भीर दृश्य था, जिसने जनरल महोदय की उपस्थिति के कारण व्यक्तिगत रूप से मुझ पर अपना असर छोडा। उस समय जनरल महोदय का मुख-मण्डल प्रशात और दिन के प्रकाश के समान निर्मल और स्वच्छ था। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह मुझ पर विजय पाने का मजा ले रहे हो। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं उन्हे यह

कहते हुए सुन रहा हूं—"अरे ! मैं बाहर हू और तुम अन्दर हो। देखें, हम मे से कौन सबसे अधिक खुश रहेगा।" प्रतिनिधियो के सदन मे इतनी अधिक भीड थी कि भवन के अन्दर सब जगह लोगों से खचाखच भरी हुई थी। मेरा विश्वास है कि इस भारी भीड में एक वाशिंगटन थे जिनकी आखें जरा भी नही भीगी थी।"

अन्य बडे अवसरो पर वाशिंगटन का हृदय द्रवित हो उठता था—उदाहरण के लिए उस मौके पर जबकि उन्होने १७८३ में, फ्रान्सिस टेवर्न मे अपने अधिकारियो से विदाई ली थी। उस तरह के आसू इस समय नही थे। उन्होने अपनी डायरी मे उपर्युक्त उद्घाटन के बारे मे बस इतना ही लिखा—"आज भी कल की तरह ही दिन था। तापमान ४१ अश था।"

इसका यह आशय नही कि अपना पद छोडते हुए उनके मन मे उदासीनता की भावना थी, किन्तु असल बात यह थी कि उस समय कोई चीज और कोई आदमी उन्हे यह विश्वास नही दिला सकता था कि वह अमेरिका के लिए अपरिहार्य थे। उन्होने उन्हीं दिनो मे अपना पैसठवा जन्म-दिवस मनाया। (या यो कहना चाहिए कि एक 'शोभा-युक्त मनोरजन' द्वारा उनके लिए जन्म-दिवस-समारोह मनाया गया) जिसमे बारह सौ फिलेडैल्फिया-निवासी उन की सराहना के लिए अत्यधिक भीड मे इकट्ठे हुए। उस समय उन्हे इस बात की आशा नही थी कि वह अधिक सालो तक अपना जन्म-दिवस मना सकेंगे। अत जो थोडे-बहुत वर्ष उनके जीवन के शेष थे, उन्हे वह माऊटवर्नन पर ही रहकर व्यतीत करने की इच्छा रखते थे। उनका प्रौढ-जीवन बडा शानदार रहा। किन्तु बुढापे एव सार्वजनिक सेवा की माग ने उनकी शक्तियो को बहुत हद तक क्षीण कर दिया था। उनके बहुत से पुराने मित्र परलोक सिधार गए थे। फेयरफैक्स परिवार मे से केवल एक ही व्यक्ति वर्जीनिया वापस लौटा था। बैलवोयर खण्डहर बन चुका था और सैली, फेयरफैक्स इगलैण्ड से लौटी ही नहीं थी। लिफायट अपनी कैद से दुबारा छूट चुका था। वाशिंगटन ने अपनी सहज उदारता से,

उसकी पत्नी की रुपये-पैसे से मदद की थी, पर वह महासागर की चौडाई जितने अन्तर पर था। अब महज उनकी माऊटवर्नन वाली जागीर ही शेष थी और मर्था की हर्षोत्पादक सगति तथा उनके कुछ तरुण सगे-सम्बन्धी बाकी थे।

यदि उनकी जीवनी को इतना ही सुन्दर और सुरुचिपूर्ण बनाया जा सकता जैसा कि कोई उत्तम नाटक हुआ करता है, तो हम वाशिंगटन पर (नाटक की तरह) धीरे से पर्दा गिरा सकते और उन्हे बुढापे का शान्त व सुख-पूर्ण जीवन बिताते हुए छोड देते। किन्तु उनका जीवन इस प्रकार के ढाचे मे नही ढला था। पर्दा नित्य बार-बार झटके के साथ ऊपर उठता ही रहा और हर बार ऐसा सगीत छिडता कि लोरियो से सुलाए गए उन्हे अचानक जगा देता। यही दशा फिर उनकी १७६८ मे हुई। एक प्रकार से यह उनका अपना ही दोष था। यदि वह देखने मे बूढे लगते, तो उन्हें निजी जीवन बसर करने के लिए छोड दिया जाता। जब-जब वह अपने फार्म की देख-रेख कर रहे होते, महमान निवाजी मे लगे होते अथवा चिट्ठी-पत्रियो को निपटा रहे होते, तो वह पहले की तरह ही शक्तिशाली एव ओजपूर्ण प्रतीत होते थे। वास्तव मे, अब उनके पत्र अधिक उत्तेजना-दायक प्रतीत होते थे, सभवत इसलिए कि अब वह अपने मन की बात अधिक खुल कर कह सकते थे। पहले ऐसी बात नही थी, क्योकि उस समय उन्हे अधिकाधिक सतर्कता घेरे हुए थी। जो भी हो, उन्हें सन् १७९८ मे पुन सैनिक जीवन मे दाखिल होने का आदेश दे दिया गया। फ्रास का व्यवहार इतना हिंसक और उत्तेजनापूर्ण हो चुका था कि वह वस्तुतः अमेरिका के साथ युद्ध की स्थिति मे था। यह नौ-सैनिक युद्ध था। अमेरिका के पास कोई फौज नही थी, सिवाए उन स्थायी सैनिको के जिन्हे सूक्ष्म-सेना-यष्टि के रूप मे वाशिंगटन ने कायम रखने की कोशिश की थी। अब उन पर सेना की भर्ती का काम डाल दिया गया और उन्हे कहा गया कि वह प्रधान-सेनापति का पद सभालें। इस दायित्व के विचार से ही उनका हृदय कराह उठा। जब हैमिल्टन ने भविष्यवाणी की थी

कि निकट भविष्य मे उनका किसी दूसरे कार्य के लिए आह्वान होगा, तो वाशिंगटन ने उत्तर दिया था कि 'मैं अपने वर्तमान शान्ति-पूर्ण निवास-स्थान से अलग होते हुए उतनी ही हिचकिचाहट महसूस-करूगा जितनी कि अपने पुरखाओ की कब्रो की ओर जाते हुए। जब राष्ट्रपति ऐडम्ज ने उन से पूर्व सलाह लिए बिना उन्हे प्रधान सेनापति मनोनीत किया, तो उन्हे बहुत बुरा लगा। वह इस बात से चिंतित थे कि पहले की तरह ही उनके विरोधी उनके इस प्रकार से अधिकारपद पर लौटने पर या तो इसे उनकी महत्त्वाकाक्षा कहेगें और या उनके विदाई भाषण को दृष्टि मे रखते हुए उन्हे पाखडी समझेंगे। जो भी हो, वह इस कर्त्तव्य से अपना मुह नही मोड सकते थे। अपने कामो मे त्वरित, बुद्धिमान् तथा अत करणानुयायी वाशिंगटन ने प्रधान-सेनापति के रूप मे अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। पहले की तरह सर्व-व्यापी अलैक्जैण्डर हैमिल्टन, बिना विलम्ब के, उनके अधीन कार्य करने को उद्यत हो गया। उसने पीछे से चुपचाप हर प्रकार की व्यवस्था करनी आरम्भ कर दी और अपनी नियुक्ति इस प्रकार के पद पर करवाई कि जिस से वह वाशिंगटन का उपसमादेशाधिकारी बन सके।

यह घोर सकट का समय था, विशेष रूप से बिचारे जान एडम्ज के लिए। उसकी जगह वाशिंगटन होते, तो उनकी भी शायद उसी प्रकार निन्दा होती। किन्तु हम यह निश्चय-पूर्वक कह सकते हैं कि यदि वाशिंगटन एडम्ज की जगह होते, तो प्रशासन के सचालन मे एडम्ज द्वारा की गई कुछ एक भूलो को न करते। यदि हम दोनो के राष्ट्र-पतित्त्व की सविस्तार तुलना करें तो इस बात का भली-भाति पता चल सकेगा कि वाशिंगटन मे कही अधिक दृढता और गम्भीरता थी।

किन्तु सन् १७९८ अथवा १७९९ मे कोई लडाई नहीं हुई। परिणामत वाशिंगटन का जीवन पहले की तरह सामान्यरूप से चलता रहा। इस प्रकार मास बीतते गए। उनकी डायरी की साधारण लिखावट चलती रही—गर्मी के दिन, ठण्डे दिन, वर्षा, बर्फ

फिर सर्वेक्षण, घुडसवारी, अतिथियो का आना, रात्रि-भोज, उनकी भतीजी बैटो ल्यूइस की लडकी का उत्पन्न होना, इत्यादि। इसके बाद १३ दिसम्बर को डायरी की लिखावट समाप्त हो जाती है, केवल एक नोट मे इतना दर्ज है कि तापमान कुछ कुछ तुषार के ताप तक नीचे उतर गया है। तब वस्तुत पर्दा एक दम नीचे गिर पडता है।

वाशिंगटन को अभिशीत हो चुका है, उनका गला कष्ट दे रहा है। डाक्टर उनके शरीर मे से रक्त निकालते है। फिर दुबारा खून निकालते हैं, पर सब व्यर्थ। १४ दिसम्बर की रात्रि के दस बजे वह आखिरी सास लेते हैं और बिना किसी स्मरणयोग्य-अन्तिम कथन के (सिवाए उनके जो पासन वीम्ज ने उनके मरने के पीछे आविष्कृत किए) — उनकी जीवन-यात्रा समाप्त हो जाती है। दुख की बात यह कि उन्हे तत्कालीन बर्बरता-पूर्ण चिकित्सा के प्रति अपने जीवन को बलिवेदी पर चढाना पडा, यद्यपि चिकित्सा करने वालो के हृदय मे उनके प्रति सद्भावना मौजूद थी।

यदि इनकी देखरेख इतनी प्राचीनतम चिकित्सा-पद्धति के अनुसार न होती, तो सभव था कि वह कुछ वर्ष और जिन्दा रह सकते। इस अर्से मे वह सघानीय शासन को सघानीय राजधानी (जिसका नाम बाद मे वाशिंगटन के नाम पर रखा गया) मे स्थानान्तरित होते देखने, जिस से उन्हे प्रसन्नता होती, अथवा वह १८०१ मे गणतन्त्रवादियो की जीत के बाद थामस जैफर्सन को राष्ट्रपति-पद पर आसीन होते देखने, जिससे उन्हे अप्रसन्नता होती। समाचार पत्रो मे वह 'लुइसियाना परचेज' तथा द्वन्द्व-युद्ध मे हैमिल्टन की मृत्यु के बारे मे पढते। इन खबरो से उन्हे खुशी भी होती और गमी भी। पर क्या उन्हे किसी और चीज की कामना होती ? उनकी शताब्दी अपने अन्त पर थी और साथ ही उन्होने भी दुनिया से विदाई ले ली थी। उनकी मृत्यु के अवसर पर बृहद्, भ्रात-वित्त और समृद्ध अमेरिका के कोने कोने मे अनेक सुवक्ताओ और लेखको ने (जिन मे फ्रैनो भी था) उनकी प्रशसा मे अपनी

आलकारिक और मधुर वाणी का प्रयोग किया। किन्तु स्पैन्सर की निम्न पक्तियां उन सब से अधिक उपयुक्त दीखती हैं –

"परिश्रम के बाद नीद का आना, तूफानी समुद्रो मे सफर करने के बाद बदरगाह मे पहुचना, लडाई के बाद आराम पाना तथा सघर्षमय जीवन के बाद मृत्यु को प्राप्त करना, चित्त को अतिशय आल्हादित करता है।"

---

## अध्याय – ५

# सम्पूर्ण व्यक्तित्व

'अपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये वाशिंगटन को धन्यवाद मिले, उन्हें स्वच्छ और निर्मल यश मिला, जिसे बहुत कम लोग प्राप्त कर पाते हैं।'

(बायरन द्वारा लिखित डान ज्यूअन, सर्ग ९।)

### मूकता

अभिलेखो को गौर से देखने के बाद और अपने विचारो को लिपि-बद्ध करने के बाद भी, जार्ज वाशिंगटन के बहुत से जीवनी-लेखको को यह ख्याल अक्सर सताता रहा कि उनके बारे से कोई बात सम्भवत उन से छूट गयी है। यह बात नही कि अभिलेख खण्डित हो अथवा परस्पर विरोधी हो। हम यह जानते हैं कि बाल्यावस्था से निकलने के बाद वाशिंगटन अपने जीवन की किस अवस्था मे क्या करते रहे। हम लगभग निश्चय से यह अनुमान लगा सकते हैं कि विशेष अवसरो पर उन्होने क्या सोचा होगा। सम्भवत हम उनके बारे मे कुछ अधिक गहरी अन्तर्दृष्टि रख सकते, यदि उन का मर्था से हुआ पत्र-व्यवहार सुरक्षित हो सकता अथवा यदि आज से तीस वर्ष पहले जे० पी० मार्गन ने तथाकथित 'अश्लील' पत्र आग की नजर न किए होते। किन्तु इसमे सन्देह है कि इनकी वजह से चित्र मे किसी प्रकार का कोई ठोस परिवर्तन

होता। यह ठीक है कि वाशिंगटन के जीवन की, विशेष रूप से उनके राष्ट्र-पति होने के समय की, कुछ कहानियो का अभी तक उचित ढग से विश्लेषण नही हुआ। यह होते हुए भी, पूरे कद के चित्र की सामग्री मौजूद है—उनके अपने शब्दो मे और उनके बारे मे विपुल टिप्पणियो के रूप मे।

फिर यह पहेली क्यो ? यह अभिस्वीकृति क्यो कि वास्तविक वाशिंगटन हम से बच कर निकल गए है ? जब आकृति के समस्त चिह्न इतने गहरे अकित है, तो फिर यह चित्र इतना धुधला क्यो है ? इसके दो मुख्य कारण है—एक उनके व्यक्तित्व की प्रकृति और दूसरे वह लम्बी छाया जो वाशिंगटन की कल्पित कहानियो द्वारा पडती है—जिसे हम वाशिंगटन स्मारक कहते हैं।

इनके व्यक्तित्व से हम चकरा जाते है, क्योकि यह किसी प्रकार भी रहस्यमय न होने से हमारे लिए एक रहस्य बन जाता है। यह हमारी आदत है कि हम महान् व्यक्तियो के जीवन कार्यों की जाच करने के समय उनके आवृत्त विचार-क्रमो अथवा निर्बलताओ के साक्ष्यो को ढूढा करते हैं। कई एक ऐसे लोगो में हम नव-विभवोदित आवेशपूर्ण महत्त्वाकाक्षा अथवा निष्ठुरता पाते हैं, जो प्राय छोटे कद के लोगो मे सामान्यरूप से मिलती है। ( यह दोनो बाते नेपोलियन अथवा अलैक्जैण्डर हैमिल्टन सरीखे आदमियो के व्यवहार पर विशेष प्रकाश डालती हैं )। कई अन्य लोगो पर सिद्धान्त का भूत सवार होता है। उन्हे कुछ आवाजें सुनाई दी और फिर जरूरत पडने पर वह मृत्यु का आलिगन करके भी उस सुनिश्चित आह्वान का अनुसरण करते हैं। कुछ एक मे कार्य करने का सकल्प गहरे और गुप्त स्रोतो से फूटता है (उदाहरण के लिए, ब्रिटिश वीर पुरुष जनरल गौर्डन की गुप्त समलिंगी-कामुकता )। बहुतो मे, उनकी भव्यता के साथ ही साथ बदले मे कोई न कोई इस प्रकार का दोष होता है—जैसे, सकीर्णता, लोभ, अभिमान इत्यादि। किन्तु वाशिंगटन के रहस्य को समझने के लिए हम उनकी किन किन बातो को देखना चाहेगे या हम कौनसी चीज

ढूढ सकेगे ? उनके बारे मे हम जानते हैं कि वह लम्बे कद के, देखने मे सुन्दर, भले आदमी, विचारो मे मध्यम मार्ग को अपनाने वाले, विनयी, सयमी और निरापराधी (सिवाए आरम्भिक और सतर्कता-पूर्ण लालसा के जो उनके मन मे सैली फेयरफैक्स के लिए थी ) थे। फिर क्या वह मध्यम दर्जे के थे ? उनका स्मारक इसका उत्तर नही देने देता। ऐसा लगता है कि प्रत्येक भावी निष्पक्ष इतिहासकार या तो निश्चित रूप से उनके सम्बन्ध मे परम्परागत निष्ठा के सामने झुक जायगा अथवा उनकी छोटी-छोटी बाते लेकर उनके दोष निकालेगा। यह सोच कर भी हमे सन्तोष प्राप्त नही हो सकता कि वाशिंगटन के समकालीन लोगो को भी झूठी प्रशसा और दोषान्वेषण—इन मे से एक विकल्प चुनना पडा था।

इस समस्या का सामना होने पर कुछ जीवनी-लेखको ने इसका समाधान यह मान कर किया है कि इस प्रकार की कोई समस्या है ही नही। उन्होने इस बात पर जोर दिया कि वाशिंगटन मे 'मनुष्योचित' गुण थे। ब्रैडले टी० जानसन की दृष्टि मे 'वाशिंगटन सर्वांगीण-रूप मे मनुष्य थे—ऐसे 'मनुष्य जिनमे तीव्र वासनाए थी, जिनका स्वभाव क्रूर था और जो दृढ, लडाके और आक्रमणकारी प्रवृत्ति के थे।' रूपर्ट ह्यूजिज का मत है कि वाशिंगटन 'अत्यन्त उत्सुक, बहुत विषयो मे दक्ष, मानवोचित-गुण-सम्पन्न व्यक्तियो मे से थे।' साल के० पैडओवर की नजरो मे वह 'आवेशाभिभूत, सूक्ष्मग्राही, पार्थिव, गहराई से महसूस करने वाले मनुष्य थे।' 'महापुरुष जार्ज वाशिंगटन एक मनुष्य के रूप मे, नामक पुस्तक मे होवार्ड स्विगेट वीर-पुरुष वाशिंगटन के विषय मे लिखता है कि वह चुम्बक-शक्ति तथा भव्यता, क्रोध और चुभनेवाली दिल्लगी, नेकी और दानशीलता, कष्ट और विपत्ति—इनका सम्मिश्रण थे—और वह शान और शिष्टाचार मे विश्वास रखते हुए भी उन पर हँस सकते थे और उन्ही को छोड भी सकते थे। उनकी असावधानीपूर्ण शूरवीरता, मनमाऊथ न्यायालय-गृह मे खाई गई सौगन्ध जबकि

गरमागरम वाद-विवाद और खीझने के कारण उन्होने चार्ल्स ली को 'अभिशप्त कायर' कह कर पुकारा था, महिलाओ मे उनकी लोक-प्रियता, उनकी नृत्य मे रुचि आदि-आदि के उल्लेख उस पुस्तक मे मिलते हैं।

इन बातो पर जो हमने बल दिया है, वह बेकार की चीज नहीं है। इनसे मार्शल, वीम्ज और स्पार्क्स सरीखे आरम्भिक जीवनी-लेखको की उन्हे देवता समान पूजने की प्रवृत्ति का उपयोगी शोधन हो जाता है। हम वाशिंगटन-सम्बन्धी मनगढत कथाओ के अति-निरर्थक तत्त्वो के बिना गुजारा कर सकते है—जैसे, चेरी पेड, फोर्ज घाटी मे की गई प्रार्थना तथा अन्य कथाओ से सम्बन्धित घटनाए। यह विशेषरूप से महत्वपूर्ण है कि हम स्टूअर्ट चित्र के वाशिंगटन से पहले उस नाम के अधिक तरुण व्यक्ति की ओर जाए, जो अपनी किशोरावस्था मे भेद्य था, जो क्रियाशील भू-मापक और वर्जीनिया का व्यस्त कर्नल था और जो अपनी जागीरो मे अनुरक्त, बागान का स्वामी था। उनके जीवन के इस भाग मे, जैसा कि डागलस साऊथ हाल फ्रीमेन ने स्पष्ट किया है, हम न केवल व्यक्ति को 'स्मारक' से पृथक् कर सकते हैं, बल्कि इस बात का पता लगा सकते हैं कि किस प्रकार उनके चरित्र का विकास हुआ। हम और गौर करने से देख सकते है कि यद्यपि उनके परिवार के लोग सम्मानित अवश्य थे, तथापि वे वर्जीनिया-उपनिवेश के रईसो मे से नही थे। (यहा हम विनोदपूण ढग से यह कह सकते हैं कि वाशिंगटन चादी का चमचा मुह मे लिए पैदा नही हुए, बल्कि ऐसा चमचा लेकर जिस पर चादी की चद्दर बिठाई गई थी और अपने पिता की मृत्यु पर तो वह इससे भी वचित हो गए थे)। हम यह भी देखते हैं कि किस प्रकार उन्होने अपने सगे-सम्बन्धियो और शक्तिशाली फेयरफेक्स परिवार के लोगो की सहायता से तथा निजी परिश्रम से अपना स्थान बनाया। फिर किस प्रकार उनमे महत्वाकाक्षाए (निस्स-देह वह महत्वाकाक्षी भी थे) पैदा हुई, किस प्रकार वे सैनिक-जीवन से बढी, बाद मे ब्रिटिश स्थायी सेना का सरक्षण न मिलने पर किस

प्रकार उन पर निराशा का तुषारपात हुआ। (मोननगहेला के युद्ध मे चाहे बाद मे वाशिंगटन को अपने उत्तम व्यवहार के कारण कितनी ही यश-कीर्ति क्यो न मिली हो, यह ठीक है कि ब्रैडॉक की मृत्यु से उनकी गम्भीर हानि हुई)। फिर यही महत्वाकाक्षाए उनके एक समृद्धशाली परिवार मे विवाह सम्पन्न होने के कारण अधिक मधुर बनी। इसके पश्चात् वह हमे उच्चस्थिति पर आरूढ एक भद्र पुरुष और ज्ञानोद्दीप्ति के कारण स्वतन्त्रता के श्रेष्ठ पुजारी के रूप मे दीखते है——जो तर्कसगत ढग से तथा बिना हृदय-वेदना के अपनी मातृभूमि के पक्ष या विपक्ष मे अपना मार्ग तय करने की योग्यता रखते थे। इस प्रकार हम देखते है कि किस प्रकार उन्होने अपनी अपरिपक्वता के कारण की गई भूलो से लाभ उठाया और किस प्रकार उ होने धीरे-धीरे महत्त्व और आत्म-सयम को प्राप्त किया।

हम मे से प्रत्येक मे अतीत के निजी सस्कार विस्मृत अवस्था मे रहते है। वाशिंगटन के वर्जीनिया के सस्कार उनके अन्तस्तल मे दबे पडे रहे। अत यह युक्ति देना काल्पनिक नही है कि उनमें सदैव बाल्यकाल के उत्साह और ओज के अवशेष क्रियाशील थे। वर्जीनिया का एक दूसरा युवक, वुडरो विलसन, भी अमेरिका का राष्ट्रपति हुआ है। उसने १८८४ मे अपनी मगेतर को लिखा—'तीव्र भावनाए रखना सुखद अथवा सुविधाजनक कभी नही होता। मैं ऐसा महसूस करता हू कि मै अपने साथ एक ज्वाला-मुखी पर्वत उठाए हुए हू। इससे मैं दुखी रहता हू।' इस प्रकार के शब्द युवक वाशिंगटन के लिए भी प्रयोग मे लाए जा सकते थे। वस्तुत विलसन के समान ही अपनी परिपक्वता के कारण वे ससार की परेशानिया कठोरता से झेल सके थे।

किन्तु, हमारे विचार मे, वाशिंगटन के 'मानवी' पहलू पर बल देने मे एक अन्तर्हित भूल है। ऐसा करने से इस बात की सम्भावना है कि हम उन्नीसवी शताब्दी के लेखको द्वारा वर्णित वाशिगटन के स्थान मे उस वाशिंगटन को समझ ले जिसके विषय मे बीसवीं शताब्दी के लेखको ने अपनी कलम उठाई। यह वर्णन भी पहले की

तरह ही भ्रामक है, क्योकि वह आखिरकार अठारहवी शताब्दी के थे। हमे यह स्वीकार करने मे झिझकना नही चाहिए कि वाशिंगटन की रुचिया नवाबो जैसी थी, यद्यपि ये अधिक शिष्ट थी। वह खाने-पीने के शौकीन थे और मदिरा, सगीत, ताश, नाटक, घुड-दौड, लोमडी का शिकार—इत्यादि को पसन्द करते थे। वह विनोद-प्रिय थे, यद्यपि उनके मजाक कुछ कुछ गम्भीरता-पूर्ण होते थे। वह यहाँ तक भावनात्मक थे कि कभी-कभी आसू बहाने की नौबत भी आ जाती थी। इन सब को स्वीकार कर भी लिया जाए, तो इससे यह निष्कर्ष नही निकलता कि वह किसी प्रकार उस अमरीकी वीर-पुरुष के सदृश थे जो ऐतिहासिक उपन्यासो अथवा हालीवुड मे चल-चित्रो का आधार बनते है।

वाशिगटन शूरवीर थे, किन्तु वह कभी शीघ्र क्रोधावेश मे नहीं आये। सीमात क्षेत्र का उन्हे अच्छा ज्ञान था। वह उपयुक्त परिस्थितियो मे सीमान्त-प्रदेश-निवासियो की तरह वस्त्र पहनने के लाभो को समझते थे, किन्तु वह डेवी क्राकेट के सदृश नही थे। ब्रिटिश लोगो की नजरो मे वह राज विद्रोही थे, किन्तु उन्होने अपने आपको कभी ऐसा नही समझा। वह अपने आपको क्रान्ति-कारी भी नही समझते थे। जब लिफायट ने वाशिंगटन को ताना-शाही के उलटने के प्रतीक स्वरूप बैस्टिले नगर की चाबी भेजी, तो उन्होने केवल इतना ही किया कि नम्रतापूर्वक इसे स्वीकार करते हुए उसके बदले मे निशानी के तौर पर एक भेट भेजी। उसे भेजते हुए वाशिंगटन ने लिखा—मेरे प्यारे मार्क्विस! यह भेंट, मूल्य के लिहाज से नही, बल्कि स्मृति-चिन्ह के विचार से भेजी जा रही है। मैं यह जूते के बक्सुओ की जोडी इसलिए भेज रहा हू, क्योकि यह इसी नगर के बने हुए है।'

जूते के बकसुओ की जोडी! यह भी कितनी रसहीन वस्तु थी, जिसे भेजने की उन्हे प्रेरणा मिली!

कुछ एक बातो के लिहाज से वाशिगटन एक सरल, अहकार-रहित व्यक्ति थे। माऊटवर्नन मे आये मुलाकाती उनकी सादा पोशाक के

बारे मे विस्मय से जिक्र किया करते थे जो वह अपने फार्मों का दौरा करने के लिए पहना करते थे। वे यह भी बतलाते थे कि रात्रि के भोजन के समय वह अपनी पोशाक बदला करते थे। वह स्वय विद्वान् नही थे, पर दूसरो की विद्वत्तापूर्ण बातों से अधीर नही हो उठते थे। चाहे वह कभी-कभी बात-चीत करते हुए अथवा चिट्ठी-पत्री लिखते हुए अप्रशस्त भाषा का व्यवहार कर भी लेते हो, किन्तु निकृष्ट लोक-तन्त्रवादी के मुहावरो का कभी उन्होने प्रयोग नही किया। परम्परा से प्राप्त दुलभ प्रतिवेदनो से निर्णय करने पर हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि यदि कभी उन्होनें कसम खाई भी, तो खुशी के साथ नही। (प्रसगवश, यह कहानी कि उन्होने मानमाऊथ मे ली पर जबान-दराजी की, निराधार है)।

वाशिगटन मित्रो मे प्रसन्न रहते और उन्हे प्रसन्न रखते थे, यद्यपि वे उनके साथ खुलते नही थे। जहा तक हम जानते हैं, उन्होने अपने समस्त जीवन मे अपनी उम्र के किसी भी व्यक्ति को अपना लगोटिया यार नहीं बनाया। वाशिंगटन लिफायट से कोई बात छिपाते नही थे। इस फ्रान्सीसी की ओर लिखे गए पत्रो में अनूठी प्रफुल्लता पाई जाती है। उनका कैरोलीना के युवा स्टाफ-अफसर, जान लौरेन्स, के साथ विशेष स्नेह था। यह अफसर क्रान्तिकारी युद्ध मे मारा गया था। किन्तु इन दोनो के साथ उनके सम्ब ध पितृ-तुल्य थे या कम से कम चाचा के समान अवश्य थे।

हमारे युग के मुकाबले मे वाशिंगटन का जमाना मौन-चुप्पी का था। किन्तु यदि आप उनकी तुलना अपने समकालीन प्रमुख व्यक्तियो से करें, तो उनके तौर-तरीको मे भिन्नता स्पष्ट रूप से नजर आती है। यदि वाशिंगटन 'आवेश-पूर्ण, छोटी-छोटी बातो को महसूस करने वाले, पार्थिव' है, तो पैट्रिक हैनरी अथवा आरोन बर्र सरीखे व्यक्तियो का तो क्या कहना, फ्रैंकलिन, जैफर्सन, मेडीसन और हैमिल्टन को हल्ला गुल्ला करने वाला कहना चाहिए। विदेशी अवलोकको के निर्णयो को सुनिये। एक डैनमार्क निवासी जो १७८४ मे माऊटवर्नन गया था, वाशिंगटन के 'गुणो को परखना चाहता

था।' किन्तु सारे समय मे वह इस निष्कर्ष पर पहुचा कि 'जनरल (वाशिंगटन) इतने उदासीन, सतर्क और अत्यनुवर्ती हैं कि उन से जानकारी प्राप्त करना दुसाध्य था।' एक और योरुप निवासी चार वर्ष पीछे उनसे मिला। उनके बारे मे उसका यह कहना था 'शिष्ट-व्यवहार पाते हुए भी मुझे ऐसा लगा कि उनके अन्दर छिपी हुई निषेधक उदासीनता है जो मेरे मन को अच्छी नही लगी।' वास्तव मे इसका कारण कई अशो मे उनकी लज्जाशीलता थी। अपने निकट परिचितो से वह शीघ्र घुल-मिल जाते थे। किन्तु हम इस धारणा को कभी स्वीकार नही कर सकते कि वह अपने जीवन के किसी भी काल मे दूसरो को महज खुश करने वाले रहे हो। यह शायद हम उनके प्रति अन्याय करेंगे यदि हम नमूने के तौर पर इस बात का उल्लेख करें कि अपने जीवन के अन्तिम वर्षों मे उन्होने 'अन्य देशीय' तथा 'राज-द्रोह' सम्बन्धी कठोर विधेयको की स्वीकृति दी जिससे यह नतीजा निकाला जा सकता है कि वह अपनी कठोर, रूढिवादी विचार-धारा मे अलैक्जैण्डर हैमिल्टन को भी मात करते थे। अपनी बहुत पहले की जिन्दगी मे, जब कि वह वर्जीनिया के सैनिक विभाग से छुट्टी पाने ही वाले थे, उनकी रैजमैण्ट के अधिकारी (जिनमे कुछ अवस्था मे उनसे बडे थे) उन से दूर रहते हुए भी अपने युवा कर्नल की प्रशसा किया करते थे। उनके मन में वाशिंगटन के लिए सच्चा सम्मान था, दिखावे का नही।

सक्षेप मे, वाशिंगटन को महज मानव का रूप देने की चेष्टा करना उनके व्यक्तित्व को झुठलाना है। इसमे यह भी खतरा है कि कही हम उनके व्यक्तित्व की सारभूत सच्चाई को ही न खो बैठें। इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि उनके मानवीय गुणो के कारण ही सगमरमर डालने की वह प्रक्रिया हुई जिसने उन्हे एक स्मारक का रूप दिया। वस्तुत इन गुणो के कारण ही यह प्रक्रिया सम्भव हो सकी। अत यह कहना होगा कि वास्तविक व्यक्ति मे तथा उसके विषय मे जो कहानिया रची गई उनमे समान महत्त्वपूर्ण तत्व मिलते हैं।

## श्रेष्ठ शास्त्रीय सकेतावलि

इसे अभिव्यक्त करने की सक्षेपतम विधि यह है कि हम दोनो (अर्थात् व्यक्ति और कथाओ) को शास्त्रीय नाम दे, अथवा यह कहे कि दोनो ही अधिक विशिष्ट रूप से रोमन आकार-प्रकार के है। वाशिगटन-साहित्य मे बार-बार यह पढकर हम उकता जाते है कि वर्जीनिया के यह खेत-बगीचो के मालिक दूसरे सिनसिनेटस थे। किन्तु इस पुरानी उक्ति मे अब भी बहुत वजन है। वास्तव मे हम जितनी अधिक इसकी जाच करते है, हमे इन दोनो की आपसी समानता उतनी ही ज्यादा नजर आती है। अठारहवी शताब्दी का अग्रेज भद्र-पुरुष, चाहे वह अपने घर इगलैण्ड मे था, अथवा किसी वर्जीनिया जैसे उपनिवेश मे था, वह दोहरी नागरिकता का अधिकारी होता था। वह अग्रेज तो था ही, पर उसे समान रूप से रोमन नागरिकता के अधिकार प्राप्त थे। अपनी आकृति मे भी वह रोमन ही लगता था। अठारहवी शताब्दी के चित्र, जिनमे मुखाकृतिया बिना दाढी के है और जिनमे दृढता एव पुरुषत्व झलकता है, अक्सर रोमन अद्धप्रतिमाओ से आश्चर्यजनक रूप से मिलते-जुलते हैं, और विलोमत उस समय के पत्थर के स्मृति-अभिलेखो मे पुरानी दुनिया की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए वैस्टमिंस्टर ऐबे के कुछ एक स्मारको पर ध्यान दीजिए। रोबिलैक द्वारा निर्मित जैनरल वेड (१७४८) के स्मारक पर ये शब्द पाये जाते है—'सुकीर्ति की देवी जनरल के विजयोपहारो को काल के हाथो विनष्ट होने से बचा रही है।' उसी मूर्तिकार द्वारा निर्मित एडमिरल सर पीटर वैरन ( १७५२ ) के स्मारक पर यह वाक्य खुदा हुआ मिलता है—'हरक्यूलीज इस एडमिरल की अर्द्ध-प्रतिमा को पादपीठ पर स्थापित करता है, जबकि नौ-परिवहन प्रशसा और सन्तोष के साथ उसकी ओर देख रहा है।' एक तीसरा स्मारक एडमिरल बैडमन का है, जिसे सकीमेकरस ने १७५७ मे बनाया था। उस पर ये शब्द मिलते है—'एडमिरल चोगा पहने हुए मध्य मे बैठे हैं और उनके हाथ मे ताल पेड की शाखा है। उनकी दाहिनी ओर कलकत्ता

नगर अपने घुटने टेक कर उनके आगे अपनी याचिका पेश कर रहा है।' वाशिंगटन के समय के शिष्ट युवक, जाने-अनजाने अपने अलकार तथा जीवन-मूल्यो की नियमावलि रोम से लिया करते थे। सब लोग इस प्रकार के न भी हो, किन्तु ऐसे लोग तादाद मे काफी थे कि जिनके रोमन वातावरण से हम वाशिंगटन और उनकी प्रकाशयुक्त झाकी ले सकते है।

यह महज दैवयोग नही है कि वाशिगटन एडीसन के नाटक, केटो, से बार-बार उद्धरण देते थे। उनके बडे भाई लारेन्स ने बैल्वायर मे, फेयरफेक्स की अतिथि-पुस्तक मे कोई उदात्त भावना लिखने की इच्छा करते हुए यह लिखा था—'वर्टस ओमनिया पैरिकुला विन्सिट'—अर्थात् 'साहस सब सकटो पर विजय पा लेता है।' कैटो उस शताब्दी के मन-भाते नाटको मे से था। ऐसा लगता है कि यह नाटक कनैक्टीकट के तरुण अधिनायक, नाथन हेल, के मन मे होगा, क्योकि जब अग्रेजो ने १७७६ मे उसे जासूस समझ कर मरवा डाला, तो उसके अन्तिम शब्द थे—'मुझे इस बात का खेद है कि मुझे अपने देश पर बलि चढाने के लिए केवल एक ही जन्म मिला है।' उसकी इस उक्ति मे एडीसन के निम्न शब्द गूजते दिखाई देते है—

'यह बात कितनी शोचनीय है कि अपने देश के त्राण के लिए हम केवल एक बार ही अपने प्राणो की आहुति दे सकते है।'

'साहस' रोमन लोगो की नजरो मे प्रसिद्ध गुण था ( और व्यवहार मे वर्जीनिया वासियो के लिये भी ) गम्भीरता, अनुशासन तथा प्राधिकार के लिए सम्मान, स्पष्ट अभिव्यक्ति, नि स्पृहता तथा यश-प्राप्ति रोमन लोगो के लिये अन्य अर्हित गुण थे।

जिस प्रकार के गुण कही होते हैं, वहा ऐसा ही वातावरण हुआ करता है। रोम की सस्कृति सैनिक थी। उसके सीमान्त क्षेत्रो मे सदैव अशान्ति रहा करती थी, इस कारण कानून बनाना और व्यवस्था करना उसके लिए अनिवार्य था। रोमन सभ्यता कुछ-कुछ कठोरता और स्थूलता लिए हुए थी, इसकी जडें वास्तविकता में

थी, न कि आनन्ददायक काव्यात्मक कल्पनाओ मे। इसमे धार्मिक भावनाए परिमित सीमा तक विद्यमान थी, इस सीमा को उल्लाघना बुरा माना जाता था। रोमन-समाज मे दास-प्रथा का बोल-बाला था और इसमे ( राजधानी और प्रादेशिक केन्द्रो को छोड कर ) फार्म सम्बन्धी जागीरे पडोस की इकाई थी। यह ऐसा समाज था जो परिवार के सलाग-बल पर अवलम्बित था। प्रेम, सम्मान, वफा-दारी इत्यादि गुण परिवार से बाहर की ओर फैलते थे। परिवार इस प्रकार राज्य का एक छोटा सा रूप था। यह ऐसा समाज था कि जिसमे ठोस और सही ढग से सोचने वाले नागरिक पनपते थे—जो नागरीय एव उपाजनशील थे, जो सकीर्ण, किन्तु नेक तबीयत के थे, और जो अपने से आगे भी देखते थे, किन्तु जिन मे बेकार की कल्पनाए करने की आदत नही थी। इस प्रकार के भाव है जो उनके ग्रैवीटैस ( गम्भीरता ), पाएटस ( अनुशासन एव प्राधिकार का सम्मान ), सिम्पलीसिटस ( स्पष्टता ) जैसे शब्दो से प्रगट होते है।

यहा 'रोम' के स्थान पर हम वर्जीनिया पढ ले, तो क्या इस मे कोई हर्ज होगा ? और क्या वाशिगटन के पुरानी शैली के जीवनी-लेखक अथवा उसकी पीढी के प्रशसक अधिक गलती पर थे, जब उन्होने यह घोषणा की कि वह पुराने साचे मे ढले हुए हैं और ऐसे लगता है कि मानो सिनसिनेटस ने दुबारा जन्म ले लिया हो ? वाशिगटन न केवल एक सैनिक ही थे, अपितु वह बहुत बडे 'भू-स्वामी और राजनीतिज्ञ' भी थे—किन्तु उनका यह चित्र मोटे रूप मे एक रोमन का है। सिनसिनेटस रोम के अनेक वीर पुरुषो मे से था, जिसमे ये तीनो बातें पाई जाती थी। इसी प्रकार वाशिगटन के बारे मे विस्तार भी किसी रोमन के अनुरूप थे। वाशिगटन की पारिवारिक स्थिति मे भी हमे रोमन विचारधारा के अकुर मिलते है—जैसे, उनका माऊटवर्नन से अटूट अनुराग, उनकी अपनी माता के प्रति ( यद्यपि उत्साहहीन ) कर्तव्य-निष्ठा, उनका बिना शिकायत के वाशिगटन परिवार की असख्य सतति—भाई बहिनो, भतीजों,

भतीजियो, सौतेले बच्चो तथा अन्य सगे-सम्बन्धियो के हितार्थ निरन्तर अवधान। इसमे उनकी उदारता टपकती है, ( शब्द 'जैनरोसिटी'--उदारता-लातीनी भाषा का है और हमे अपने मौलिक रूप 'जीनस' की ओर ले जाना है--जिसका अर्थ है, एक गोत्र के लोग ) । किन्तु उनका न केवल स्वभाव ही उत्तम था, अपितु उनमे अपने कर्तव्य के प्रति निश्चित निष्ठा की भावना थी।

'कतव्य' शब्द मे भी वाशिंगटन की पृष्ठभूमि को समझने के लिए रोम तालिका है। 'कर्तव्य' शब्द से हमारा तात्पर्य दायित्वो का समूह है। इस प्रसग मे 'दायित्वो' शब्द का प्रयोग ठीक है, न कि आधुनिकतम विवशताए' शब्द का, क्योकि 'दायित्व' की निजी अपेक्षाए नही है, वरन् सामाजिक अपेक्षाए है। वाशिंगटन चाहे विशेष रूप से मिलनसार न भी हो, किन्तु थे तो वह सामाजिक प्राणी ही--अर्थात् वह सयोजन करने वाले न सही, पर समाज के एक सदस्य तो थे। अत इस आदर्श से जिस प्रकार के व्यक्तित्व का उद्भव होता है, वह परिपक्व अवस्था मे पहुच कर ठोस निस्पृही होता है। यह होते हुए भी वह पूर्ण, सन्तुलित और साथ ही साथ शान्तचित्त भी होता है। रोमन शब्द 'इण्टैगरीटस' का यह उपर्युक्त आशय है। ऐसा व्यक्ति सशयो से पीडित हो सकता है, किन्तु यह सशय उसे पगु नही बना सकते। उसका शिष्ट व्यवहार जटिलतम समस्याओ को सुलझा देता है। उसका साहस स्वत उसके कार्यों का सचालन करता है। मृत्यु उसे आतकित नही करती।

'एक विचारवान मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह अपने मृत्यु के प्रति न तो बाह्यवर्ती, न अधीर और न ही घृणा-युक्त रहे, बल्कि उसे यह चाहिए कि वह इसे प्रकृति के अनेक सकार्यों मे से एक ऐसा सकार्य समझे कि जिसकी अनुभूति उसे अवश्य करनी पडती है।'

यह मार्क्स आरिलियस के शब्द हैं। वाशिंगटन भी, जबकि उन्होने अपना वसीयतनामा लिखवाया, अमरीकी जनता के नाम विदाई-भाषण प्रकाशित कर सकते थे और माऊटवर्नन की महराबदार छत

की मरम्मत करके अपनी मरणोपरान्त समाधि के लिए उसे तैयार कर सकते थे ।

'ग्लोरिया' शब्द महत्त्वाकाक्षा का अर्थ देता है । महत्त्वाकाक्षा को जानपद-आवेग के रूप मे समझा जाता है । यह कोई वैयक्तिक पीडा की वस्तु नही । निश्चय से यह बात वाशिंगटन पर चरितार्थ हुई जब उन्होने अपनी युवावस्था की अपनी ओर ध्यान खीचने और अधिमान-पद को प्राप्त करने की लालसा पर काबू पा लिया । इसके अतिरिक्त वाशिंगटन महोदय की यह कामना कि उन्हे एक अच्छा आदमी समझा जाए और उनकी ख्याति निष्कलक रहे, यह भी एक प्रकार से शास्त्रीय कामना थी । यह कामना उस जनवादी, 'अन्य-निर्दिष्ट' चिन्ता से तनिक भी मेल नहीं खाती, जिसके परिणामस्वरूप आजकल के प्रसिद्ध व्यक्ति जनता की राय मे अच्छा बने रहने की आकुलता प्रदर्शित करते हैं । ये लोग इस जनमत को, जो निर्वाचन क्षेत्रो मे, पुस्तको की सर्वाधिक बिक्रियो आदि मे प्रगट होता है, देव-वाणी तुल्य समझते हैं । यह सच है कि जब वाशिंगटन सैनिक थे, तो वह किसी योजना को निश्चित करने के लिए अपने अफसरो की सलाह ले लिया करते थे । राष्ट्रपति के रूप मे उन्होने यह कोशिश की कि देश की मानसिक अवस्था से सम्पर्क बनाए रखे, किन्तु नाजुक मौको पर, विशेषरूप से जिन दिनो जे के समझौते-पत्र के ऊपर हो-हल्ला मचा था, उन्होने बिना किसी झिझक के विशाल-हृदय रोमन की तरह व्यवहार किया । उन्होने बिना किसी घृणा के 'जनता' का उल्लेख किया ।

यह मन मे सोचना बेकार सा है कि वाशिंगटन वर्जीनिया, के रहने वाले केवल प्राचीन ससार के तौर तरीको और अनुभवो के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे, अथवा उनके सब समकालीन व्यक्ति, उन्ही की तरह, विशेष रूप से अपने अपने मिजाजो मे 'शास्त्रीय' थे । असल बात यह है कि उन का युग हमारे युग से अत्यधिक भिन्न था और इस लिए उन्हे ज्यादा अच्छी तरह

समझने के लिए, हमे उन्हे आधुनिक युग का आदमी न मान कर, शास्त्रीय ढाचे को अपने सामने रखना चाहिए। यह बात भी हमे ध्यान मे रखनी चाहिए कि उन दिनो बागान-मालिको के वर्जीनिया की सभ्यता और सस्कृति भी ब्रिटेन से इतना मेल नही खाती थी, जितना कि वह 'रोमन' से।

यहा हमने रोम का एक आदर्श चित्र खेचा है। अधिक ठीक बात यह है कि यह उस समाज की प्रतिमूर्ति है जिसके मूल्य कठोरता-पूर्वक क्रियात्मक थे और यह छाप है जो वाशिंगटन का चरित्र हमारे मनो पर अकित करता है। हमारी पीढी मे इस प्रकार के उदात्त चरित्र का अभाव है। इतिहास की शब्दावली मे अधिक से अधिक तुलना-योग्य वस्तु समीप की विशेषताए रखती है, कविता मे यह अद्-भुत रूप से सन्निकट हो जाती है। इतिहास पर दृष्टि डालने से हमे कम से कम इस बात को समझने मे मदद मिलती है कि वाशिगटन जैसे व्यक्ति क्यो इस बात मे विश्वास रखते थे कि वे गणतन्त्रीय नमूने पर एक महान् राष्ट्र का निर्माण कर सकते है। यद्यपि ये लोग आरम्भ मे जार्ज तृतीय की वफादार प्रजा थे, किन्तु उनके वातावरण की परिस्थितिया एव उनके चितन के तौर-तरीके स्वभावतया, यद्यपि अदृश्य रूप मे, उन्हे राजो-महाराजो से तथा योरुप से दूर हटा ले गए और उन्हे एक नई राजनैतिक व्यवस्था को अपनाने की प्रेरणा दी। यह व्यवस्था असल मे उन की तात्कालिक स्थिति के ठीक अनुरूप थी। शास्त्रीय अतीत के अनुभव जहा तरुण ससार को—और अमेरिका उन दिनो तरुणा-वस्था मे अपने आप को महसूस करता था—सकेत दे रहे थे कि इस प्रकार की गण-तत्रीय पद्धति कार्य-रूप मे आ सकती है, वहा चेतावनी भी दे रहे थे कि हो सकता है कि इसमे उनके सारे प्रयास विफल हो। अत उनकी यह क्राति सरक्षण के द्वारा हुई थी। उन्होने नई चीज बनायी नही बल्कि खोज निकाली।

यद्यपि रोम इस शिशु-राष्ट्र के लिए 'पाठ-वस्तु' के रूप मे था, वह उसके लिए फोटोग्राफी के 'ब्ल्यूप्रिन्ट' की तरह नही था। उस

समय अनेक ऐसी चीजो की जरूरत थी जो देश की राज-तान्त्रिक पद्धति को गण-तान्त्रिक पद्धति मे बदल सके और उपनिवेशो के भूतपूर्व शिथिल समूह को एक दृढ सत्र के अन्तर्गत ला सके, जैसा कि १७९० के दशाब्द मे हुआ। स्वतन्त्रता के लिए न केवल सघर्ष करना पडा, बल्कि उसे ठोस और वास्तविक रूप देना पडा। यह कहा जा सकता था कि भावनात्मक-रूप से एक राष्ट्र होने से पहले ही अमेरिका वैधानिक रूप से राष्ट्र बन चुका था। शब्द 'अमरीकीकरण' जिसका आज 'शेष ससार पर अमरीकी प्रभाव' के अर्थों मे प्रयोग होता है, आरम्भ मे वाशिंगटन के समय मे आविष्कृत हुआ। उस समय इस का प्रयोग अमरीकियो के रक्षात्मक सघर्ष के लिए होता था, ताकि उन्हे योरुपीय लोगो से पृथक् समझा जा सके।

इसलिए इसमे आश्चर्य की बात नही कि आज वाशिंगटन की प्रतिष्ठा जितनी उनके सुकार्यो के लिए होती है, उतनी ही उनके उदात्त व्यक्तित्व के लिए भी होती है। इसमे भी हमे आश्चर्य नही होता कि इन गुणो और कार्यों के कारण उनके जीवन-काल मे ही उनके सम्बन्ध मे स्मारक-योग्य कहानियो की रचना हुई। १७७५मे सेना-पति पद को ग्रहण करने के कुछ ही मास पीछे जनरल वाशिंगटन का अनुपम दर्जा बन गया और जैसे जैसे युद्ध का समय बढता चला गया, वैसे ही वैसे उन का दर्जा बढता ही चला गया और मजबूत होता गया। यह केवल इस कारण नही था कि वह एक उत्तम सैनिक अथवा एक सुयोग्य शासक थे। यह उल्लेखनीय है कि वह सीधे तौर पर, अपने सैनिको के लिए प्रेरणादायक नही बन पाए। उन का साहस दूसरो के लिए शिक्षा का काम करता था, किन्तु उन मे नेतृत्व के सक्रमणशील व वैद्युत गुणो की कमी थी जो कुछेक सैनिक विभूतियो मे पाए जाते हैं। उनकी प्रतिदिन की हिदायतो पर इस प्रकार का उत्साह नही उभरता था कि जिस प्रकार सैनिक बिगुलो की ध्वनि पर अहा! हा! कह उठते है, यद्यपि उन आदेशो मे अक्सर चिन्तन-सामग्री हुआ करती थी। उन्होने ९ जुलाई १७७६ वाले दिन जो सामान्य आदेश 'अनेक ब्रिगेडो' को दिए, उनमे

यह कहा गया था कि वे स्वतन्त्रता-घोषणा-पत्र ऊची आवाज मे पढें। इन आदेशो के अन्त मे सब अफसरो और भर्ती किये गए लोगो को स्मरण कराया गया कि अब 'वे ऐसे राज्य के सेवक है जो उनकी श्रेष्ठता के लिए इनाम देने एवम् एक स्वतन्त्र देश मे सर्वोच्च प्रतिष्ठा-पद प्रदान करने के लिए पर्याप्त रूप से सशक्त है।' क्या यह तो नही था कि इन आदेशो को देते समय वाशिंगटन महोदय को अपनी वे निराशाए याद आ रही थी जो उन्हे वर्जीनिया मे सेना-विभाग मे नौकरी करते हुए मिली थी। सम्भव है कि ऐसा ही हो।

क्या उनके शब्द कुछ कुछ नीरस थे? शायद ऐसा ही था। वास्तव मे उन शब्दो का महत्त्व इस बात मे था कि वे जैफर्सन की सुन्दर, ओजस्वी प्रस्तावना को ठोस-रूप मे सहारा देते थे। वह किसी को भी यह महसूस नही होने देते थे कि उनमे ओछापन है। उनका शिष्टतापूर्ण आत्मसयम, उनकी जगत्सिद्ध सत्य-परायणता तथा उनका सम्पूर्ण रिकार्ड यह सब घोषणा करते थे कि वह इस प्रकार के व्यक्ति नही हैं। वह न सिर्फ देखने मे, बल्कि अपने व्यवहार मे भी एक शास्त्रीय वीर-पुरुष थे। उनके ऊपर ही अमेरिका की भावी पीढियो का भाग्य अवलम्बित था। वह भूत और भविष्यत् का सयोजन करते हुए भी वर्तमान काल की तथ्यता और वास्तविकता को मजबूती से पकडे हुए थे। वह अमेरिका के प्रतीक थे। किन्तु इतना वास्तविक, ठोस तथा स्पष्ट प्रतीक आज तक दुनिया के दृष्टिपथ पर नही आया। जैफर्सन ने जीवन-स्वतन्त्रता तथा आनन्द-प्राप्ति के बारे मे बहुत कुछ लिखा और कहा, वाशिंगटन ने वेतन और उन्नति को देश-भक्ति के एक मूल-तथ्य के रूप मे माना। वाशिंगटन की शाब्दिकता-मात्र ने स्वतन्त्रता की परियोजना मे वास्तविकता ला दी। उन्होने उस असहाय दिवा-स्वप्न के वातावरण को छिन्न-भिन्न कर दिया जो उन दिनो अमेरिका पर छाया हुआ था। जिन बातो को कल्पना-विहारी अनिश्चित समझते थे, उन्ही बातो को सच मानते हुए वह अपने पथ पर

आगे बढे। वे बाते ये थी—कि एक तो राष्ट्र का उद्धार होगा और दूसरे, यह सुख-समृद्धि को प्राप्त करेगा। और हमे इस बात मे विरोधाभास लगता है कि जिस व्यक्ति के पाव भूमि पर इतनी दृढता से टिके हुए थे, उसी को ही धीरे-धीरे अपने ही देशवासियो ने आकाश मे 'उडाना' शुरू किया। पेनसलेवेनिया पत्र के अनुसार (वर्ष १७७७) —

'यदि उनके चरित्र मे कोई धब्बे भी है, तो वे सूर्य के धब्बो के समान है जिन्हे दूरवीक्षण यन्त्र की विशालन-शक्ति के द्वारा ही देखा जा सकता है। यदि वह उन दिनो जीवित होते जब लोग मूर्तियो की पूजा किया करते थे, तो निस्सन्देह उन्हे एक देवता मान कर पूजा जाता।'

## आलोचनाए

कुछ अमरीकी सोचते थे कि उनकी पूजा की जा रही है।

'मुझे यह देखकर ठेस पहुची है कि सदन के कुछ सदस्य मूर्ति-पूजा करने लगे है—ऐसी मूर्ति की पूजा जिसे उन्होने अपने हाथो से घडा है। मैं यहा अन्धी श्रद्धा का उल्लेख कर रहा हू जो जनरल वाशिगटन के प्रति कभी-कभी प्रदर्शित की जाती है। यद्यपि मै उन के श्रेष्ठ गुणो के लिए उनका आदर करता हू, किन्तु इस सदन मे मैं अपने आप को उनसे उच्चतर महसूस करता हू।'

इसके लिखने वाले थे जान एडम्ज। यह उन्होने उस समय लिखा था जब १७७७ मे वे सयुक्त राज्य काग्रेस के सदस्य थे।

हमे इस स्थिति को अधिक निकट होकर जाचने की जरूरत है, क्योकि हम वाशिगटन के विषय मे इससे बहुत कुछ जान सकते है। सर्वप्रथम, कौन-कौन लोग उनके स्पष्ट आलोचक थे ? युद्ध के दिनो मे, जैसा कि हम आशा रख सकते है, मुख्य रूप मे उन लोगो ने उनका विरोध किया जो उनके अधीन सैनिक अफसर थे तथा जो उन अफसरो के मित्र काग्रेस के सदस्य थे। तब और बाद मे, अधिक अनुपात मे वे लोग थे, जिन्हे बुद्धिजीवी अथवा हाजिर-जवाब कहा जा सकता था। यह कहना कि वे उन्हे घृणा अथवा

तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे—यह उनके बारे मे अत्यधिक कडी राय है। कुछ-कुछ लोग विरोधी मत अपने तक ही रखते थे, किन्तु जौसफ रीड, एडमण्ड रैंडाल्फ, अलैक्जैण्डर हैमिल्टन, आरान बर्र (जो एक बार मन्त्री या परिसहाय थे), टिमोथी पिकरिग (उनके एडजूटैंट जनरल), बैंजामिन रश—इन सरीखे लोगो तथा अन्यो ने अलग-अलग अवस्थाओ मे वाशिगटन की खामियो पर टिप्पणिया की। उनके विचार किस धारा मे बहते थे, इसे जेम्स पार्टन ने आरोन बर्र के बारे मे लिखते हुए भली-भाति सक्षेप मे दिया है—

'आरोन बर्र वाशिगटन को एक अत्यन्त ईमानदार और सद्भावनायुक्त देहाती सज्जन समझते थे। किन्तु वह उन्हे कोई बडा सैनिक नही मानते थे। उनके विचार मे वाशिगटन ( देवता होना तो दूर की बात रही) अर्ध-देवता से भी वास्तविक रूप मे बहुत दूर थे। बर्र कायर मनुष्य से दूसरे दर्जे पर नीरस आदमी से नफरत करते थे और वे जनरल वाशिगटन को एक नीरस आदमी समझते थे। हैमिल्टन तथा अन्य क्राति के समय के तरुण सैनिक और विद्वान भी स्पष्टरूप से यही राय रखते थे, किन्तु हैमिल्टन का यह विचार था कि जनरल वाशिगटन की लोक-प्रियता अपने लक्ष्य मे विजय-प्राप्ति के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि वाशिगटन के बारे मे उनके जो भी विचार थे, उन्हे वह अपने तक ही रखता था।'

वास्तव मे बात यह है कि एक श्रेणी के रूप मे उन्हे इस बात की खीझ थी कि बौद्धिक-रूप से इतने कम स्तर का व्यक्ति इतनी ज्यादा शोहरत हासिल कर ले। जब १७८७ मे वाशिगटन महोदय ने सरकारी पद सम्भाला, तो कुछ लोगो ने (बाध्य होकर निजी पत्रो मे) यह शिकायत की कि अब अपने ऊपर अमेरिका के प्रति बागी होने का आरोप लिए बिना उनका विरोध करना असम्भव हो गया है। अन्य लोग, जिनमे हैमिल्टन भी था, अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए उनकी लोक-प्रियता पर भरोसा करते थे। इस तरह के लोग उनके स्मारक की आड लेते थे। (सन् १७८५ मे) जान एडम्ज ने तर्क करते हुए लिखा—

'वाशिंगटन जैसे महानुभाव की पूजा करने की बजाय, मनुष्यो को उस राष्ट्र की सराहना करनी चाहिए जिसने इस प्रकार के व्यक्ति को सुशिक्षित किया—मै वाशिंगटन सरीखे मानव पर गर्व करता हू, क्योकि मैं जानता हू कि वे अमरीकी उच्च-चरित्र के एक उदाहरण है। पाम्पे के दिनो मे वाशिंगटन सीजर होते। उनके अफसर और दल के लोग उन्हे ऐसा बनने की उत्तेजना देते। चार्ल्स के समय मे, वह क्रामवैल होते। फिलिप द्वितीय के वक्तो मे वह औरेंज के राजकुमार होते और हालैण्ड के काऊट बनने की अभिलाषा करते। किन्तु अमेरिका मे उनकी सिवाए कार्य-निवृत्त होने के और कोई आकाक्षा न होती।'

इस प्रकार ( इन लोगो के विचारो के अनुसार ) वाशिंगटन की पूजा अनुचित, मूर्खता-पूर्ण और खतरनाक थी। उनका विचार था कि यदि अमरीकी चीजो को उचित अनुपातिक दृष्टि से नही देखते, तो वे राज-तन्त्र की स्थापना के लिए अपने मत देंगे और परिणाम-स्वरूप होने वाली उसकी बुराइयो को भुगतेंगे। वाशिंगटन के अत्यधिक आलोचक यह स्वीकार करते थे कि खतरा पूर्वोदाहरण मे है, क्योकि चापलूसी समय पाकर आदत की शकल-सूरत अख्तियार कर लेती है। वे इस बात को मानते थे कि वाशिंगटन स्वय घमण्डी नही है और न ही, उनके विचार से, वह कभी हो भी सकते थे। तो भी, जैसे जैसे उन की यश-कीर्ति बढती जाती थी, उन पर जैसे काच लगता जा रहा था। वह साधारण मनुष्यो से दूर हटते जा रहे थे। राष्ट्रपति होने पर तो अत्यधिक 'प्रौटोकोल' उन्हे घेरे हुए था।

हम इस आधार पर इन मे से कई एक बातो पर अविश्वास कर सकते हैं कि ये ईर्ष्या और दलीय भावना की उपज थी, किन्तु सर्व-प्रकार से ऐसा नही कह सकते। हम समझते हैं कि ऐडम्ज सही था जब उसने, चाहे अशोभनीय ढग से, यह कहा कि वाशिंगटन का आत्म-त्याग उनकी निस्स्वार्थता को इतना प्रगट नही करता, जितना कि वह इस बात का प्रमाण है कि अमरीका-

निवासी शासन की स्वतन्त्र गणतन्त्र-शैली का आनन्द उठाने के लिए दृढ-सकल्प थे (यद्यपि वाशिंगटन ने इस प्रकार की श्रेय-प्राप्ति का दावा नही किया )। वह इस बात मे भी सही था, यद्यपि इस बात मे भी उसने पुन अशिष्ट का सा ही व्यवहार किया, जब उसने वाशिंगटन के प्रधान-सेनापति बनने पर खर्चे के सिवाए किसी प्रकार का वेतन न लेने के लिए उनकी आलोचना की। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार के इन्कार से एक सार्वजनिक (सरकारी) कर्मचारी के रूप मे उन्हो ने अपने आप को कुछ न कुछ ऊचा ही उठाया। वाशिंगटन ने केवल सर्वोच्च विचारो से प्रभावित हो कर ही इस प्रकार सोचा था। वह सयुक्त-राज्य की काग्रेस को अपना अन्तिम स्वामी समझते थे और उसके निर्देशो के पालन मे सतर्क थे। यह होते हुए भी उन्होने स्वय को, अपने आधीन नियुक्त किए गए सेनापतियो से, विभिन्न रखा। उनकी भाति ही वे लोग भी काग्रेस द्वारा नियुक्त किए गए थे और उन्ही की भाति ही वह भी काग्रेस द्वारा अपने पद से पदच्युत किये जा सकते थे (सिवाय आपत्कालीन विशेष परिस्थितियो मे जबकि काग्रेस ने उन्हे विशेषाधिकार प्रदान किए थे )। किन्तु जो बात उनके मतानुसार परोपकार-भावना के अन्तर्गत थी, लोग उसी को सम्भवत दूसरी प्रकार से समझ सकते थे। कम से कम गेट्स, कौनवे, तथा अन्य सेनापतियो मे जो कुछ कुछ रोष उभरा था और जिसके फलस्वरूप उ होने तथाकथित षडयन्त्र रचा था, वह इस कारण हुआ कि उन लोगो को यह विश्वास हो गया था कि वाशिंगटन यह समझते हैं कि उन्हे कोई अपदस्थ नही कर सकता।

उनकी अपनी दृष्टि मे तथा अत्यधिक अमरीकियो के विचार मे यह विशुद्ध देश-भक्ति का मामला था। उन्होने अपनी प्रतिष्ठा अमेरिका की प्रतिष्ठा मे विलीन कर दी थी, किन्तु, क्या कोई भयकर भूल करने पर उन्हें वस्तुत पदच्युत किया जा सकता था ? यह एक प्रकार की समस्या थी जिसमे एडम्ज और सयुक्त-राज्य की काग्रेस के सदस्य उलझे हुए थे। यह बात नही थी कि वे उन्हे

अपदस्थ करने का सचमुच इरादा ही रखते थे। किन्तु, उन लोगो ने यह अवश्य देखा होगा कि युद्ध के दिनो मे किसी समय भी उन्होने इस बात का सकेतमात्र नही किया कि वे अपने पद से त्यागपत्र देना चाहते है। वे शायद आश्चर्य करते होगे कि कानवे कैबल के समय उन्हे यह बात क्यो नही सूझी कि वे इस प्रकार का कदम उठाए, ताकि वे सदन का विश्वास प्राप्त कर सकें ? या उन्हे अपना त्यागपत्र देने का विचार उस समय क्यो नही आया जब यार्कटाऊन की विजय के बाद युद्ध सक्रिय रूप से बद हो चुका था ?

इन प्रश्नो का उत्तर यह है कि उन मे कर्त्तव्य-परायणता इस हद तक थी कि वे इस प्रकार का विचार ही नही कर सकते थे। वे अपने इस विश्वास मे न्याय-सगत थे कि एक बार उनका नियन्त्रण हट गया, तो अमरीकी प्रतिरोध समाप्त हो जाएगा। कि तु जितने अधिक काल तक वह प्रमुख स्थान मे रहे, वह उसमे उतना ही अधिकाधिक उलझते गए—यहा तक कि उस मे से स्वय को निकालना उनके लिए दुसाध्य हो गया, साथ ही साथ वह उतने ही अधिक सयुक्त-राज्य के प्रतीक बनते गए। मोटे तौर पर, व्यक्तिगत रूप से जनरल वाशिंगटन तो विलुप्त हो गए और उनके स्थान मे एक असाधारण पुरुष दृष्टिगोचर हुए जो कि अमरीकी सत जार्ज थे। वह इस सारी प्रक्रिया के शिकार बने, किन्तु हमारे विचार मे कुछ हद तक उनका इस मे अपना भी हाथ था। यह केवल इसलिए नही कि उन्हा ने इतनी भव्य सफलता प्राप्त की थी न केवल इसलिए कि अपने व्यवहार मे वे इतने शान्त और राजनीतिज्ञ-तुल्य थे, न केवल इसलिए कि उनका दृष्टिकोण निस्वार्थपूर्ण और राष्ट्रीय था, बल्कि इसलिए भी कि उन्होने जानबूझकर ओर स्थिरतापूर्वक अपने वैयक्तिक अस्तित्व को देश के हित के लिए समर्पित कर दिया था। वह स्वय जिस प्रकार के इन्सान थे उन से यह आशा नही की जा सकती थी कि वह इससे इतर कुछ और कर सकते है। किन्तु उन के चीखने-चिल्लाने और बोझल दायित्व का विरोध करने के बावजूद परिणाम एक समान रूप से अपरिहार्य

थे। उन के एक बार अमेरिका के सक्षिप्त प्रतिनिधि-रूप बन जाने पर वह स्वाभाविकतया सार्वजनिक जीवन मे नितान्त काम करने वाले उम्मीदवार की भाति उलझ गये। अत प्रधान-सेनापति के आसन पर आरूढ वाशिगटन महोदय को सिवाय मृत्यु, रुग्णता अथवा अपमान के कोई अन्य वस्तु राष्ट्र-पति होने से नही रोक सकती थी।

और जब वह एक बार राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए, तो मानव वाशिगटन पहले से अधिक स्थिरता-पूर्वक वाशिगटन स्मारक मे विलीन हो गए। इस मौके पर भी इनके आलोचको की टिप्पणिया सवशा-रूप मे अन्याय-सगत नही थी। लोगो का एक देवता-तुल्य व्यक्ति को अपने मध्य पाना ही खीझ पैदा करने वाली चीज थी, और जब यह देवता-तुल्य मानव फैड्रलिस्ट-दल के एक अग बन गए तो उनके क्रोध का पारावार न रहा। गणतन्त्र वादियो के दृष्टिकोण के अनुसार वह व्यक्ति जो पहले अनाक्रमणीय था, वह अब ऐसी नीति का सपोषक बना, जो उनके लिए असह्य थी। यह ठीक है कि जब वाशिंगटन अपने पद पर आरूढ थे, तो उन्होने कभी इस बात को स्वीकार नही किया कि वे भी फैड्रलिस्ट है, किन्तु उन्होने इतनी बात मान कर कि फड्रलिस्ट विचारधारा के सिवाए कोई और ग्रह्य विचार धारा नही है, उन्होने फैड्रलिस्ट विचार-धारा को एक बहुत बडी प्रतिष्ठा प्रदान की। वाशिगटन की मृत्यु के बाद गणतन्त्र-वादियो ने उन प्रयासो को देखा जिनके द्वारा फैड्रलिस्ट-दल के लोग वाशिगटन-लोक-कल्याण 'समितिया' बना कर वार-पुरुष वाशिगटन-सम्बन्धी गाथाओ से लाभ उठा रहे है। यह समितिया वास्तव मे राजनैतिक क्लब थे, जिन्हे सत-चरित्र के प्रचारक के रूप मे जाहिर किया गया था। (इन समितियो की पुस्तिकाओ मे वाशिंगटन का विदाई-भाषण आवश्यक रूप मे होता था।) अमेरिका के लोग, उन पर हमला करने से विशेष रूप से झिझकते थे। गणतन्त्रवादियो के काग्रेस-सदन के भाषण धैय-हीन स्वत्व-त्यागो तथा आरम्भिक समादर से भरे रहते थे, किन्तु वे जो आक्रमण करते

थे वे सर्वस्व-रूप मे चिताकुलता अथवा रोष के परिणाम-स्वरूप नही होते थे । वे चाहते तो यह थे कि वाशिंगटन की तारीफ करें, किन्तु उन्हे इसके सम्भाव्य परिणामो की भी चिन्ता रहा करती थी । अपने फैड्रलिस्ट अनुयाइयो के कारण वाशिंगटन को हम कठोर, कम पहुँचने योग्य, और स्पष्टता से किए विरोध पर नाराज होते हुए देखते हैं। क्या यह वेदनापूर्ण व्यग्य नही था कि पैनसिलवेनिया के सन् १७९४ के मद्य-विद्रोह मे, जिसमे कि राष्ट्रपति (वाशिंगटन) के आदेश से लोग पकडे गए थे, उनमे से आधे लोग उस क्षेत्र के रहने वाले थे जिसका नाम उनके सम्मानार्थं वाशिंगटन रखा गया ?

डेविड-मीड, वाशिंगटन के परिसहाय रिचर्ड मीड के भाई थे। उन्होने प्रधान-सेनापति के बारे मे एक बार कहा था—'वे उदासीन व नीरस स्वभाव के हैं। अपनी प्रकृति एव आदत के कारण वह गणतन्त्र देश के सेनापति बनने की अपेक्षा पूर्व देशो मे सम्राट् बनने के अधिक योग्य है ।' उन दिनो जब कि गणतन्त्रवादियो और फैड्र-लिस्टो के मध्य वाद-विवाद चल रहा था, इस प्रकार का कथन और भी अधिक उपयुक्त रूप से लागू होता था । अलैक्जैण्डर हैमिल्टन के प्रस्तावित टकसाल-स्थापना-विधेयक मे एक तजवीज थी कि वाशिंगटन का सिर सयुक्त-राज्य अमेरिका के सिक्को पर अकित किया जाए। ऐसा हमारे पास कोई साक्ष्य नही है कि जिससे यह सिद्ध हो कि वाशिंगटन महोदय ने इस विचार को जोरदार तरीके से अनुमोदित किया । वास्तव मे ऐसी सम्भावना ही नहीं हो सकती थी । किन्तु गणतन्त्र वादियो की नजरो मे, जो इस प्रस्ताव को गिराने मे सफल हुए, यह उस अशुभ प्रवृत्ति का नमूना था जो वीर-पूजा के रूप मे उस समय मौजूद थी ।

### मनो-वेदना

किन्तु वाशिंगटन के आलोचको मे उदारता की कमी थी। उन्होने इस बात को महसूस नही किया अथवा इस बात की गुजाइश नहीं छोडी कि इस प्रवृति को पूर्व ही जानना-समझना चाहिए था और उसे सर्वथा रूप मे प्रोत्साहित करना चाहिए था । वस्तुत: उस

समय अमेरिका को एक महात्मा जार्ज की आवश्यकता थी। राष्ट्रीय एकता का प्रत्येक प्रतीक मूल्यवान था और यह कहना गलत है कि वाशिंगटन फैड्रलिस्ट लोगो के हाथो मे महज एक कठ-पुतली थे। उन्होने सच्चाई से उन सब आकाक्षाओ को पूरा किया जो समान रूप से सब अमरीकियो के हृदयो मे थी। वह यदि निर्बल, मूर्ख अथवा अपने व्यवहार से दूसरो को उकताने-थकाने वाले भी होते, यद्यपि इनमे से कोई दुर्गण उनमे नही था, तो भी उनकी लोक-प्रियता एक ऐसी चीज थी जिसका बहुत ज्यादा महत्व था। 'रैंडीकल' सिद्धातो के उग्रवादी अमरीकी जब उनकी लोकप्रियता के बारे मे शिकायत प्रदर्शित करते थे, तो वे किसी बुराई की शिकायत नही कर रहे होते थे, बल्कि इस बात पर भय प्रदर्शित कर रहे होते थे कि कही उनकी अच्छाई अपनी सीमा को ही न उल्लाघ जाये। वे लोग सच्ची अमरीकी शैली मे, अन्याय-सगत रूप से, अनुत्तरदायी प्रकार से, क्रूरता-पूर्वक पर स्वस्थ-रूप से उनको देवोचित आस्था का पात्र व्यक्ति मानते थे।

अधिक गहराई मे जाकर हमे लगता है कि वाशिंगटन के सम-कालीन लोगो ने उनकी उस मनोवेदना की ओर ध्यान नही दिया, जो (सम्भवत विशेष रूप से या योरोपीय लोगो की दृष्टि मे) उनके कार्यों मे तथा सामान्यतया अमेरिका के इतिहास मे प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होती है। उदाहरण के लिए वाशिगटन की निजी स्थिति के सतृष्ण पहलुओ पर विचार कीजिए। उनको इस बात से बडा सन्तोष मिलता था, कि वह अपना कर्तव्य निभा रहे हैं और उनके इन कामो के लिए जनता इतने व्यापक रूप से सराहना कर रही है। किन्तु कुछ लोगो के विपरीत उनके हृदय मे सार्वजनिक जीवन के लिए चाह नही थी। उनकी जो शास्त्रीय सहिता थी, उसमे आनन्द भोगने पर जोर नही था। दूसरे लोगो को स योग्य बनाने के लिए कि वे अपनी वैयक्तिक प्रवृत्ति के अनुसार आनन्द भोगें, उनका अपना वैयक्तिक जीवन एक खोखले ढाचे मे बदला हुआ उन्हे नजर आया। राष्ट्र के पिता स्वय सतान-हीन थे। यह

चाहे उनकी अपूर्व ऐतिहासिक कहानी मे ठीक ही क्यो न बैठती हो, यह बात उन जैसे वास्तविक मनुष्य के लिए आजीवन निराशा का विषय रही होगी कि उन्होने अपने पीछे अपना कोई सीधा उत्तराधिकारी नही छोडा। उनका एक सौतेला बेटा भी अपनी छोटी उम्र मे मौत का ग्रास बना। उन्होने माऊट वर्नन के सुधारने मे चिरकाल तक प्रयत्न किए, किन्तु अपनी पिछली आयु के बहुत बडे भाग तक वह अपने इस घर से दूर ही रहे। अप्रैल १७९५ मे, जब उन्हे राष्ट्रपति-पद से अवकाश मिला, तो अपने गृह-भवन की मरम्मत के लिए उन्होने कई आवश्यक बाते पायी। ये मरम्मते इस कदर ज्यादा थी कि उन्होने अपने एक साथी को थके-थके, पर व्यगपूर्ण ढग से एक पत्र मे लिखा —

'इस समय बढई, राज, रग रोगन करने वालो से मैं घिरा हुआ हू। मुझे इस बात की चिन्ता हो रही है कि इन से जल्दी से जल्दी अपना पिड छुडाऊ, क्योकि न तो मेरे पास कोई ऐसा कमरा है, जिसमे मैं अपने किसी मित्र को रख सकता हू और न ही मै हथौडो के सगीत सुने बिना अथवा रोगन की खुशबू ग्रहण किये बिना अपने किसी कमरे मे बैठ सकता हू।'

और उन्हे जो वहा रहकर अल्पकालीन शान्ति प्राप्त हुई, अन्त मे जाकर लडाई की आशकाओ के कारण वह भी भग हो गई।

निस्सन्देह हर मानवीय योजना मे मनोवेदना का तत्व मौजूद रहता है। अन्त मे जाकर, जैसा कि मार्क्स आरिलियस दुबारा साक्षी देता है, केवल एक मृत्यु का महत्व रह जाता है।

'उदाहरण के लिए वस्पेशियन के समय को लीजिए। इसमे भी वही पुराना दृश्य सामने आता है—विवाह, बालक का उत्पन्न होना, रोग व मौत, लडाई और आनदोत्सव, वाणिज्य व कृषि खुशामद व जिद्द। एक व्यक्ति भगवान् से प्रार्थना कर रहा है कि कृपया यह—यह ले लीजिए। दूसरा अपने भाग्य पर सिर धुन रहा है। फिर कुछ और भी लोग हैं जो राज्यो और प्रतिष्ठा के पदो के पीछे लोलुपता से अन्धे हो रहे है।

यह सब अपना जीवन व्यतीत कर चुके और अपना-अपना स्थान छोड कर दूसरे लोक को सिधारे। इस प्रकार ट्राजन के राज्य की ओर जाइए, वहा भी वही चित्र है और वहा भी जीवन इसी प्रकार व्यतीत हो जाता है और मृत्यु आ दबाती है।'

किन्तु जहा तक वाशिगटन के जीवन-कार्यो का सम्बन्ध है, उन मे विशेष-रूप से मनो-वेदना नजर आती है, क्योकि उसके सार्वजनिक और वैयक्तिक पहलुओ मे असमानता पाई जाती है। जो कोई भी राज्यिक कार्य उन्होने अपने हाथो मे लिए उनमे उ हे भरसक सफलता मिली। किन्तु जो कुछ उ होने स्वय के लिए किया वह विचित्र रूप से क्षणिक रहा। वर्जीनिया की वैस्टमोर लै ड काउन्टी मे, जिस स्थान मे कि उनका जन्म हुआ, वह १७७९ मे आग की भेट हो गई। यद्यपि माउन्ट वर्नन एक ऐसी जागीर थी, जिससे उन्हे बहुत प्यार था किन्तु उससे उन्हे कभी लाभ नही हुआ। न हो क्रान्ति अथवा किसी बाद की घटना से बाढग्रस्त खेती और खेत-बगीचो के मालिको की दुर्दशा को दूर ही किया। इसका कारण यह था कि वहा की भूमि ऊसर थी और वहा का जलवायु अति-ऊष्ण था। यही कारण था कि वाशिगटन की देख-रेख तथा इस बारे मे उनकी योजनाए इन त्रुटियो को दूर न कर सकी। सूखा, फसलो को लगने वाले कीडे, रोग इत्यादि मानव शत्रुओ से भी बढ कर निदयी थे। वे एक स्थान मे लिखते है —

'लोकस्ट पेडो के पत्ते पिछले वर्ष की तरह अब भी मुरझाने शुरू हो गए है और बहुत से मर चुके है। काली गोद के पेड, जिन्हे मैने उखाडकर चौडे रास्तो व घूमने-फिरने की चक्रदार वीथियो मे लगाया था और जिन मे से पत्ते भी निकल आए थे आर जो आरम्भ मे बहुत अच्छे लग रहे थे, वे सब के सब मर गए है। यही दशा चिनारो व शहतूत के पेडो की हुई। क्रैब की किस्म के सेबो के पेड भी, जिन्हे (उखाड कर) झाडियो मे बोया गया था और ताड के पेड भी मर चुके है। ससाफरास भी बहुत हद तक मर चुके है। चीड के पेड तो सारे के सारे

समाप्त हो चुके हैं। कई देवदार और हैमलोक के पेड भी बिल्कुल मर चुके हैं।'

जुलाई, १७८५ के जनवरी के उद्धरणो से पता चलता है कि उस वष अपवाद से बहुत बुरी तरह गर्मी पडी, किन्तु यह कोई एकलित उदाहरण नही था। दूसरी ऋतुओ मे 'हौली' बाड उग भी नही सकी। यही दशा हनीलोकस्ट बाड की रही, जिसे अगूर की बेलो के इर्द-गिर्द लगाया गया था। उन्होने कुछ सुनहरी रग के तीतर पक्षी आयात किए थे, वे भी कमजोर होकर मर-खप गए। उन्होने एक हिरन-पार्क बनाया था। इसके हिरन लगातार निकल भागते रहे। उन्होने साथ उगे हुए छोटे-छोटे पौधो को भी काट खाया और फिर कुछ साल बाद ऐसी स्थिति हो गई कि उस पार्क को भी समाप्त करना पडा। इस प्रकार यह सघर्ष निरन्तर चलता रहा और उन्हे निरुत्साहित करता रहा, मानो जिस भगवान् को वे कभी-कभी याद कर लिया करते थे, वह नही चाहता था कि जार्ज वाशिंगटन उस स्थान मे स्थायी-रूप से अपनी रिहायश रखें। यदि उन्हे एक सुयोग्य उत्तराधिकारी भी मिल जाता या कोई निष्ठावान (तथा महगा) प्रबन्धक होता, तो भी माऊटवर्नन अन्ततोगत्वा आस-पास वाली उखाड भूमि अथवा कृत्रिम समाधि से अधिक अच्छी हालत मे न हो सकता।

सयुक्त-राज्य अमेरिका मे पश्चिमी भू-भागो का समावेश होता जा रहा था। वहा भी वाशिंगटन महोदय कोई जादू न कर सके। उनके वहा विस्तृत-भू-भाग थे, किन्तु अपने मरने से कई वर्ष पूर्व उन्हे यह निश्चय हो गया था कि ये पश्चिमी-भू-भाग आमदनी की अपेक्षा अधिक कष्टदायक हैं। क्या आप जानते है कि पोटोमैक कम्पनी का क्या हुआ, जिसने इस नदी को नागम्य करके एलघनी के पश्चिम की ओर यातायात की योजना बनाई थी ? वाशिंगटन ने इस परियोजना पर अपनी पूरी ताकत लगा दी थी और इसलिए वह इस पर बहुत आशाए बाधे हुए थे। वर्जीनिया की सविधान-सभा को भी विश्वास था कि इसके परिणाम ऐसे अच्छे होगे जो

वाशिंगटन महोदय की कीर्ति के 'स्थायी स्मारक के रूप मे' नजर आएगे ।' शोक कि उनकी मृत्यु से पूर्व ही यह कम्पनी दुरावस्था मे हो गई । तीस साल पशाचत् इसका दिवाला निकल गया । यद्यपि चैसापीक तथा ओहियो कैनाल के प्रवर्त्तको ने पुरानी पोटोमैक कम्पनी को अपने मे शामिल कर लिया और यह योजना बनाई कि वाशिंगटन डी० सी० को पिट्स वर्ग के साथ मिला दिया जाए, तथापि वे १८५० तक एलघनीज की तराई से कम्बरलैण्ड से आगे नही बढ सके । जार्ज वाशिंटन बहुत पहले १७५३ मे इसी स्थान मे सर्वप्रथम गए थे (जब इसे विल्जक्रीक कह कर पुकारा जाता था ) उस समय वह गवर्नर डिनविड्डी के आदेशानुसार अपना प्रथमतम दायित्व निभाने के हेतु वहा गये थे । इस सम्बन्ध मे 'खोदा पहाड और निकली चुहिया' वाली बात सार्थक हुई ।

यही बात उनके और साहसिक कार्यों के बारे मे कही जा सकती है । उनकी असफलताओ का कारण यह नही था कि उन्होने योजनाए ठीक प्रकार नही बनाईं, अपितु उनमे सफलता पाना वाशिंगटन के भाग्य मे बदा नही था । उदाहरणार्थ, वाशिंगटन इस बात मे दिलचस्पी रखते थे कि कोलम्बिया के जिले मे एक राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय की स्थापना की जाए । वे सच्चे दिल से इसे चाहते थे और उनकी योजना सराहनीय थी । उनका यह उद्देश्य था कि सयुक्त-राज्य अमेरिका के कोने २ से युवको को एकत्रित किया जाए । उन्होने अपनी वसीयत मे से इस विश्व-विद्यालय के लिए पोटोमैक कम्पनी के ५० भाग निर्धारित कर दिए, किन्तु कई एक कारणो से उनके वसीयतनामे की यह अनुधारा अमल मे नही आ सकी । जहा तक उनके फैड्रलिस्ट दल के साथ सम्बन्धो की बात थी — जिन सम्बन्धो को उन्हो ने अन्तिम रूप मे अभिस्वीकार कर लिया था—उसी दल को उनकी मृत्यु के थोडे समय बाद करारी हार मिली और फिर कभी उसे राष्ट्रपति-पद नही मिल सका । वस्तुत यह दल एक राजनैतिक शक्ति के रूप मे रह ही नही सका, बल्कि विघटित हो गया । इस विघटन के परिणाम-स्वरूप कुछ वर्षों तक

उनकी अपनी कीर्ति को भी धक्का लगा। जब नई शताब्दी का आरम्भ हुआ, तो पहली दशाब्दी मे ही वाशिगटन स्मारक धराशायी होता हुआ प्रतीत हुआ। उनके समकालीन लोग सम्भवत यह सब कुछ आकने की स्थिति मे नही थे, ( जैसे कि वह इस काबिल नही थे कि उनकी अभिकल्पित विशाल सम्पति की सीमाओ को जाच सके)। इन से भी अधिक एक और मनो-वेदना है जो समय-गमन के साथ ज्यादा स्पष्ट होती चली गई। यह मनो वेदना सयुक्त-राज्य अमेरिका मे वीर-अधिनायक के रूप मे, विशेषत राष्ट्रपति के तौर पर दायित्व निभाते हुए विद्यमान रहती है। उदाहरणार्थ, यदि उनका व्यक्तित्व अपेक्षतया कम 'शास्त्रीय' होता, अथवा उनके स्थान मे कोई और व्यक्ति अमेरिका का राष्ट्रपति होता, तो यह नही कहा जा सकता कि ढॉचा इससे भिन्न अथवा इस प्रकार का होता। जहा तक आवश्यक तत्त्वो का सम्बन्ध है, दर असल यह वाशिगटन ही थे, जिन्होने अनजाने मे इस ढाचे को जमाया था। जब उनका द्वितीय प्रशासन समाप्त होने को आया, तो राष्ट्रपति के पद को एक निश्चित स्वरूप मिला। यद्यपि उस समय भी इस मे अस्पष्टता और परस्पर-विरोध की बाते थी, किन्तु इसमे स्थायित्व था। राष्ट्रपति का यह स्वरूप सम्राट् और प्रधान-मन्त्री अथवा दल प्रमुख और पिता के बीच का था। राष्ट्रपति सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के रूप मे होते हुए भी जनता का प्रतिनिधि था। एक ओर तो यह डैल्फी के अनन्त-कालिक भविष्यवक्ता के समान था, जिसकी वाणी सदा के लिए स्थायी रूप से रहने वाली हुआ करती है और दूसरी तरफ वह एक भूले करने वाला इन्सान था, जिसे दुर्वचनो का तुरन्त और प्रलोभी निशाना बनाया जा सकता है। (हम फिलिप फ्रैनो जैसे को कवि वाशिगटन के साथ दोनो प्रकार का व्यवहार करते हुए पाते है )।

इस प्रकार का शिष्टाचार रखते हुए सम्भवत वाशिगटन ने अपनी कठिनाइयो को बढा लिया। (यदि उनका यह प्रस्ताव कि वह अवैतनिक रूप से सेवा करेंगे, काग्रेस मान लेती, तो उनकी

विपदाए बढ जाती) । शायद उस समय जबकि उनके राष्ट्र-पिता पद की अवधि समाप्त होने वाली थी, वह अमेरिका के भविष्य का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करने मे असफल रहे थे, यद्यपि वह इसके अतीत और वर्तमान के सुन्दर प्रतीक थे। अभी उन्नीसवी शता दी मे अन्य प्रकार के वीर-पुरुष आने थे। उनमे से एण्ड्रयो जैक्सन सन् १७९६ मे एक अपरिपक्व काग्रेस सदस्य था। उसका छोटा सा ग्यारह सदस्यीय, मुट्ठी मे आ सकने वाला, अल्पसख्यक दल था, जिसने कार्य-निवृत्त होने वाले राष्ट्रपति को दी जाने वाली काग्रेस सदस्यो द्वारा विदाई-श्रद्धाजलि का विरोध किया था। 'जैक्सोनियन' युग मे, जिसमे साधारण मानव को महत्व दिया जाता रहा, वाशिगटन मे पाये जाने वाले गुणो से भिन्न गुणो को अधिमानता दी गई।

इतना श्रेष्ठ और गुण-सम्पन्न होने पर भी वाशिगटन से कार्य-चतुरता सम्बन्धी भूलो का हो जाना और किसी न किसी को नाराज कर देना स्वाभाविक था। मनुष्य हर एक को खुश नही कर सकता। इससे विपरीत उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह ऐसा कर सकेंगे। यदि उनका व्यवहार गणतान्त्रिक जनरल के समान अधिक और तथाकथित पूर्वी सम्राट् के तौर पर कम होता, तो भी लोग उनका अनादर करते। वस्तुत उस दशा मे परिणाम सयुक्त-राज्य अमेरिका के लिए विनाशकारी होता।

आज राष्ट्र-पति की कार्य-सम्बन्धी धारणा, सक्षेप मे, विचित्र व अशिष्ट-उत्कृष्ट प्रकार की है। एक तरफ यह गम्भीरता का तकाजा करती है और दूसरी तरफ दुवचन जैसे व्यवहार को निमन्त्रित करती है। राष्ट्रपति करीब-करीब उन आदिम बादशाहो मे से है जिनका उल्लेख फ्रेजर ने अपनी पुस्तक 'गोल्डन बो' मे किया है। यह बादशाह ऐसे थे जो आन और शान से तब तक हकूमत करते रहते थे जब तक उनको धार्मिक प्रथा के अनुसार जान से मार नही दिया जाता था—(सिवाए अमेरिका के शासको के जिन्हे अन्तिम रूप से खत्म होने से पहले थोडा-थोडा करके दारुण कष्टो

को सहना पडता है) । किसी की पूजा करने तथा दूसरो को कलकित करने की भावनाए आपस मे परस्पर पूरक होती है । वार्शिगटन के लिए अनुपम रूप से कष्टदायक परिस्थिति पैदा हो गई थी, क्योकि जब उन्होने राष्ट्रपति का आसन ग्रहण किया, तो उनकी स्थिति किसी अन्य अमेरीकी राजनीतिज्ञ से बढ कर एक सार्वजनिक वीर-पुरुष की थी । अमेरिका के राष्ट्रपति से यह अपेक्षा की जाती है—इसमे वार्शिगटन अपवाद नही थे—कि वह अपने शासन की अवधि मे चमत्कार-पूर्ण समझ-बूझ और दूर-दर्शिता प्रदर्शित करेगा । उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह एक साधारण मनुष्य की तरह होगा । उसे विचित्र-रूप से क्षति पहुचाए जाने योग्य बना कर छोड दिया जाता है । उससे हर प्रकार की अपेक्षाए की जाती हैं । उसे कोई ठोस चीज दी नही जाती, सिवाए उधार पर—न उसे उपाधिया मिलती हैं, न मकान और न ही साज-सज्जा । वह अपने राष्ट्र के लिए करीब-करीब जीती-जागती कुर्बानी है । जान एडम्ज की वार्शिगटन पर अविनीत टिप्पणिया यहा महत्त्वपूर्ण है । वह प्रतिपादित करता है कि यह वार्शिगटन की अहकारी भावना थी कि जिसके कारण उन्होने अवैतनिक-रूप से सेवा करने का इरादा किया और यह उनके लिए वैसे ही गलत बात है कि वह आठ साल तक प्रधान सेना-पति का पद सम्भाले रखने के बाद कार्य-निवृत्ति की माग करे । (उसने यह उस समय लिखा जब अभी वार्शिगटन राष्ट्रपति नही बने थे ) ।

एडम्ज लिखता है—

'अधिक समझदारी और पवित्र भावना के समयो मे कभी वार्शिगटन ऐसा न करते, क्योकि यह भी एक महत्त्वाकाक्षा है । वह अब भी सन्तुष्ट होगे, अगर उन्हे वर्जीनिया का गवर्नर, काग्रेस का अध्यक्ष, सैनेट का अथवा प्रतिनिधि-सदन का सदस्य बना दिया जाय ।'

स्पष्ट रूप मे, एडम्ज के विचार मे वार्शिगटन के लिए उपयुक्त मार्ग यह था कि वे अपने पद पर आसीन रहते हुए अपना

काम चलाने जाते, उस दैवी-घोडे के समान जिसे काम पर जोत दिया गया हो। इस प्रकार की सद्भावना के लिए बदले मे कोई चीज नही और यदि है तो अधिकतर मरने के बाद ही प्राप्त हो सकती है।

हम अक्सर यह सोचा करते है कि अमरीकी दृष्टिकोण व्यवसायी और भौतिक है। इसमे शक नही कि अशत ऐसा ही है (और वास्तव मे वाशिंगटन की मनोवृत्ति भी ऐसी थी)। किन्तु जब हम इस दृष्टिकोण का मुकाबला गहरे, दूर-दर्शी और सासारिक ब्रिटेन-वासियो से करते है जिनसे कि अमेरिका वालो के दृष्टिकोण का उद्भव हुआ, तो हमे यह विस्मयकारी रूप से पतला, बिखरा हुआ और रोमान्स-पूर्ण लगता है। होरेशो नैलसन जो रीयर एडमिरल थे, एक दिन अबाकीर खाडी की लडाई से कुछ पहले जब रात का खाना खा कर उठे, तो उन्होने अपना मुह पोछा और भविष्यवाणी की, "मैं कल इसी समय से पूर्व या तो लार्ड की उपाधि प्राप्त कर लूगा या वैस्टमिन्स्टर ऐब्रे मे पहुँचा दिया जाऊगा।' उसका अनुमान बिल्कुल सही था, क्योकि इसके आधार मे ब्रिटेन देश के समाज की वास्तविकताए थी। नैलसन ने लडाई जीत ली। उस विजयी को उपयुक्त रीति से 'नील के बैरन नैलसन' की उपाधि मिली। इतना ही नही, ब्रिटिश पार्लियामैण्ट ने उसे २००० पौण्ड वार्षिक पैन्शन के रूप मे दिए और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उसे १०००० पौण्ड का बोनस दिया। नेपल्स के बादशाह ने उसे ड्यूक की पदवी दी, जिसकी वार्षिक आय तीन हजार पौण्ड थी और बाद मे उसका विवाह भोग-विलास की शौकीन लेडी हैमिल्टन से हुआ। यह सत्य है कि जब वह ट्रैफालगर पर मारा गया, तो उसे वैस्टमिनस्टर मे दफनाया नही गया, बल्कि उसकी बजाय उसी भव्यता के साथ सैन्ट पोल के मुख्य गिर्जाघर मे दफना दिया गया।

वाशिंगटन के भाग्य का मुकाबला नैल्सन से कीजिए। उसके विपरीत वाशिंगटन अकेले मे और अपने सैनिक सघर्षो मे कष्ट भोगते है। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वह असम्भव अनुपातो

मे सतर्कता, अखडपन और विनीतता को मिलाएगें। प्रमुख कार्य-पालक होने के नाते भी उन्ही कारणो से वह अकेले हैं और दु ख पा रहे हैं। उनके पथ-प्रदर्शन के लिए कोई पूर्वोदाहरण नही है (यद्यपि अपने उत्तरदायित्वो की अत्यन्त कठोरता के कारण वह उच्चासीन हैं, जैसा कि प्राय अमरीकी नेता हुआ करते हैं)। वह एक प्रकार से भव्यता-पूर्ण अनाथ बच्चे है जिन्हे एक अनाथ और शिशु समान राष्ट्र का प्रमुख बना दिया गया है। वह इस कठिन परीक्षा से जिन्दा बच निकले हैं क्योकि उन्होने इसका साम्मुख्य अधिकतम शान्तिमय प्रतिष्ठा और न्यूनतम सिद्धान्तवाद और अन्तर्दृष्टि से किया। अपनी सेवाओ का इनाम नैलसन को पर्याप्त और वास्तविक रूप मे मिला, वाशिंगटन को जो इनाम मिला, वह महज आलकारिक था। उन्हे अपने वक्ष पर लगाने के लिए चमकते हुए तारे भी नही दिए गए, क्योकि उनके देश-वासियो की नजरो मे सिनसिनेटी के चिन्ह को भी लगाना अविवेक-पूर्ण बात थी। वाशिंगटन को सम्बोधित करते हुए किसी उपाधि का प्रयोग भी नही किया जाता था। नैलसन के लिए जहा 'वाईकाऊट' 'ड्यूक आफ ब्रान्टे' का प्रयोग होता था, वहाँ वाशिंगटन के लिए सादा सम्बोधन था—राष्ट्रपति महोदय। नैलसन की गाडी पर गौरवाक चित्रित किए गए, किन्तु बाद के राष्ट्रपतियो के लिए यह चीज भी हास्यास्पद मानी गई। राष्ट्रपति का सिर सिक्को पर तब तक नही अकित हो सकता था, जब तक वह आराम और सुरक्षित रूप से मर न जाए। निस्सन्देह जैसा कि वाशिंगटन समझते थे, यह तरुण गणतन्त्र राज्य के लिए विवेक-पूर्ण निश्चय थे, क्योकि ऐसा न होने पर प्रतिकूल प्रभाव पड सकते थे। निस्सन्देह किसी कार्य-पालक पद के लिए सर्वोत्कृष्ट बात यह थी कि उसे यथासम्भव अनाकर्षक बनाया जाय, क्योकि मानव स्वभाव प्रलोभनो मे फसने वाला और महत्वाकाक्षी होता है। किन्तु यह कितना अल्पव्ययी और अरुचिकर लगता है। कितना कृपणता-पूर्ण। कांग्रेस ने उनकी अश्वारोही मूर्ति को, जिसे प्रस्ताव के रूप में सन् १७८३ मे पारित किया गया था, कही १८६० मे जाकर स्था-

पित और अनावृत्त किया। वार्शिगटन महोदय के विशाल, दैत्याकार स्मारक को, बहुत वाद विवाद और झगडो के बाद १८८५ मे पूरा करके समर्पित किया गया—अर्थात् जिस महानुभाव की स्मृति को यह ताजा करता है उसके मरने के ८७ साल पीछे।*

माऊट वर्नन की क्या दुरवस्था हुई? इसकी भूमि सूर्य की तेज धूप से मरुस्थल सी बन गई। वर्षा उस प्रासाद के इर्द-गिर्द खेतो को खा-खाकर उनमे नालिया बनाती चली गई। गर्म हवाओ के कारण सजावट के पेड और पौधे सूखते और मरते रहे। बेकार की घास और पत्तिया वहा ढेरो मे उगती रही।† माऊट वर्नन उत्तराधिकार मे भतीजे को मिला, फिर भतीजे के भतीजे को। वे योग्य आदमी थे, किन्तु कौडी-कौडी के मोहताज। अन्त मे उन्हे कांग्रेस ने नही बचाया, बल्कि उनकी जान बची, तो माऊट वर्नन की महिला-समिति की निजी कोशिशो द्वारा तथा उन लोगो की वजह से जिन्होने सुन्दर-भाषण देकर उनके लिए रुपया-पैसा एकत्रित किया। क्या यह विकृत नाटक एमर्सन की 'हमात्रेय' कविता की इन पक्तियो की याद नही दिलाता?

---

* वार्शिगटन की माता सन् १७८९ मे मरी। उनकी कब्र जो फ्रैड्रिक्सबर्ग मे थी, सन् १८३३ तक बिना किसी नाम-चिन्ह के रही। तब ५० फुट के स्तूप की योजना बनी, जिसे सन् १८९४ मे जाकर कही पूरा किया गया।

† हमे यहा यह जोडना चाहिए कि इसकी दशा जैफसन के माऊटीसैलो से कही अधिक अच्छी थी, जबकि सन् १८३९ मे अर्थात् जब उसके मरने के १३ वर्ष उपरान्त एक मुलाकाती वहा पहुचा। वह लिखता है—'मैंने अपने चारो तरफ उजाड ही उजाड देखा। छज्जा टूटी-फूटी हालत मे था, कुटीर जीर्ण-शीण थी, 'लानो' मे हल चलाए गए थे और इटली से आए हुए कलश मिट्टी मे पडे थे। इन के बीच मे जानवर घूम-फिर रहे थे। वह स्थान उस महापुरुष और उसके परिवार की सम्पत्ति की बरबादी का सही प्रतिनिधित्व कर रहा था—बहुत कठिनाई से मैं उस समय अपने आसू रोक सका और मेरे मुँह से अकस्मात् निकला—'मानवीय महत्ता क्या है?' (मार्गरिट बी० स्मिथ द्वारा लिखित—'वार्शिगटन सोसायटी के प्रथम ४० वष'—न्यूयार्क, १९०६, पृष्ठ ३८२–३८३)।

'यह भूमि है,
जो वनो से ढकी है
इसकी प्राचीन घाटी हैं,
उभरे हुए टीले है और यहा बाढें आती हैं,
किन्तु इनके उत्तराधिकारी कहा गए ?
बाढ की झाग की तरह उड गए है।
न वहा वकील रहे और न कानून,
और वहा का राज्य,
उस स्थान से विलुप्त हो गया।'

## विजय

क्या सचमुच ऐसा हुआ ? नही, नही, ऐसा नहीं हुआ। वाशिंगटन के बारे मे हम यह नही कह सकते। राज्य अब भी वहा मौजूद है, यद्यपि यह गणतन्त्र राज्य है। इस प्रकार उस राज्य के उत्तराधिकारी भी है, यद्यपि यह उत्तराधिकारी राष्ट्र के रूप मे हैं।

वस्तुत यह अनुचित मालूम होता है कि कहानी का अन्त हम नीरस शब्दो मे करे। जैसा कि शायद हर महापुरुष के जीवन मे होता है, वाशिंगटन के जीवन मे भी उदासी की गाढी गन्ध लगती है।

उनके व्यक्तित्व मे एक प्रकार का तीखापन है, जो दूसरो मे आत्मीयता और प्रेम उत्पन्न करने की बजाय भय-मिश्रित आदर की भावना को जन्म देता है और जो ऊष्ण मास-मज्जा को भी संग मरमर की तरह ठडा लगने लगता है। कारण यह था कि उनका मिजाज ही इस तरह का बना हुआ था। अमेरिका के लोग भी इस प्रकार की बर्फ की तरह की ठडी उत्कृष्टता पर बल देते थे। जब आदमी वाशिंगटन के सदृश अपनी खामियो को पहचानने लगता है तो उसे बहुत बडे दायित्वो को सम्भालना चिंताकुल कर देता है। एक अनन्त रूप से चलने वाले युद्ध, वाद विवाद तथा संकटमय स्थिति मे छलाग लगा देना और विपत्ति की चाकू जैसी तेज धार पर चलना भयोत्पादक बात है।

किन्तु वाशिंगटन के कार्यों का लेखा-जोखा देखने से हमे यह लगता है कि वह बहुत सन्तोषप्रद है। यहा हम एक ऐसे महानुभाव के दर्शन करते हैं, जिन्होने वह सब कुछ किया जो उनसे करने को कहा गया और जिनकी गम्भीरता मे ही उनकी दृढता और शक्ति थी—जिस गम्भीरता को कुछ लोग घातक नीरसता समझते थे। वस्तुत वे ऐसे महानुभाव थ जिन्होने अपने व्यक्तित्व से यह सिद्ध किया कि अमेरिका मानसिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ एव ठोस है। वे एक अत्युत्तम मानव थे, यद्यपि सन्त नही थे। एक सुयोग्य सैनिक थे, यद्यपि महान् सैनिक नही थे। एक विवेक-शील परिरक्षक थे, यद्यपि चतुर सुधारक नही थे। एक ईमानदार शासक थे, यद्यपि प्रतिभावान् राजनीतिज्ञ नही थे। किन्तु कुल मिलाकर एक अलौकिक व्यक्ति थे।

जहा तक उनके निजी जीवन का सम्बन्ध है, उनको यह जान कर सान्त्वना मिल रही थी कि अपने जीवन मे अन्त तक उन्होने सीधा और यशस्वी मार्ग अपनाया। उनको इस बात से भी तसल्ली थी कि उनकी ऐसे घर मे मृत्यु हो रही है जिसे वह ससार के सब स्थानो से अच्छा समझते है और जहा उनकी धर्म पत्नि उनके पास हैं—जिसके साथ उन्होने वफादारी से चालीस वर्ष बिताए। उनके सार्वजनिक कार्य दूसरी प्रकार से उनके व्यक्तित्व के मान-दण्ड हैं। वह यह जानते हुए मरे कि अमेरिका सही-सलामत था, उन्होने उसके निर्माण मे वैसा ही योग दिया, जैसा किसी और ने, और यद्यपि वह स्वय ससार छोड रहे हैं, परिस्थितिया उनके देश के पक्ष मे हैं। उनके इन महान् कार्यों ने इतिहास के अनेक अन्य महान् कार्यों की अपेक्षा अधिक स्थायी प्रभाव डाला।

उनके अकेले का, इन कामो के लिए, कितना श्रेय है—इसे कहना कठिन है। अन्तिम विश्लेषण मे यह प्रश्न ही असगत है। उन्होने अपने आप को अमेरिका मे इतना विलीन कर दिया था कि उनका नाम सम्पूर्ण देश मे, वायु के कण-कण मे व्याप्त है। वाशिंगटन के जीवनी-लेखक के लिए उन्हे, अनेक कल्पित कहानियो

और उन चित्रों से पृथक् करना बेकार है, जो उन्हें घेरे हुए हैं—उदाहरणार्थ, डाक-टिकटों तथा डालरबिल पर अंकित उनका मुख, जो इतना परिचित हो गया है कि कोई उसे देखता तक नहीं, प्रसधान-मोहर पर अंकित घुड-सवार, एण्ड्रयू-जैक्सन का राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के तौर पर (अपनी पुरानी आपत्तियों को भूलते हुए) 'दूसरे वाशिंगटन के रूप में' इधर-उधर भागना, चेरी पेड, हल जोतने वाला सिनसिनेटस, डिलावेयर की कष्ट दायक बर्फ, मोनोनगहेला पर काल्पनिक इण्डियन सरदार, जिसने घोषणा की थी कि कोई मनुष्य जार्ज वाशिंगटन को अपनी गोली का निशाना नहीं बना सकता, इत्यादि। सचमुच उन्हें कोई मार नहीं सकता। कारण कि वह स्मारक हैं और वह स्मारक अमेरिका है।